जन-अरण्य



राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली पटना

मूल्य रु० १२.५०

मणिशंकर मुखर्जी

प्रथम संस्करण १९७६
दूसरा संस्करण १९७८

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
८, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-११०००२

मुद्रक गजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२

"मुझे विश्वास है, प्रारम्भ म तुमने महसूस नही किया कि क्या घट रहा है, तत्पश्चात तुमन उसकी विश्वसनीयता पर स देह किया, लेकिन अब भी तुम मौन हो, यह जानत हुए भी कि सत्य क्या है। यन्त्रणाओ का अन्धा सूरज अपने चरम तेजस से पूरे ससार को चौंधिया रहा है। उसके दयाहीन प्रकाश मे, एक भी हँसी ऐसी नही है जो छदम न लगे, एक भी चेहरा ऐसा नही जिसने आतक और भय को छिपाने के लिए मुखौटा न लगा रखा हो और एक भी क्रिया ऐसी नही जो हमारी जुगुप्सा एव जटिलता को न छलती हो।"

—ज्या पाल सार्त्र

(फ्रेंज फेनन रचित 'दि रेचेड आफ दि अर्थ' की भूमिका से)

आज आषाढ का पहला दिन है। कलकत्ते के चितपुर रोड और सी० आई० टी० रोड की मोड पर एक जीर्ण लैम्प पोस्ट के पास खडा है, सोमनाथ। पूरा नाम—सोमनाथ बनर्जी।

रिक्शा, ठेला, बस, लारी, टैक्सी और टम्पो आदि की भीड से चितपुर रोड पर ट्रैफिक जाम होकर हगामा हो रहा है। इन सबके बीच एक पुरानी ट्राम का बूढा ड्राइवर लालबाजार की मोड पारकर बागबाजार जाने की कोशिश मे, बार बार टग टग करके घण्टी बजा रहा है। इस सारे दृश्य को देखकर सोमनाथ को लग रहा है, मानो प्रागैतिहासिक काल का एक विशाल बूढा गिरगिट अपने निरापद आश्रय से खदेडे जाने पर अचानक इस जन-अरण्य मे आ फँसा है और कातर स्वर मे आर्तनाद कर रहा है।

आकार मे वृहद होते हुए भी उस शरणार्थी गिरगिट' के लिए सोमनाथ के मन मे मोह होता है। पृथ्वी पर इतने राजपथ होते हुए भी किस दुर्भाग्य से यह बेचारा इस रवीन्द्र सरणी (कलकत्ता की अत्यधिक भीड भरी एक सडक) मे आ फँसा? आज से कुछ वर्ष पहले की बात होती तो इस घोर जटिल परिस्थिति से सोमनाथ कविता के कुछ तत्त्व ढूढ निकालता। अपनी पाकेट की छोटी नोट-बुक मे इस क्षण की मानसिकता को लिख लेता और तब रात मे उस पर कविता लिखने बैठता। शायद वह इस कविता का नाम देता—'जन-अरण्य मे प्रागैतिहासिक गिरगिट'। अपनी नयी लिखी कविता को दूसरे ही दिन तपती को पढाता, पर अब यह सोचने से भी क्या लाभ? कविता तो अब सोमनाथ के जीवन से विदा हो गयी है।

सोमनाथ तिरट्टी बाजार के पास क्यों खड़ा है ? वह कहाँ जायेगा ? क्या जायगा ? अगर कोई परिचित इस क्षण उससे ये प्रश्न करता तो वह बहुत परेशान हो उठता। कोई और दिन होता तो झूठ बोलने से भी चल जाता। लेकिन सोमनाथ यह भूल नही सकता कि आज पहला आषाढ है। आषाढ के इसी प्रथम दिवस को कभी किसी कवि ने एक निर्वासित यक्ष की विरह वेदना को चिर स्मरणीय बना दिया था। दूसरा, तीसरा, पाँचवाँ, तेरहवाँ, पन्द्रहवाँ या अन्य भी कोई दिन तो महाकवि कालिदास विरही यक्ष की मर्म-व्यथा को चित्रित करने के लिए चुन सकते थे और तब आषाढ का यह पहला दिन सोमनाथ का नितान्त अपना दिन होता।

पहला आषाढ सामनाथ का जन्म दिन है। चौबीस वष पहले, आज के दिन जिस अस्पताल म सोमनाथ ने पृथ्वी पर आँखें खोली थी, उस अस्पताल का नाम सिल्वर जुबली मातसदन है। पचम जाज के राज्य-काल की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य म महामहिम सम्राट की वफादार भारतीय प्रजा ने अपन उत्साह से चन्दा इकटठा कर यह अस्पताल बनवाया था। सिल्वर जुबली अस्पताल मे जन्मे बच्चे अब अपनी सिल्वर जुबली मनाने जा रहे हैं—यह सोचकर सामनाथ को मन ही मन हँसी आयी।

चितपुर राड की चलती हुई भारी भीड को देखते हुए सोमनाथ को माँ की याद आ रही है। माँ कहा करती थी—जन्म दिन के दिन अच्छा बनने का प्रयत्न करना चाहिए। किसी से द्वष करना, किसी को नुक्सान पहुँचाना और झूठ बोलना नही चाहिए। इसीलिए आज प्रथम आषाढ की इस कठिन दोपहर को रवीन्द्र सरणी मे खडा सोमनाथ झूठ नहीं बाल पायेगा। किसी के पश्न करने पर उस स्वीकार करना होगा ही कि वह लडकी की तलाश मे निकला है।

आप चौंक गय ? परेशानी अनुभव करते हैं ? ठीक ठीक समझ नही पा रहे हैं ? सोच रह है कि शायद सुनने मे गलती हुई है ? नहीं—ठीक ही सुना है आपन। यह पढा लिखा सुसभ्य युवक सोमनाथ बनर्जी सचमुच ही लडकी की तलाश मे निकला है—जिसे इस शहर मे कोई वेश्या कहता है तो कोई काल गर्ल।

सोमनाथ के पिता का नाम कई वष पहले एक बार अखबार म छपा

था। अखबार से कतरन सोमनाथ ने ही काटी थी। फिर कमला भाभी ने उसे घर के एलबम म चिपका दिया था। नि स्वाथ भाव से देश सेवा करने के उपलक्ष्य मे द्वैपायन बनर्जी ने सरकारी प्रशसा अर्जित की थी—इसी अवकाशप्राप्त सरकारी गजटेड (राजपत्रित) अफसर द्वैपायन बनर्जी का पुत्र सोमनाथ बनर्जी आज रास्ते पर खडा प्रतीक्षा कर रहा है और अब लडकी की तलाश म आगे बढेगा।

काल की उपेक्षा स मलिन रवी द्र सरणी को एक बार फिर से देखा सोमनाथ ने। जीण शीण बूढे चितपुर रोड का नाम बदलकर उसे चिर-सौन्दय के कवि के नाम के साथ जोडने की कुबुद्धि किस मस्तिष्क की उपज है? कलकत्ते के नागरिक भी कसे हैं? किसी ने भी प्रतिवाद नही किया? बडाबाजार की ग दगी म महात्मा गाधी एव चितपुर के दुग धमय अ ध कूप मे रवी द्रनाथ को निर्वासित करके भी ये लोग कितनी आत्मतुष्टि का अनुभव कर रहे हैं।

उत्तेजना स सोमनाथ के कान गम हो उठे। मि० नटवर मित्र अभी आ जायेंगे। लडकियो के विषय म नटवर मित्र की जानकारी का अन्त नही। लेकिन नटवर कहाँ है? वे आने म इतनी देर क्यो कर रहे हैं?

खीजकर सोमनाथ न सिर उठा एक बार आकाश की ओर देखा। बादल का कोई छोटा-सा टुकडा भी नही। यदि आकाश काल बादलो से घिरा रहता यदि वह कह पाता—'घिरा आ रहा आषाढ गगन म' तो मन को कितना अच्छा लगता। अगर मूसलाधार बारिश की धार म सोमनाथ अपने अतीत को भी बहा पाता तो बुरा नही होता।

लेकिन अतीत को बहाना तो दूर सोमनाथ के मन म बहुतकुछ घुमड रहा है। अतीत और वर्तमान एकाकार हो सोमनाथ के मानस आकाश म वर्षा के मघो की तरह छा रहे हैं। सोमनाथ को यही रास्ते पर खडे रहन दीजिए। आइए चल। तब तक उसके अतीत म थोडा झाँकें—उसके पारिवारिक जीवन स हमारा कुछ परिचय हो जाये।

जोधपुर पाक म पानी की टिग्गी के पास छोटे दोमजिले लाल मकान की

पहली मजिल के अपने कमरे मे सुबह-सुबह सोमनाथ जब सोया रहता है, तभी उसे पकडा जाय।

थोडी देर पहले ही उसकी नीद टूटी है लेकिन नीली धारीवाला पाजामा और बिना बाँह की जालीदार बनियान पहने अभी भी वह तकिया चिपटाये चुपचाप आँखें बन्द किये लेटा हुआ है।

सोमनाथ के कमरे के बाहर ही इस परिवार के खाना खाने की जगह है। वही चाय बनाने की व्यवस्था भी है। चूडियो की खनक हवा मे तैर रही है। इस आवाज को सुनते ही सोमनाथ कह सकता है कि बडी भाभी कम से-कम आध घण्टा पहले उठकर घर के कामो मे जुट गयी हैं। कमला भाभी इस समय मिल की एक साधारण साडी और बाटा की लाल रग की रबर की स्लीपर पहने रहती हैं। चाय के कपो को उतारने की आवाज आ रही है—निश्चित ही भाभी ने गैस के चूल्हे पर चाय की केटली रख दी है।

सुबह की चाय इस घर की दो बहुओ मे से एक को तैयार करनी होती है। द्वैपायन बनर्जी दिन की पहली चाय दाई-नौकरो के हाथ से पीना पसन्द नही करते।

घर की दूसरी बहू दीपान्विता उर्फ बुलबुल पर कभी कभी ही चाय बनाने का दायित्व आता है। सोमनाथ के छोटे भैया एक दिन बडी भाभी से बोले थे "तुम ही क्या रोज सुबह सुबह उठोगी ? बुलबुल को भी बीच-बीच मे थोडा कष्ट करने दो।"

कमला भाभी ने प्रतिवाद तो नही किया, किन्तु मुह दबाकर हँसी थी। हँसने का कारण सोमनाथ जानता है। छोटे भया की बहू बुलबुल खूब गाढी नीद सोती है। घडी की मर्यादा मान सुबह सुबह उठकर चाय बनाना उसके लिए काफी कठिन चीज है।

आज तो सोमवार है ? बुलबुल का ही चाय बनाने का दिन है। लेकिन चूडी की आवाज तो बुलबुल की नही है। बिस्तर पर लेटे-लेटे ही सोमनाथ यह समझ गया। साथ ही छोटे भया के कमरे से दरवाजा खुलने का शब्द हुआ और बुलबुल की चूडियो की आवाज भी आयी।

बुलबुल का गला कुछ ऊँचा है। उसकी आवाज सुन पडी, "ओह

दीदी, कितनी शर्म की बात है, आज फिर मैंने उठने मे पन्द्रह मिनट की देर कर दी ।'

कमला भाभी का जवाब भी सोमनाथ को सुनायी पडा, "शर्म करने से कोई लाभ नही, जाओ बाथरूम मे जाकर हाथ-मुह धो आओ।"

पति का जिक्र छेडते हुए बुलबुल बोली, 'अगर अभी भी आवाज देकर इन्होंने न उठाया होता तो शायद मेरी नीद नही टूटती।"

"इसका मतलब है कि देवर तुमसे काफी सख्ती करते हैं, सुबह-सुबह जरा सा सोने का सुख भी नही भोगने देते।" कमला भाभी की छेडछाड सोमनाथ को बिस्तर पर से ही सुनायी दे रही है। छोटा देवर अभी जग चुका है, इसका अनुमान शायद दोनो भाभियो को न था।

बुलबुल की शादी को थोडे ही दिन हुए हैं। उसके मन मे इस घर के बडो के प्रति स्वाभाविक सकोच अभी भी है। उसने कमला से कहा, "भाग्यवश आप उठ गयी वरना कितनी बुरी बात होती ! बाबूजी को चाय की प्रतीक्षा मे बरामदे मे चुपचाप बैठे रहना पडता।"

ट्रे मे चाय के कप रखने की आवाज आ रही है। कमला भाभी कह रही हैं, "बहुत दिनो से आदत पड गयी है, ठीक पौने छ बजे आँख खुल ही गयी। छ दस पर भी जब केटली चढने की आवाज नही आयी, तब समझ गयी कि तुम अभी तक उठी नही हो।"

बुलबुल बोली, "मुझे सुबह न जाने क्या हो जाता है, सारी दुनिया की नीद जैसे मेरी आँखों मे छा जाती है।'

कमला भाभी मितभाषिणी हैं पर मजाकिया कम नही, बोली, "नीद का क्या कसूर है? आधी रात तक पति से प्रेमालाप करने मे नीद को पास फटकने नही देती तो नीद बेचारी क्या करे ?"

कमला भाभी की बात सुन सोमनाथ को भी हँसी आने लगी। बुलबुल का लजाना देखने को मन हुआ। आखिर बुलबुल उसकी कालेज की सहपाठिनी जो ठहरी ! बुलबुल बोल रही है, "अब तो नवदम्पति नही हैं हम। विश्वास करो दीदी, कल साढे दस बजे ही दोनो सो गये थे।'

कमला भाभी ने पीछा नही छोडा "क्या कह रही हो ? अभी दो वर्ष भी नही हुए तुम्हारे ब्याह के और अभी से बूढा बूढी होने का मन करने

लगा ?"

"आप भी वहाँ की बात यहाँ जोड देती हैं !" बुलबुल और भी कुछ कहना चाह रही थी, पर कह नहीं पायी। सोमनाथ के सामन वह चाहे कितनी ही हाजिरजवाब क्यो न बने, पर बडो के सामने काफी घबरा जाती है।

कमला भाभी बोली, "शरमाने की कोई बात नहीं। बिस्तर पर लेटे-लेटे पति के साथ दुख-सुख की बात करना तुम्हारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। और फिर यदि सुबह नीद टूट भी जाये तो भी देवरजी की इच्छा तुम्हे छोडने की नही होती होगी, पति का रिलीज आडर न मिलने पर तुम कर भी क्या सकती हो ?"

"भैया आपको अवश्य ही सुबह नही छोडना चाहते होगे ?" बुलबुल ने इस बार उल्टे सवाल किया।

कमला भाभी ने जवाब देने में कुछ देरी की। लगता है, चाय के कप सूखे कपडे से पोछ रही थी या सकोच कर रही थी। लेकिन नहीं, कमला भाभी ने तुरन्त बात सँभाल ली। छोटी बहू को डर दिखाती बोली "आज ही बम्बई चिटठी लिखती हूँ कि तुम्हारे भाई की बहू इस सवाल का उत्तर जानना चाहती है।"

सोमनाथ को फिर नीद आने लगी। बाहरी वार्त्तालाप से वह और नही जुड पा रहा है, पर कमला और बुलबुल बातचीत किये जा रही हैं।

जेठ को चिट्ठी लिखने की बात से बुलबुल परेशान हो उठी। सन्त्रस्त हिरणी की तरह मुखमुद्रा बना बोली "प्यारी दीदी, भया यह जान लेंगे तो मैं उनके सामने सकोच स जा ही नही पाऊँगी। आपसे माफी माँगती हूँ। कल से ठीक समय पर उठूगी ही ।"

बुलबुल और कुछ कहे, इसके पहले ही कमला भाभी ने दबे किन्तु शान्त स्वर म देवरानी का अधूरा वाक्य पूरा किया "यदि इसके लिए रात को पति के साथ प्रेमालाप बन्द करना पडे तो भी ?

अब कमला भाभी ने केटली उतार कई चम्मच चाय नापकर डाली। इसके बाद बुलबुल से बोली 'बचपन से ही मेरी नीद तडके टूट जाती है, तुमको कष्ट नही करना होगा। सुबह की चाय मैं ही बाबूजी को दे

दिया करूँगी।"

बुलबुल के चेहरे पर कृतज्ञता की रेखा उभर आयी, फिर भी उसने आपत्ति करनी चाही तो कमला न बीच मे ही टोककर कहा, ' बाथरूम मे जाकर हाथ मुह धो आओ, सोकर उठने के बाद बहू की आखा मे कीच देख काई भी पति प्रसन्न नही होता।"

बुलबुल बाथरूम मे चली गयी। कमला एक कप चाय मे दूध मिला, पल्लू सँभाल, सिर ढँक और एक प्लेट मे दो नमकीन बिस्कुट रखकर श्वसुर का देन के लिए ऊपर जाने लगी।

दोतल्ने पर एक ही कमरा है। उस कमरे म सिफ द्वपायन बनर्जी रहते हैं। सुबह वे कब जग जाते हैं, यह कोई नही जानता।

नित्यकम से निवृत्त हो द्वपायन शान्त भाव से दक्षिणवाली बालकनी मे बैठे हैं। मकान का पूर्वी हिस्सा अभी भी पूरा खुला है, उस ओर से सूय का मधुर प्रकाश धीरे से झाक रहा है। बाबूजी उधर ही देख रहे हैं। कमला की धारणा है कि वे इस समय मन-ही-मन प्राथना करते रहते है।

चाय का प्याला रख कमला ने अपने श्वसुर को प्रणाम किया। पाव छूने पर आरम्भ मे पिताजी प्रतिवाद करते थे लेकिन अब मान गये हैं। बहू को उन्होने मन प्राण मे आशीर्वाद दिया।

कमला बोली, "सुबह थोडा घूमने की आदत डालिए न ?"

द्वैपायन बनर्जी बोले, "सोचता ता हूँ, पर शरीर ठीक नही लगता है।"

इस उत्तर से कमला को सन्तोष नही हुआ। श्वसुर की हिम्मत बढान के लिए बोली, "मेरे पिताजी भी पहले घूमना नही चाहते थे, पर आजकल घूमने से उनको आराम मिलता है। गठिया वात का दद कम हो गया है और भूख भी ठीक लगती है।"

द्वैपायन बोले, "बहूरानी, खडी क्यो हो ? बैठ जाओ ना।"

पहले श्वसुर महाशय गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति थे। किसी स खास बातचीत नही करते थे, पर पत्नी की मत्यु के बाद न जाने क्या हुआ है कि एकदम बदल गये। आजकल बडी बहू से खूब बातचीत करते हैं, बहुधा वार्त्तालाप का दौर लम्बा हो जाता है।

आठ वर्ष पहले इस घर की स्वामिनी थी—प्रतिभा देवी। द्वैपायन बनर्जी ने ही कमला से कहा था, "तुम्हारी सास जो यह कहा करती थी कि भाग्य लक्ष्मी को वे ही इस घर मे खीचकर लायी हैं, वह ठीक ही था।'

इसके बाद तो बस श्वसुर महाशय पुरानी स्मृतियो म डूब जाते। कमला को बताने लगते कि किस प्रकार उनका विवाह हुआ। बचपन मे प्रतिभा कितनी जिद्दी थी। द्वैपायन से झगडा होने पर किस प्रकार सास के पास जाकर उनकी शिकायत करती थी।

आज भी लग रहा था, बाबूजी बहू के साथ जरा बात करना चाहते हैं। सुबह-सुबह बात करने को उनका बहुत मन रहता है। अपनी चाय को चम्मच से मिलाते हुए द्वैपायन ने महसूस किया कि बहू के हाथ म प्याला नही है उन्होने इससे बातचीत मे खलल अनुभव करते हुए कहा, "लगता है, तुम्हारी चाय नीचे की टेबुल पर ठण्डी हो रही है। मुझे याद ही नही रहता कि तुम मेरी बिना चीनी की चाय पहले करती हो और फिर औरो की चाय मे चीनी डालती हो। ऐसा करो, चाय का काम समाप्त कर ही तुम आओ, और इच्छा हो तो अपना प्याला भी साथ ले आना।'

कमला बोली "थोडी देर ही सही, अभी तो कोई उठा भी नही है।

पर बाबूजी राजी न हुए, बोले, 'नही, मँझली बहू जरूर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी। तुम्हारी सास मुझे डाटा करती थी, कहती थी—घर कैसे चलता है, तुम्ह क्या मालूम ? तुम तो अपनी कल्पनाओ मे ही खोये रहते हो।"

श्वसुर की बात कमला न टाल सकी। कमला की भावभगिमा से ही लगता है, वह बाबूजी को कितना मानती है। घर के और लोगो से द्वैपायन का सम्बन्ध बडा ही गम्भीर और दूर का है, पर कमला ही एक ऐसी है जो उनके बहुत घनिष्ठ है।

आरामकुर्सी पर अधलेटे द्वैपायन बनर्जी सस्नेह अपलक कमला की ओर देखने लगे। प्रतिभा ने ठीक ही कमला को पसन्द कर, इस घर की बहू बनाया था शायद उसे मालूम था कि वह अब अधिक दिन यहाँ नही रहेगी।

इस बरामदे से जोधपुर पार्क के पूर्वी और पश्चिमी रास्ते पूरी तरह दिखायी देते हैं। सरकारी दूध की बोतलें हाथ में लिये, इस रास्ते से जाते लोग बाल्कनी की आरामकुर्सी पर विराजमान द्वैपायन की ओर ध्यान से देखते हैं। शायद इस घर के मालिक के प्रति उनके मन में ईर्ष्या भी होती है। घर छोटा होते हुए भी साफ सुथरा एवं सुरुचिपूर्ण है, हालांकि इसका श्रेय द्वैपायन बनर्जी को नहीं—उनकी पत्नी प्रतिभा और बड़े पुत्र सुव्रत को है। आई० आई० टी० (इंजीनियरिंग कालेज) के एक प्रोफेसर साहब से सुव्रत ने मकान का नक्शा बनवाया था। द्वैपायन बनर्जी ने सोचा था कि विलायत से आये विदेशी उपाधि-प्राप्त आर्किटेक्ट के नक्शे से मकान बनवाने पर बहुत खर्च होगा, और मामूली सरकारी नौकरी करके वे इतने रुपये कहां से ला पायेंगे।

लेकिन प्रतिभा ने द्वैपायन की एक भी आपत्ति न सुनी। उसने बिना किसी दुविधा के पति को इस मामले में चुप कर दिया। तब वे लोग टालीगंज के सरकारी रिक्विजेशनवाले फ्लैट में रहते थे। नक्शा देख द्वैपायन बनर्जी बोले थे, "भोम्बल (सुव्रत का घरेलू नाम), ये सब मकान अमरीका लन्दन के लायक हैं अपने नहीं। मैं तो कलकत्ते में जमीन ही नहीं खरीद सकता था। यह तो सरकारी कोऑपरेटिव की कृपा से पानी के भाव ढाई कट्ठा जमीन मिल गयी और उसके दाम भी धीरे धीरे प्रत्येक महीने की तनख्वाह से चुकाये।"

प्रतिभा बोली थी, "तुम इन सब बातों को लेकर माथापच्ची क्या करते हो ? मैं और भोम्बल मिलकर जो होगा कर लेंगे। भोम्बल तुम्हारी तरह अनाड़ी तो है नहीं, अच्छे नम्बरों से आई० आई० टी० से पास है।"

कमला उस समय नवविवाहिता ही थी। वह तभी से थोड़ा-सा श्वसुर का पक्ष लेती थी। उसने कहा, "रुपये तो बाबूजी को ही देने होंगे। फिर सास से बोली, "बाबूजी ने कितनी ही अदालतें देखी हैं और कितने ही लोगों को देखा है, उनकी जानकारी बहुत है।'

प्रतिभा इस बात पर बहू से सहमत न हो सकी। ऊंचे स्वर में बोली, "इन्होंने केवल कोर्ट में बैठकर सिर्फ बस्ता भर-भर फैसले लिखे हैं, किसी प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान इन्हें नहीं। जीवन भर मुझे ही तुम्हारे

श्वसुर महाशय को रास्ता दिखाना पड़ा है। यदि पुलिन दा' से खबर मिलने के बाद, मैं इन्हें राइटर्स बिल्डिंग (पश्चिम बंगाल का सचिवालय) न भेजती तो यह जोधपुर पार्कवाली जमीन भी न मिलती। इन्होंने किसी काम की कभी चेष्टा ही नहीं की। जीवन में एक ही अच्छा काम इन्होंने किया है वह है, रिपन कालेज से कानून की डिग्री लेकर बी० सी० एस० परीक्षा में पास होना।'

द्वैपायन बनर्जी को ठीक याद है कि पत्नी की बात सुन उन्होंने धीमे धीमे मुस्कुराते हुए बहू के सामने ही पत्नी से जिरह की थी, 'प्रतिभा, और कोई भी करने लायक काम मैंने नहीं किया ?'

गृहिणी ने सस्नेह, पर पूरे आत्म-विश्वास के साथ घोषणा की थी, "परीक्षा में पास होना छोड़कर तुमने पूरे जीवन में कुछ नहीं किया।'

कौतुकपूर्ण भंगिमा से नवविवाहिता बहू को कनखियों से देखते हुए द्वैपायन ने कहा था 'बहू को साक्षी बनाता हूँ।

फिर धीरे धीरे पत्नी को याद दिलाया, "नौकरी के लिए परीक्षा पास करने के अलावा भी एक काम मैंने किया है—तुम्हें इस घर में ले आया था।

कमला ने अन्दाज लगाया था कि बाबूजी की इस गौरवपूर्ण घोषणा से माँ खूब खुश होंगी। हो सकता है कि बहू के सामने शरमायें भी। इसलिए कमला कोई बहाना बना खिसकना चाह रही थी, लेकिन सास ने उसे जाने नहीं दिया। बेटी न होने के कारण कमला पर बहुत अधिक स्नेह था।

आँखों और चेहरे पर से आह्लाद के भाव छिपा प्रतिभा देवी ने तुनकते हुए कहा सरासर झूठी बात है! इसके बाद कमला की तरफ मुखातिब हो बोली इनकी किसी बात का विश्वास मत करना, बहू! तुम अच्छी तरह जान लो, मुझे इस घर की बहू बनाने का श्रेय मेरे छोटे मामा को है। डेढ़ वर्ष तक मामा इनके पीछे घूमते रहे और ये बहाने बना बना मामा को कम से कम दो सौ बार टालते रहे। छोटे मामा को असीम धैर्य न होता तो मेरी शादी न होती। मैंने उसी दिन सोच लिया था कि अपने बेटे के विवाह में बेटी के बाप को बिल्कुल परेशान नहीं

करूँगी।'

"आपने वही तो किया।"—सास के प्रति कृतज्ञता के स्वर में कमला ने कहा। इस घर में बहू बनाकर भेजते समय कमला के माँ बाप को बिल्कुल ही कष्ट नहीं हुआ, एक सप्ताह में ही सारी बातचीत पक्की हो गयी थी।

प्रतिभा देवी ने कहा था, 'हाँ तुम्हारी शादी के समय इन्होंने कोई विरोध या आपत्ति नहीं की थी। भोम्बल ने एक बार जरा सा कहा कि थोड़ा समय दो, सोचकर देखूं। किन्तु मैंने उसे इतना फटकारा कि फिर उसकी बात बढ़ाने की हिम्मत न हुई। कालेज में इतने कठिन कठिन प्रश्नों का उत्तर लिखने के लिए तो तीन घण्टे का समय काफी है और विवाह जैसी साधारण बात के लिए अपना मत देने में हजार दिन चाहिए?"

'विवाह कोई साधारण बात नहीं प्रतिभा!" द्वैपायन बनर्जी ने बहू के सामने ही गृहिणी से ठिठोली की।

प्रतिभा अब मूल विषय पर वापस लौट आयी, बोली, 'विवाह के तीस वर्ष बाद इस रहस्य को जानने में भी कोई लाभ नहीं। अब मकान के बारे में जो बोल रही हूँ, वह सुनो। इन सब बातों को लेकर तुम परेशान मत हो। तुम्हारे बैंक की पासबुक मेरे पास ही है। प्रोविडेण्ट फण्ड और इंश्योरेन्स से तुम्हें कितने रुपये मिलेंगे, यह हिसाब भी मैंने पुलिन से करवा लिया है। भोम्बल के नक्शे के अनुसार ही मकान बनेगा। मकान चाहे छोटा ही क्यों न बने, पर ऐसा हो जिसे देखने से लोग खुश हों। बहू को चाहे तुम अपनी पार्टी में मिला लो, पर होगा वही जो मैं और भोम्बल करेंगे। मैंने कभी तुम्हारी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया है और अब दूँगी भी नहीं।"

द्वैपायन ने हँसकर कहा था, "ठीक है, जब मेरी कोई बात मानी ही नहीं जायगी, तब कम से कम ऐसी व्यवस्था तो हो कि घर के बरामदे में बैठ, मैं अपनी बातें सोच सकूं।'

"रिटायर होने के बाद तुम अपने मन मुताबिक उठ बैठ सको, इसकी व्यवस्था तो की ही गयी है—बरामदा नहीं, दूसरी मंजिल पर एक पूरी बालकनी तुम्हारे लिए तैयार की जायगी।" प्रतिभा की बातें आज भी

द्वैपायन के कानों में गूंज रही हैं। मकान बना, बाल्कनी भी बनी—केवल प्रतिभा ही न रही। द्वैपायन को कई बार सन्देह होता है कि ऐसा ही होगा यह सब प्रतिभा जानती थी। तभी उसने सारी व्यवस्था समय से पहले ही कर दी।

बाल्कनी से द्वैपायन ने एक बार फिर जोधपुर पार्क के रास्ते की ओर देखा। पैदल चलनेवाले उनकी ओर देख न जाने क्या क्या सोचते होंगे। सोचते होंगे—ये वृद्ध महाशय कितने सुखी हैं। सफलताओं से भरेपूर, स्वयं कमाये हुए सुख का भोग निश्चिन्तता से कर रहे हैं।

ऐसी भूल करने के पर्याप्त कारण हैं। मकान के सामने ही सुन्दर नामतालिका में सबसे ऊपर लिखा है—द्वैपायन वन्द्योपाध्याय। सबको ही पता है कि वे पश्चिम बंग सिविल सर्विस के रिटायर्ड अफसर हैं। उसके बाद तालिका में नाम है—सुव्रत वन्द्योपाध्याय, खड़गपुर एम० ई०। फिर है—अभिजित वन्द्योपाध्याय चार्टर्ड अकाउंटेंट। आज तो युग ही चार्टर्ड अकाउंटेंट्स का है। युग ही हिसाब का है। अभिजित के बाद सोमनाथ का नाम भी लिखा है।

छोटे लड़के सोमनाथ की बात मन में आते ही द्वैपायन परेशान होने लगते हैं। जोधपुर पार्क की चित्रनुमा इस छोटी सी दुनिया की आकृति छोटे लड़के ने ही भंग की है। सुव्रत और अभिजित दोनों ही स्कूल फाइनल में अच्छे नम्बरों से पास हुए थे। सुव्रत को तो गणित में ८० प्रतिशत डिस्टिंक्शन मार्क्स मिले थे। मँझला बेटा अभिजित स्कूल फाइनल की स्कालरशिप लिस्ट में अपना नाम छपवा लेगा, प्रतिभा देवी या द्वैपायन ऐसी कोई कल्पना भी नहीं कर सकते थे। अभिजित के लिए ही प्रतिभा ज्यादा चिन्तित रहती थीं। काजल (अभिजित का घरेलू नाम) की यार-दोस्तों में गप्पबाजी कभी खत्म नहीं होती। समय पर पढ़ता लिखता नहीं, घण्टों रेडियो सीलोन से हिन्दी फिल्मों के गाने सुनता।

अभिजित को प्रतिभा कहा करती थीं, 'तेरे भाग्य में दुर्गति लिखी है। गृहस्थ बंगाली के यहाँ पढ़ाई को छोड़कर और किसी चीज का दम-खम नहीं होता है। तू अभी तो पढ़ता लिखता नहीं है बाद में पछताएगा।

अभिजित उर्फ काजल बिना थेंपे हँसता रहता। कुछ भी कह लो, उस पर असर नहीं होता। पर जब परीक्षा फल निकला तो प्रतिभा को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि काजल को स्कालरशिप मिली है और काजल थोड़ी दूर खड़ा अपने उसी पुराने तरीके से ओठ दबाकर हँस रहा था।

प्रतिभा बोली थी, "दूर क्यों खड़ा है? आ, पास आ!" फिर बेटे को चिपका कर उन्होंने उसे चूम लिया था। सकोच के मारे काजल स्वय को माँ के आलिंगन से छुड़ा लेने की ताक में था। प्रतिभा बोली, "व्यर्थ ही तूने इतने दिनों तक मुझे चिन्ता में डाले रखा।"

उन सब दिनों की बातें याद करके द्वैपायन को भीतर-ही-भीतर हँसी आ रही थी। प्रतिभा को छोटे बेटे पर अगाध विश्वास था। सोमनाथ माँ की आज्ञा का पालन करता, छोटी उम्र से ही शान्त प्रकृति का था। उसे पढ़ने बैठने के लिए माँ को कभी डाँट-डपट नहीं करनी पड़ती। शाम होते ही खोकोन (सोमनाथ का घरेलू नाम) हाथ-पैर धोकर पढ़ने की मेज पर बैठ जाता। माँ बुलाती तब आकर चाय पीता, अन्यथा पढ़ता ही रहता। रात्रि का भोजन तैयार होने पर, प्रतिभा के पुकारने पर, किताब समेट खाने बैठता। प्रतिभा कहा करती, "खोकन के लिए मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं करनी होगी।"

द्वैपायन हँसे। आज जितनी चिन्ता है, सारी खोकन को लेकर ही तो है। तब भी एक दृष्टि से प्रतिभा ने ठीक ही कहा था। सोमनाथ के लिए प्रतिभा को कुछ भी नहीं सोचना पड़ा। सारा दायित्व द्वैपायन के कन्धों पर डाल वह असमय ही विदा हो गयी।

ऊपर बाल्कनी में जब द्वैपायन ने चम्मच से चाय मिलायी, उसी समय पहली मंजिल के कमरे में सोमनाथ ने करवट बदली।

सोमनाथ को भी माँ की बात याद आयी। सचमुच मा को अपने लाडले छोटे बेटे पर बहुत ज्यादा भरोसा था। मा का विश्वास था, छोटा बेटा ही सबसे तेज निकलेगा। इसीलिए जब एक बार टालीगंजवाले मकान में दाढ़ीवाला सिख ज्योतिषी ऐसी वैसी भविष्यवाणी कर गया तो माँ खूब गुस्सा हुई थी। वह तारीख भी सोमनाथ बता सकता है, क्योंकि

उसी दिन सोमनाथ का जन्मदिन था। उनके दरवाजे पर हाथ मे कुछ कागज लिये एक पंजाबी ज्योतिषी कालिंग बेल बजा रहा था।

घर मे उस समय माँ और सोमनाथ को छोड कोई नही था। दोनो बडे भाई कालिज चले गये थे, और बाबूजी आफिस। सोमनाथ जन्म दिन के उपलक्ष्य मे लाड से मा से बोला था, "आज तुम्हारे पास ही रहूगा मा!" यो तो मा का स्वभाव बहुत सख्त था, पर छोटे बेटे के जन्म दिन के कारण नम पड गयी थी। घण्टी की आवाज सुन माँ ने जब दरवाजा खोला तो सामने ज्योतिषी को खडे देखा।

मा के चेहरे की ओर देख ज्योतिषी तुरन्त बोला, 'तू ज्योतिष मे विश्वास नही रखती है, लेकिन तेरा चेहरा देखकर ही मैं कह देता हूँ कि आज तेरे लिए खूब आनन्द का दिन है।"

यह बात सुन मा को थोडा विश्वास हुआ। ज्योतिषी को बाहरवाले कमरे मे बिठा बोली, 'अपना हाथ नही दिखाऊँगी, अपने बेटे के भाग्य से ही जाच लूगी।" इतना कह मा ने सोमनाथ को आवाज दी।

मा के चेहरे को देखते हुए मुह से बडबडाकर कुछ हिसाब किताब करते हुए, सिख बोला, 'बेटी तेरे तीन घडे है।" घडे से ज्योतिषी का अभिप्राय तीन लडके से है, यह समझने मे माँ को देर नही लगी। गणना मिल रही है यह देख कुछ खुश भी हुई। किन्तु तभी उस ज्योतिषी ने एक भयकर भूल कर दी, बोला 'तुम्हारे प्रथम दोनो घडे सोने के हैं, और छोटा मिट्टी का।"

सुनते ही माँ का मिजाज बिगड गया। इसी बीच सोमनाथ के वहाँ आ जाने के बावजूद मा ने ज्योतिषी को विदा करते हुए कहा, 'ठीक है, आपको अब कोई हाथ नही देखना है।"

ज्योतिषी की बात का माँ विश्वास नहीं करना चाहती थी। उसकी धारणा थी उसके तीनो घडे सोने के है। लेकिन आखिर मे क्या हुआ?

सोमनाथ ने करवट बदली। एक मच्छर पैरो के पास तग कर रहा है। ढेरो दुश्चिन्ताएँ दिमाग मे उलझन पैदा कर रही है और बीच बीच मे मच्छर की तरह भन भन आवाज कर रही हैं। नौकरी के बाजार की क्या हालत हो गयी—इतनी चेष्टा करके भी एक सामान्य सा काम नही

जुटा पाया।

शायद सोमनाथ बडे भैया और छोटे भैया की तरह तेज नही। उसको स्कूल फाइनल मे फस्ट डिवीजन नही मिला। किन्तु क्या जो लडके थड डिवीजन मे पास हुए है, उन्ह जीने का अधिकार इस देश मे नही ? क्या वे सब गगा मे डूब मरें ?

पिछले ढाई वर्षों मे सोमनाथ ने नौकरी के लिए कई हजार आवदन-पत्र लिखे है, किन्तु वे आवेदन केवल निवदन ही होकर रह गये ह। आज-कल नौकरी के बार मे सोचने का भी उसका मन नहीं करता। कुछ होता-जाता तो है नही, बेकार म मन और खराब होता है।

इन्ही विचारो म उलझे सोमनाथ को एक बार फिर नींद का झोका आने लगा।

सोमनाथ को लग रहा है नौकरी का चक्कर अब खत्म हुआ। झकाझक सफेद शट पण्ट पहन, नीली टाई लगा, सोमनाथ एक प्रसिद्ध विदेशी कम्पनी के मीटिंग रूम मे बैठा है। देशी साहब इण्टरव्यू ले रहे हैं। वे एक के बाद एक बातो के तीर चलाते है और सोमनाथ बिना हिचके आराम से सब प्रश्नो के उत्तर देता जा रहा है। उसी बीच एक अफसर बालता है मिस्टर बनर्जी आपने लिखित पर्चे मे विदेशी पूजी के विषय मे बहुत सुदर उत्तर लिखा है। इसी सन्दभ म, मैं और दो एक बातें आपसे जानना चाहता हूँ।' इससे सोमनाथ को बिल्कुल घबराहट नही हुई, क्योकि विदेशी पूजी मे विविध प्रश्नो के बारे मे जो सवाल हो सकते हैं, उनके उत्तर उसे मुहजबानी याद हैं।

इण्टरव्यू समाप्त कर शिष्टतापूवक धन्यवाद दे जब सोमनाथ बाहर जा रहा था, उसी समय एक तन्वगी एग्लो इण्डियन सेक्रेटरी ने मीटिंग रूम के बाहर उसका रास्ता रोककर कहा, 'मि० बनर्जी, आप चले मत जाइएगा। थोडी देर रिसेप्शन हॉल मे प्रतीक्षा कीजिएगा।"

पन्द्रह मिनट बाद सोमनाथ की फिर बुलाहट हुई। पर्सोनल अफसर ने अभिनन्दन किया एव हाथ मिलाते हुए कहा, "समझ ही गये होगे, हम लागो ने आपको ही चुना है। दो एक दिन मे ही जनरल मैनजर की हस्ताक्षर की हुई चिट्ठी आपको मिलेगी। नियुक्ति पत्र पाते ही आप हम

सूचना दीजिएगा कि कब से आप काय आरम्भ करेंगे।"

इसी चिट्ठी के लिए अधीर हो प्रतीक्षा कर रहा है सोमनाथ। कब कमला भाभी कमरे का दरवाजा खटखटाकर प्रफुल्लित मुख से कहेंगी, ला, तुम्हारी चिट्ठी! अभी अभी पिउन दे गया है।'

सच ही कोई खटखटा रहा था। सोमनाथ की नींद टूट गयी। चूड़ी की आवाज से ही सोमनाथ समझ गया कि कौन खटखटा रहा है। इसका मतलब यह इण्टरव्यूवाला घटना चक्र ही झूठ था। सुबह सुबह सोमनाथ इतनी देर से सपना देख रहा था।

सोमनाथ ने दरवाजा खाल दिया। छोटे भैया की बहू बुलबुल खड़ी है। सोमनाथ और बुलबुल मे छेड़छाड़वाली दोस्ती है। दोनो चार वर्षों तक कालेज मे सहपाठी थे। बुलबुल ने कहा 'गुड मार्निंग बीती विभावरी जाग री पक्षी कलरव कर रहे हैं, रात्रि शेष हो गयी है, और कितनी देर सोओगे ?"

सोमनाथ गम्भीर भाव से लेटा रहा। मन-ही मन बोला 'बेकार आदमी हूँ, सुबह सुबह उठकर ही क्या करूँगा।'

बुलबुल ने फिर कहा, दीदी का हुक्म है, सोम को उठा दो।"

भाभी कहाँ हैं?' सोमनाथ ने पूछा।

'भाभी अभी अपने कामों मे व्यस्त हैं।"

सोमनाथ इस बात से सहमत न हुआ 'भाभी का इकलौता बेटा, पुरुलिया के रामकृष्ण मिशन स्कूल बोर्डिंग म है भाभी के पति कई दिनो से आफिस के काम से कलकत्ते के बाहर गये हैं, इसलिए भाभी अभी अपने कामो मे कैसे व्यस्त हो सकती है ?"

बुलबुल आठ टेढाकर बोली 'ठहरो दीदी को रिपोट करती हूँ। पति को छोड, क्या हमे कोई भी काम नही रहता ?'

सोमनाथ ने अधीर स्वर से कहा, 'ओह! बोलो ना भाभी कहा हैं?'

बुलबुल ने हँसकर कहा, 'मैं भी तो तुम्हारी भाभी हूँ।'

"मैंने तो अभी भी तुमको भाभी की मान्यता प्रदान नही की है। भैया की बहू होने से भाभी नही हुआ जाता समझी ?' सोमनाथ बोला।

तो क्या हुआ जाता है ?' सहास्य आखें बडी कर बुलबुल ने जानना

चाहा।

'वह सब तुमको समझाने मे बहुत समय लगेगा।" सोमनाथ ने उत्तर दिया, "ठीक समय पर बताया जायेगा। अभी बताओ, भाभी कहा है?"

बुलबुल बोली, 'दीदी दूसरी मजिल की बाल्कनी म बाबूजी के साथ बातें कर रही हैं। उनके सिर पर ढेरा जिम्मेवारिया हैं, आखिर हैं भी घर की बड़ी मालकिन।"

सोमनाथ ने पूछा, "तुम्हारे मालिक जग गये?"

बहुत सुबह उठ गये थे। आफिस म न जाने कौन-सी जरूरी मीटिंग है। अभी गाडी आ जायेगी, इसलिए नहाने गये हैं।'

फिर बोली, "उनके आफिस को पता नही क्या हुआ है। जब देखो तब काम, काम। खटा मार रहे हैं।" इतना कह बुलबुल सोमनाथ के लिए चाय लाने चली गयी।

आफिस मे खटाकर मारनेवाला प्रसग सोमनाथ को अच्छा नही लगा। नौकरी मिल जाये तो हजारो बेकारो का खटन म कोई आपत्ति नही है। नौकरीवाले भी खूब हैं। नौकरी करते हैं यही काफी नहीं इससे मन नही भरता। काम करने मे भी उन्हें आपत्ति है।

चाय पीकर सोमनाथ चुपचाप बैठा था। क्या करे कुछ सोच नही पा रहा था। हाथ पर हाथ धर बैठने के सिवा बेकारो का काम भी क्या है?

कमला भाभी उपर से अँग्रेजी का अखबार लेकर नीचे आयी। सोमनाथ ने देखा, बाबूजी ने इसी बीच कई नौकरियो के विज्ञापन पर लाल निशान लगा दिये हैं। बाबूजी का यह रोज का काम है। बाबूजी अखबार की सुर्खिया पढने के पहले ही दूसरे पन्ने पर नौकरी के लिए वर्गीकृत विज्ञापनो को पढते हैं जो ठीक लगते हैं उन पर लाल निशान लगा देते हैं। विज्ञापन इसलिए नही काटते कि घर के और लोगो को भी अखबार पढना रहता है। दोपहर के खाने के बाद कमला भाभी अखबार फिर बाबूजी के पास पहुँचा देती हैं। बाबूजी खुद ब्लेड से

विज्ञापन काट सोमनाथ के कमरे मे भेज देते हैं।

कमला भाभी की इच्छा नही रहती कि सोमनाथ चुपचाप घर मे बैठा अपना समय बिताये। इसीलिए उन्होंने ज़ोर-जबरदस्ती करके उसे गरियाहाट बाजार भेज दिया, बोली, "तुम्हारे भैया तो है नहीं, और श्रीमान भजहरि पर रोज विश्वास करने का साहस नही होता। ज्यादा दाम देकर रद्दी सामान उठा लाता है। उसका भी दोष नही, गरीब समझकर आजकल दुकानदार भी ठग लेते हैं।"

पाजामे पर कुर्ता डाल सोमनाथ घर से निकल पड़ा। हाथ म थैला लिये जा सोमनाथ गरियाहाट बाज़ार मे तालाब की ताज़ी मछली खरीद रहा है उसे देख कौन कहेगा कि यह बगाल के लाखो भाग्यहीन बेकार युवको मे एक है? खरीद फरोख्त करते समय कई लोग अपनी घड़ी देखते जाते हैं कि दफ्तर मे देर न हो जाय। उन्हे देख सोमनाथ को न जाने कैसी बेचैनी होती है। उसे आफिस जाने की जल्दी नही यह बात और लोग भी जानें यह उसकी बिल्कुल इच्छा नही है।

कालेज मे पढते वक्त सोमनाथ ने अनेक बार खरीदारी की है, लेकिन कभी भी इस प्रकार की परेशानी का अनुभव उसे नही हुआ। रास्ते मे या बाजार मे कोई परिचित मिल जाने पर उसे अच्छा ही लगता था। लेकिन अब दूर से ही किसी को देख वह अनदेखा करने का प्रयास करता है। कारण और कुछ भी नही बस लोग अनजान मे पूछ बैठते है— क्या कर रहे हो? जब तक कालेज के रजिस्टर मे नाम था, तब तक जवाब देने मे असुविधा नही होती थी। अब असुविधा ही असुविधा है।

सूने रास्ते मे जहा शेर का डर होता है वही साँझ हो जाती है! बाज़ार के फाटक के पास ही सोमनाथ को सुनायी दे गया, "सोमनाथ? क्या बात है भई, तुम्हारी तो आजकल कोई खबर ही नही है?"

सोमनाथ ने सिर उठाकर देखा—अरविन्द सेन! उसके साथ ही कालेज मे पढ़ा करता था। अरविन्द स्वय ही बोला, "यू विल बी ग्लैड टू नो, वेस्ट कीन रिचड्स म मैनेजमेण्ट ट्रेनी बन गया हूँ। अभी सात सौ रुपये दे रहे हैं। गरियाहाट की मोड़ से कम्पनी की मिनी बस फैक्टरी ले जाती है। रोज साढे सात बजे मुझसे यहाँ मिल सकते हो। उस ओर के

फुटपाथ पर खडा होता हूँ आज सिगरेट खरीदने इधर आया तो सौभाग्य से तुमसे मिलना हो गया।"

सोमनाथ ने लक्ष्य किया, अरविन्द के हाथ मे गोल्ड फ्लैक सिगरेट है। "पियो न एक ?" अरविन्द ने पैकेट आगे बढाते हुए कहा।

सोमनाथ ने सिगरेट नही ली। अरविन्द हँसा, "तुम अभी तक भले लडके ही बने हो! लडकियो को घूरा नही, सिगरेट पी नही, अश्लील पत्रिकाएँ पढी नहीं।"

अब अरविन्द ने पूछ ही डाला 'तुम क्या कर रहे हो ?"

सोमनाथ को बहुत शर्म का अनुभव हुआ। कागज के दजनो दस्तो पर नौकरी के लिए आवेदन-पत्र लिखना छोड कुछ भी नही करता, यह बात कहने मे वह शर्म से पृथ्वी में गडा जा रहा है। किसी प्रकार अपने को सहेज धीरे से कहना चाह रहा था 'देख रहा हूँ कि सोच समझकर क्या काम किया जा सकता है।'

लेकिन उसके पहले ही अरविन्द बोल पडा "भई, बात छिपाने की कोशिश क्यो कर रहे हो ? सुना है, तुम विदेश जा रहे हो ? यह तुमने अच्छा ही किया। हम सुबह-सुबह साढे सात बजे घर से निकल पाच वर्षों तक, कारखाने की तेल धूल मे काले पीले हो, मरते पडते वस्ट कीन रिचडस के जूनियर अफसर बनेंगे। और तुम तीन वर्ष बाद विदेश से लौटकर हो सकता है वेस्ट-कीन मे ही मेरे बॉस बनकर आ जाओ।"

विदेश जाने की बात एकदम झूठी होने के बावजूद सोमनाथ को यह बात अच्छी लग रही थी, "तुमसे किसने कहा ?' सोमनाथ न प्रश्न किया।

"नाम नही बताऊँगा, पर तुम्हारा ही कोई मित्र है।" अरविन्द ने उत्तर दिया।

'गर्ल फ्रेण्ड भी हो सकती है।" यह कह अरविन्द रहस्यमयी हँसी हँसा, "खूब छिपाकर काम पूरा कर डालने का मन है ना तुम्हारा ?" अरविन्द बोला।

दूर से वेस्ट कीन की चमकती मिनी बस को आती देख अरविन्द बोला, 'तुम्हारे साथ बहुत सी बातें करनी हैं। दो-एक दिनो म ही तुमसे

मिलने की जरूरत पडेगी। आगामी रविवार की शाम को कोई प्रोग्राम मत बनाना। शाम खाली रखना। यथासमय इसका कारण जान जाओगे। तुम्हारे घर का पता ?"

सोमनाथ ने घर का पता बता दिया। अरविन्द दौडकर मिनी बस मे चढ गया।

सामान का थैला रसोईघर मे रख अपने कमरे मे बैठा सोमनाथ सोच रहा था कि विदेश जाने का बात सुन अरविन्द सेन ने खूब सम्मानपूर्वक बात की। उसके पिता केन्द्रीय सरकार म बडे अफसर हैं। अरविन्द छोटी सी एक गाडी ड्राइव करके कालेज आया करता था। सोमनाथ के साथ अरविन्द की खास दोस्ती न थी। लेकिन विदेश जाने की यह कहानी किसने बनायी ? दो-एक परिचित महिलाओ के चेहरे आँखो मे तैर आये। कई चेहरो के बाद तपती का चेहरा भी सामने आया। हो सकता है तपती ने अपनी ओर से बात टालने के लिए यह कहानी रत्ना को गढकर सुना दी होगी। कालेज मे तपती और रत्ना की खूब पटती थी। अरविन्द जमकर रत्ना से प्रेम कर रहा है, इस खबर से सब परिचित हैं।

लेकिन तपती क्यो जानबूझ कर मित्रो की टोली मे सोमनाथ को इस प्रकार पशोपेश मे डालेगी ? सोमनाथ और कुछ सोचने ही जा रहा था कि उसकी चिन्ताओ मे बाधा पडी। बाहर कालिंग बेल बज रही थी।

कमला भाभी ने सूचना दी, सुकुमार आया है। दुबले पतले, लम्बे सावले मधुर स्वभाववाले इस लडके से कमला भाभी को विशेष स्नेह है। वह बेचारा भी बेकार है। उसकी उज्ज्वल किन्तु कातर आखो को देख कमला को ममता होती है।

बैठक के कमरे म सोमनाथ के घुसते ही सुकुमार बोला, 'तुम्हे हो क्या गया है ? साढे आठ बज गये, और अभी तक बिस्तर का मोह नही छूटा ?

सोमनाथ इसी बीच बाजार हाट हो आया है यह बात उसने नही कही। बोला, 'बेकारो को और क्या करना रहता है, तू ही बता ?'

'फिर वही गन्दी बात दोहरायी तूने। तुमसे कहा है ना कि विधवा' की तरह बेकार शब्द भी मुझे बहुत बुरा लगता है। हम नौकरी ढूढ रहे

हैं इसलिए हम उम्मीदवार कहा जा सकता है।"

'तू मुझे पहली पुस्तकवाला उपदेश दे रहा है—अच्छे लडके कान को काना, लँगडे को लँगडा, बेकार को बेकार नहीं कहते।" सोमनाथ ने प्रतिक्रिया व्यक्त की।

सुकुमार बोला, "ठहरो बाबा। कडी धूप मे यादवपुर कालोनी से पैदल चलकर यहाँ जोधपुर पाक पहुँचा हूँ। गला सूख रहा है, एक गिलास पीने का पानी का मिल जाता तो अच्छा रहता।"

कमला भाभी ठण्डा पानी ले आयी, फिर बोली, "चाय पियोगे ना, सुकुमार ?"

सुकुमार खुश होकर बोला "भाभी, जुग-जुग जियो।"

भाभी के जाने के बाद सुकुमार मित्र से बोला 'माँ कसम' तू बडा भाग्यवान है। जब-तब चाय का आडर दे देना अब हमारे घर म बन्द हो गया है, बाइ आडर आफ दि होम बोड (होम बोड के हुक्म से)।" सुकुमार को किन्तु इस बात पर कोई क्रोध नही। थोडा हँसकर मित्र से बोला, 'ठहर एक नौकरी जुटान दे, फिर घर मे आमूल-चूल परिवतन करूँगा। जब चाहूँ तब चाय पीने के लिए एक बिजली का चूल्हा खरीद लूगा। चाय, चीनी और दूध का खच मिलने पर घर मे कोई कुछ न कह सकेगा।"

सुकुमार सचमुच अभागा है। उसके लिए सोमनाथ को भी दुख होता है। सुना है यादवपुर मे खपरैल के एक कच्चे मकान म रहता है। विवाह-योग्य तीन बहनें पैसे के अभाव मे कुमारी बैठी हैं। पिछले वर्ष सुकुमार के पिता के रिटायर होने की बात थी। साहब के सामने हाथ-पाव जोड किसी प्रकार एक साल की मियाद और बढवायी है। लेकिन तीन महीने बाद ही नौकरी खत्म हो जायेगी। उसके बाद उन लोगो का क्या होगा ? सुकुमार ही सबसे बडा है। और दो भाई छोटी क्लासो मे पढते हैं। दो तीन महीनो के भीतर नौकरी न जुटने पर सवनाश की स्थिति उत्पन्न होगी। पिता को पेन्शन भी नही मिलेगी, प्रोविडेण्ट फण्ड से रुपये उधार लिये हैं और ऊपर से कोऑपरेटिव सोसाइटी का भी कुछ कज चुकाना है। बडी दीदी के विवाह मे ऋण लेने के सिवा कोई उपाय नही

था। यह सब चुकाने के बाद सुकुमार के पिताजी को शायद छ हजार रुपये मिलेंगे। उन्होंने सोचा है कि उसके तीन हिस्से कर प्रत्येक लडकी के नाम, दो दो हजार रुपये कर देंगे। हालाँकि सुकुमार के पिता जानते हैं कि इस जमाने म बस्ती की महरिया की शादी भी दो हजार म नहीं हो सकती, पर लडकियाँ ऐसा न सोच लें कि पिताजी न हमारे लिए कुछ भी नहीं किया, इसलिए वे रुपयो का बँटवारा कर देंगे।

सुकुमार का परिचय इस घर म सबस था। सोमनाथ के साथ वह एक ही कालेज म पढा है। सोमनाथ की ही तरह सकेण्ड डिवीजन म पास हुआ था सुकुमार। उसके बाद सोमनाथ की तरह साधारण बी० ए० पास किया है सुकुमार न। हो सकता था सुकुमार थोडे और अच्छे नम्बर ले आता लेकिन परीक्षा के समय ही माँ बहुत बीमार पड गयी। जब गयी, तब गयी की हालत थी। ब्लड बैंक म खून देकर सारी रात रोगी की सुश्रूषा कर परीक्षा म बैठा था सुकुमार। मँझली बहन कना यदि डाटती नहीं तो हो सकता था कि सुकुमार परीक्षा म बठता ही नहीं।

चाय का प्याला रख कमला भाभी न पूछा, 'कस हो सुकुमार ?

उन्मुक्त हँसी हँस सुकुमार बोला, "ठीक हूँ भाभी। निकट भविष्य म कइ नौकरियो का चान्स है।'

कमला भाभी सस्नेह बोली, लगता है चाय खब कडी नहीं बनी है। तुमको तो हल्की चाय पसन्द नहीं है ? '

सुकुमार ने देखा चाय के साथ भाभी दो बिस्कुट भी लायी है। दोनो हाथो को द्रुत गति स परस्पर रगड सुकुमार बोला 'भाभी यदि भगवान आपको युनाइटेड बैंक का पर्सोनल मनजर बना देता '"

न समझ पाने क कारण सोमनाथ ने प्रतिवाद किया, 'क्या र, भाभी कौन स दुख स बक म नौकरी करन जायेंगी ?'

सुकुमार सहजता से बोला, मानता हूँ, भाभी को थोडा कष्ट होता। पर तुमको और मुझे एक अवसर मिल जाता। जब हम दोना भाभी के आफिस के कमरे म घुसते तो भाभी केवल स्नेह से चाय ही नहीं पिलाती लौटत वक्त हाथ म एक एक नियुक्ति पत्र भी थमा देती।"

सुकुमार की बात सुन कमला भी हँस पडी। दोना बेचारो की दुदशा

देख कमला के मन में आया, यदि ऐसा कोई पद उसे प्राप्त हो जाता तो अच्छा ही होता। किसी प्रकार इन दोनों के चेहरों पर थोड़ी खुशी की रेखा खिंच पाती।

सुकुमार ने नौकरी की उम्मीद अभी भी नहीं छोड़ी थी। हमेशा सोचता रहता, अबकी बार अवश्य ही कोई न कोई मिलेगी। चाय पीते-पीते वह सोमनाथ से बोला "अब थोड़े दिनों की बात है। इसके बाद हो सकता है कि इस देश में 'बेकार' जैसा कुछ रह ही न जाय।"

सोमनाथ की भी पहले ऐसी ही धारणा थी, पर अब विश्वास नहीं रहा।

सुकुमार बोला "एकदम भीतर की खबर है। रेलवे [illegible] आफिस विभाग में दो हज़ार पोस्ट तैयार हो रहे हैं। महीना [illegible] बढ़िया है—दो सौ दस। उसके साथ घर का किराया, डी० ए०। [illegible] बाद यदि किसी प्रकार कलकत्ते में पोस्टिंग करवा ली जाए [illegible] पाँचों अँगुलियाँ घी में। घर का खाना खा पी पूरा महीना [illegible] लूँगा और कलकत्ते में रहने की कम्पेन्सेटरी अलाउन्स [illegible] से मिलेगी।'

वे दिवास्वप्न देख रहे हैं। इस तरह बात कर रहे हैं मानो नौकरी उन लोगों की जेब में हो।

दिन भर पूरे शहर में पैदल घूमता रहता है सुकुमार। एम्प्लायमेंट एक्सचेंज, राइटर्स बिल्डिंग्स, कलकत्ता कार्पोरेशन, विभिन्न बैंक, कारखान, आफिस कुछ भी बाकी नहीं रखता। इसके अलावा विभिन्न राजनीतिक दलों के कई एम० एल० ए० और दो कारपोरेशन कौंसिलरों के साथ भी सुकुमार ने परिचय जोड़ लिया है।

सुकुमार बोला, 'दो-चार दिन पहले अचानक पिताजी मुझ पर नाराज हो गये। उनकी धारणा है कि नौकरी के लिए मैं पूरी कोशिश नहीं करता। भाई बहनों के सामने चिल्लाने लगे—'हाथ पर हाथ धरकर चुपचाप घर में बैठे रहने से नौकरी आकाश से टपककर नहीं आ जायगी।' तभी से यह 'घुमन्तू' पालिसी अपना ली है। कसम खा ली है, दोपहर के समय घर पर नहीं रहूँगा।"

सोमनाथ भी अनजानी आशंकाओं से सहम गया। सुकुमार के घर की बातें सुन उसे बेचैनी-सी होने लगी। सुकुमार दुख भोग रहा है किन्तु किसी चीज का बुरा नहीं मान रहा, मान-अपमान भी नहीं। खूब सहज भाव से सुकुमार बोला, "मैं सोचता था माँ मेरा दुख समझेगी, लेकिन माँ ने भी पिताजी का ही पक्ष लिया। एक बार सोचा, कहूँ कि कलकत्ता शहर में यों ही घूमने में भी पैसे लगते हैं। दोनों वक्त यादवपुर से डलहौजी पैदल तो जाया नहीं जा सकता।"

लेकिन सुकुमार की बातचीत में किसी के प्रति कोई आक्रोश या शिकायत नहीं है। अपमान और दुख को उसने सहज भाव से स्वीकार कर लिया है।

आजकल सुकुमार का साथ सोमनाथ को बहुत अच्छा लगता है। कालेज में एकसाथ पढ़ने पर भी उस समय ऐसी दोस्ती नहीं थी। वह सुकुमार को खास पसन्द नहीं करता था—अपने दो चार परिचित मित्र एवं मित्राओं के साथ ही सोमनाथ समय बिताया करता था। नौकरी का दुःस्वप्न इस प्रकार जीवन को आच्छादित कर देगा इसकी कल्पना तक सोमनाथ को न थी।

बी० ए० पास करने के बाद, ढाई वर्ष पहले दोनों सहपाठी अचानक एक दूसरे से एम्प्लायमेण्ट की एक्सचेंज की लाइन में मिल गये। साढ़े पाँच घण्टा से दोना एक ही लाइन म खड़े थे। सुकुमार ने मूंगफली खरीद उसम से सोमनाथ को हिस्सा दिया। थोड़ी देर बाद कुल्हड़ म चाय खरीद सोमनाथ ने मित्र को कुल्हड़ म चाय पिलायी। लम्बी लाइन में खड़े रहने से सोमनाथ का मुँह सूख गया था। इस प्रकार का अनुभव उसके लिए नया था। सोमनाथ की मन स्थिति सुकुमार समझ गया, किन्तु तब सुकुमार के मन मे बहुत-सी आशाएँ थी। मित्र को उत्साह दिलाता वह बोला था, 'चिन्ता मत करो, सोमनाथ! देश की ऐसी हालत हमेशा नहीं रहेगी। नौकरी एक दिन अपने को मिलेगी ही।"

दोनो ने एक-दूसरे के पते ठिकाने लिये। थोड़े ही दिनो बाद सुकुमार जोधपुर पार्क के मकान पर सोमनाथ को खोजता आ पहुँचा। सोमनाथ का सुसज्जित मकान देख सुकुमार को बहुत प्रसन्नता हुई थी। बातों ही बातो म सुकुमार एक दिन बोला था, 'हम लोगों के पास केवल डेढ़ कमरे हैं और बैठने के लिए एक कुर्सी भी नहीं है। नौकरी मिलते ही सब ठीक करना होगा। दो कुर्सियाँ, एक मेज और खिड़कियों के परदे खरीदने ही होंगे। मेरी बहन ने परदों का रंग तक पसन्द तक कर रखा है। किस दुकान से लेने हैं, यह भी निश्चित है। सिर्फ नौकरी मिलने की प्रतीक्षा है।"

सोमनाथ ने सुकुमार के घर जाने का उत्साह दिखाया था, लेकिन सुकुमार टाल गया। साफ-साफ बोला, "पहले नौकरी मिलने दे तब तुम्हें घर ले जाकर मिठाई खिलाऊँगा। अभी घर के जो रंग-ढंग है, उसम तुम्हें कोई एक कप चाय तक नहीं देगा। घर मे बैठा भी नहीं पाऊँगा, मकान के बाहर खड़े खड़े बातें करनी होगी।"

सुकुमार को परेशानी होगी, सोचकर सोमनाथ ने उसके घर जाने की बात फिर नहीं की। पर दोना मित्र आपस मे प्राय मिलते रहते थे। जोधपुर पार्क से गप्प लगाते-लगाते वे जाने कब सलेमपुर की मोड़ तक चले आये थे। दोना की व्यथा एक थी, सुख दुख की ढेरों बातें दोनो करते रहते थे।

आज भी सुकुमार बोला, "घर मे बैठे बठे क्या करोगे ? चलो थोडा घूम आयें।"

घर स निकलन का अवसर पा सोमनाथ खुश हुआ। पैन्ट पर एक बुशशर्ट डाल सुकुमार के साथ सडक पर निकल पडा।

सडक पर सुबह की भीड को देख सोमनाथ को अपन दुख की याद आ जाती है। पृथ्वी कितनी करुणाहीन है, यह भलीभाँति शायद वह अभी भी नही समझ पाया था। घर मे बाबूजी, भया, भाभी सब उसको इतना प्यार करते है पर घर के बाहर इस जन-अरण्य मे उसकी कोई कीमत नही है। दूसरो से प्रतिस्पर्द्धा कर वह सुबह के दस से शाम के पाँच बजे तक की एक नौकरी भी नही जुटा पाया।

सुकुमार ने पूछा था, 'तुम्हें क्या हुआ—अचानक तुम इतने चिन्तित क्यो हो गये ?'

सोमनाथ बोला, 'सोचता हूँ, घर की दुनिया में और बाहर की दुनिया मे कितना अन्तर है।'

'मारो गोली, कविता छोडो !" सुकुमार ने फटकारते हुए कहा, "तुम भाग्यवान हो। अधिकाश लोगो के लिए बाहर और भीतर दोनो ही नरक हैं। मुझे ही देखा ना जुलाई से बाबूजी की नौकरी खत्म हो जायेगी। घर का बडा लडका हूँ पर मेरी कोई इज्जत नहीं।"

क्या ?" सामनाथ ने पूछा।

"नौकरी रहने से इज्जत होती। अब माँ, बाबूजी, बहन भाई आदि, सभी कहते हैं गुड फॉर नथिंग (किसी काम का नही)। बहुत-से जवान लडके इस कडकी मे भी नौकरी ढूढ लेते हैं, केवल मैं ही निकम्मा हूँ। बाबूजी भी बीच-बीच मे कहते हैं बाझ धरती में बीज बोया है, अकुर कैसे फूटे ! सुकुमार को बी० ए० तक पढ़ा मैंने बहुत बडी गलती की है। अपढ होता तो कम स-कम किसी के घर नौकर बनकर तो अपना पेट भर सकता था।''

सोमनाथ बिना उत्तर दिय चुपचाप गरियाहाट की तरफ चलने लगा। बायें हाथ की दो उँगुलियो का चटकाकर सुकुमार बाला, 'मैंन भी तो कम भूल नही की ह। स्कूल फाइनल परीक्षा के समय अगर

भगवान की मनौती मान, प्रसाद चढा, उसे बहका फुसलाकर फस्ट डिवीजन ले आता तो सबको दिखा देता, नौकरी किसका कहते हैं।"

सोमनाथ बोला, "बेकार म क्यो दुखी होते हो ? तुम्हारे और मेरे सेकेण्ड डिवीजन को तो अब धुलाकर फस्ट किया नही जा सकता।"

सुकुमार बोला, "बडा दुख होता है यार ! ब्रेबोर्न रोड की एक बैंक स्कूल फाइनल मे फर्स्ट डिवीजन पानेवाले को क्लक की नौकरी दे रही है, कम-से कम ६४ प्रतिशत अक दिखाने होगे।"

सोमनाथ ने इस बात का बुरा नही माना। उसने आजकल अविश्वास करना शुरू कर दिया है। बोला, ' यह भी एक प्रकार की चालाकी है।"

सुकुमार बोला, "कह देने से चालाकी हो गयी ? बैंक के नोटिस बोड पर लिखा है।"

"जिस लडके को स्कूल फाइनल मे ६४ प्रतिशत नम्बर मिले हों, वह किस दुख से अपनी पढाई लिखाई पानी म डुबा बैंक मे क्लर्की करने जायेगा ?" सोमनाथ ने खूब आक्रोश स जानना चाहा।

"यह तो मेरे दिमाग मे आया ही नही। बाबूजी झूठ थोडे ही कहते हैं कि मेर दिमाग मे खाली गोबर है।" सुकुमार का चेहरा उदास हो गया।

चलते चलते वे गोल पाक के पास आ खड़े हो गये। सुबह आफिस का वक्त था, बहुत-सी गाडियाँ सर-सर करती निकल गयी। बस, टैक्सी, मिनी बस, किसी मे भी तिल धरने की जगह न थी। जन स्रोत को एकटक देखता सुकुमार अचानक बोला 'ना भई, अब और नही देखूगा। शेष पयन्त किसी की नौकरी का मेरी शनि दष्टि लग जायगी। मन को जितना ही सयत करने का प्रयास करता हूँ, उतना ही छिटककर यह दूसरा की नौकरी को नजर लगाता है। भीतर ही भीतर लोभ से भरा मन सोच रहा है कि इतन लोगा को काम मिला हुआ है , फिर सुकुमार मित्तिर ही क्यो बेकार है ?"

'जितने लोग आफिस जा रह हैं क्या वे सब फस्ट डिवीजन से पास हुए हैं ?" सोमनाथ ने प्रश्न किया।

सुकुमार बालो म अँगुलिया फेरता बोला, ' खूब बडा सवाल किया

है। तुम्हारा त्याग अच्छा है। जो भी हो, बचपन में दूध घी खाया-पिया है। इतने कुशाग्र बुद्धि होते हुए भी तुम पढ़ने लिखने में ही क्या विद्यासागर नहीं हुए ?'

सुकुमार ठीक हो तो बोला। पढ़ने लिखने में अपने बड़े भाइयों जैसा ज्ञान पर सचमुच ही सोमनाथ का भाई दुख नहीं रहता, पर अपने मन की बात सोमनाथ ने नहीं कही। सुकुमार का जैसा निश्छल स्वभाव है, हो सकता है, एक दिन सारी बातें समझना अभी को ही कह दे। सोमनाथ पहले प्रसंग को दुबारा उठा बोला, "बहुत-से कठिन प्रश्न मस्तिष्क में आते हैं, पर खोजने पर उनका उत्तर नहीं मिलता।"

सुकुमार सिर खुजलाता हुआ बोला तुम्हारे प्रश्न ने मुझे चिन्ता में डाल दिया है। ठहरो, सोचता हूँ।"

दूर से आती गरिया से हावड़ा जाती एक पाँच नम्बर बस में एक क्षण के लिए चमगादड़ की तरह लटके हुए सुकुमार के पिताजी को उन दोनों ने देखा। पचासक लोग उस बस की ओर दौड़े, पर बस उनके लिए न रुकी, निपुणता से दो बसों को ओवरटेक कर वह बस भाग गयी। सुकुमार ने उस दिशा में देख कहा, 'मेरे पिताजी को ही ले लो। यह डिवीजन पास भी नहीं। रेड अप टु मैट्रिक (दसवीं क्लास तक पढ़े हैं), पर तो भी आफिस में क्लर्की मिली तो ?"

सोमनाथ बोला, "वह सब अंग्रेजों के जमाने की बात है। तब हम स्वाधीन नहीं थे।"

सुकुमार लड़का सरल है। उसे भोला भी कह सकते हैं। जीवन में कदम कदम पर धक्के खाकर भी वह कटु नहीं हुआ था। वह बोला, "तब तो अंग्रेज ही अच्छे थे, नॉन मैट्रिक मिडिल पास भी उस वक्त क्लर्क बन जाता था और अब हजारों हजार ग्रेजुएट घर में बेकार बैठे हैं।'

"तुम्हारी नौकरी के लिए अंग्रेजों को वापस बुलाया जाये !" सोमनाथ ने चुटकी लेते हुए कहा।

"मैं तुम्हें स्पष्ट कह देना चाहता हूँ—समानता, मैत्री स्वाधीनता, मैं यह सब कुछ भी नहीं समझना चाहता। जो मुझे नौकरी देगा, मैं उसी

की पार्टी को मानूगा—मोहम्मद अली जिन्ना हो या माओत्से तुग हों, तो भी मुझे कोई आपत्ति नही है।"

"धीरे बोलो!" सोमनाथ ने सुकुमार को सावधान किया, "कोई सुनेगा तो आफत आ जायेगी, पाकिस्तान का जासूस बता मीसा मे चालान कर देंगे।"

सुकुमार अत्यधिक नाराज हो बोला, "कोई मजाक है क्या? चालान करने से ही हो जायेगा कैद करने पर रोज जेल मे खिचडी खिलानी होगी। इससे बेहतर है एक छोटी सी नौकरी का नियुक्ति पत्र ही भेज दो ना बाबा! मुझे नौकरी मिलने के बाद तुम लोगो को कोई भी हगामा नही रहेगा। उसके बाद मैं जिन्ना, निक्सन, माओत्से तुग, रानी एलिजाबेथ, किसी का भी नाम जबान पर न लाऊँगा—सौ फीसदी, शत प्रतिशत स्वदेशी बन जाऊँगा। अभी भी दिल है हिदुस्तानी!"

"सी० आई० डी० अथवा सी० बी० आई० के लोग यदि तुम्हारी य सब बातें सुन लेंगे तो तुमको किसी भी दिन सरकारी नौकरी नही मिलेगी। जानते हो, नियुक्ति पत्र जारी होने से पहले पुलिस की जाच होती है दो गजटेड (राजपत्रित) अधिकारियो से कैरेक्टर सर्टिफिकेट लेने पडते हैं।' सोमनाथ की फटकार से सुकुमार डर गया।

बोला, 'बाप रे बाप! क्या बोल रहे हो! सचमुच खुलेआम इस तरह राजनीति के कीचड मे हाथ सानने से क्या लाभ? बहुत से लडको का तो इसीलिए सवनाश हो गया। वे राजनीति करते हैं, जगह जगह पोस्टर लगाते है, नुक्कडा पर पार्टी के लिए चन्दा जमा करते हैं, झण्डे फहराते हैं, जुलूसो मे भाग लेते है, नारे लगात है मोनुमेण्ट के नीचे नेताओ के भाषण सुनते हैं—सोचते हैं, यह सब करने से सहज म ही नौकरी मिल जायेगी। इस तरह के अनेक भोले लडके अपनी गलती समझकर उँगुली चूस रहे हैं पछता रहे हैं।'

सामनाथ गम्भीर हो बोला कभी-कभी तो ऐसा लगता है, कुछ नही करने से अच्छा है कुछ भी किया जाय। उसम कुछ गलत भी हो तो क्या आता-जाता है!"

सुकुमार आहत हो बोला "तीन महीने बाद जिनको भोजन नही

मिलेगा, उनको ऐसी बातें शोभा नहीं देती। अपने स्वार्थ के लिए पार्टी मे, लडको को फँसाने के चक्कर म कई युवक यादवपुर मे दाँव लगाये बैठे रहते हैं। उनकी पाकेट मे विभिन्न प्रकार के एकरंगे, तिरंगे, बहुरंग झण्डे, अनेक प्रकार के छापा से सज्जित रहते हैं। मुझे अपने फन्दे म नही फँसता देख उनको बडा क्षोभ होता है। मेरा सीधा उत्तर रहता है मेरे बाप को तीन महीने और नौकरी है, मेरे पाँच छोटे भाई-बहन हैं। मेरे पास देशोद्धार करने के लिए समय नही है।"

आफिस जानेवाले यात्रियो की ओर ताकते हुए सुकुमार बोला, "जिसके जो मन मे आये करे, मेरा क्या आता-जाता है।"

कई मिनट तक सुकुमार ने मन ही मन कुछ सोचा। उसके बाद सोमनाथ को पीठ पर उँगुली से टहोका मार बोला, "लो, तुम जो बोल रहे थे, ये लोग जो चीटियो की कतार की तरह आफिस के लिफाफा मे टिफिन का डिब्बा हाथ मे लिये हाजिरी देने जा रहे हैं ये सभी क्या अंग्रेजो के समय से ही नौकरी मे हैं? जरा उस लडके को ही देखो, अंग्रेजो के समय मे पैदा भी नही हुआ था, फिर भी आफिस जा रहा है।"

सुकुमार ने अचानक एक अजूबा घटना कर दी। फर्स्ट क्लास इस्त्री किया शर्ट पैण्ट पहने एक लडका बस मे चढ रहा था, ठीक उसी समय दौडकर सुकुमार ने उससे पूछा, 'भैया आपने क्या फर्स्ट डिवीजन म पास किया था?"

अनायास इस अजीब प्रश्न से भद्र पुरुष भौंचक रह गये। सवाल को ठीक से समझ पायें, इसके पहले ही बस चल पडी। क्षुब्ध भद्र पुरुष चलती बस से सुकुमार को आग्नेय दृष्टि से देख रहे थे—उसके मजाक का अर्थ वे समझ नही पाये।

सुकुमार बुद्धू की तरह फुटपाथ पर वापस आ गया। बोला, "मैंने मजाक नहीं किया था। उसके पीछे भी नहीं पडा था, सिर्फ जानना चाह रहा था कि उसको नौकरी कैसे मिली।"

सोमनाथ बोला ऐसा मत किया करो सुकुमार, किसी दिन आफत मे पड जाओगे। भद्र पुरुष शायद पढाई लिखाई मे हमारी ही तरह हो, वे जरूर नाराज हो जाते।"

सुकुमार ने माफी माँगी। उसके बाद कुछ सोच उसका चेहरा खिल उठा। बोला, "सोम, तुम ठीक कह रहे हो। मेरा उसको इस प्रकार तंग करना ठीक नही था। अगर वे महाशय तुम्हारी और मेरी ही तरह सकण्ड या थड डिवीजन पास होते हुए भी नौकरी पा चुके हैं, तो अवश्य ही 'शिडयुल्ड कास्ट' के हैं।

मित्र की बात सोमनाथ समझ नही पाया। सुकुमार गम्भीरता से बोला, "भद्र पुरुष की नाक थोडी चिपटी थी ?'

"इससे क्या आता-जाता है ?" अब सोमनाथ ने प्रश्न किया।

'खूब फक पडता है। आजकल 'शिडयूल्ड कास्ट' का भी नौकरी नही मिलती। भले आदमी शिडयूल्ड ट्राइब के हो सकत है। नौकरी के विज्ञापनो म अक्सर लिखा रहता है, फलां जाति के होने पर प्राथमिकता दी जायगी। भारत मे शिडयूल्ड ट्राइब मे लगता है कोई ग्रेजुएट नही हुआ।"

दाहिने हाथ की उँगली के नाखून को दातो से काटते हुए सुकुमार सोमनाथ से बोला 'तुम्हारे पिताजी तो बहुत दिनो तक कोट म थे, जरा एक बार पता लगाओ, किस प्रकार शिडयूल्ड ट्राइब मे हुआ जा सकता है।'

'तुम फिर पागलो जैसी बातें कर रहे हो। तुम हो सुकुमार मित्तिर मित्तिर कभी शिड्यूल्ड टाइब नही हो सकते।" सोमनाथ ने मित्र को समझान का प्रयास किया।

सुकुमार समझा नही बोला, मेरी सहायता नही करोगे ऐसा कहो। प्रयास करने से यदि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण प्रोमोटेड हो सकता है, तब मै कायस्थ से शिडयूल्ड ट्राइब क्यो नही हो सकता ?"

'हम लोग उन लोगो के दुखो से अनजान हैं, तभी उनके बारे मे इतनी रसिकता से बात कर सकत हैं। उन्हे बडा कष्ट है र " सामनाथ सरल मन स बोला।

सुकुमार भी गम्भीर हो गया 'तुम सोच रहे हो मैं नीची जाति पर व्यग्य कर रहा हूँ। मुझे चाण्डाल के परो की धूल भी जीभ से चाटन मे आपत्ति नही, पर येन केन प्रकारेण जुलाई के पहले मुझे एक नौकरी

चाहिए ही।' मित्र की आँखें छलछला रही हैं, सोमनाथ समझ गया।

सोमनाथ का थोड़ा दुख हुआ। मित्र का उत्साह देने के लिए बोला, 'जानते हो सुकुमार नौकरी की बात सोचते सोचते मेरा मन भी कई बार खराब हो जाता है। इतनी उमर तो हो गयी अभी भी कुछ नहीं हुआ। बाप के होटल में और कितने दिन कौर निगलता रहूँगा? भाभी इतने प्यार से परोसती है, भाइयों से बड़ा हिस्सा मछली देती है। कहती रहती हैं—और कुछ ले लो—पर तब भी सबकुछ कड़ुवा लगता है।"

अबकी बार सुकुमार को गुस्सा आ गया, "रहने दो, बड़ी-बड़ी बातें! रोहू मछली का परोसा हुआ टुकड़ा खूब स्वादिष्ट लगता ही है। यह कड़वी लगनेवाली बात तुम्हारी मानसिक विलासिता है। लेकिन मुझे आजकल खाने बैठते ही, सचमुच सबकुछ कड़ुआ लगता है। कल रात को दाल जल गयी थी। एक तो निरामिष मेनू, उस पर जली हुई दाल, बताओ तो कैसी लगे? माँ बीमार है। इसीलिए कई दिनों से खाना बहन पकाती है। बहन पर नाराज होते हुए बोला, 'घर में बैठी-बैठी क्या करती हो? ठीक से खाना भी नहीं बना सकतीं?' बहन ने बहुत निर्दयता से जवाब दिया, 'तुमको भी तो कोई काम नहीं—घर में बैठे दाल तो पका ही सकते हो?'"

'तुमने क्या उत्तर दिया?" सोमनाथ ने जानना चाहा।

"कुछ नहीं बोला दाँत भींच चुप रह गया। देखना, सुकुमार मित्तिर एक दिन इसका बदला लेगा।'

बदला लेने की बात सोमनाथ को अच्छी नहीं लगती। वह झगड़े से दूर रहनेवाला जीव है। बोला, "हट! अपने लोगों से बदला नहीं लिया जाता।'

सुकुमार ने तुरंत उत्तर दिया, 'टेबुल चेयर पर बैठाकर भाभी तुमको मिठाई पूरी खिलाती है इसीलिए तेरे दिमाग में बदले की बात आती नहीं। मेरी पालिसी अलग है। मेरे साथ जो जैसा व्यवहार कर रहा है वह सब मैं नोट करता जाता हूँ। भगवान जब अवसर देगा, तब ब्याज समेत लौटा दूँगा।'

"ओह सुकुमार! जो भी हो, तुम्हारी अपनी बहन है। उससे कैसा

बदला ?" सोमनाथ ने फिर मित्र को समझाने की चेष्टा की।

सुकुमार हँसा, "बदले का मतलब यह नही कि इतनी बडी बहन को पकडकर मारूँगा, या गुस्से म आकर किसी विधुर-वृद्ध वर से ब्याह दूगा। बहनो के साथ बदला लेने की मेरी प्रणाली ही भि न है। अभी से सब ठीक कर रखा है। नौकरी मिलते ही पहली तनख्वाह से कना के लिए एक लाल रग की सु दर साडी खरीदूगा और साडी के भीतर एक छोटी सी चिट पर लिखा रहेगा—'फला तारीख की जिस रात तुमने मुझे रसोईधर मे बैठ खाना पकाने के लिए कहा था, उसी समय सोचा तुम्हे यह दूगा—इति दादा।"

सोमनाथ सहमत नही हुआ, बोला "अभी तुझे गुस्सा आ रहा है, तभी ये सब बातें सोच रहा है। जब पहली तनख्वाह मिलेगी तब देखना, मन करेगा सिफ साडी देने का, चिट्ठी की बात याद ही नही आयेगी। जो भी हो, है तो तेरी ही बहन उसे दुख देने मे तुझे भी दुख होगा।"

सुकुमार ने बात नही बढायी। बोला, "हो सकता है ऐसा ही हो। पर बताओ तो तनख्वाह पाने जैसी स्थिति कब आयेगी ?"

थोडा रुककर सुकुमार बोला, "कभी कभी एम० एल० ए० लोगो के पास जा गुस्से मे अट-शट बकता हूँ कि आप लोगो के कारण ही तो हमारी यह हालत है। नौकरी देने की ताकत नही थी तो अंग्रेजो को क्या भगाया ? क्यो गद्दी पर बैठ गये ?"

"वे लोग क्या जवाब देते हैं ?" सोमनाथ ने पूछा।

'बाबा रे ! इन लोगो मे एक आश्चयजनक गुण है। किसी प्रकार भी ये लोग नाराज नही होते। मुझे इस प्रकार कोई फायर करता तो मैं उसकी गदन पकड दरवाजे से बाहर निकाल देता, कहता, अगली बार जिसकी इच्छा हो वोट देना।'

'जो पब्लिक को नहीं सँभाल पायेंगे, वे चुनाव म हार जायेंगे।" सोमनाथ बोला।

"ठीक बोलते हो, असीम धय है, महानुभावो मे।" सुकुमार विस्मय से बोला "खीच खीचकर तीर सी चुभती बातें सुनायी, पर बिल्कुल नाराज नही हुआ वरन् इसे स्वीकार किया कि प्रत्येक नौजवान का

नौकरी देने की जिम्मेदारी सरकार की है। जो सरकार ऐसा नही कर पाती, उसका लज्जित होना उचित और स्वाभाविक है।"

"लज्जा शर्म कुछ दिखायी दी चेहरे पर ?" सोमनाथ ने जानना चाहा।

'इतना ध्यान नही दिया भाई ! पर कई भीतर की बातें एम० एल० ए० ने बतायी। दो चार महीने म कई नौकरियाँ तैयार हो रही हैं। सेल्स टैक्स, स्टेट इलेक्ट्रीसिटी बोर्ड, हाउसिंग डिपार्टमेण्ट मे हजारो पद होगे। इतनी नौकरियाँ कि उसके अनुपात मे गवनमेण्ट के पास कुर्सियाँ नही। मैंने कह दिया है, इसके लिए चिन्ता की कोई बात नही। नौकरी मिलन पर मैं अपने मित्र के यहाँ से एक कुर्सी माँगकर ले आऊँगा। गवनमेण्ट को असुविधा नही हाने दूगा।"

'उन्होंने क्या कहा ?' सोमनाथ ने जानना चाहा।

खूब इम्प्रेस्ड (प्रभावित) हुए। बोले सबा का एसा सहयोग मिल जाय तो वे लोग देश का साने स मढ दें। तेरी बात भी उनके कानों मे डाल दी है। कहा, 'जब हजार हजार पद आपके पास तैयार होनेवाले हैं तब मेरे मित्र सोमनाथ बनर्जी का नाम भी याद रखिएगा। बहुत भला लडका है। मेरी ही तरह नौकरी न मिलने पर बेचारा बहुत दुखी रहता है। कुर्सी की कोई असुविधा नही होगी उसके घर मे ढेरो खाली कुर्सियाँ हैं।"

सोमनाथ हँसा।

सुकुमार थोडा खीझकर बोला, 'इसलिए किसी का उपकार नही करना चाहिए। दाँत क्या निकाल रहे हो ? एम० एल० ए० दा बोले हैं, शीघ्र ही एक दिन राइटस बिल्डिंग ले जायेंगे। फूड मिनिस्टर के सी० ए० से परिचय करवा देंगे। सी० ए० जानते हो ना ? मिनिस्टर का निजी सहकारी—कान्फिडेन्शियल असिस्टेण्ट। आजकल ये लोग बहुत पावर फुल हैं—आइ० सी० एस० सक्रेटरी भी उनके पास केंचुए बन सिमटे रहते हैं।

'उससे अपना क्या ? बड़े बड़े गवनमण्ट अफसर हमेशा से ही किसी के सामने पाँकाल मछली तो किसी क सामने गोखरू साँप बन रहत हैं।"

सोमनाथ ने आइ० ए० एस० और आइ० सी० एस० के प्रति अपनी खीझ जाहिर की।

सुकुमार लेकिन निरुत्साहित नहीं हुआ। मित्र का हाथ दबा बोला, "असली बात सुन ना ! सी० ए० लोगों की पाकेट में एक छोटी नोटबुक रहती है, उस नोटबुक में यदि एक बार नाम-पता नोट हो जाये तो घर बैठे ही नौकरी मिल जायेगी।"

"तू कोशिश कर देख। इन अटकलों के चक्कर में घूमते-घूमते जूतों के हाफसोल घिसाकर मेरी आँखें खुल गयी हैं" सोमनाथ खीझकर बोला।

सुकुमार बोला, "आशा मत छोड़ो। ट्राई, ट्राई एण्ड ट्राई। एक बार न होने पर कोशिश सौ बार करो।"

"सौ बार ! साला हज़ार बार से भी ज्यादा बार हो गया। कुछ भी फल नहीं निकलता। इसी बीच रायल टाइपिंग कम्पनी के नवीन बाबू मालदार हो गये। मेरे पास से ही कितनी ही बार उन्होंने चिट्ठी टाइप करने के लिए ५० पैसे ले लिये हैं। मैंने सोचा था कि कार्बन चढ़ा कई कापियाँ कर लूंगा और उनको विभिन्न जगहों में भेजा करूँगा। पर बाबूजी और भाभी राजी नहीं हुए। बोले, 'एप्लिकेशन ही सबसे इम्पार्टेण्ट है। उससे कैंडिडेट के सम्बन्ध में मालिक अन्दाज कर लेते हैं। कार्बन कापी देखकर वे सोचेंगे कि यह आदमी होल सेल के हिसाब से एप्लिकेशन भेजता रहता है।'"

'यह तो बड़ा अन्याय है।" सुकुमार ने मित्र का पक्ष लेते हुए कहा, 'तुम लोग एक नौकरी के लिए हज़ारों दरख्वास्त लोगे, और हम दस जगह एक ही दरख्वास्त नहीं भेज सकते।"

सोमनाथ बोला, "दरअसल यह भाभी का विचार है। टाइप करवाने के पैसे भी वह हाथ में थमा देती है, कुछ कहते भी नहीं बनता। तब भी, अब समझ में आ गया है, सरकार या बेसरकार कोई भी नौकरी देकर हमारा उद्धार नहीं करेगी।"

"भगवान जाने !" रास्ते पर खड़ा सुकुमार मन ही मन बोला। इस बीच आफिस जानेवालों की भीड़ कम हो गयी है।

घडी की ओर देख सोमनाथ बोला, "लेकिन मेरी भाभी बिलकुल निराश नही हुई हैं। उनके अनुसार मेरी जन्मपत्री मे लिखा है, कि मैं समय आने पर बहुत रुपये कमाऊँगा।"

"मेरी तो जन्मपत्री ही नही है। होने पर एक बार धन का स्थान जँचवा लेता।" सुकुमार ने कहा।

सोमनाथ ने फिर भाभी की बात छेड दी, "उस दिन मैं चुपचाप बैठा था। भाभी बोली—'चिन्ता करने से क्या होगा? लडका की नौकरी बहुतकुछ लडकियो के विवाह की तरह है। बाबूजी मेरे विवाह के लिए कितना छटपटाते थे कितने घरो मे आना जाना करते थे, फिर भी कुछ नही हुआ। जब घडी आयी तो अचानक फूल खिला, एक सप्ताह के भीतर इस घर म सब ठीक ठाक हो गया।' भाभी कहती हैं, मेरी नौकरी का फूल भी अचानक एक दिन खिल उठेगा और लोग शायद बुलावा भेजकर मुझे नौकरी देंगे।'

'तेरी भाभी के मुह मे घी शक्कर। जून महीने मे ही यदि मेरा फूल खिल जाये तो बहुत अच्छा रहे। पूरा एक महीना हाथ में रहगा।" सुकुमार बोल पडा।

"फूल कोई तेरा मेरा नौकर तो है नही, उसकी जब इच्छा होगी, तब खिलेगा।" सोमनाथ ने उत्तर दिया।

सुकुमार अब मन की बात बोला, "सचमुच बडा डर लगता है। हमारी कालोनी मे एक विवाह योग्य दत्तो बुआ है। सम्बन्ध खोजते-खोजते बुआ बूढी हो गयी, लेकिन वर नही जुटा। हम लोगो के साथ भी यदि वसा ही हुआ तो? दाढी और सिर सब सफेद हो जाने पर भी नौकरी न मिले तो?'

ऐसी भयानक सम्भावना नही है यह बात पूरी तरह नहीं कही जा सकती। इस प्रकार की निराशाजनक बातें सुनना इसीलिए सामनाथ को एकदम पसन्द नही है।

घडी देख, सोमनाथ बोला, "अब घर चला जाये। हो सकता है भाभी बेचारी नाश्ता लिये बठी हो।'

जाओ तुम नाश्ता करने। मैं अभी घर नही जाऊँगा। एक बार

आफ्सि-मुहल्ला घूम आऊँ।"

आफिस-मुहल्ला घूमने से क्या होगा ? कोई आवाज देकर तुझे नौकरी दे देगा ?" सोमनाथ ने मित्र की आलोचना की।

किन्तु सुकुमार झुका नहीं, "सब गुप्त बातें, तुझे क्या बताऊँ ? सोचते हो, फार नथिंग मैं सकेण्ड क्लास ट्राम की भीड मे मस्ती काटने जा रहा हूँ ? सोमनाथ मित्तिर को इतना मूख मत समझो।"

सोमनाथ को इस पर कौतूहल हुआ। मित्र से अनुनय भरे स्वर मे बोला, "गुप्त बात, जरा खुलासा करके बता न !"

"अब ठीक रास्ते पर आये हो भाई ! अरे, बेकारो को नखरे करने का अधिकार नहीं है। घर म बैठ सिफ अखबार पढने से नौकरी की गुप्त खबरें नहीं मिल सकती है, मेरे चाद !'

"तब कैसे ?" सोमनाथ ने पूछा।

सुकुमार ने गव से मित्र को सूचना दी, 'आजकल बहुत सी फर्में बरसाती मेढको की टर टर से डरकर अखबार मे विज्ञापन ही नहीं देती। क्लर्कों का विज्ञापन देने पर एक फम ऐसे हगामे मे फँसी कि पूछो मत। अखबार मे बाक्स नम्बर था। वहाँ से तीन लारी एप्लिकेशन्स कम्पनी की हेड आफिस मे भेजे गये। अभी भी चिट्ठया आती है। इतना ही नहीं, अखबार स किसी तरह, बाक्स नम्बर का पता-ठिकाना मालूम हो गया—और किसने विज्ञापन दिया है यह थोडे से लोग जान गये। अब रोज तीन चार सौ आदमियो की आफिस म भीड लगती है। कम्पनी का पर्सोनेल अफसर घबडाकर कलकत्ते से बाहर चला गया है।'

"तब ?" सोमनाथ ने चिन्तित हो पूछा।

"अपना उपाय वे लोग सोचेंगे, अपना क्या ! हाँ, तो मैं कह रहा था बरसाती मेढको के भय से बहुत सी फर्में, आजकल विज्ञापन न देकर नोटिस बोड पर नौकरी की सूचना चिपका देती हैं। हमारे शम्भूदास ने, इसी प्रकार हाइड रोड के कारखाने मे टाइपिस्ट की नौकरी पायी है। पर उसकी स्पीड टाइप मे अच्छी थी। उसको एक दिन देखा था, मशीन पर पजाब मेल की तरह उँगुलियाँ चलती हैं। उससे गुरमन्त्र ले अब मैं भी आफिस-आफिस म घूमता रहता हूँ। मुह से कुछ बोलता नहीं। नौकरी

की खोज में हूँ यह जान जाने पर, कई आफिसवाले आजकल घुसने ही नही देते। इसलिए किसी काम का बहाना बना, सिर ऊँचा कर आफिस मे घुसना पडता है। उसके बाद कोई तरकीब निकालकर कमचारियो के नोटिस बोड की ओर नजर दौडा लेता हूँ।"

सुकुमार थोडा ठहरकर बोला, "सोचते हो बेकार मे मेहनत होती है ? बिल्कुल नही। चारे मे बस मछली फँसी ही समझो सोमनाथ ! इसी बीच तीन चार एप्लिकेशन दे आया हूँ। कल जिस आफिस में गया था, उसमे यदि नौकरी मिल जाये तो मजा आ जाये। प्रतिदिन तनख्वाह छोड— ७५ पसे टिफिन के। तब भी वहाँ के बाबू लोगो का मन नही भरता। प्रतिदिन ढाई रुपये टिफिन के देने के लिए कम्पनी को कमचारी युनियन ने चिट्ठी दी है।"

गाल पाक से अकेले घर आते वक्त रास्ते मे सुकुमार की बात सोच रहा था, सोमनाथ। उसकी चेष्टाओ की मन ही मन प्रशसा करने से सोमनाथ स्वय को रोक नही सका। हो सकता है, इस परिश्रम का फल एक दिन अचानक सुकुमार को मिल जाये। नौकरी का नियुक्ति-पत्र दिखाकर सुकुमार चला जायेगा और सोमनाथ बेकार बैठा रह जायेगा। यह सब जानते हुए भी सोमनाथ सुकुमार जैसा नही हो पायेगा।

बाबूजी सरकारी काम करते थे, उस समय बहुतो को जानते थे। किन्तु सोमनाथ किसी भी तरह उन परिचितो के घर या आफिस जाकर धरना देने की बात ही नही सोच सकता। बाबूजी का आत्मसम्मान का भाव भी बहुत ज्यादा है, किसी भी बात के लिए मित्रो से नही कहते। द्वपायन बाबू के केवल पास-कोस बी० ए० पास एक आर्डिनरी बेटा है, यह बात ही बहुतो को नही मालूम है। उन लोगो ने सिफ द्वैपायन बनर्जी के दो हीरे के टुकडो की बात ही सुनी है जिनमे से एक आइ० आइ० टी० इजीनियर और एक विदेशी कम्पनी का जूनियर एकाउटेंट है।

अचानक सोमनाथ को गुस्सा आने लगा। सुकुमार बेचारा इतना दुखी है, पर किसी पर गुस्सा नही होता। किन्तु इस क्षण सोमनाथ की इच्छा गुस्से से फट पडने की है।

इस विशाल समाज के प्रति कोई भी तो अपराध सोमनाथ और उसके मित्र सुकुमार ने नही किया। अपनी क्षमता के अनुसार जितना हो सका वे लोग पढ लिख गये एव समाज के नियम कानूनो को मानकर चले। *उनको जो करने को कहा गया, वही उन लोगो ने किया है।* उनके शरीर मे कोई रोग नही है, वे मेहनत करने को तैयार हैं। तब भी इस मुए देश मे उन लोगो के लिए कोई स्थान नही।

वे लोग कोई बडी नौकरी चाहते हो—ऐसा भी नही है। जैसा भी काम मिले, वे लोग करने को तैयार हैं। तब भी किसी ने उनकी ओर नही देखा और जीवन के दो कीमती साल नष्ट हो गये।

एक बार यदि सोमनाथ की समझ मे आ जाता कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है, तब सचमुच वह कुछ कर बैठता। सुकुमार बेचारा हो सकता है, उसका साथ देन का साहस न कर पाये—उसकी जिम्मेदारिया बहुत अधिक हैं। लेकिन सोमनाथ को किसी का डर नही, कोई चिन्ता नही।

उसकी कमाई के बिना घर मे खाना न बन पाये, ऐसी स्थिति उसकी नही थी। अत उसके लिए बम की तरह फूट पडना असम्भव नही है।

घर पहुँचते ही कमला भाभी उद्विग्न हो पूछने लगी, "क्या किसी से झगडा हो गया था ? चेहरा एकदम लाल हो रहा है।"

सोमनाथ स्वय को सँभालते हुए बोला, "हो सकता है, थोडी धूप लग गयी हो।"

बुलबुल अपनी मा के यहाँ बेतला गयी है, वह वही दोपहर का खाना खायेगी। बाबूजी ने पुरानी आदत के कारण साढे दस बजे ही खाना खा लिया है। केवल कमला भाभी ही सोमनाथ की प्रतीक्षा कर रही हैं।

सोमनाथ जल्दी जल्दी नहा धो आया। उसके बाद दोनो एक ही साथ खाने बैठे।

माँ की मृत्यु के बाद इन वर्षों मे अक्सर सोमनाथ कमला भाभी के साथ खाना खाता है। रसोई पसन्द न आने पर उसने कई बार भाभी को डाँटा है। कहा है, "बाबूजी कुछ बोलते नही, इसलिए घर का खाना लगातार रद्दी होता जा रहा है।'

कमला भाभी ने भी देवर के साथ इस पर तर्क किया है। बोली है, "तेल मिर्च न डालने पर तुम लोगों को खाना अच्छा नहीं लगता है, पर बाबूजी मिर्च-खटाई सह नहीं पाते हैं और डाक्टर बाबू भी कह गये हैं कि अधिक मिर्च मसाला किसी के शरीर के लिए ठीक नहीं है।'

किन्तु इन दो वर्षों में स्थिति बदल गयी है।

सोमनाथ आजकल खाने बैठता है तो पता नहीं कैसे एक संकोच सा उसे होता है। खाने की आलोचना करना तो दूर, वह कुछ बोलता नहीं और कमला भाभी दुखी होती हैं "तुम्हारा खाना आजकल कम क्यों होता जा रहा है खोकोन? हाजमे की कोई गड़बड़ हो, तो डाक्टर को दिखा आओ। एकाध दवा खाने से ही सब ठीक हो जायगा।'

सोमनाथ प्रश्न को टाल जाता है। उसको लगता है, कमला भाभी से कुछ भी छिपा नहीं रह सकता। शायद भाभी उसके मन की सारी बातें समझ लेती हैं।

दोपहर के बाद की परिस्थिति और भी यन्त्रणादायक है। जन्म-जन्मान्तर में न जाने कितने पाप करने पर पुरुषवर्ग को इस समय घर रहने का कठोर दण्ड मिलता है।

कमला भाभी दिन भर के परिश्रम के बाद इस समय अपने कमरे में बिस्तर पर थोड़ी देर सुस्ता लेती हैं। सोमनाथ समझ नहीं पाता कि बिना काम के कैदियों सा यह समय किस प्रकार काटे। इस समय सो जाने से पूरी रात बिछावन पर करवटें बदलनी पड़ती है। चुपचाप जगे रहने पर बेसिर पैर की ढेरों चिन्ताएँ घेर लेती हैं।

सोमनाथ बीच-बीच में पुस्तकें पढ़ने का प्रयास करता था, पर अब वे भी अच्छी नहीं लगतीं। पहले ट्रांजिस्टर रेडियो से गाने सुना करता था, अब वे भी असह्य लगते हैं।

इस समय कितने ही लोग आफिस में, अदालत में कारखाने में, रेलवे स्टेशन पर, पोस्ट आफिस में बाजार में काम करते हुए पसीना बहा रहे हैं। माँ बोली थीं, "किसी से ईर्ष्या मत करना।' किन्तु इस क्षण काम करनेवाले लोगों से ईर्ष्या न कर पाने की क्षमता सोमनाथ में नहीं है।

साढे चार बजे सुधन्य बाबू आये। बाबूजी के इन मित्र ने रिटायर होने के बाद पास ही मकान खरीद लिया है। मन लगाने के लिए कभी कभी शाम का सुधन्य बाबू बाबूजी के पास गप्प लगाने आ जाते हैं।

सुधन्य बाबू के आते ही बाबूजी के चेहरे पर से गम्भीरता का मुखौटा उतर जाता है और बहूरानी को चाय के लिए कहलाया जाता है। इसके बाद दोनों की अपने-अपने सुख दुख की बातचीत शुरू होती है।

सुधन्य बाबू की ओर सिगरेट बढ़ा द्वैपायन पूछते हैं, "चिट्ठी आयी ?"

चिट्ठी का मतलब है बेटी-जमाई की चिट्ठी। सुधन्य बाबू के जमाई कैनाडा में रहते हैं। सुधन्य बाबू कहते हैं, "जानते हो भाई, यहाँ इतनी गरमी है, किन्तु विनीपेग में अभी बर्फ पड़ रही है। खुकी (मुन्नी जैसा घरेलू नाम) ने लिखा है, सड़क पर चलना मुश्किल हो रहा है।"

"अरे, उनको चलने की क्या आवश्यकता है ? गाड़ी तो है ही।" द्वैपायन बाबू प्रश्न करते हैं।

"गाड़ी भी ऐसी वैसी नहीं—एयरकंडीशंड लिमोसिन। जाड़े में गर्म और गर्मी में ठण्डी। यहाँ बिड़लाजी भी शायद वैसी गाड़ी में नहीं बैठ पाते हैं। जामाता ने गाड़ी की एक फोटो भेजी है तुम्हें कभी दिखाऊँगा। और जानते हो द्वैपायन, ऐसी गाड़ी में गियर भी चेंज नहीं करना पड़ता—सब खुद ब-खुद हो जाता है। और यहाँ जरा अपनी देशी गाड़ियों को देखो! इस बार जब खुकी आयी तो मेरी नतिनी टैक्सी में बैठकर हँसे बिना न रही। जबकि हम लोगों ने चुनकर बढ़िया और नयी टैक्सी ली थी।"

"तुम भी किसकी तुलना किससे कर रहे हो, सुधन्य ?" सिगरेट का धुआँ खींच द्वैपायन बोले। इस देश की आर्थिक दुर्दशा के प्रति द्वैपायन की खीझ, उनकी प्रत्येक बात में झलकने लगी।

इस बार सुधन्य और भी गौरवान्वित हो बोले, "खुकी ने लिखा है जमाई की तनख्वाह और भी बढ़ गयी है। अब हो गयी ग्यारह हजार ढाई सौ। जानते हो भाई, गिन्नी (पत्नी) तो अभी भी वैसी ही सरल है, वह सोचती है—वर्ष में ग्यारह हजार रुपये। विश्वास ही नहीं किया

चाहती कि जमाई इतने रुपये प्रतिमास घर ले आता है। मैंने मसखरी की कि अरी, यह क्या तुम्हारा पति है जो ग्यारह सौ रुपये में रिटायर हो जायगा।"

'चिरजीवी होवे, और भी उन्नति करे।" द्वैपायन ने आशीर्वाद दिया।

सुधन्य बाबू फिर भी पूरी तरह खुश नहीं हुए। बोले 'खुकी को आराम नहीं है। उसने लिखा है—'इतना अभागा देश है कि एक अच्छी महरी तक नहीं मिलती।' जानते हो द्वैपायन इतनी लाडली बेटी को मेहतरानी का काम भी स्वयं ही करना पड़ता है। हाँ, जमाई हाथ जरूर बँटाता है।'

'क्या कह रहे हो ?" द्वैपायन ने सहानुभूति के स्वर में कहा।

"समझ लो द्वैपायन, वहाँ लोगों का तो अकाल ही पड़ा है। कितनी ही नौकरियों की जगहें खाली पड़ी हैं क्योंकि काम करने के लिए लोग नहीं मिलते।" सुधन्य बाबू ने सिगरेट का कश खींचते हुए कहा।

द्वैपायन इस विषय पर क्या कहें यह सोच नहीं पा रहे थे। सिगरेट की राख झाड़ते हुए बोले, "परीकथाओं-जैसी बात लग रही है, सुधन्य ! बीसवीं शताब्दी में एक ही सूर्य चन्द्रमा के नीचे एक ऐसा देश है जहाँ एक जगह के लिए एक लाख एप्लिकेशन आते हैं और एक देश ऐसा भी है जहाँ जगहें हैं, पर खोजने पर भी आदमी नहीं मिलता।'

सुधन्य बाबू को द्वैपायन की तरह इसमें विस्मय की बात नहीं लगी, "जो भी हो हैं दोनों ही चरम-अवस्थाएँ। जिस देश में स्वयं बतन माँज-कर खाना बनाना पड़े, उसे पूरी तरह सभ्य देश कहना जँचता नहीं।"

द्वैपायन हँसकर बोले, 'जिनके घर में बेकार लड़के हैं वे कहते हैं कि जो पश्चिम में होता है वही ठीक है। इस देश में तो नौकरी नहीं मिलती।

सुधन्य बाबू बोले, "मेरे भाग्य अच्छे हैं, जो मेरा बेटा नहीं है। इस जीवन में तो अब नौकरी की चिन्ता मुझे करनी नहीं पड़ेगी।"

'भई जान बच गयी तुम्हारी ! जवान लड़कों की यह यन्त्रणा देखी नहीं जाती और ऐसी असहाय अवस्था है कि कुछ कर भी नहीं पाता।'

द्वैपायन के स्वर मे दुख ध्वनित हो उठा।

सुधन्य बाबू ने कहा "ऐसी स्थिति मे जमाई के सिर पर भूत चढा है विदेश म रहने पर स्वदेश के प्रति मोह बढता है न। लिखता है वापस आकर देश की सेवा करूँगा। तुम्ही बताओ कितनी व्यथ की बात सोच रहा है।"

उसका सोचना बिल्कुल गलत है, इस बात पर द्वैपायन अपने मित्र से पूणत सहमत थे।

सुधन्य बाबू बोले, "इसीलिए तो तुमस सलाह लेने आया हूँ। जमाई लिखता है हजार रुपये महीना मिलने पर देश के किसी कालेज मे लेक्चरर बनकर आ जाऊँगा। बाबाजी ने वर्षों से घर छोड रखा है। समझता नही है कि इस इडिया म इतने लोग हैं कि मनुष्य का सम्मान हो ही नहीं सकता। *मनुष्यो के इस अरण्य मे मनुष्य को मनुष्य के योग्य मूल्य* देना हम भूल गये हैं।

द्वपायन बोले "बिटिया को लिख दो कि जमाई की इस बात पर वह बिल्कुल राजी न हो। यहाँ आकर वे केवल भीड बढायेंगे तीन चार राशनकाड बढ जायेंगे, मगर देश का कोई कल्याण नहीं होगा। इससे तो वह जो विदेशी मुद्रा वहाँ जमा कर रहा है, वही देश के लिए अधिक लाभदायक है।"

सुधन्य बाबू के मन के किसी कोने मे पुत्री को इतनी दूर न रखने का लोभ भी था। दबे स्वर मे बोले, "तुमसे कहने मे क्या शम ? गिन्नी की आखें सजल रहती हैं। कुछ भी हो एक ही तो लडकी है, और वह भी कही दूर पडी है। उसकी इच्छा है बेटी-जमाई घर आ जायें, इतने पसे का क्या होगा ? इस देश मे भी तो कितने ही लोग अच्छे घरों मे रहते हैं और गाडियो म घूमते हैं।" थोडा ठहर सुधन्य बाबू फिर बोले, "इस दष्टि से तुम भाग्यशाली हो। सारे लडके हीरे हैं। अच्छा, भोम्बल का और कोई प्रोमोशन हुआ कि नही ?'

द्वैपायन लडको की सारी खबर रखते है। लडके घर आकर आफिस के सारे काय-कलापो की चर्चा पिता से करते हैं। द्वपायन बोले, "ऐसा सुना है कि भोम्बल इसी वष टेकनिकल डिपाटमेट मे डिप्टी मनेजर बन

जायेगा। लड़के ने अपनी ही मेहनत से छोटी-सी तनख्वाह पर यह नौकरी जुटायी थी और वह इतनी उन्नति करेगा ऐसा तो कभी सोचा ही नहीं था। विवाह के बाद से ही उन्नति करता जा रहा है। सब बहूरानी का भाग्य है।'

बहूरानी के सम्बन्ध में दोनों के बीच कहीं कोई मतभेद नहीं है। सुधन्य बाबू बोले, ' मैं और मेरी पत्नी तो अक्सर चर्चा किया करते हैं कि तुम्हारे घर में साक्षात लक्ष्मी ही आ गयी है। नाम भी कमला स्वभाव से भी कमला।"

इस विषय में द्वैपायन से ज्यादा और कोई नहीं जानता। वह थोड़ी देर गम्भीर रहकर बोले, "बहूरानी के न रहने पर तो मेरा घर ही डूब जाता, सुधन्य! आजकल की लड़कियों के विषय में तो कितना-कुछ सुनता हूँ।"

पाँव हिलाते हिलाते सुधन्य बाबू बोले, "आजकल की लड़कियाँ जिस रसातल की ओर जा रही हैं, वह ठीक नहीं है। परिवार में पति और अपने को छोड़ और कोई सम्बन्ध वे मानती ही नहीं। छब्बीस-सत्ताईस वर्ष का यह सौम्य-कमठ पुरुष आकाश से नहीं टपका, किसी ने अनेक कष्ट झेलकर और तिल तिलकर उसे मनुष्य बनाया है तथा उसका माँ अपनी सन्तान पर कुछ हक है यह तो वे सोचती ही नहीं।"

द्वैपायन बोले, "लेकिन इस डिप्टी मैनेजरवाली खबर से बहूरानी बहुत चिंतित है।"

"अयँ, यह क्या ?" अवाक सुधन्य बाबू बोले "प्रोमोशन होना तो प्रसन्नता की बात है।'

"प्रोमोशन होने पर भोम्बल को हेड आफिस में ट्रांसफर कर दिया जायेगा।' थोड़ा रुककर द्वैपायन फिर बोले "बहू बोलती कम है, पर है बुद्धिमती। कमला रहित इस घर का क्या होगा, यह तुम निश्चय ही समझ सकते हो सुधन्य!'

"क्यों, मँझली बहू तो है ?"

द्वैपायन ने सामने की ओर झुककर दबे स्वर में कहा, "अभी भी बच्ची ही है। मन की भली है, पर तितली की तरह चचल रहती है—एक

जगह मन स्थिर नही कर पाती । इसके अलावा काजल (अभिजित) की नौकरी भी ट्रासफरवाली ही है । उसे शायद अहमदाबाद जाना पडे, ऐसी बात भी चल रही है ।"

सुधन्य बाबू क्या कह, समझ नही पा रहे हैं । द्वैपायन स्वय ही बोले, "ऐसा भी हो सकता है कि इस मकान मे केवल मैं और खोकान दो ही बच जायें । '

माथे पर हाथ रख द्वैपायन बोले, "मैं अब और कितने दिन का हूँ, पर घर-परिवार को सुव्यस्थित कर नही सका, सुधन्य ! प्रतिभा से मिलने पर वह खरी-खोटी सुनायेगी । कहेगी —'दो लडको को आदमी बनाकर सिफ एक का दायित्व तुम पर छोडा था, पर तुमसे वह भी पूरा नहीं हुआ ।' "

"नौकरी का यह हाल होगा, यह क्या किसी ने कल्पना की थी ?" मित्र को सान्त्वना देने की चेष्टा करते हुए सुधन्य बाबू बोले, "सिफ तुम्हारा लडका ही नही, जहा जाओ वही हाहाकार मच रहा है । हजार नहीं, लाख नही, अब सुनता हूँ कि बेकारो की सख्या लाखो से बढकर करोडो मे हो गयी है ।"

द्वैपायन ने सिफ "हूँ" कहा । इस ध्वनि से उनके मन की सही हालत का कुछ पता नही चला ।

सुधन्य बाबू बोले, "अब कुछ काम धाम तो है नही—मन लगाकर अखबार पढता रहता हूँ । उसमे लिखा है कि इतने बेकार पृथ्वी पर और किसी भी देश मे नही हैं । एकमात्र इसी मामले मे हम फस्ट हैं । दुनिया की कोई जाति सुदूर भविष्य मे भी हमे इस सम्मान से वचित नही कर पायेगी । इडिया मे भी हम बगाली बेकारो का गोल्ड मेडल जीतकर बैठे हुए है ।"

आरामकुर्सी पर लेटे द्वैपायन फिर से ' हूँ" बोले ।

सुधन्य बोले, "भयकर स्थिति ह । पढाई लिखाई पूरी कर कितन ही स्वप्न कितनी ही आशाएँ लेकर, लाखो लाख स्वस्थ नवयुवक चुपचाप घरो मे बैठे है और बीच बीच म केवल एप्लिकेशन लिखते है । इस दृश्य की कल्पना भी नही की जा सकती । समस्या बडी व्यापक है, द्वैपायन !

इसके लिए तुम अकेले क्या कर सकते हो ?"

मन तब भी नहीं समझना चाहता। द्वैपायन को न जाने कैसा डर लगता है प्रतिमा से मिलने पर इन सब युक्तियों से वह बिल्कुल सन्तुष्ट नहीं होगी। बल्कि कहेगी, 'वाह रे पिता ! मातृहीन बच्चे के लिए सिर्फ कागजी उपदेश दिये।'

सुधय बाबू बोले, "सारे जीवन परिश्रम कर पेंशन ले अब बुढ़ापे में निश्चिन्त जीवन बिता पायें, इसके भी आसार नहीं। लड़कों के कामकाजी और योग्य नहीं होने पर अपने को ही अपराधी समझने लगते हैं।"

सुधय बाबू उठना ही चाह रहे थे कि द्वैपायन बोले, "इस सम्बन्ध में तुम्हारी बेटी ने एक बार कुछ लिखा था ?"

सुधय बाबू ने एक और सिगरेट जलाते हुए कहा, 'एक बार क्यों, वह तो प्राय ही लिखती रहती है। वहाँ की पालिसी है—अपने लिए पति स्वय ढूँढो—'ओन योर ओन टेलीफोन' की तरह। ज्यादा-से-ज्यादा अगर मन हो तो माँ-बाप की राय ले लो पर दायित्व तो तुम्हारा ही है। उसी तरह नौकरी खोज देने का दायित्व भी माँ-बाप का नहीं। तुम्हारे दाढ़ी मूँछ आ गयी हैं, बालिग हो गये हो, अब खुद ही कमाकर खाओ पियो।"

सोमनाथ की बात द्वपायन के मन म बैठ गयी। मन के सकोच और दुविधा को दूर कर उन्होंने कहा "सोचता हूँ, खोकोन के लिए कैनाडा मे कुछ किया जा सकता है क्या ? यहाँ तो नौकरी-चौकरी की भयकर स्थिति है।"

सुधय बाबू कोई सन्तोषजनक आश्वासन नहीं दे पाये। किसी तरह जान छुड़ाने के भाव से बोले, "जब तुम कह रहे हो तो मैं खुकी को सब खोलकर लिख दूगा। पर जहा तक मैं जानता हूँ, प्रत्येक सप्ताह कलकत्ता से इस तरह के तीन चार अनुरोध जमाई के पास जाते रहते है, कनाडा गवनमट ने पहले तो बहुत से हिन्दुस्तानियो को ले लिया था, पर अब वह चतुर हो गयी है। डाक्टर, इजीनियर, टेक्नीशियन को छोड और किसी को भी कनाडा मे प्रवेश करने का वीसा नहीं देती।'

द्वैपायन इसी तरह के उत्तर के लिए तैयार थे। वे कैनाडा को भी दोष नहीं दे पाते। खुला दरवाजा रखने पर, कैनाडा की दशा भी इस देश

जैसी ही हो जाने मे अधिक समय नही लगता।

फिर भी द्वपायन का मन खराब हो गया। विदेश जाते समय सुधन्य के जमाई के पासपोट की कुछ गडबडी को द्वैपायन ने ही ठीक करवाया था। खुकी के पासपोट के समय भी, बहुत सी असुविधाओ को दूर करवाने मे, द्व पायन ने कुछ भी रख नही छोडा था।

उस वक्त सुधन्य ने उनके दोनो हाथ पकडकर कहा था, 'तुम्हारा ऋण जीवन-भर नही उतार पाऊँगा।"

सुधन्य के ऊपर क्रोध नही कर पा रहे है द्वैपायन। ऐसा अनुभव हो रहा है मानो शैशवावस्था, युवावस्था और वद्धावस्था, तीनो सधियो को पार कर वह जीवन की शेष सन्ध्या मे खडे है। अब भी उनको घर परिवार की चिन्ता क्यो करनी पडती है? द्वैपायन को अकस्मात लगा—पाश्चात्य देशो के मा बाप बहुत भाग्यशाली है। उनकी जिम्मेवारी बहुत कम है। बेटी का विवाह और बेटे की नौकरी इन दोनो महान सकट और अशान्ति से वे बचे रहते हैं।

सुधन्य बाबू के जाने के बाद भी द्वैपायन बहुत देर तक चुपचाप बरामदे मे बैठे रहे।

बाहर अँधेरा घिर आया। लोग बाग आफिसो से घर लौट आये है। कभी कभी एकाध गाडी की सर्राहट इस अचल की निस्तब्धता को भग कर रही है।

'बाबूजी सो गये क्या ?" बहू की आवाज से द्वैपायन की चेतना लौटी।

द्वैपायन ने शाम की हल्की आभा मे देखा, बहूरानी नहा धोकर साफ कपडो मे खडी है।

'बहूरानी, आओ।' द्वपायन बोले।

"आप नहायेंगे नही, बाबूजी ?" स्निग्ध स्वर म कमला ने पूछा।

"यहा बठते ही अनेक विचार, अनेक चिन्ताएँ मन मे आने लगती हैं, बहू! वद्धावस्था मे कुछ कर पाने की क्षमता तो रहती नही है, पर चिन्ताएँ साथ नही छोडती। पर क्या सोचता रहता हूँ, यह भी कई बार समझ

नहीं पाता।"

'बाबूजी, देर से नहाने पर आपको सर्दी लग जाती है। अच्छा रहे, आप पानी से बदन पोंछ लिया करें।" ससुर को एक तरह से स्नेहिल आदेश सा देती हुई कमला बोली।

द्वैपायन ने पूछा "मँझली बहू कहाँ है ?"

"आजल के साहब नम्बर दो नाइजीरिया ट्रांसफर हो रहे हैं, उसी की पार्टी में ये दोनों अभी थोड़ी देर पहले ही गये हैं, वापस लौटने में शायद देर हो।'

द्वैपायन बोले, ' विलायती आफिस का यही एक दोष है। अगर रात में देर तक पार्टी नहीं चले तो साहब लोग खुश ही नहीं होते।'

कमला ने ससुर को आश्वासन दिया, "अब कम हो जायेगा, क्योंकि नये साहब हिंदुस्तानी हैं।"

"क्या नाम है।" द्वैपायन ने पूछा।

' शायद, मि० चोपड़ा।" कमला ने बताया।

' अरे बाबा ! तब तो कहा नहीं जा सकता। हो सकता है, देर और भी अधिक हो।"

कमला बोली "बाबूजी, सिधु नाई को कल आने को कह दिया है। बहुत दिनों से आपके बाल नहीं कटे।'

"कल क्यों ? परसों के लिए ही कह देती।" द्वैपायन ने मधुर आपत्ति जतायी।

"परसों आपका जन्मवार है।" कमला ने याद दिलायी। जन्मवार को बाल नहीं कटाये जाते यह उसने सास से बहुत बार सुना है।

द्वैपायन मन-ही मन हँसे। फिर बोले, ' बाल कटाने के लिए कहकर अच्छा ही किया, बहूरानी ! ठीक समय पर बाल न कटाने पर तुम्हारी सास बहुत नाराज होती थी।"

कमला मुँह झुकाकर हँसी। उसने सास ससुर के अनेक झगड़े स्वयं देखे और सुने थे। सास नाराज होने पर बोलती, "यदि मेरी बात नहीं मानोगे तो यह रहा तुम्हारा घर, मैं चली।"

ससुर महाशय पूछते, "कहाँ जाओगी ?"

मान ऊँचे स्वर मे कहती, "उसस तुमको क्या मतलब ? जिधर दृष्टि जायेगी उधर ही चली जाऊँगी।'

बाबूजी को क्या वे सब बातें याद आती हैं ? नहीं तो वह इस तरह असहाय भाव से शू य आकाश म क्या देखत रहते हैं ? माँ की याद कर बाबूजी अक्सर रात म तारे निहारते रहते हैं।

द्वैपायन ने स्वय को सँभाला, फिर सस्नेह बोले, "भोम्बल की कोई खबर आयी ?'

पति बम्बई दौरे पर गये हैं। कमला बोली, "आज ही आफिस मे टलेक्स से खबर आयी है कि आने मे और देर होगी। हेड आफिस मे कोई जरूरी मीटिंग है।'

द्वैपायन बोले ' हो सकता है, उसके प्रोमोशन की बात हो रही हो। टेकनिकल डिवीजन के डिप्टी मनेजर होने पर जिम्मेवारी बहुत बढ जायेगी।"

कमला चुप रही। द्वैपायन बोले, "जानती हो बहूरानी ? आइ एम प्राउड ऑफ भोम्बल। उसके लिए मैंने कभी एक प्राइवेट ट्यूटर तक नही रखा। खुद ही पढ लिखकर आइ० आइ० टी० म भर्ती हो गया। खुद ही फ्री स्टूडेंटशिप का इ तजाम कर लिया और उसके बाद नौकरी भी अपनी मेरिट पर ही पा ली। ग्यारह वप पहले जब तुमसे विवाह की बात चल रही थी तब भोम्बल एक साधारण टेक्नीकल असिस्टेंट मात्र था। और, अब चालीसवें वप मे पाव रखते रखते—डिप्टी मनेजर !"

द्वैपायन अचानक चुप हो गये। वह क्या सोच रहे हैं, यह कमला आसानी से बता सकती है। सोमनाथ की चि ता से वह अ यमनस्क हो उठे हैं, यह कमला जानती है। जोधपुर पाक के इस मकान का एक काल्पनिक भविष्य चित्र अक्सर द्वैपायन के गहरे अ तमन मे झांकता रहता है, यह कमला जानती है।

चित्र इस प्रकार है। भोम्बल का बम्बई ट्रा सफर हो गया है। बहूरानी को पति के साथ जाना पडा है। जाने के पहले बाबूजी को साथ ले जान के लिए उसने अनेक प्रयत्न किये पर बाबूजी राजी नही हुए। काजल का ट्रान्सफर भी अहमदाबाद हो गया है और मँझली बहू बुलबुल तो पति

के साथ जाने के लिए बक्सा सजाये बैठी है। तब इस मकान में बचते हैं, केवल द्वैपायन और सोमनाथ।

बड़ी बहू की ओर द्वैपायन ने असहाय भाव से देखा, पर कुछ नहीं बोले। जमा पूंजी के नाम पर द्वैपायन का सचय, मात्र हजार दो हजार रुपये होंगे, और पेन्शन, वह भी उनकी मृत्यु के साथ ही खत्म हो जायगी। उसके बाद सोमनाथ क्या करेगा ? यह मकान भी अकेले उनका नहीं है। ऊपरवाली मंजिल बनाते वक्त भोम्बल और काजल ने भी कुछ-कुछ रुपये दिये थे। काजल की तनख्वाह से अभी भी, कोआपरेटिव का कर्ज प्रत्येक महीने कट जाता है।

कमला बोली "बाबूजी, आपके लिए थोड़ा-सा हार्लिक्स ला दूं। आज आप बहुत थके लग रहे हैं।"

द्वैपायन अपनी क्लान्ति को छिपा नहीं पाये। बोले 'कुछ भी नहीं करता तो भी आजकल बीच-बीच में न जानें क्यों इतनी कमजोरी लगने लगती है।'

कमला बोली, बाबूजी, आप तो किसी की बात मानते नहीं। बस, रात दिन खोकोन की चिन्ता करते रहते हैं।'

द्वैपायन को थोड़ी शरम लगी। मन में आया, मानो वह बहू के द्वारा पकड़ लिये गये हो।

कमला में कितना मधुर आत्मविश्वास है। वह बोली, "आप झूठ मूठ ही खोकोन के लिए सोचते रहते हैं। मुझे तो ज़रा भी चिन्ता नहीं होती। इतने अच्छे लड़के के लिए भगवान कभी भी निष्ठुर नहीं हो सकते।'

वार्द्धक्य की सीमा रेखा में खड़े द्वैपायन यदि बत्तीस वर्षीया बहू के आत्मविश्वास का आधा हिस्सा भी बाँट पाते, तो कितना अच्छा होता ! लक्ष्मी की प्रतिमा की तरह बहू के प्रशान्त चेहरे की ओर द्वैपायन ने देखा।

शान्त और धीमे स्वर में कमला बोली 'पहले तो इनका प्रोमोशन इतनी जल्दी नहीं होगा। अगर हो भी गया, तो खोकोन को ब्याहे बिना मैं कलकत्ता नहीं छोड़ूंगी।'

ढेर सारे दुखों के बीच भी द्वैपायन को इस बात से हँसी आयी।

सोचा, एक बार बहू को याद दिला दू कि बिना काम धधावाले लडके के विवाह की बात सोची भी नही जा सकती। ढाई वर्षों से सोमनाथ नौकरी के लिए प्रयास कर रहा है। स्वय उन्होंने उसके बहुत-से एप्लिकेशन लिखे हैं। प्रतिदिन तीन अखबारो के विज्ञापन ढूढ ढूढकर पढते हैं। उन पर पहले लाल पेंसिल से दाग लगा फिर ब्लेड से काट, उसके पिछली ओर अखबार का नाम और तारीख लिख देत हैं।

द्वैपायन को याद आ गया, आज के अखबारो की कतरनें उनके पास ही पडी हैं। कतरनें बहू को दे वह बोले, "सोम को अभी दे देना।"

बाबूजी के उद्वेग की स्थिति बहू जानती है। कल सुबह बहू से पूछेंगे "कटिंग खोकोन का द दी थी ? कहीं वह बैठा न रह जाये। एप्लिकेशन जल्दी ही भेज देना अच्छा है। अबकी बार दो एप्लिकेशना के साथ क्रमश तीन और पाँच रुपये के पोस्टल आडर भेजने की माँग भी थी।'

कमला जानती है, आजकल बाबूजी सोम का बुला य सब बातें नहीं कर पाते। दोनो का ही झिझक होती ह। कई बार बाबूजी के बुलाने पर सोम ही नही जाना चाहता। जाता हूँ', 'जाता हूँ' कहकर काफी समय निकाल देता है। कमला को दोनो के बीच भाग-दौड करनी पडती है। कमला बोली, ' सोम को मैं सब समझा दूगी, पोस्टल आडर के रुपये तो उसे दे ही दिये हैं।"

द्वैपायन तब भी निश्चिन्त नही हो पाये। उनकी इच्छा है कि सोमनाथ रात को ही पोस्ट आफिस से पोस्टल आडर खरीद लाये और आध घण्टे मे ही एप्लिकेशन टाइप हो जाये, ताकि उसे कल सुबह ही रजिस्टड डाक से भेजा जा सके।"

कमला बाबूजी को शान्त करने के भाव से बोली, "दरख्वास्त लेन की अतिम तारीख तो तीन सप्ताह बाद है।

अपनी उद्विग्नता को छिपाते हुए द्वैपायन ने कहा, "बहूरानी, तुम पोस्ट आफिस की अवस्था जानती नही हो। हो सकता है, जान पर पता चले कि पाच रुपयेवाले पोस्टल आडर ही खत्म हो गये है और फिर रजिस्टड चिटठी की हालत तो और भी बदतर हैं तीन घण्टे की दूरी तय करने मे उसे तीन सप्ताह भी लग सकते है। नौकरी का विज्ञापन देने-

वाले भी दोष ढूढ़ते रहते हैं अंतिम तारीख से आधा घण्टा बाद भी पत्र मिले तो उसे खोलकर देखते तक नहीं, सीधे रद्दी कागज की टोकरी मे डाल देते हैं।"

अपनी इच्छा चाहे जो हो, पर भाभी का अनुरोध टाला नही जाता। कमला भाभी सोमनाथ से बोली, 'राजा भैया, सुबह ही पोस्ट आफिस जाकर एप्लिकेशन रजिस्ट्री कर आना, बाबूजी सुनेंगे तो खुश होंगे। वृद्ध है उन्हें तकलीफ पहुँचाने से क्या लाभ ?"

चिट्ठी और लिफाफा टाइप कर सोमनाथ पोस्ट आफिस जा रहा है, वह वही से पोस्टल आर्डर खरीदकर चिट्ठी भेज देगा।

पोस्ट आफिस के पास ही सुकुमार मिल गया। सुकुमार गला फाड चिल्लाया, 'ऐ नवाब बहादुर ! सुबह सुबह किसे प्रेमपत्र डालने जा रहे हो ?"

सोमनाथ हँसने लगा, "तुम्हे क्या हुआ ? दो-तीन दिन लापता क्या रहे ?"

"तुम मिनिस्टर के सी० ए० तो हो नहीं कि तुम्हारे साथ बैठक जमाने पर नौकरी मिल जायेगी। अपने सिर-दर्द से पागल हो रहा हूँ, राइटर्स बिल्डिंग में घुसना आजकल इतना कठिन हो गया है कि क्या बताऊँ !'

'मिनिस्टर के सी० ए० ही शायद नही चाहते कि फालतू आदमी आकर उनकी जान खायें।' सोमनाथ बोला।

यह कह देने से काम नहीं चलेगा। यदि मिनिस्टर के सी० ए० हो तो आदमियो से तो मिलना ही पड़ेगा। खासकर जो हमारी तरह एम० एल० ए० की सिफारिश लेकर आये हैं, उनसे तो छुटकारा मिल ही नहीं सकता।"

इसके बाद सुकुमार बोला, 'चल, तेरे साथ पोस्ट आफिस का चक्कर लगा आऊँ। डर मत, तेरे एप्लिकेशन मे हिस्सा लेने नही जा रहा ! जहाँ तेरा मन चाहे, वहाँ चिट्ठी भेज मैं कोई बाधा नही दूगा।'

सुकुमार फिर बोला, 'तुझसे क्या छिपाना, पिछले दो दिनो से जी० पी० ओ० के सामने पश्चिम बगाल सरकार की नौकरी के साइक्लोस्टाइल

फाम बेचकर दो पैसे कमाये हैं। क्लक की नौकरी जो ठहरी फाम तुरन्त बिक गये। मौका देखकर कपूर नामक एक मरदूद हजारों फाम साइक्लोस्टाइल कराके बाजार में भेज रहा है, थोक रेट पर। एक रुपये में मैंने दस फाम कपूर से खरीदे और पन्द्रह पैसे प्रति फाम की दर से वे बिके। ३० फाम बेचकर पाकेट में पूरा डेढ रुपया जमा कर लिया।

"कपूर साहब ने अच्छी अक्लमन्दी दिखायी है।" सोमनाथ बोला।

"लेकिन इधर तहलका मच गया!" सुकुमार बोला, "कोई नहीं जानता, और मिनिस्टर के सी० ए० से मेरा परिचय न होता तो मुझे भी नहीं मालूम पडता। पन्द्रह जगहों के लिए इसी बीच एक लाख एप्लिकेशन्स आ गये हैं। इसको लेकर विभाग में बडी उत्तेजना फैली हुई है। टॉप अफसर दो बार मिनिस्टर के सी० ए० से आकर मिला है।"

"चलो नींद तो टूटी। देश किस ओर जा रहा है, यह जान वे भाग दौडकर रहे है।" यह खबर सुन सोमनाथ थोडा आश्वस्त हुआ था।

"हट, देश की चिन्ता में तो जैसे वे रात भर सो ही नहीं पाते! अरे वे तो अपनी जान बचाने में जुटे है। एक लाख एप्लिकेशन्स इसी बीच में आ गये हैं, यह सुनकर सी० ए० बोला, 'इनमें से चुनाव कैसे होगा?'"

अफसर बोले, "चुनाव तो बाद की बात है। पहले यह बताइए कि मैं क्या करूँ! प्रत्येक एप्लिकेशन के साथ तीन रुपये का पोस्टल आर्डर आया है। तीन रुपये का पोस्टल आर्डर चूंकि नहीं होता है अतः एक एक रुपये के तीन पोस्टल आर्डर हर एप्लिकेशन के साथ हैं। एक लाख में तीन का गुणा, यानी तीन लाख क्रॉस्ड पोस्टल आर्डर के पीछे हस्ताक्षर कर उन्हें रिजर्व बैंक में जमा कराना होगा और सारे काम बन्द कर एक दिन में पाँच सौ फाम सही करने पर भी मुझे ढाई वर्ष लग जायेंगे। और, फिर मामला भी रुपये पैसे का है। हस्ताक्षर नहीं करने पर आडीटर आपत्ति करेगा और नौकरी छूट जायेगी।"

सुकुमार हो हो कर हँसा। बोला, "लगता था कि लोग पागल हो गये हैं। मैं तो आज तक ऐसी आफत में नहीं फँसा था।"

"कौन सा डिपार्टमेंट है?" सोमनाथ ने पूछा। और उत्तर सुनते ही उसका मुँह उतर गया। उसी पोस्ट के लिए वह तीन रुपये का पोस्टल

आडर खरीदने जा रहा था।

सुकुमार बोला, "तब तो चल! तेरे तीन रुपये बच गये। उन रुपयों से फुटबाल का मैच देख, मूंगफली खा, मौज कर ले।"

फुटबाल का नशा सोमनाथ को बहुत दिनों से है। सुकुमार भी फुटबाल-पागल है। दोनों बहुत बार, एकसाथ मैदान में आये हैं। सोमनाथ बोला "चल, मैदान ही चलें।" लेकिन सुकुमार में स्वाभिमान की मात्रा बहुत अधिक है, वह किसी भी तरह सोमनाथ के पैसे से खेल देखने को राजी न हुआ।

सोमनाथ को सहसा अरविन्द की याद आ गयी। उसने सुकुमार से कहा 'सुना तूने, अरविन्द के साथ रत्ना का विवाह हो रहा है, घर में वह एक कार्ड दे गया है।"

सुकुमार बोला, "मुझे भी एक कार्ड भेजा है, डाक से। 'शुभ विवाह' का कार्ड देख घर में कई तरह की चर्चा हुई। अरविन्द के विवाह में जाऊँगा। हजार हो, वर-वधू दोनों हो हम लोगों के मित्र हैं। पर विवाह का मतलब तो तू जानता ही है।"

सोमनाथ चुप रहा। सुकुमार बोला, "सोचा था, एक बार खाली हाथ ही जाकर मिल आऊँगा, पर यह सुन मेरी बहनों ने मेरा मजाक उड़ाया। बोलीं, 'भैया, क्या तुम्हें लाज शरम नहीं रह गयी है कि मिठाई-मछली खाने को इतना ललच रहे हो? खाली हाथ विवाहवाले घर में जाओगे?'"

सोमनाथ के बहन नहीं, अतः भाई बहन एक दूसरे को कैसे छेड़ते हैं, इससे वह परिचित नहीं है।

सुकुमार बोला, "कना को भी दोष नहीं दे पाता। उसकी सहेली के विवाह का निमन्त्रण-पत्र भी आया था। प्रेजेंट नहीं खरीदा गया, इसी-लिए वह बेचारी भी नहीं जा सकी।"

सोमनाथ बोला 'अरविन्द को क्रेडिट का मानना पड़ेगा, वस्ट कीन रिचर्ड्स जैसी कम्पनी में घुस गया है।"

सोमनाथ की बात सुन सुकुमार व्यंग्यपूर्ण हँसी हँसा, 'क्रेडिट उसकी नहीं, उसके बाप की है। आयरन स्टील कण्ट्रोल में ऊँचे पद पर हैं, देख-

भाल कर सब कर दिया है।"

थोडा ठहर सुकुमार बोला, "तो भी भाई, मुझे गुस्सा नही आता।'

क्यो ?' सोमनाथ ने पूछा।

उसके बैच मे बारह मैनजमेण्ट ट्रेनी हैं—उनमे एकमात्र अरविन्द ही स्थानीय है, और सब तो हरियाणा, पजाब और तमिलनाडु से आये हैं। इन सब भाग्यवानो के पीछे भी बाप, मामा या चाचा ही हैं। वैसे अरविन्द कह रहा था कि उसके बच मे कोई भी यह मानेगा नही कि दिल्ली मे बडी बडी सरकारी नौकरियो पर उनके रिश्तेदार हैं। सब ऐसा दिखाते हैं मानो अपनी विद्या बुद्धि के बल पर ही वेस्ट-कीन रिचड स मे आये हैं। कलकत्ते के लडको मे तो कोई मेरिट है नही। जानते हो सोमनाथ, जिस दिन इस वेस्ट कीन रिचड स को कोई झुनझुनवाला या बाजोरिया खरीद लेगा, उस दिन देखना सब मेरिट राजस्थान या उनके गाव से आयेगी।'

सहसा सुकुमार और सोमनाथ दोनो गम्भीर हो उठे और फिर अनायास एकसाथ ही हँस पडे। सुकुमार बोला, 'हम ठहरे साधारण व्यापारी, हीरे की सौदागरी की चिन्ता मे क्यो बेकार सिर खपा रहे हैं? हमे अफसरी तो चाहिए नही साधारण क्लर्की चाहिए। और जो स्थिति मेरी है, उसमे तो मैं बैरा बनने का भी तैयार हूँ।"

-

आजकल बाबूजी को देख कमला को तकलीफ होती है। ऊपरवाले उसी बरामदे मे बैठे असहाय से छोटे बेटे के लिए छटपटाते रहते हैं।

आरामकुर्सी म ठीक से बैठे हुए द्वैपायन बोले, "जानती हो बहूरानी, कैसी भी नौकरी उसे मिल जाये तो मुझे सन्तोष हो जायेगा। अब खोका का भी कोई आधार होना जरूरी है।"

कमला गहरे विश्वास के स्वर म बोली "कुछ-न कुछ जरूर होगा, बाबूजी!"

'कोई आसार तो नही दिख रहे बहूरानी!" द्वैपायन दुखित स्वर मे बोले।

चश्मा आँखों से उतार सामने की मेज पर रखते हुए द्वैपायन बोले, जिसके बड़े भाई अच्छे ओहदे पर हों, उसके लिए एकदम मामूली नौकरी करना भी बहुत यन्त्रणाप्रद है। सोमनाथ ऐसा महसूस करता है या नहीं, मालूम नहीं, पर मुझे बहुत कष्ट होता है।"

कमला ने कई बार सोचा है कि भाई यदि चाहें तो सोमनाथ के लिए अपनी आफिस में चेष्टा कर सकते हैं। आज यही बात उसने श्वसुर से कही।

द्वैपायन बोले, ' यह बात मेरे दिमाग में न आयी हो, ऐसी बात नहीं है। भोम्बल और काजल दोनों से ही खोज-खबर लेने को कहा था, लेकिन उपाय नहीं है। अपने भाई को आफिस में रखने पर युनियन हंगामा करेगी। भोम्बल की आफिस में तो बड़े साहब ने एक गुप्त सूचना दी है कि किसी अफसर के रिश्तेदार को आफिस में रखने के पहले कागजात उसके पास भेजे जायँ। साथ ही कह दिया है, यह सब उन्हें एकदम पसन्द नहीं है।"

"दोनों भाई ही अगर काबिल हों तो भी क्या एक आफिस में काम नहीं कर सकते?" कमला बड़े साहब के विचार से सहमत न हो सकी।

द्वैपायन बोले, "तब भी नहीं। साहब लोगों का विचार है कि एक ही परिवार के अधिक लोगों के एक ही आफिस में आ जाने पर बहुत-सी समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं।'

कमला को यह अच्छा नहीं लगा। बोली, "एक ही परिवार के लोगों के एक ही आफिस में रहने पर उल्टे सुविधा रहेगी। एक-दूसरे का ध्यान रखेंगे।"

द्वैपायन हँसकर बोले, "बहूरानी, दफ्तर और परिवार एक चीज नहीं है, तुम भोम्बल से पूछकर देख लेना।"

कमला किसी भी तरह यह तर्क समझ नहीं पायी। बोली, "कैसे बाबूजी? उनकी आफिस से जो हाउस मैगेजीन आती है, उसके प्रत्येक अंक में लिखा रहता है—कम्पनी एक परिवार है, प्रत्येक कर्मचारी उस परिवार का सदस्य है।"

द्वैपायन हँसे, ' यह बात सच नहीं है, बहूरानी। नाम के वास्ते कहना

पड़ता है, इसीलिए बड़े लोग कहते रहते हैं। पर कोई विश्वास नहीं करता। भाम्बल ने एक किताब लाकर दी थी। उसमें पढ़ा था दफ्तर परिवार से ठीक उल्टा होता है। दफ्तर मे आदर्शों का कोई मूल्य नहीं होता जो कम्पनी को अधिक कमाकर दिखा दे वही बढ़िया काम करता है और उसी की पूछ होती है। वह व्यक्ति मनुष्यता की दृष्टि से कैसा है, इसकी चिन्ता कोई नहीं करता, जबकि परिवार मे हम मनुष्यतत्व को ही अधिक मूल्यवान समझते हैं। स्नेह, ममता, दया, मोह इन सबका दफ्तर मे कोई मोल नहीं है। जो भूल करे, गलती करे, दोष करे, नियम तोड़े, ढंग से प्राडक्शन नहीं करे, उससे कर्म के क्षेत्र में निर्दयता बरती जाती है, परन्तु परिवार मे ऐसा नहीं होता। आफिस में जो अच्छा काम करता है, उसका आदर होता है, पर घर मे यदि कोई लड़का परीक्षा मे फेल हो जाता है तो उस पर से स्नेह कम नहीं होता बल्कि बढ़ जाता है।"

कमला इतना सब नहीं समझती। आश्चर्यचकित हो सरल मन से बोली, तब तो परिवार बहुत अच्छी जगह है, बाबूजी ?"

द्वैपायन हँसे, 'अरे, घर ही तो हम लोगों की शरणस्थली है—परिवार के भले के लिए ही तो लोग दफ्तर जाते हैं।"

कमला बोली, 'कभी दफ्तर तो गयी नहीं, इसीलिए कुछ समझती नहीं बाबूजी !"

'बहुत-से लोग सारा जीवन दफ्तर जाकर भी कुछ नहीं समझ पाते, बहू ! घर परिवार का मूल्य भी वे नहीं जानते।'

कमला अपनी बड़ी-बड़ी आँखों मे विस्मय भरे श्वसुर की ओर देखती रही। द्वैपायन बोले, "भोम्बल से कहना, एक बार फिर से वह किताब ले आयेगा। उसे फिर एकबार उलटकर देखूंगा और तुम भी पढ़ लेना। उसमे एक बात मुझे बहुत अच्छी लगी थी—हमारा यह समाज भी एक प्रकार का अरण्य ही है। ईंट, लकड़ी और पत्थर से निर्मित इस अरण्य मे जंगल के ही नियम-कानून चलते हैं। इसमे परिवार एक छोटे से बिल की तरह निरापद स्थान है जहाँ से निकलते ही सावधान होगा। हर वक्त ख्याल रखना होगा कि हम लोग 'मनुष्य के जंगल' मे विचरण कर रहे हैं।"

कमला ने हताश हो पूछा, "इसका मतलब है कि भाइयों के दफ्तर

से सोम को कोई आशा नहीं ?"

द्वैपायन ने दुखित हो स्वीकार किया "कोई सम्भावना ही नहीं है। और चेष्टा करना भी ठीक नहीं, क्योंकि इसमे दोनो बडे भाइयो का नुकसान हो सकता है।"

द्वैपायन अब बदन पोछने के लिए गुसलखाने चल दिये। इसी बीच कमला जल्दी से एक गिलास हार्लिक्स बना लायी।

ठण्डे पानी के शीतल स्पर्श से द्वैपायन तरोताजा हो गये। थकान कम हो गयी।

कमला उठ रही थी कि द्वैपायन बोले, "खाना तो बन चुका होगा ?"

इस समय खानेवाले कम हैं। नगेन दी अब केवल रोटियाँ सेंक रही हैं।'

द्वैपायन की इच्छा है बहू थोडी देर और बैठे। बोले, "तुम्ह यदि असुविधा नहीं हो तो थोडी देर और बैठो ना, बहूरानी !"

बाबूजी का मन कमला समझती है। एकमात्र बहू के साथ ही वे सहज हो पाते हैं। और लोगो से बात करते समय तो पता नहीं कैसी एक दूरी आ जाती है। लडके पास आ उनकी बात सुन जाते हैं, कुछ कहने को होता है तो सूचना दे देते है, पर परिवेश सहज नहीं हो पाता। कमला के मन म बाबूजी के प्रति श्रद्धा है, पर अवसर आने पर वह उनसे सवाल भी कर बठती है। और बाबूजी के मन मे भी बहू के लिए विशेष स्नेह है, यह सहज ही जाना जा सकता है। बहू के सवाल करने पर, नाराज होना तो दूर, वह खुश ही होते हैं। लडको मे इतना साहस नहीं। वे प्रश्न भी नहीं करते प्रतिवाद भी नहीं करते। बाबूजी का आदेश उनसे टाला नहीं जाता।

कमला बोली, 'बाबूजी, आपको दोनो वक्त घूमने जाना चाहिए।"

'ठीक तो हूँ, बहूरानी ! यहाँ बैठा बैठा ही ससार को काफी-कुछ देख लेता हूँ।' द्वैपायन न सस्नेह उत्तर दिया। फिर थोडा ठहरकर बोले, "आजकल टहलना अच्छा नहीं लगता। उम्र हो गयी है।"

"आपकी ऐसी कोई उम्र नहीं हुई।" कमला ने मधुरता से डाँटते हुए कहा 'आपके मित्र देवप्रिय बाबू आपसे छ महीने पहले रिटायर हुए थे।

वह सुबह से शाम तक चक्कर लगाते रहते हैं, ताश खेलते है।"

"देवू हमेशा से ही मस्त है। ताश का पुराना नशा है। मुझे अब ताश बिल्कुल अच्छी नही लगती।" द्वैपायन बोले।

छोटी बच्ची जैसे उत्साह से कमला बोली, "काकी माँ उस दिन देवप्रिय बाबू को खूब डाँट रही थी, क्योंकि काका बाबू कोई भी फिल्म नागा नही छोडते। और तो और, आजकल मैटिनी शो म लाइन लगाकर अकेले-अकेले हिन्दी फिल्म भी देख आते हैं।"

गम्भीर द्वैपायन अब हसी नही दबा पाये। बोले, "तो देवू बुढापे मे हिन्दी फिल्मो के चक्कर मे पड गया! साथ मे वहू को भी ले जाये तो घर मे कलह न हो।"

"कसूर काका बाबू का नही है।' कमला ने बताया 'काकी माँ भगवान की फिल्म छोड और कुछ देखने जायेंगी ही नही।"

इस प्रकार की बातचीत इस परिवार का कोई भी व्यक्ति बाबूजी के साथ नही कर सकता।

बाबूजी अब फिर सोमनाथ की चिन्ता कर रहे है यह कमला उनके चेहरे के भाव देखकर ही समझ गयी।

द्वैपायन ने पूछा, 'खोकोन कहाँ है?"

सोमनाथ अभी तक वापस नही आया, सुनकर एक बार द्वैपायन को थोडा गुस्सा आया। सोचा, उसे कोई परवाह ही नहीं है—बस, इधर से उधर घूमता रहता है। फिर उन्होंने स्वय को सँभाला। घूमना छोड वह कर भी क्या?

सोमनाथ के ठीक समय पर लौट आने से द्वैपायन थोडा निश्चिन्त हो जाते हैं। आजकल जैसा खून खराबी का समय चल रहा है, उससे द्वपायन को कभी कभी दुश्चिन्ता होने लगती। कुछ वष पहले अकेली लडकी को घर से बाहर भेजने मे मा बाप डरते थे, पर आजकल तो जवान लडको की ही ज्यादा चिन्ता होती है। भीतर ही भीतर कौन जाने इनके मन में कब क्या आ जाये? फिर राजनीति के नशे मे पार्टीबाजी म पडकर समाज पर क्रोधित हो कब क्या कर बैठें किसे मालूम? द्वैपायन ने सोचा, आत्महनन के सिवा इस युग के स्वाभिमानी जवान लडके और कुछ भी

नही जानते ।

कमला ने श्वसुर का ध्यान दूसरी ओर मोडते हुए कहा, "आज सोम के मित्र अरवि द के विवाह की पार्टी है। जाना ही नही चाहता था, मैंने ही जबदस्ती भेजा है ।"

"तो अरवि द को काम मिल गया ? पढने लिखने मे तो वह बहुत अच्छा नही था ?" द्वैपायन बोले ।

' उसके पिता ने चेष्टा करके उसे किसी बडे आफिस म रखवा दिया है, सोम बता रहा था ।"

बहू की यह बात सुन, द्वैपायन परशान हो उठे । अपनी अक्षमता को छिपाने के लिए जैसे सारा दोष सोमनाथ के ऊपर डालने का प्रयास किया। काफी विरक्ति से बोले, "ऐसा कसे हुआ, बोलो तो ?"

कमला कोई जवाब न दे चुप रह गयी ।

द्वैपायन बोले "मुझे परीक्षा मे कभी खराब अक नही मिले । अपनी मेहनत से प्रतियोगिता परीक्षा पास कर सरकारी नोकरी मे चला गया। इसके बडे भाइयो के लिए कभी मास्टर तक नही रखना पडा और उ होंने सबकुछ इतनी अच्छी तरह से पास किया । फिर यह खोकोन क्यो इतना साधारण निकला ?"

कमला श्वसुर के साथ सहमत नही हो पा रही है । सोम बिल्कुल ही आर्डिनरी नही है, उसका दिमाग तेज है । कमला बोली, "परीक्षा आजकल पूरी तरह लाटरी है बाबूजी ! सोम तो काफी तेज लडका है ।"

द्वैपायन ने ओठो को भीच कहा, ' तो तुम कहना चाहती हो, उससे एक्जामिनर की दुश्मनी थी ?"

"हो सकता है, ऐसा न हो । पर आजकल जैसे परीक्षाए ली जाती हैं उसमे परीक्षक ज़रा भी यह नही समझते कि लडके लडकियो का जीवन उन पर निभर करता है ।'

' बहूरानी इ ही सबके बीच कइयो ने अच्छा रिजल्ट भी किया है ।" द्वैपायन के स्वर मे छोटे लडके के प्रति व्यग्य फूट पडा ।

छोटे देवर पर कमला का विशेष स्नेह है । विवाह के बाद से ही उसको देख रही हैं । दोनो एक-दूसरे के बहुत निकट आ गये हैं ।

"उसका मन बहुत अच्छा है, बाबूजी !" कमला शात स्वर में बोली।

मन को इस ससार म कोई धोकर नही पियेगा, बहू !" द्वपायन ने विरक्त मन मे कहा, पढाई लिखाई अच्छी नही करने पर इस दुनिया मे किसी का कोई मोल नही है।"

"बाबूजी, पढने लिखने म तेज, पर स्वभाव से दुष्ट लडके आजकल बहुत होते हैं। ऐसे लडके मुझे बिल्कुल अच्छे नही लगते।" कमला बोली। उसका आँचल सिर से खिसक गया था, उसको ठीक कर उसने फिर से सिर ढँक लिया।

"दुधारू गाय की लात सब सह लेते हैं, बहूरानी !" द्वैपायन ने विरक्त भाव से ही जवाब दिया।

'खोकोन कोशिश तो कर रहा है, बाबूजी !" कमला ने श्वसुर को समझाने का वृथा प्रयास करत हुए कहा।

"कोशिश को लेकर ससार म क्या होगा ? रिजल्ट को लेकर ही आदमी के बारे मे निणय किया जाता है।" द्वैपायन सोमनाथ पर अत्यधिक नाराज हो गये है, यह उनकी मुद्रा स जाहिर है।

पर कमला कैसे सोमनाथ के खिलाफ बोले ? सोमनाथ ने कभी बडो की अवज्ञा नही की। घर के सब कायदे-कानून माने हैं। पढने के समय पढने बैठा है और फिर किसी प्रकार की बदमाशी से भी उसका सम्बन्ध नही रहा है। शुरू मे तो वह पढने लिखने मे भी अच्छा था, पर माँ के परलोक सिधार जाने के बाद जाने क्या हो गया। सोमनाथ क्रमश पिछडने लगा। सकेंड डिवीजन म स्कूल फाइनल पास किया। बाबूजी का मन था, एक लडके को इजीनियर एक को चाटड एकाउटेंट एव छोटे लडके को डाक्टर बनायेंगे, पर अच्छे नम्बर नही रहने पर डाक्टरी मे प्रवेश नही मिलता।

कमला को याद आया, सोमनाथ ने एक बार भाभी से कहा था, 'मुझे इतना स्नेह मत दीजिए, भाभी ! मैं आपके विश्वास का मूल्य नहीं चुका पाऊँगा। मैं सभी बातो मे बिल्कुल साधारण हूँ।"

कमला ने जवाब दिया था "अब और ज्यादा बनो मत।"

सोमनाथ बोला था, "माँ पिताजी गोरी थीं, आपने भी तो देखा है। भैया लोग भी गोरे हैं। मेरा रंग दक्षिण—काला है। सौभाग्य से लड़की नहीं हूँ, वरना बाबूजी को यह मकान बेचना पड़ता। पढ़ने लिखने में कभी ढिलाई नहीं की तो भी आखिनरी ही रह गया। कुछ लोग गाने बजाने म और खेल-कूद म प्रवीण होते हैं। मुझसे वह भी नहीं हुआ।"

संसार म सबको मेधावी ही होना है, यह भी कैसी बात हुई? दुनिया के किस देश म कितने लोग मेधावी होते हैं? अधिकांश लोग तो बिल्कुल साधारण ही हैं। फिर भी वे किस तरह सुख शान्ति म रहते हैं! कमला समझ नहीं पाती कि इस देश को क्या हो गया है। मेधावी हो चाहे नहीं, कमला को सोम बहुत अच्छा लगता है। लड़का बहुत सरल है, उनके मन मे कोई भी कलुष नहीं। बहुत-सा घरो म एक भाई दूसरे भाई से ईर्ष्या करता है। सोम को किसी स ईर्ष्या नहीं और भाभी को तो वह मन प्राण से चाहता है, यह कमला अच्छी तरह जानती है।

कमला ने फिर एक बार बाबूजी को समझाने का प्रयत्न किया। बोली, "आजकल के लड़को के बारे म जो सुनती हूँ, उससे सोम बहुत अच्छा है। बाबूजी, उसका मन अभी भी संसार की गन्दगी से कलुषित नहीं हुआ है।"

द्वैपायन इस कथन से भीगे नहीं। बोले, "तुमको कहने म संकोच नहीं है कभी-कभी मन मे आता है कि अधिक संरक्षण देना ठीक नहीं। अधिक सुख, अधिक स्वच्छन्दता, अधिक निश्चिन्तता में रहने पर कई बार मनुष्य के भीतर अग्नि प्रज्वलित होने का सुअवसर नहीं आ पाता। जिनको प्रचण्ड अभाव, प्रचण्ड अपमान भविष्य के प्रति शंका रहती है, वे बहुधा अपने दुखो की साँकल को खुद ही तोड डालते हैं। वे दूसरे के भरोसे नहीं बैठे रहते।"

कमला समझ गयी कि बाबूजी क्या कहना चाह रहे हैं पर यह बात हमेशा सच नहीं होती। सुकुमार को तो बाबूजी जानते हैं, अगर ऐसा ही होता तो इतने दिनो मे वह कुछ आश्चर्यजनक घटित कर देता।

कमला नीचे आ गयी। उसे डर है, सोमनाथ कहीं यह सब न जान जाये। क्रोध मे किसी दिन बाबूजी कहीं सोमनाथ को ही न यह सब कह

दें। बाहर की सारी दुनिया तो बेचारे को अपमानित करती ही है, उस पर यदि घर मे भी आत्मसम्मान चला गया तो लडके का क्या होगा ?

द्वैपायन को भी थोडा सकोच हुआ। सच, ये सब लडके जो अभी भी सभ्य ढग से रह रह हैं, यह कम बडी बात नही है। सुयोग सुविधा न पाने पर, लाखो लडके यदि उद्दण्ड हो जायें तो वह भी एक भयकर स्थिति हो जायगी। सच ही तो, सोमनाथ पर बेकारी के सिवा और कोई भी दोष द्वैपायन नही मढ सकते। एक नौकरी वह जरूर नही पा सका, पर इसका छोड और कोई कष्ट तो उसने बाबूजी को दिया नही है। आजकल के लडको के बारे मे जो जो बातें सुनने म आ रही है जैसे-जैसे काण्ड वे कर रहे है, उन्हे देखते हुए माँ बाप के लिए पागल होने के सिवा और काई उपाय नही है।

कल ही तो द्वैपायन ने सुना, बहुत से बेकार लडके घर म घोर उत्पात मचाते हैं। घर की सारी सुविधाओ का उपभोग ता वे करत ही हैं, ऊपर से सार दिन सबको तेवर दिखाते हैं। व कपडे नही धोत खुद एक गिलास पानी भी लेकर नही पीते, घर का कोई काम नही करते, साथ ही घर का कोई कायदा-कानून मानन का भी व तैयार नहा हैं। घर को भी उन्होंने जगल बना दिया है।

द्वैपायन ने सोचा कि ये लडके बाहर हारकर घर मे किसी-न किसी तरह जीतना चाहते हैं। इनमे से प्रत्येक एक मनोवैज्ञानिक केस है। कल ही तो नगेन बाबू की कहानी सुनी है। उनका बडा लडका 'मस्तान' (गुण्डा) हो गया है। सुबह साढे नौ के पहले उठता नही। नाश्ता करके घर से चला जाता है। खाना खाने के लिए तीन बजे लौटता है, फिर चल देता है। वापस आता है रात के ग्यारह बजे। बीडी सिगरेट पीता है। बाप को पाकेट स पैसे चोरी करता है। नगेन बाबू न जब डाँटकर कहा था 'अपन पुत्र के रूप म तुम्हारा परिचय देत भी मुझे शम आती ह।" तो बेटे न झट से उत्तर दिया था, "तो मत दीजिए।' अत्यन्त दुख म नगेन बाबू बोल थे 'क्या इसी दिन के लिए लोग सन्तान की कामना करते हैं ?" बटा बदतमीजी स बाप के मुह पर जवाब द बैठा, सन्तान का जन्म-कर्म सब फालतू बातें हैं। उसके पीछे आप लोगो की अन्य

कामनाएँ भी तो थी सन्तान तो एक 'बाइ प्रोडक्ट' मात्र है !"

बेटे की बात सुन, नगेन बाबू दो दिन नक बिस्तर से नहीं उठ सके थे। अब भी छिप छिपकर रोते रहते हैं।

बहूरानी से जरा कह देना ठीक रहता कि खोकोन को ये सब बातें न मालूम हो जायें। फिर द्वैपायन ने सोचा, बहू रानी बुद्धिमती है उसको सावधान करने की जरूरत नहीं।

दोपहर की क्लान्ति ने घडी म साढे तीन बजा दिये है, सोमनाथ को अब ख्याल आया। कमला भाभी ठीक इसी समय उठ जाती हैं। रोज की आदत के अनुसार कमला भाभी इस समय घर का लेटर-बाक्स देखती हैं। डाकिया तीन बजे के आसपास आता है और तभी से बाबूजी छटपटाने लगते हैं। बीच बीच मे पूछते हैं, "चिट्ठी-पत्नी कुछ आयी क्या?" बाबूजी के नाम से प्राय रोज ही एकाध चिट्ठी आ जाती है। चिट्ठी लिखने का बाबूजी को नशा है। ससार मे जहाँ कही भी कोई नाते-रिश्तेदार हैं बाबूजी नियमित रूप से उनको पत्र लिखते हैं। इसके अलावा आफिस के पुराने दोस्त भी हैं। रिटायर होने के बाद वे भी चिट्ठी लिख लिखकर द्वपायन की खोज-खबर लेते रहते हैं।

सोमनाथ को भी चिट्ठी पाने की इच्छा होती है, लेकिन एक विदेशी दूतावास की एक नि शुल्क पत्रिका छोड सप्ताह भर म उसके नाम कोई खास डाक नही आती। इस पत्रिका को मगाने की बुद्धि भी सुकुमार की है। दिल्ली के विदेशी दूतावास को उसने दो पोस्ट-कार्डों पर दोनों के नाम से चिट्ठियाँ लिखी थी। बोला था, "पढो चाहे नहीं, पत्रिका ता आने दो। प्रत्येक सप्ताह पत्रिका आने से डाकिया सुकुमार मित्र का नाम जान जायेगा और जब नौकरी की असली चिट्ठी आयेगी तब वह गलती से दूसरी जगह नहीं जायेगी।

इस साप्ताहिक पत्रिका के अलावा पिछले सप्ताह सोमनाथ के नाम से एक पत्र आया था। विश्वविख्यात कम्पनी के विशेष यन्त्र से प्रतिदिन पाँच मिनट कसरत करने पर टार्जन की तरह सुगठित मांसपेशियोवाला

शरीर बन जायेगा। दाम—डाकव्यय सहित कुल अस्सी रुपये, असफल होने पर दाम वापस। विज्ञापन की चिट्ठी मिलने पर पहले बुरा लगा था पर उसके बाद सोमनाथ का मन कृतज्ञता से भर उठा। बम्बई की कम्पनी ने उसका नाम-पता खोज उसे चिट्ठी डाल, उसका कुछ सम्मान तो किया है। नौकरी मिलने पर, सोमनाथ वैसा एक यन्त्र अवश्य खरीद लेगा, पैसे बेकार जाने पर भी उसे दुख नहीं होगा।

इसको छोड सोमनाथ की भेजी रजिस्टर्ड चिट्ठियों की प्राप्ति सूचना के फार्म भी दो तीन दिना के अन्तराल से वापस आ जाते हैं। अपने हाथ से लिखे अपने नाम को सोमनाथ गौर से देखता है। नीचे कम्पनी की एक रबर स्टाम्प रहती है, उसके ऊपर रिसीविंग क्लर्क का अस्पष्ट किचिर-मिचिर हस्ताक्षर रहता है।

आज भी वैसे ही कई फार्म वापस आये हैं। उन्हीं के साथ सोमनाथ के नाम एक चिट्ठी भी आयी है। कई दिन पहले बाक्स नम्बर से एक नौकरी के विज्ञापन का एप्लिकेशन दिया था। उन्होंने ही उत्तर दिया है। लिखा है बिना विलम्ब किये उनके कलकत्ता प्रतिनिधि मि० चौधुरी से वह मिल ले। मि० चौधुरी बहुत थोडे समय के लिए यहाँ रहेंगे, अत जितनी जल्दी सम्भव हो सके, उनसे मिल लेना ठीक रहेगा।

ठिकाना कीड स्ट्रीट का है। समय नष्ट न कर सोमनाथ तुरन्त निकल पडा। भाभी ने पूछा 'बाहर जा रहे हो क्या ?'

झक झक सफेद शर्ट, पैंट और उसके साथ टाई देखकर कमला भाभी ने अन्दाज लगाया सोमनाथ नौकरी की खोज में जा रहा है।

उसने मन-ही मन भगवान से प्रार्थना की उसको एक नौकरी दे दो, ठाकुर! बिना कोई अपराध किये लडका बहुत कष्ट पा रहा है।'

कमला को याद आया सोमनाथ कितना मस्त था। हर वक्त हँसता रहता। बीच बीच में भाभी के पीछे पड जाता। कहता, "भाभी, आपको एक दिन अपने कालेज ले जाऊँगा। लडकियों को देख आप जान जायेंगी कि फैशन किसे कहते हैं। अफसर की बीवी हो गयी हैं, पर आपकी पुरानी स्टाइल बदल नहीं रही है।"

कमला हँसकर कहती, "हम तो पुराने जमाने के हैं भैय्या

जन

तुम्हारी शादी के समय जरूर देख सुनकर आधुनिक लडकी पसन्द करके लायी जायगी।'

सोमनाथ बोलता, "हम अपना विवाह अपनी पसन्द से करेंगे। कालेज की लडकियाँ तो पहले से ही निश्चित करके रहती हैं कि किससे ब्याह करेंगी।"

कमला कहती, 'हम भी कालेज मे पढी है। तब तो ऐसा नहीं था।"

सोमनाथ बोलता 'वह सब जमाना लद गया। आजकल सभी लडकिया अपनी पसन्द के अनुसार ब्याह करना चाहती हैं।"

कमला के जन्म दिन पर एक बार सोमनाथ ने कागज का मुकुट तयार किया था। झिलमिल पन्नी लगा हुआ वह मुकुट पहनने के लिए उसने भाभी को बाध्य कर दिया था और फिर फोटो भी उतारी थी।

काजल के साथ जब बुलबुल के विवाह की बात चल रही थी, तब सोमनाथ का ही जानकारी प्राप्त करने का भार दिया गया था। सहपाठिनी के सम्बन्ध मे सोमनाथ बोला था, 'भाभी, दीपान्विता अपने को बहुत ज्यादा समझती है। छोटे भैया के साथ विवाह हो जाने से ठीक ही रहेगा। उसका सारा तेज ही फीका पड जायेगा।"

शाम होने के पहले ही सोमनाथ लौट आया। जब वह शट खोल रहा था तभी कमला उसके कमरे मे आयी। सोमनाथ के चेहरे पर थोडी सी आशा की किरण दिख रही थी।

कीड स्ट्रीट के मि० चौधुरी से सोमनाथ मिला था। नौकरी सेल्स लाइन' की है। कलकत्ते के बाहर ही बाहर घूमना होगा। इसमें सोमनाथ को कोई आपत्ति नही पर वह व्यक्ति कुछ रुपये माँग रहा है।

सोमनाथ उस व्यक्ति पर अविश्वास कर सकता था। पर 'एम० एल० ए० गेस्ट हाउस म बैठ उस भले आदमी न स्वय बात की थी। सोमनाथ की आँखो म दुविधा का भाव देख मि० चौधुरी बोले थे, ' चार सौ रुपये महीने की नौकरी के लिए ढाई सौ रुपये का पेमट आजकल कुछ नहीं है। रेलवे, पोस्ट आफिस, इलेक्ट्रिसिटी बोड की नौकरियाँ तो आजकल नीलाम होती हैं। बहुत-से लोग छ महीने की तनख्वाह सलामी के लिए

देने का तैयार हैं।"

सोमनाथ के मन म जो सकोच था, उसे कमला ने मिटा दिया। वह बोली, 'बाबूजी सुनेंगे तो हो सकता है, गुस्सा हो जायें। पक्के सिद्धान्त वादी हैं—वह घूस रिश्वत के लिए राजी नही होंगे। काजल को भी नही समझा पाऊँगी। पर इन थोडे से रुपया के लिए मौका छोडने से क्या लाभ ? मेरे पास ढाई सौ रुपये हैं।"

घर खच के रुपयो मे से छिपाकर भाभी ये रुपये दे रही हैं, यह सोमनाथ समझ गया। कल कीड स्ट्रीट के एम० एल० ए० क्वाटर के सामने सोमनाथ उस व्यक्ति से मिलेगा। भले आदमी ने चौबीस घण्टे का समय दिया था।

प्रबल उत्तेजना मे समय बीत रहा था। मि० चौधुरी बोले थे, "अभी ढाई सौ देकर बिहार मे पोस्टिंग लीजिए, उसके बाद फिर ढाई सौ खच करिएगा तो कलकत्ते मे ट्रासफर करवा दूगा।"

सुबह सुबह नौकरी मिल जान का स्वप्न देखा सोमनाथ ने। ढाई सौ रुपये पाकेट मे रख मि० चौधुरी ने एक अच्छी नौकरी की व्यवस्था कर दी है। उसी को लेकर घर मे भीतर-भीतर खुशी मनायी जा रही है। बाबूजी मुँह से कुछ नही बोलते पर ऊँचे स्वर से भाभी को और एक कप चाय लाने का हुक्म देते हैं। सोमनाथ को सामने बैठा आफिस की पालिटिक्स से बचने का उपदेश देते हैं। किस प्रकार दफ्तर म सबका प्रियपात्र बना जाता है, इसका तरीका बताते हैं।

भूतपूव कालेज-सहपाठिनी और वतमान भाभी बुलबुल भी खूब प्रसन्न है। वह बोलती है, "मैं कुछ नही सुनूगी सोम—पहली तनख्वाह मिलते ही बढिया हॉल मे एक अग्रेजी सिनमा दिखाना होगा और लौटते समय पाक स्ट्रीट के 'गोल्डेनड्रेगन' मे चाइनीज डिनर।' सामनाथ भी खुश होकर छेडता है, 'मुफ्त मे पैसे मिलत हैं ? सिनेमा दिखा दूगा, पर नो चाइनीज डिनर।" बुलबुल गुस्सा हो कहती है, "मुझे क्यो खिलाओगे ? यह मत सोचो कि जिस ले जाओगे, उसका नाम मैं नही जानती।"

चीना रेस्तरां का दातल्ला किसी का साथ लेकर जान लायक है, ऐसा सन्देह बुलबुल को बहुत दिना से है। जो भी हो, कालेज मे उसने

सोमनाथ को रोज-राज देखा है। और इन सब मामलो मे लडकियां की खोजी आखे इलेक्ट्रानिक राडार को भी मात देती हैं।

सोमनाथ की नौकरी से कमला भाभी सबसे ज्यादा प्रसन्न हुई हैं, पर वह कोई माँग नही रख रही हैं। बीच बीच मे वह केवल छोटे देवर की पीठ पर हाथ फेरकर कहती हैं, 'ओह ! कितनी चिन्ता थी ! मुझे आज ही कालीघाट जाना होगा। किसी को बिना बताये पचास रुपये की मनौती कर रखी है।

बुलबुल बोली, "नो चिन्ता दीदी ! ये पचास रुपये भी सोम की पहली तनख्वाह से कटेंगे।"

पर यह सारा स्वप्न था। अचानक सोम की नींद टूट गयी। कहाँ नौकरी ? नौकरी की मजिल के पास तक नही पहुँचा सोमनाथ।

सुबह भाभी ने धीमे से पूछा, "कब जाओगे ? रुपये निकाल रखे हैं।"

सोमनाथ रुपये पाकेट मे रख, ठीक समय पर घर से निकल पडा।

सोमनाथ को आने म देर क्या हो रही है ? कमला अधीर हो घडी की ओर देख रही है। दोपहर के बाद शाम हो चली, अभी तक सोमनाथ नही आया।

सात बजे सोमनाथ घर आया। उसका क्लान्त, विवर्ण चेहरा देख कमला को सन्देह हुआ।

ठुड्डी पर हाथ रख सोमनाथ चुपचाप बैठा रहा। भाभी के दिये रुपये लेकर सोमनाथ, एम० एल० ए० क्वाटर में, उस आदमी से मिला था। मि० चौधुरी नोटो को पाकेट म रख, सोमनाथ को टैक्सी मे बिठा, कमक स्ट्रीट के एक मकान के सामने ले गये थे। "आप बैठिए मैं व्यवस्था पक्की कर आता हूँ।' यह कहकर वह व्यक्ति जो गायब हुआ तो फिर उसका कोई पता नही चला। पन्द्रह मिनट टैक्सी मे बैठे रहने के बाद सोमनाथ की यह चेतना लौटी कि वह भाग गया है। भाग्य से पाकेट मे एक दस का नोट और था वर्ना सोमनाथ टैक्सी का किराया भी नही दे पाता।

बहुत आशान्वित हो भाभी ने रुपये दिये थे। सब सुन बोली 'तुम्हे

और मुझे छोड यह बात कोई न जानने पाय।"

सोमनाथ को बहुत शर्म आयी। सबकुछ जान-बूझकर बिल्कुल ठगा गया सोमनाथ। भाभी बोली, "इन सब बातो की चिन्ता मत करो। जब अच्छा समय आयगा तो ढेरा ढाई सौ रुपये वसूल हो जायेंगे।"

तब भी सोमनाथ ग्लानिमुक्त न हुआ। भाभी को अकेली पा, पास जाकर बोला था, "बहुत खराब लग रहा है भाभी! ढाई सौ रुपये हिसाब मे किस तरह मिलायेंगी आप ?"

भाभी फुसफुसाहट के स्वर म बोली, "तुम चिन्ता मत करो। तुम्हारे भैया की पाकेट काटने मे मैं पक्की उस्ताद हूँ। कोई नही पकड पायेगा।"

यह बात जाहिर होने पर दोनो ही सबकी हँसी के पात्र बनते। इस कलकत्ता शहर म भी क्या कोई ऐसा मूख है, जो नौकरी के लोभ मे अनजान व्यक्ति को इतन रुपये द द ?

सोमनाथ का अपने ऊपर विश्वास कम होता जा रहा है। दूसरे दिन दोपहर भाभी को अकेली देख सोमनाथ ने फिर यह प्रसग उठाया था, "भाभी, मैं कैसे इतना मूख बन गया, बोलिए तो ?"

"मूख नही, तुम और मैं बहुत भोले हैं, इसीलिए धोखा खा गये। अब जाने दो, माँ कहा करती थी कि विश्वास करके ठगाना भी अच्छा है।"

भाभी की बातें सोमनाथ को बहुत अच्छी लग रही थी। कृतज्ञता से आखें सजल हो रही थी। भाभी के इस स्नेह का मूल्य वह कसे चुकायगा ? पर भाभी स्नेह दे रही हैं ऐसा कोई भाव तक उनके चेहरे पर नही।

पर ठगे जाने का दुख और अपमान बार बार सोमनाथ के मन म घुमडता रहता है। इस कलकत्ते मे इतने बेकार हैं, उनमें से सोमनाथ ही क्यो अपने को ठगाने चला गया ?

इस भावना से सोमनाथ और भी दुबल हो उठता, यदि दो दिन बाद ही बेकारो को ठगनेवाले इस जालसाज को गिरफ्तार करने की खबर अखबारो मे नही निकलती। कीड स्ट्रीट के एम०एल०ए० होस्टल के सामने ही वह आदमी पकडा गया था। सोमनाथ का मन हुआ कि एक बार पुलिस स्टेशन जा, उस व्यक्ति की एकऔर जालसाजी का पता दे दे।

पर भाभी और सोमनाथ ने परामर्श कर निश्चित किया कि बात को दबा देना ही उचित है।

सोमनाथ में थोड़ा आत्मविश्वास फिर जगा। अकेला सोमनाथ ही नही ठगा गया, बहुत से लोग इस फन्दे में फसे और सोमनाथ से भी अधिक रुपये खोये हैं।

अब लगता है, विपत्तियों के बादल छंटने लगे हैं। एक दरख्वास्त का जवाब आया है। लिखित परीक्षा होगी। निर्दिष्ट समय पर परीक्षा के लिए दस रुपये लेकर परीक्षा हाल में मिलने का निर्देश दिया गया था।

दूसरे दिन प्रात काल ही सुकुमार खबर लेने आया। अब सुकुमार के पास समय नही था। उसने भाभी को देखते ही प्रश्न किया, 'सोम कहाँ है ?" सुकुमार को भी परीक्षा की चिट्ठी मिली है। वह अत्यधिक खुश है।

मुह बनाकर उसने सोमनाथ से कहा, "देखा तो, तदबीर का नतीजा निकला या नही ? हमारे मुहल्ले के बहुत से लडको ने दरख्वास्त दी थी, पर किसी को परीक्षा की चिट्ठी नही मिली। मिनिस्टर के सी० ए० को यो ही थोड़े पकड़ा है। झूठ क्या बोलू, सी० ए० ने कहा था कि हम दोनो को ही चास मिल जाये ऐसी व्यवस्था वे करेंगे।"

अब सुकुमार ने भाभी की खोज की। प्रफुल्लित मन से कमला से बोला, 'सी० ए० ने अपना काम कर दिया है, अब आशीर्वाद दीजिए कि हम अपना काम ठीक से कर पायें।"

"भगवान अवश्य ही तुम लोगो का भला करेंगे।" भाभी ने आशीर्वाद दिया।

सुकुमार की एक खराब आदत है। उत्तेजित होते ही दोनों हाथो को तेजी से एक-दूसरे पर रगड़ने लगता है। इसी तरह हाथ रगड़ते-रगड़ते सुकुमार बोला, "भाभी, एक पत्थर से यदि दो शिकार कर लिये जायें तो ग्रैंड रहे। एक ही आफिस में दोनो नौकरी करेंगे।'

सुकुमार बोला 'कठिन परीक्षा है। अंग्रेजी, गणित, जेनरल नालेज,

सबकी परीक्षा लेंगे। इसलिए आज से परीक्षा के दिन तक आप मेरी छाया भी नहीं देख सकेंगी। मिनिस्टर के सी० ए० हमे पास दे सकते हैं पर परीक्षा तो हमे ही पास करनी होगी।'

सुकुमार सचमुच ही सोमनाथ को चाहता है। जाने के पहले बोला, "दो-चार दिन मन लगाकर पढ। वसे, तेरा तो परीक्षा पर विश्वास ही नहीं रहा। यदि अन्त मे मेरी चप्पल भी टूटी और तुझे पास भी न मिले तो बहुत खराब लगेगा।"

निश्चित दिन माथे पर दही का बडा सा टीका लगा, सुकुमार परीक्षा-भवन म पहुँचा था। सोमनाथ ने इतना आडम्बर नहीं किया। जबरन भाभी ने उसकी जेब मे कालीघाट का एक जवाफूल रख दिया था। बोली थीं, "साथ रखना, माँ का फूल पास रहने पर, राह घाट मे कोई विपत्ति नही आयेगी।'

सोमनाथ इन सब पर विश्वास नही करता, पर भाभी के साथ बहस करने की इच्छा नही हुई।

लेकिन हॉल के पास आते ही सोमनाथ ने आशा छोड दी थी। स्कूल फाइनल की परीक्षा की तरह ही भीड। हजारो लडके आ रहे हैं और उस पर यह परीक्षा कई दिनो तक चलती रहेगी। सोमनाथ को रोल नम्बर पर ध्यान देकर ही स्थिति को समझ लेना चाहिए था। उसका नम्बर चौबीस हजार से भी अधिक था। इसके ऊपर और कितने हैं कौन जाने ? हिंदुस्तानी फेरीवालो को भी खबर है। वे मूडी, मूगफली चाय, पावरोटी आदि के खोमचे लगाये बैठे हैं।

दिन बीत जाने पर सूखा मुह लिए सोमनाथ वापस घर आया। भाभी अधीर हो उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह जानना चाहती हैं कि कैसी परीक्षा हुई ? पर सोमनाथ का क्लान्त हाव-भाव देख, उनकी इच्छा कुछ भी जानने की न रही। काम का बहाना बना, बाबूजी भी नीचे आ गये। उन्होंने कायदे से पूछा, "लौटते समय बस मिलने म दिक्कत तो नही हुई ?"

सोमनाथ सब समझ रहा है। बाबूजी नीचे क्यो आये हैं, यह भी वह जानता है। वह गम्भीर हो बोला, "इस प्रकार लोगो को तकलीफ न

पर भाभी और सोमनाथ ने परामर्श कर निश्चित किया कि बात को दबा देना ही उचित है।

सोमनाथ मे थोडा आत्मविश्वास फिर जगा। अकेला सोमनाथ ही नही ठगा गया, बहुत से लोग इस फन्दे मे फसे और सोमनाथ से भी अधिक रुपये खोये हैं।

अब लगता है, विपत्तियो के बादल छँटने लगे हैं। एक दरख्वास्त का जवाब आया है। लिखित परीक्षा होगी। निर्दिष्ट समय पर परीक्षा के लिए दस रुपये लेकर परीक्षा हाल म मिलने का निर्देश दिया गया था।

दूसरे दिन प्रात काल ही सुकुमार खबर लेने आया। अब सुकुमार के पास समय नही था। उसने भाभी को देखते ही प्रश्न किया, 'सोम कहा है?" सुकुमार को भी परीक्षा की चिटठी मिली है। वह अत्यधिक खुश है।

मुह बनाकर उसने सोमनाथ से कहा, "देखा तो, तदवीर का नतीजा निकला या नही? हमारे मुहल्ले के बहुत-से लडका ने दरख्वास्त दी थी, पर किसी को परीक्षा की चिट्ठी नही मिली। मिनिस्टर के सी० ए० को यो ही थोडे पकडा है। झूठ क्यो बोलू, सी० ए० ने कहा था कि हम दोना को ही चास मिल जाये ऐसी व्यवस्था वे करेंगे।"

अब सुकुमार ने भाभी की खोज की। प्रफुल्लित मन से कमला से बोला, "सी० ए० ने अपना काम कर दिया है अब आशीर्वाद दीजिए कि हम अपना काम ठीक से कर पायें।"

"भगवान अवश्य ही तुम लोगो का भला करेंगे।" भाभी ने आशीवाद दिया।

सुकुमार की एक खराब आदत है। उत्तेजित होते ही दोनों हाथो को तेजी से एक-दूसरे पर रगडने लगता है। इसी तरह हाथ रगडते-रगडते सुकुमार बोला, "भाभी, एक पत्थर से यदि दो शिकार कर लिये जायें तो ग्रैंड रहे। एक ही आफिस म दोनो नौकरी करेंगे।'

सुकुमार बोला, "कठिन परीक्षा है। अग्रेजी गणित जेनरल नालेज,

सबकी परीक्षा लेंगे। इसलिए आज से परीक्षा के दिन तक आप मेरी छाया भी नही दख सकेंगी। मिनिस्टर के सी० ए० हमे पास दे सकते हैं, पर परीक्षा तो हम ही पास करनी होगी।'

सुकुमार सचमुच ही सोमनाथ को चाहता है। जाने के पहले बोला, "दो चार दिन मन लगाकर पढ। वैसे, तेरा तो परीक्षा पर विश्वास ही नही रहा। यदि अन्त म मेरी चप्पल भी टूटी और तुझे पास भी न मिले तो बहुत खराब लगेगा।"

निश्चित दिन माथे पर दही का बडा सा टीका लगा, सुकुमार परीक्षा-भवन मे पहुँचा था। सोमनाथ ने इतना आडम्बर नही किया। जबरन भाभी ने उसकी जेब मे कालीघाट का एक जवाफूल रख दिया था। बोली थी, "साथ रखना, माँ का फूल पास रहने पर, राह घाट मे कोई विपत्ति नही आयेगी।'

सोमनाथ इन सब पर विश्वास नही करता, पर भाभी के साथ बहस करने की इच्छा नही हुई।

लेकिन हॉल के पास आते ही सोमनाथ ने आशा छोड दी थी। स्कूल फाइनल की परीक्षा की तरह ही भीड। हजारो लडके आ रहे हैं और उस पर यह परीक्षा कई दिनो तक चलती रहेगी। सोमनाथ को रोल नम्बर पर ध्यान दकर ही स्थिति को समझ लेना चाहिए था। उसका नम्बर चौबीस हजार से भी अधिक था। इसके ऊपर और कितने हैं, कौन जाने? हिन्दुस्तानी फेरीवालो को भी खबर है। वे मूडी, मूगफली चाय, पावरोटी आदि के खोमचे लगाये बैठे हैं।

दिन बीत जाने पर सूखा मुँह लिए सोमनाथ वापस घर आया। भाभी अधीर हो उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह जानना चाहती हैं कि कैसी परीक्षा हुई? पर सोमनाथ का क्लान्त हाव भाव दख, उनकी इच्छा कुछ भी जानन की न रही। काम का बहाना बना, बाबूजी भी नीचे आ गये। उन्होने कायदे से पूछा, 'लौटते समय बस मिलने मे दिक्कत तो नही हुई?"

सामनाथ सब समझ रहा है। बाबूजी नीचे क्यो आये हैं, यह भी वह जानता है। वह गम्भीर हो बोला, "इस प्रकार लोगो को तकलीफ न

देकर इन लोगों को नौकरी की सार्टीफिकेट मिलनी चाहिए। तो ग्यारह के लिए सत्ताइस हजार लड़के-लड़कियाँ परीक्षा दे रहे हैं। इनमें कौन योग्य है इसका चुनाव कैसे होगा ?

बाबूजी सब समझ गये बात की ओर न बढ़ा के ऊपर चले गये। हालाँकि उनकी इच्छा प्रश्नपत्र देखने की थी पर प्रश्नपत्र परीक्षा भवन में ही वापस ले लिया गया था साथ लाने की अनुमति नहीं थी।

दूसरे दिन सुबह सुकुमार फिर आया। उसके चेहरे के भाव देख भी चिंतित हो उठी। पूछा "क्या हुआ है तुम्हें ? रात को सोये नहीं ?"

सुकुमार फीकी हँसी हँसा। फिर उसने सोमनाथ से पूछा 'क्या रे ? तेरी परीक्षा कैसी हुई ?'

सोमनाथ बिछावन पर लेटा था। उठकर बोला "जो होना था, वही हुआ है।"

सुकुमार बोला, 'अंग्रेजी रचना में कोई विकल्प नहीं था। एम० एल० ए० से सुना था 'गरीबी हटाओ' आयेगा। वह निबन्ध इतनी अच्छी तरह जबानी याद किया था कि अगर आ जाता तो पता नहीं क्या कर देता। जीवेन मुखर्जी गोल्ड मेडलिस्ट की रचना थी।'

सोमनाथ चुपचाप सुकुमार की ओर देखता रहा। वह बोला, "बेकारी के सम्बन्ध में भी एक लेख बड़ी मेहनत से तैयार किया था। बेकारी की समस्या दूर करने के लिए साधारण किताबों में छः सूत्र रहते हैं, पर मैंने सत्रह सूत्र याद किये थे। इस विषय पर निबन्ध आ जाने पर मैं दिखा देता, परन्तु ऐसा फूटा भाग्य है कि जो निबन्ध आया वह था—'भारतीय सभ्यता में अरण्य का अवदान'।'

चेहरे पर विद्रूप का भाव लाते हुए सुकुमार ने पूछा, 'तूने क्या लिखा है ? अवश्य ही इस विषय की तूने तैयारी कर रखी होगी।"

"तेरा सिर !" सोमनाथ ने गुस्से में जवाब दिया।

"मुझे भी गुस्सा आया था, पर नौकरी की खोज में निकलने पर गुस्सा करने से नहीं चलता। तभी बढ़ा चढ़ाकर लिख दिया कि जंगल न रहने पर भारत की सभ्यता रसातल चली जाती—कोई उसे नहीं बचा

पाता।" सुकुमार असहाय भाव से बोला।

"तूने तो तब भी लिख दिया, मैं तो छोड ही आया।"

सुकुमार ने पूरे प्रसग को बहुत गम्भीरता से लिया था। मुँह सकुचाते हुए बोला, "भाई सोम, अन्तिम पेपर मे आकर डूब गया! जेनरल नालेज का पर्चा बहुत खराब हुआ है।"

सोमनाथ को ये सब बातें अच्छी नही लग रहीं थी पर सुकुमार आसानी से छोडनेवाला जीव नही है।

सुकुमार बोला, "केवल एक प्रश्न का सही उत्तर दे पाया। भारत मे बेकारो की सख्या कितनी है? कण्ठस्थ था—पाच करोड। ये दो नम्बर कोई बच्चू काट नही पायेगा।"

'एक सौ मे दो नम्बर क्या कम हुए?" सोमनाथ ने व्यग्य किया।

सुकुमार के दिमाग मे वह सब सूक्ष्म सकेत नही घुसा। वह बोला, "और भी एक प्रश्न मे दो नम्बर दे सकता है, नही भी दे सकता है। उसी का लेकर चिन्ता कर रहा हूँ। भाई, नीलगिरि के लिए मैंने लिख दिया है, दक्षिणाचल का पवत। पर और लडको ने कहा, मुझे नम्बर नही मिलगे। नेशनलाइज्ड सस्था की नौकरी है, लिखना चाहिए था, भारत का नया युद्धपोत!"

सुकुमार खूब दुखी था, 'मेरे सिर मे सचमुच ही गोबर है। अखबार मे आया था कि प्रधानमन्त्री ने स्वय 'नीलगिरि' का पानी मे उतारा—और मैं क्या बकवास लिख आया—नीलगिरि पवत।"

भाभी चाय देने आयी ता यह बात सुनकर बोली, "मुझे तो लगता है, तुमने ठीक लिखा है। नीलगिरि पवत तो चिरकाल तक रहेगा युद्धपोत नीलगिरि की जिन्दगी कितने वष रहेगी?"

सुकुमार आश्वस्त नहीं हुआ आप भूल रही है भाभी! नीलगिरि सरकारी युद्धपोत है। सरकारी नौकरी के लिए प्रयास करें और सरकारी चीजो के बारे मे लिखें नही—यह कसे चलेगा? अगर मुझे परीक्षक बचाना ही चाहेगा तो दो मे स एक नम्बर दे देगा।"

"यह सब सोचने से क्या होगा?' सोमनाथ ने मित्र को समझाने की चेष्टा की।

पर सुकुमार अपने ही ख्यालों में डूबा था। बोला, "कितना अफसोस हो रहा है कि तुझे क्या बताऊँ ! पृथ्वी के सबसे छोटे गणराज्य का नाम तक जाने बगर चला गया था ।"

'जब दजनों देश है तो उनमे एक सबसे बडा और एक सबसे छोटा होगा ही ।" सोमनाथ की बात मे अबकी बार काफी श्लेष था।

पर सुकुमार इन सब चिन्ताओं से मुक्त नहीं हो पाता। बोला, "अखबार मे काम करनेवाले नकुल चटर्जी से बस मे मिला था, उन्होंने कह दिया उत्तर होगा, सेन्ट मेरिनो राज्य, इटली के पास । इस देश का क्षेत्रफल कलकत्ते के बराबर है, मात्र पन्द्रह हजार लोग वहाँ रहते हैं ।" सुकुमार को बहुत कष्ट हुआ, "पहले से जान लेता तो और दो नम्बर मिल जाते ।"

सोमनाथ अब गुस्से से झल्लाया, "कम्पनी के जनरल मैनेजर को इन सब प्रश्नों के उत्तर आते हैं ?"

सुकुमार इतना मूर्ख है कि सोचता है, वे अवश्य ही बहुत-कुछ जानते हैं वर्ना बड़े बड़े पदों पर कैसे पहुँचते !

सुकुमार बोला, बादवाले प्रश्न मे अवश्य ही बहुत-से लोग गलती करेंगे—दुनिया के सबसे बडे प्राणी का नाम। मैंने तो भाई, सरल मन से हाथी का नाम लिख दिया। नकुल बाबू ने बताया, सही उत्तर होगा, 'ब्ल्यू ह्वेल'। एक एक का वजन १५० टन होता है। उसकी तुलना में हाथी शिशु है।"

"चूल्हे मे जाय यह सब !" सोमनाथ जल उठा, "करनी तो है क्लर्की, उसके लिए हाथी का डाक्टर होने से क्या लाभ ?"

बेचारा सुकुमार थोडा निराश हो गया। बोला, 'तेरी अवस्था मेरी जैसी नहीं है ना ? तू यह सब कह सकता है। तू बड़े आराम से पिताजी और भाइयों के होटल मे रहता है। कोई भी प्रश्न छोड सकता है। मेरे पिताजी को रिटायर होने की दुश्चिन्ता ने सुखा दिया है। अगले महीने से उनकी नौकरी खत्म हो जायेगी। उसके बादवाले महीने से तनख्वाह नहीं मिलेगी। प्रत्येक सप्ताह आठ जनों का राशन जुटाना होगा, हम लोगों को। घर का किराया है, माँ बीमार है इसलिए सब प्रश्नों का जवाब

मुझे देना ही होगा। मुझे हर हालत में नौकरी मिलनी चाहिए।"

सुकुमार उस दिन चला गया था। उसके जाने के बाद सोमनाथ को थोड़ा दुख हुआ था। दुनिया पर उसे जो गुस्सा आता है, उसे सुकुमार पर उतार देना ठीक नही हुआ है।

सुकुमार बेचारे को न जानें उस दिन से क्या हो गया। अधिक आता नही। दिन रात सामान्य ज्ञान बढाता रहता है। एक दिन शाम को सुकुमार मिलने आया। दाढी बढी हुई थी। बोला, "बाबूजी से बहुत डाँट खायी है। बहन भी उसमे योग देती बोली, 'कुछ काम काज तो है नही। केवल थोडी देर के लिए एक दस रुपये का ट्यूशन करने जाते हो। खाली बैठे रहकर क्या सामान्य ज्ञान नही बढा सकते!"

सोमनाथ से कभी किसी ने इस तरह की बात नही कही। लेकिन अचानक सोमनाथ को डर लगा—इस घर म भी तो एक दिन ऐसी बात हो सकती है।

सुकुमार का मन दृढ नही है, यह अच्छी तरह समझा जा सकता है। उसकी यह धारणा होती जा रही है कि सामान्य ज्ञान अच्छा होने पर उसे उस दिन की नौकरी मिल जाती।

सुकुमार खुद ही बोला, "बाबूजी ठीक ही कहते थे, मौका हमेशा नही आता। इतना बडा अवसर आया, किन्तु पृथ्वी के सबसे छोटे गणराज्य का नाम तक नहीं लिख पाया। दोष किसी का नहीं है, मेरा ही है। बगालियो का इसीलिए कुछ नही होता। कुछ प्रयत्न नहीं करत, परीक्षा के लिए बिल्कुल तैयारी नही करते।"

सुकुमार की दोनो आखें लाल हो गयी हैं—ठीक गँजेडिया-जैसी लगती हैं। 'सुकुमार मित्तिर अब गलती नही करेगा। सब प्रकार का जेनरल नालेज बढा रहा हूँ। अबकी बार अवसर मिलने पर दिखा दूँगा।"

"दिखा देना। पर दाढी क्यो नही बनाता? ब्रश कम्पनी को अपनी दाढी बेचेगा क्या?" सुकुमार ने मजाक किया।

मुह विचकाकर सुकुमार बोला, "सुकुमार मित्तिर बेकार हो सकता है पर मद है। सुकुमार मित्तिर ने प्रतिज्ञा की है, कि बाप के पैसे से अब और दाढी नही बनवायेगा। ट्यूशन के पमे मिलन मे देर हो रही है, इसीलिए ब्लेड नही खरीद पाया।"

सोमनाथ उठकर खडा हो गया। कमर के कोने से एक ब्लेड लाकर बोला, "ले, यह तुम्हारे पिताजी के पैस की नही है।"

सुकुमार शात हो गया। पहले ब्लेड ली, फिर पाकेट मे रख ली। इसके बाद क्या सूझा कि पाकेट से निकालकर लौटा दी। बोला, "किसी के भी बाप की ब्लेड मैं नही लूगा।'

झटके से चला गया सुकुमार। सोमनाथ उदास हो गया। जाने से पहले सुकुमार क्या उसी का अपमान कर गया ? सबके सामने याद दिला गया कि सोमनाथ भी काम नही करता, दूसरो के पैसे से दाढी बनाता है।

सुकुमार की हालत और भी खराब हो जायगी, यह सोमनाथ ने नही सोचा था। छोटे भया एक दिन बोले, "तेरे दोस्त सुकुमार को क्या हो गया है ?"

'क्यो, क्या हुआ ?" सामनाथ ने पूछा।

छोट भैया बोले, "मुह पर दाढी का जगल बढ गया है। बालो म तेल नहीं। पोस्ट आफिस के पास, मेरे दफ्तर की गाडी रोक बोला, 'एक अर्जेंट प्रश्न है।' मैं पहले समझ नही पाया। उसने ही परिचय दिया, 'मैं सोमनाथ का दोस्त सुकुमार हूँ।' मैंने सोचा सचमुच ही कोई प्रश्न है। पर उसने बेकार-सा प्रश्न किया, 'चन्द्रमा का वजन क्या है ?' मैंने कहा, 'मैं तो जानता नही, भाई। सुकुमार गुस्से मे आ गया 'जानते हैं, पर यह चाहिए कि बतायेंगे नही।' मैंने कहा, 'विश्वास करो, मैं सचमुच ही चन्द्रमा का वजन नही जानता।' लडका बोला, इतनी बडी कम्पनी के अफ्सर हैं, आप चन्द्रमा का वजन नही जानते ? यह नही हो सकता।' उसके बाद पता नही, क्या बडबडाने लगा कि पूरे दो नम्बर कटेंगे।

छोटे भैया बोले, "इसके बाद मैं रुका नही। ड्राइवर को गाडी चलाने के लिए कहा।" थोडा ठहर भैया बोले, 'पहले तो यह लडका ऐसा नहीं

था। बुरी सगत मे पडकर क्या आजकल गाजा पीता है ?"

अच्छा या बुरा, सुकुमार का कोई साथी ही नही है। अपने विचारो मे लीन वह घूमता रहता है। गरियाहाट के ओवरब्रिज के नीचे दूर से सुकुमार को एक दिन सोमनाथ ने देखा। सोमनाथ को बहुत दुख हुआ। पास जाकर उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए बोला 'सुकुमार हो ?"

सुकुमार के हाथ म एक 'हिन्दुस्तान' इयरबुक की फटी हुई प्रति, एक जेनरल नालेज की किताब और 'कम्पिटीशन रिव्यू' पत्रिका की कई पुरानी प्रतियाँ थी। एक बडे पत्थर पर बैठा सुकुमार पन्ने उलट रहा था। विरक्ति से सोमनाथ की ओर देख सुकुमार बोला 'मन लगाकर थोडा पढ रहा हूँ, क्यो डिस्टब किया ?"

"आह ! सुकुमार !" सोमनाथ डाटकर बोला।

सुकुमार ने कहा, 'तुझसे एक सवाल करता हूँ। जरा बता तो, बेकार कितने प्रकार के होते हैं ?"

माथा खुजला सोमनाथ ने उत्तर दिया 'शिक्षित बेकार और अशिक्षित बेकार।"

झुंझलाकर सुकुमार जोर से चीख उठा, "तू एकम गदहा है। तू चिरकाल तक घमसांड बना रहेगा और भाभियो की दी हुई भूसी खाता रहेगा। तुझे कभी नौकरी वौकरी नही मिलेगी। तेरा जेनरल नालेज का ज्ञान बहुत पुअर है।"

सुकुमार हाफने लगा। फिर बोला, 'लिख—बेकार दो तरह के होते हैं। कुमारी या वर्जिन बेकार और विधवा बेकार। तुम और मैं हुए वर्जिन बेकार—कभी भी नौकरी नही की, मालिक क्या चीज है, यह नही जान पाये। और छँटनी होकर जो बेकार होते हैं, वे हैं विधवा बेकार, जैसे मेरे छात्र के पिता। वह 'राधा ग्लास वर्क्स' म काम करते थे, ऐसा पटका दिया है कि बस सीधे मुह के बल गिरे। मेरी बाकी तनख्वाह भी नही दी। मैं अभी भी ब्लेड नही खरीद पा रहा हूँ। मेरे बाबूजी भी विधवा हो जायेंगे, इस महीने के अन्त तक।'

सोमनाथ बोला, 'घर चल। तुझे चाय पिलाऊँगा।'

सुकुमार गुस्सा हो गया, "नौकरी मिलने पर बहुत चाय पी सकते

हैं। अभी मरने को भी समय नहीं है। जेनरल नालेज के बहुत-से प्रश्न बाकी हैं।"

थोड़ा ठहरकर, सुकुमार ने कुछ याद करने की चेष्टा की। फिर सोमनाथ का हाथ पकड़कर बोला, "तू जानता है—'परेडेविक' क्या है? नकुल बाबू बोले, मेरेडेविक एक प्रकार के सूयमुखी फूल के बीज हैं—पश्चिम बगाल मे रूस से मँगाये जा रहे हैं, जिससे हम लोगों के खानवाल तेल की तकलीफ दूर हो जायेगी। पर किसी जेनरल नालेज की किताब मे इसका उत्तर खोजने पर भी नही मिला। गलती होने पर दो नम्बर चल जायेंगे।'

पत्थर की तरह चुपचाप खडा रहा सोमनाथ। सुकुमार बोला, "रहने दे, रहने दे—ऐसे पोज दे रहा है मानो सिनेमा का हीरो हो गया है। नौकरी यदि चाहता है, तो मेरे साथ जेनरल नालेज से भिड जा। प्रश्न, उत्तर दोनो बोलता जाऊँगा। किसी की हिम्मत हो तो चैलेंज करे। 'डग हो' कहा है? दक्षिण वियतनाम का प्रसिद्ध जिला। गाम्बिया और जाम्बिया क्या एक हैं?—बिल्कुल नही। गाम्बिया पश्चिम अफ्रीका मे है और भूतपूव उत्तरी रोडेशिया का नाम जाम्बिया है।"

दोस्त को रोका सोमनाथ ने, पर सुकुमार बकता चला, 'सिफ पॉलिटिकल साइस जानने से नही चलेगा। इतिहास, भूगोल, साहित्य, स्वास्थ्य विज्ञान, फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथमेटिक्स—सभी विषयो मे हजारो हजार प्रश्नो का उत्तर तैयार रखने होगे। अच्छा, बता तो शरीर की सबसे बडी 'ग्लैण्ड' का नाम क्या है?"

सोमनाथ चुप रहा। प्रश्न का उत्तर उसे नही मालूम।

'लीवर, लीवर!" चिल्ला उठा सुकुमार। फिर अपनी ही धुन में बोला 'फेल कर दे सकता था। पर जो भी हो, भाभी की धमशाला म है, देखकर दुख होता है इसलिए एक और चास देता हूँ। कौन सी धातु साधारण कमरे के तापमान में तरल रहती है?"

इस बार भी सोमनाथ को चुप देख सुकुमार बोला "तू हमेशा भाभी का आँचल ही पकड़े रहेगा? इसका उत्तर भी नही जानता? अरे मूख! 'पारा—मर्करी का नाम नही सुना?'

इसके बाद सुकुमार बोला, "दो इम्पार्टेंट प्रश्नो के उत्तर जानकर रख ले। 'लास्ट सपर' चित्र किसने बनाया था ? उत्तर लियोनार्दो द विंशी। दूसरा प्रश्न 'बिकनि' कहा है ? बडा कठिन प्रश्न है। यदि तू लिख देगा, मेमसाहबो की तैरने की पोशाक, तो सिफ लड्डू मिलेगा। उत्तर होगा प्रशान्त महासागर का एक द्वीप जो एटम बम के कारण प्रसिद्ध हो गया है।"

सोमनाथ को और भी बहुत-से प्रश्न सुकुमार सुनाता। लेकिन सोमनाथ समझ गया, उसका दिमाग खराब हो गया है। मन मे अवसाद लिये उसने चलना शुरू कर दिया। सुकुमार बोला, 'तेरा क्या ? 'होटल डि पापा' मे रह रहा है, न पढने लिखने से भी दिन कट जायेंगे। पर मुझे तो दस दिनो के भीतर नौकरी ढूढनी ही पडेगी।"

आँखो के सामने सुकुमार की यह हालत देख सोमनाथ की आँखें खुलने लगी। एक अनजानी आशका, घने कोहरे की तरह असहाय सोमनाथ को घेरने लगी। उसे भय लगने लगा, वह किसी भी दिन नौकरी नही जुटा पायेगा। लगता है सुकुमार की तरह विधाता उसके भाग्य मे भी नौकरी लिखना भूल गये हैं।

छोटे भैया ने आफिस के एक मित्र को सपत्नीक घर पर दावत दी है। सबसे जूनियर एकाउटेंट काजल की तुलना मे ये महाशय बहुत ऊँचे पद पर हैं। पर काजल के साथ इनका उठना बठना है। इसलिए घर पर एक बार भी आमन्त्रित न करने से उसे अच्छा नही लग रहा था।

बुलबुल के विशेष अनुरोध पर सोमनाथ को गरियाहाट से सामान खरीदने जाना पडा।

कुछ काम न रहने पर भी आजकल सोमनाथ की इच्छा बाजार जाने की नही रहती। वहा अरविन्द मिल सकता है, और मिलते ही पूछेगा, विदश जाने की बात कहा तक पहुँची है। बाजार जाने के पहले बुलबुल बोली थी, "तुम्हारे भैया को बाजार भेजने से कोई फायदा नही। हो सक्ता है, सडी मछली लाकर घर दें।"

दूर खडी कमला भाभी हसते हँसते बोली, "ठहरो, काजल को बुलाती हूँ।"

बुलबुल गदन उठाकर वोली, "डरती हूँ क्या ? जो सच है, वही बोलूगी। आफिस मे एयरकडीशड कमरे मे बैठकर हिसाब किताब देखना और सोच समझकर घर के सामान लाना एक ही बात नही।"

छोटे भया के कान मे दोना बहुओ का वार्त्तालाप बिना पहुचाये ही पहुँच गया। सिर के बाल पोछत पोछत बाथरूम से सीधे आकर उन्होने विजयी भाव से भाभी से पूछा, 'क्या बात है ?"

भाभी ने मजाक का अवसर नही छोडा, "मुझसे क्या ? अपनी बहू से ही पूछो ना ?"

पत्नी से कुछ भी नही पूछा छोट भैया न। बोले "खरीदारी खुद भी तो कर सकती हो ?"

"बातचीत करने का क्या तरीका है, देखा दीदी ?" बुलबुल ने कमला भाभी से पति की शिकायत की।

सोमनाथ को यह सब हँसी मसखरी अच्छी नही लग रही थी। वह अपने कमरे मे दुबका बठा रहा।

यहाँ से उन लोगो की पूरी बातें सुनायी पड रही हैं। कमला भाभी ने काजल को डाँटा, 'तुम क्यो बचारी बुलबुल के पीछे पडे हो ?"

बुलबुल की हिम्मत बढ गयी। पति का सीधा जवाब दिया, ' इच्छा होने पर बाजार जा सकती हूँ। पर अग्नि के सामने मन्त्र पढते हुए खिलाने पहराने की जिम्मेवारी क्यो ली थी ?"

पति पत्नी की यह नोक झोक सोमनाथ को हमेशा बुरी नही लगती। बुलबुल म सखी भाव प्रबल है और कमला भाभी मे मातृ-भाव। कमला भाभी ने दो एक बार सोमनाथ से कहा भी था, "बुलबुल भी भाभी है, उसे भी भाभी कहना।' पर यह सोमनाथ स नही हो सका। भूतपूर्व सहपाठिनी को यो झट से भाभी नही मान सकता सोमनाथ। बुलबुल ने भी वही तरीका अपना लिया। सोमनाथ को देवर न कहकर कालेज के नाम से ही बुलाती है।

कमला भाभी वोली थी, "कम-से-कम 'साम दा' बालो।"

बुलबुल इस पर भी राजी न हुई, "मुझसे उम्र में तो बड़ा है नहीं। चढ़ा आया है दादा ?"

कमला भाभी की आवाज सुनायी दी, ' बिछौने पर लेट अगली रात झगड़ना। अभी खाकान को तो छोड़ दो।

सोमनाथ के कमरे में जा बुलबुल बोली, "भाई सोम, बचाओ।'

सोमनाथ ने हल्के होने का प्रयास करते हुए कहा, ' भैया के हाथों तुम्हारी कैसे रक्षा करूँगा ? सोच समझकर ही तो विवाह के मन्त्र पढ़े थे।"

देवर की ओर टेढ़ी दृष्टि से देख साड़ी के पल्ले से दोनों भीगे हाथ पोंछकर बोली, "तुम भी मेरे पीछे पड़े हो सोम ? आफिस से जो महाशय आयेंगे, उनकी नुक्ताचीनी बहुत मशहूर है। वह ऊँची नाकवाली है। यदि खातिरदारी में कोई कसर रह गयी तो आफिस में चर्चा होगी और तुम्हारे भैया मेरे टुकड़े टुकड़े कर देंगे।'

नकली गम्भीरता से सोमनाथ बोला, "बाजार में पूरी मछली से कटी हुई का दाम ज्यादा है।'

बुलबुल ने भी उसे नहीं छोड़ा। पल्ला कमर में कसते हुए बोली, "इसका बदला एक दिन मैं भी लूँगी, सोम ! तुम्हारा विवाह होगा तो तुम्हारी बहू को हमारी मण्डली में ही आना होगा।"

इस मजाक से सोमनाथ प्रसन्न नहीं हो पाया। इस घर में बेरोजगार सोमनाथ के विवाह की बात एक व्यंग्य है—यह बात मोक्षदा दाई भी जानती है।

बुलबुल बोली, "इलिश और भेटकी दोनों ही मछलियाँ लाना, सोम ! उन्होंने हमें चिंगड़ी मछली भी खिलायी थी, पर मैं नहले पर दहला मारने की कोशिश नहीं करूँगी।"

सोमनाथ ने खरीदारी ढंग से की थी, पर घर पर मेहमान आयेंगे, यह सुनते ही वह परेशान होने लगता है। मेहमानों के साथ परिचय करवाने का तरीका सोमनाथ को बिल्कुल नापसन्द है। दोपहर होने पर सोमनाथ कहीं भी जा सकता था, नेशनल लाइब्रेरी के दरवाजे तो बेकारों के लिए खुले ही हैं। किन्तु, मेहमान तो रात में आयेंगे।

—

अतिथि परिचय का आधुनिक बगाली तरीका सोमनाथ को बिल्कुल अशोभन लगता है। 'नमस्कार, ये अभिजित बनर्जी के भाई हैं' बोलने से ही बात खत्म नही होती। एक अलिखित प्रश्न विराट रूप म खडा हो जाता है। 'भाई यह तो ठीक, पर करते क्या हैं ?' कलकत्ते के तथाकथित भद्र समाज के इस प्रश्न को टालने का कोई उपाय सोम के पास नही है।

मेहमान शाम को साढे सात बजे आये। मिस्टर एण्ड मिसेज एम० के० नन्दी का स्वागत करने के लिए बुलबुल विशेष रूप स सज धजकर घडी देख रही थी। इस शृगार के पीछे बुलबुल ने काफी मेहनत की है। छोटे भया की राय भी ली है। बुलबुल को देख कमला भाभी बोली, 'इतने सोच विचार के बाद, आखिर मे यही साधारण शृगार किया !"

बुलबुल ने उत्तर दिया, "और क्यो बोलती हो, दीदी ! अभी की चालू स्टाइल है। अपना ही तो घर है—यदि खूब भडकीली साडी पहन लू और भारी मेकअप कर लू तो लगेगा कि मैं ही बाहर दावत पर जा रही हूँ। इसलिए मेकअप को बहुत टोन डाउन करना होगा और साडी भी ऐसी हो, जो साधारण लगे। पर साडी का दाम कम नही है, यह बात भी मेहमान जरूर समझ जायें। ऐसा दिखाना होगा कि मानो अभी तक मैं रसोईघर मे थी, आप लोग आये हैं, यह सुनकर झटपट चेहरे से पसीना पोछ, तुरत चली आयी हूँ। अतिथियो की खातिरदारी मे क्या अपनी सजावट का ख्याल रहता है ?'

सोमनाथ को हँसी आ रही थी। इसका मतलब है कि अफसर होने पर भी चन नही। कितने प्रकार का अभिनय करना पडता है। बुलबुल ठीक कर लेगी—उसकी इन सब बातो मे गहरी पैठ है।

मिस्टर मिसेज नन्दी का गेट पर ही काजल और बुलबुल ने स्वागत किया। घर की रीति के अनुसार अतिथि दम्पति को एक बार ऊपर बाबूजी के पास ले जाया गया। बाबूजी से एकाध बात करने के बाद मिस्टर मिसेज नन्दो नीचे आ गये।

मुह पर मीठी मुस्कान ला बुलबुल ने कहा, "मेरे जेठजी स आप

लोगो का मिलना नही हुआ। वे टूर पर गये हैं।"

छोटे भैया ने कहा, "भाभी को बुलाओ।" कमला भाभी को बुलाने के लिए जैसे ही बुलबुल बाहर गयी, छोटे भैया ने मिस्टर नन्दी से कहा, "भैया, ब्रिटिश बिस्कुट कम्पनी मे हैं। कुछ सप्ताह के लिए बम्बई गये हैं। उनकी कम्पनी का नाम बदल रहा है—इंडियन बिस्कुट कम्पनी हो रहा है।"

मिस्टर नन्दी बोले, "होना ही है। सारी चीजो को हमे धीरे धीरे देशी कर लेना होगा, मि० बैनर्जी।"

"रखो, अपना यह स्वदेशी मन्त्र!" मिसेज नन्दी ने पति को डाँटते हुए कहा "तुम्हारे आफिस के सब साहब लोग जब चले जायेंगे और उनकी जगह हरियानवी बैठेंगे, तब पता चलेगा।"

मि० नन्दी को पत्नी से झाड खाने की आदत है, यह प्रत्यक्ष था। एकदम शान्त भाव से इंडिया किंग सिगरेट सुलगा वे अपनी पत्नी से बोले, "हरियाना और स्वदेशियाना एक ही चीज है, यह बात बहुत से लोग अब अपने कड़े अनुभव से जान रहे हैं। लेकिन साहबो से जाने को कौन कह रहा है? खाली ऊपरी लेबल बदलने की सलाह दी जा रही है।"

मिसेज नन्दी बोलीं, 'कम्पनी की पार्टी म जाने की मेरी इच्छा बिल्कुल नही रहती, पर जाना ही पडता है।"

"आप क्या कर सकती हैं, जसी पूजा वैसा मन्त्र।" खूबसूरत और सजी धजी मिसेज नन्दी को अभिजित ने सान्त्वना दी।

मिसेज नन्दी ने कहा, "उस दिन की काकटेल पार्टी मे स्वदेशी की बात उठी थी। मिस्टर और मिसेज चोपडा तीन महीने विदेश घूमकर आने के बाद पूरे स्वदेशी हो गये हैं। बोले लडकियो के कास्मेटिक्स और लडको की स्काच ह्विस्की छोड यदि और सब चीजें स्वदेशी हो जायें तो उन्ह कोई आपत्ति नही।"

बुलबुल भी उस दिन पार्टी मे थी। पार्टी के आखिर मे फॉरेन ह्विस्की के कई पेग पी मिसज चोपडा और भी उत्तेजित हो गयी थी। बुलबुल की कमर पर हाथ रख पचास वष की युवती मिसेज चोपडा बोली थी, 'दश के कल्याण के लिए इम्पोर्टेड कास्मेटिक्स भी यदि दो एक वष मँगाने

बन्द कर दिये जायें तो उन्हे आपत्ति नही है।"

बुलबुल की बात सुन मिस्टर नन्दी ठहाका मारकर हँसने लगे, "मिसेज बनर्जी, आप सचमुच ही बहुत भोली है। आपने मिसेज चोपडा की बात पर विश्वास कर लिया? वे क्यो नही बोलेंगी? अबकी बार फॉरेन से लौटते समय देवीजी जितने कास्मेटिक्स लायी है, उनसे उनका पूरा जीवन सुख से कट जायेगा।'

"ऐ मा!" मिसेज नन्दी ने किशोरी छात्रा की तरह आश्चर्य व्यक्त किया।

मि० नन्दी बोले 'यह भीतरी खबर है। विश्वास न हो तो ट्रैवल डिपार्टमेन्ट के ऐरो मुखर्जी से पूछ लीजियेगा। कस्टम की नाक के नीचे बिना ड्यूटी दिये उस माल को छुडाकर लाने मे बेचारे का ब्लड प्रेशर बढ गया था। कोई चारा भी न था—रिजनल मैनेजर की पत्नी! लिपस्टिक पर ड्यूटी लगने पर ऐरो मुखर्जी की नौकरी नही बचती।"

हाय मा! तुमने तब चुपचाप बताया क्यो नही! मिसेज नन्दी ने फिर किशोरी लडकी की तरह का आश्चर्य प्रकट किया।

'क्यो मिसेज नन्दी? आप सी० बी० आइ० को खबर भेजती क्या?' अभिजित ने मसखरी की।

"कुछ नही करती। केवल उन देवीजी को नशे की झाक मे बहकाकर दो एक लिपस्टिक मार लेती।" मिसेज नन्दी ने दुख-भरे स्वर मे अफसोस जाहिर किया।

मि० नन्दी ने इस पर सन्देह व्यक्त करते हुए कहा, "वह काबिलियत तुम लोगो मे नही है। मिसेज चोपडा की कल्चर मे ढली होने पर आँख मे शर्म नही रहती, तब हँस रोकर, या सिर्फ अग भगिमा दिखाकर सब ठीक कर लेती। वे लोग जिस निलज्जता से अपने बॉस लोगो की तेल-चप्पी करते हैं, उसी निदयता से नीचे से तेल-सप्लाई की कामना भी करते हैं।"

पहली मजिल घूम घूमकर देखते समय चारो मे आपसी वार्तालाप चल रहा था। अपने कमरे मे बैठा सोमनाथ सारी बातचीत स्पष्ट सुन पा रहा था।

घूमते घूमते वे लोग अब सोमनाथ के कमरे के सामने खडे हैं, यह सोमनाथ समझ गया। दरवाजा आधा उढका हुआ था। अभिजित ने हल्का-सा खटखटाया। सोमनाथ कुर्सी से उठकर खडा हो गया।

"अरे उठिए नही, बैठिए।" मि० नन्दी ने कहा।

छोटे भैया बोले, 'हमारा सबसे छोटा भाई, सोमनाथ।" फिर सोमनाथ से बोला, "खोकोन, ये हम लोगो की आफिस के ट्रेनिंग एण्ड-स्टाफ मैनेजर मि० नन्दी है।"

सोमनाथ के सम्बन्ध मे 'रिक्त स्थान की पूर्ति करो' वाले स्वाभाविक कौतूहल से मिसेज नन्दी ने बुलबुल की ओर देखा। बुलबुल समझ गयी कि वे क्या जानना चाहती हैं लेकिन वह क्या कहे, यह समझ नही पायी।

अभिजित भी किंकर्तव्यविमूढ हो रहा था, पर उसने तरीके से जवाब दिया, 'अभी उसकी कई परीक्षाएँ करीब है। घर का सबसे छोटा लडका है इसलिए हम सब इसके लिए ज्यादा सोचते हैं।"

"ठीक करते हैं महाशय!" उत्साहित हो मि० नन्दी बोले "किसी व्यावसायिक फर्म मे अफसर बनाकर इसकी जिन्दगी बरबाद मत कर दीजिएगा। उससे आइ० ए० एस० होना बहुत अच्छा है।"

सोमनाथ के कान लाल हो उठे। अपमान और उत्तेजना मे शायद वह कुछ बोल बैठता, पर मि० नन्दी ने बचा दिया। बुलबुल से बोले, 'पढाई मे बाधा डालना ठीक नही। चलिए, हम लोग और कही बैठें।"

सोमनाथ का चेहरा स्याह हो गया है, इसकी तरफ भैया को छोड और किसी ने ध्यान नही दिया।

अन्दर कमला भाभी खाना परोसने की व्यवस्था कर रही हैं और बाहर के कमरे मे वे चारो आकर बैठ गये है। सोमनाथ उन सबका वार्त्तालाप यहाँ से सुन रहा है।

मि० नन्दी ने शिकायत की, "चीजो के दाम जिस तरह बढते जा रहे हैं उससे अब चलेगा नही, मि० बैनर्जी! आप एकाउटैंट लोगो ने देश की क्या स्थिति कर दी है?"

"हम लोगो ने क्या किया? देश का भार एकाउटैंट लोगो का तो

बन्द कर दिये जायें तो उन्हें आपत्ति नहीं है।"

बुलबुल की बात सुन मिस्टर नन्दी ठहाका मारकर हँसने लगे, "मिसेज बनर्जी, आप सचमुच ही बहुत भोली हैं। आपने मिसेज चोपड़ा की बात पर विश्वास कर लिया? वे क्यों नहीं बोलेंगी? अबकी बार फॉरेन से लौटते समय देवीजी जितने कास्मेटिक्स लायी हैं, उनसे उनका पूरा जीवन सुख से कट जायेगा।'

"ऐ माँ!" मिसेज नन्दी ने किशोरी छात्रा की तरह आश्चर्य व्यक्त किया।

मि० नन्दी बोले, "यह भीतरी खबर है। विश्वास न हो तो ट्रैवेल डिपार्टमेन्ट के ऐरो मुखर्जी से पूछ लीजियेगा। कस्टम की नाक के नीचे बिना ड्यूटी दिये उस माल को छुडाकर लाने में बेचारे का ब्लड प्रेशर बढ गया था। कोई चारा भी न था—रिजनल मैनेजर की पत्नी! लिपस्टिक पर ड्यूटी लगने पर ऐरो मुखर्जी की नौकरी नहीं बचती।"

'हाय माँ! तुमने तब चुपचाप बताया क्यों नहीं!' मिसेज नन्दी ने फिर किशोरी लड़की की तरह वा आश्चर्य प्रकट किया।

'क्यों मिसेज नन्दी? आप सी० बी० आइ० को खबर भेजतीं क्या?" अभिजित ने मसखरी की।

'कुछ नहीं करती। केवल उन देवीजी को नशे की झोंक में बहकाकर दो एक लिपस्टिक मार लेती।' मिसेज नन्दी ने दुख भरे स्वर में अफसोस जाहिर किया।

मि० नन्दी ने इस पर सन्देह व्यक्त करते हुए कहा "वह काबिलियत तुम लोगों में नहीं है। मिसेज चोपड़ा की कल्चर में ढली होने पर आँख में शर्म नहीं रहती, तब हँस रोकर, या सिर्फ अंग भंगिमा दिखाकर सब ठीक कर लेती। वे लोग जिस निर्लज्जता से अपने बास लोगों की तेल-चप्पी करते हैं, उसी निर्दयता से नीचे से तेल सप्लाई की कामना भी करते हैं।"

पहली मंजिल घूम-घूमकर देखते समय चारों में आपसी वार्त्तालाप चल रहा था। अपने कमरे में बैठा सोमनाथ सारी बातचीत स्पष्ट सुन पा रहा था।

घूमते घूमते वे लोग अब सोमनाथ के कमरे के सामने खड़े हैं, यह सोमनाथ समझ गया। दरवाजा आधा उढ़का हुआ था। अभिजित ने हल्का-सा खटखटाया। सोमनाथ कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया।

"अरे उठिए नहीं, बैठिए।" मि० नन्दी ने कहा।

छोटे भैया बोले, "हमारा सबसे छोटा भाई, सोमनाथ। फिर सोमनाथ से बोला, "ग्रोकोन, ये हम लोगों की आफिस के ट्रेनिंग एण्ड स्टाफ मैनेजर मि० नन्दी हैं।"

सोमनाथ के सम्बन्ध में 'रिक्त स्थान की पूर्ति करो' वाले स्वाभाविक कौतूहल से मिसेज नन्दी ने बुलबुल की ओर देखा। बुलबुल समझ गयी कि वे क्या जानना चाहती हैं लेकिन वह क्या कहे यह समझ नहीं पायी।

अभिजित भी किंकर्तव्यविमूढ हो रहा था, पर उसने तरीके से जवाब दिया, "अभी उसकी कई परीक्षाएँ करीब हैं। घर का सबसे छोटा लड़का है, इसलिए हम सब इसके लिए ज्यादा सोचते हैं।"

"ठीक करते हैं, महाशय!" उत्साहित हो मि० नन्दी बोले "किसी व्यावसायिक फर्म में अफसर बनाकर इसकी जिन्दगी बरबाद मत कर दीजिएगा। उससे आइ० ए० एस० होना बहुत अच्छा है।"

सोमनाथ के कान लाल हो उठे। अपमान और उत्तेजना से शायद वह कुछ बोल बैठता, पर मि० नन्दी ने बचा दिया। बुलबुल से बोले, "पढ़ाई में बाधा डालना ठीक नहीं। चलिए, हम लोग और कहीं बैठें।'

सोमनाथ का चेहरा स्याह हो गया है इसकी तरफ भैया को छोड़ और किसी ने ध्यान नहीं दिया।

अन्दर कमला भाभी खाना परासने की व्यवस्था कर रही हैं और बाहर के कमरे में वे चारों आकर बैठ गये हैं। सोमनाथ उन सबका वार्तालाप यहां से सुन रहा है।

मि० नन्दी ने शिकायत की, "चीजों के दाम जिस तरह बढ़ते जा रहे हैं उससे अब चलेगा नहीं, मि० बनर्जी! आप एकाउटेंट लोगों ने देश की क्या स्थिति कर दी है?"

"हम लोगों ने क्या किया? देश का भार एकाउटेंट लोगों को तो

सौंपा नही गया, नही तो इडिया की यह हालत नही होती।" अभिजित ने हँसते-हँसते उत्तर दिया।

पसनल अफसरो के हाथ म भी देश नही। अगर रहता तो कम-से कम स्कूल-कालेजो, कल-कारखानों, आफिस-अदालतो मे तो बढिया डिसिप्लिन कायम की जा सकती थी।" मि० नन्दी ने दुख प्रकट करते हुए कहा।

'तब देश किसके हाथ मे है ?" थोडी अवाक मुद्रा में ही मिसेज नन्दी ने प्रश्न किया।

"माँ जननी के हाथ म !" मि० नन्दी ने चुटकी लेते हुए कहा, "साथ ही तालीम दे रहे हैं, कई ब्रीफलेस (मामले न पानेवाले) वकील और कुछ पाठ्य-पुस्तकें पढे हुए प्रोफेसर। मैनेजमट का 'म' भी ये नहीं जानते।"

अब मिसेज नन्दी ने तुलनात्मक समालोचना करनी शुरू कर दी, "पसनल अफसरो से आप लोग बहुत अच्छे हैं, मि० बनर्जी !"

"इतनी दुखी क्या हो रही हैं मिसेज नन्दी ?" बुलबुल ने पूछा।

"बहुत सारे कारण हैं। घर पर भी चैन नही है। जसे ही लोग जानते हैं कि पसनल अफसर है, वैसे ही नौकरी पान की तदबीर शुरू कर देते हैं।'

मि० नन्दी ने भी सहारा दिया, मित्र के घर, विवाह के घर, यहाँ तक कि बाजार जाने का भी उपाय नही। हजारो परिचित-अपरिचित नौकरी के लिए जान खाते रहते हैं। नौकरी क्या मैं तैयार करता हूँ, महाशय ?"

मिसेज नन्दी बोली, "पहले इनका मिजाज शान्त था, लोगो के साथ ठीक से बात करते थे—आजकल नौकरी का नाम सुन बगन भाजा (तले हुए बैंगन) की तरह जल भुन जाते हैं।"

'धैय नही रहता मि० बैनर्जी !" एम० के० नन्दी का स्वर सुनायी दिया।

बेटी के ब्याह और लडक की नौकरी के लिए बगाली तो हमेशा से ही पीछे पडते हैं मि० नन्दी !" बुलबुल अचानक बोल पडी। बाद

मे उसे लगा, शायद यह बात मि० नन्दी को पसन्द न भी आये।

"बगाली लडको की नौकरी !" एक बार सिहर-से उठे मि० नन्दी। फिर बोले 'यदि बुरा न मानें तो एक सच्ची बात कहूँ। बगाल के शिक्षित बेकार भी विधाता की एक अभूतपूर्व रचना ही है। ये स्कूल-कालेज मे घूम घूमकर दो-एक अग्रेजी शब्दार्थ की किताब रट लेते हैं, पर एक लाइन अग्रेजी की शुद्ध लिख पायें, इतना भी नही सीखते। बारह-चौदह वर्षों तक प्रतिदिन स्कूल-कालेज जा-जाकर, ये और इनके मास्टर क्या करते हैं, भगवान ही जाने ! दुनिया की कोई खबर ही नहीं रखते। ये नही जानते कि मोटर कैसे चलती है, धान किस समय होता है, सिपिया और लाल रग म क्या अन्तर है। कलम से भारी कोई चीज इन्होंने कभी नही उठायी। ये खाना पकाना नहीं जानते, खाना खाने के बाद अपने जूठे बरतन नही साफ कर पाते, अपने पहनने के कपडे भी नही धो पाते। दूसरा कोई यदि झाड़ू न लगाये तो इनका कमरा भी साफ न हो। शारीरिक परिश्रम क्या होता है, ये जानते ही नही। इन लोगो ने कोई हाथ का काम नही सीखा, मैनस नहीं जानते, कोई भी ज्ञान इन लोगो को नही। ये केवल अनएम्प्लायड (बेकार) नही है, हम लोगो के प्रोफेशन मे इन्हे अनएम्प्लायेबुल—काम करने और दिये जाने के नाकाबिल कहा जाता है। इन लोगो को नौकरी देने से कोई लाभ नही।"

कमरे मे बैठा सोमनाथ सोचता है, छोटे भया अपनी कोई राय नही दे रहे हैं, यही काफी है।

लगता है, मि० नन्दी ने एक और सिगरेट सुलगायी है, क्योकि दियासलाई जलाने का शब्द हुआ। उनकी आवाज फिर सुनायी पडी, "इस प्रकार के लाख लाख अद्भुत जन्तु हमारे एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज मे नाम लिखा नौकरी की आशा मे चुपचाप घर मे अथवा मुहल्ले के चबूतरे पर बैठे हैं। पचास हजार स्कूल कालेज इसी प्रकार के कई लाख जन्तुओ का प्रत्येक वर्ष नौकरी के बाजार में छोड देते हैं। इन अभागो के लिए देश मे किसी के भी कान म जू नहीं रेंगती, सिर म दद नही होता। ये समाज के किस काम आयेंगे, बता सकते है ? स्कूल कालेजो म हम लोग इसी प्रकार क निकम्मे बाबुओ को तयार करते हैं, यह दुनिया भर मे कोई नही

सौंपा नही गया, नही तो इंडिया की यह हालत नही होती।" अभिजित ने हँसते-हँसते उत्तर दिया।

पसनल अफसरो के हाथ मे भी देश नही। अगर रहता तो कम-से कम स्कूल-कालेजो, कल-कारखानो, आफिस-अदालतो मे तो बढिया डिसिप्लिन कायम की जा सकती थी।" मि० नन्दी न दुख प्रकट करते हुए कहा।

'तब देश किसके हाथ म है ?" थोडी अवाक मुद्रा मे ही मिसेज नन्दी ने प्रश्न किया।

"माँ जननी के हाथ म।" मि० नन्दी ने चुटकी लेते हुए कहा, "साथ ही तालीम दे रहे हैं, कई ब्रीफ्लेस (मामले न पानेवाले) वकील और कुछ पाठ्य-पुस्तकें पढे हुए प्रोफेसर। मैनजमट का 'म' भी ये नहीं जानते।"

अब मिसेज नन्दी ने तुलनात्मक समालोचना करनी शुरू कर दी, "पसनल अफसरो से आप लोग बहुत अच्छे हैं, मि० बैनर्जी।"

"इतनी दुखी क्यो हो रही हैं, मिसेज नन्दी ?" बुलबुल ने पूछा।

"बहुत सारे कारण हैं। घर पर भी चैन नही है। जैसे ही लोग जानते हैं कि पसनल अफसर हैं, वैसे ही नौकरी पाने की तदबीर शुरू कर देते हैं।"

मि० नन्दी ने भी सहारा दिया, "मित्र के घर, विवाह के घर, यहाँ तक कि बाजार जाने का भी उपाय नही। हजारो परिचित-अपरिचित नौकरी के लिए जान खाते रहते हैं। नौकरी क्या मैं तयार करता हूँ, महाशय ?"

मिसेज नन्दी बोली, "पहले इनका मिजाज शान्त था, लोगो के साथ ठीक से बात करते थे—आजकल नौकरी का नाम सुन बैंगन भाजा (तले हुए बैंगन) की तरह जल भुन जाते हैं।'

"धैय नही रहता मि० बनर्जी।" एम० के० नन्दी का स्वर सुनायी दिया।

"बेटी के ब्याह और लडके की नौकरी के लिए बगाली तो हमेशा से ही पीछे पडते हैं मि० नन्दी।" बुलबुल अचानक बोल पडी। बाद

मे उसे लगा, शायद यह बात मि० नन्दी को पसन्द न भी आये।

"बंगाली लड़कों की नौकरी !" एक बार सिहर-से उठे मि० नन्दी। फिर बोले, "यदि बुरा न मानें तो एक सच्ची बात कहूँ। बंगाल के शिक्षित बेकार भी विधाता की एक अभूतपूर्व रचना ही हैं। ये स्कूल-कालेज में घूम घूमकर दो-एक अंग्रेजी शब्दार्थ की किताब रट लेते हैं, पर एक लाइन अंग्रेजी की खुद लिख पायें, इतना भी नहीं सीखते। बारह-चौदह वर्षों तक प्रतिदिन स्कूल-कालेज जा-जाकर, ये और इनके मास्टर क्या करते हैं, भगवान ही जाने ! दुनिया की कोई खबर ही नहीं रखते। ये नहीं जानते कि मोटर कैसे चलती है, धान किस समय होता है, सिंदूरी और लाल रंग में क्या अन्तर है। कलम से भारी कोई चीज इन्होंने कभी नहीं उठायी। ये खाना पकाना नहीं जानते, खाना खाने के बाद अपने जूठे बर्तन नहीं साफ कर पाते, अपने पहनने के कपड़े भी नहीं धो पाते। दूसरा कोई यदि झाड़ू न लगाये तो इनका कमरा भी साफ न हो। शारीरिक परिश्रम क्या होता है, ये जानते ही नहीं। इन लोगों ने कोई हाथ का काम नहीं सीखा, मनस नहीं जानते, कोई भी ज्ञान इन लोगों का नहीं। ये केवल अनएम्प्लायड (बेकार) नहीं है, हम लोगों के प्रोफेशन में इन्हें अनएम्प्लायेबुल—काम करने और दिये जाने के नाकाबिल कहा जाता है। इन लोगों को नौकरी देने से कोई लाभ नहीं।"

कमरे में बैठा सोमनाथ सोचता है, छोटे भैया अपनी कोई राय नहीं दे रहे हैं यही काफी है।

लगता है, मि० नन्दी ने एक और सिगरेट सुलगायी है, क्योंकि दियासलाई जलाने का शब्द हुआ। उनकी आवाज फिर सुनायी पड़ी, "इस प्रकार के लाख लाख अद्भुत जन्तु हमारे एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज में नाम लिखा नौकरी की आशा में चुपचाप घर में अथवा मुहल्ले के चबूतरे पर बैठे हैं। पचास हजार स्कूल कालेज इसी प्रकार के कई लाख मानुषों को प्रत्येक वर्ष नौकरी के बाजार में छोड़ देते हैं। इन अभागों के लिए देश में किसी के भी मन में जगह नहीं रहती, फिर भी दर्द नहीं होता। ये आखिर किस काम आयेंगे, कौन जानता है ? [illegible] ही इन लोगों इसी प्रकार के निकम्मे बाबुओं को तैयार करते हैं, यह सोचना भर ही कोई नहीं

सौंपा नही गया, नही तो इंडिया की यह हालत नही होती।" अभिजित ने हँसते-हँसते उत्तर दिया।

'पसनल अफसरो के हाथ म भी देश नही। अगर रहता तो कम-से कम स्कूल-कालेजो, कल-कारखानो, आफिस-अदालतो मे तो बढ़िया डिसिप्लिन कायम की जा सकती थी।" मि० न दी ने दुख प्रकट करते हुए कहा।

"तब देश किसके हाथ म है ?" थोडी अवाक मुद्रा मे ही मिसज न दी ने प्रश्न किया।

'माँ-जननी के हाथ मे।" मि० न दी ने चुटकी लेते हुए कहा, "साथ ही तालीम दे रहे हैं, कई ब्रीफलेस (मामले न पानेवाले) वकील और कुछ पाठ्य-पुस्तकें पढे हुए प्रोफेसर। मैनेजमेंट का 'म' भी य नही जानते।"

अब मिसेज न दी ने तुलनात्मक समालोचना करनी शुरू कर दी, "पसनल अफसरो से आप लोग बहुत अच्छे हैं, मि० बैनर्जी !"

'इतनी दुखी क्या हो रही हैं, मिसेज न दी ?" बुलबुल ने पूछा।

"बहुत सारे कारण हैं। घर पर भी चैन नही है। जसे ही लोग जानते हैं कि पसनल अफसर हैं, वसे ही नौकरी पाने की तदबीर शुरू कर देते हैं।'

मि० न दी ने भी सहारा दिया, मित्र के घर, विवाह के घर, यहाँ तक कि बाजार जाने का भी उपाय नही। हजारो परिचित-अपरिचित नौकरी के लिए जान खाते रहते हैं। नौकरी क्या मैं तैयार करता हूँ, महाशय ?"

मिसेज न दी बोली, "पहले इनका मिजाज शा त था, लोगो के साथ ठीक से बात करते थे—आजकल नौकरी का नाम सुन बैंगन भाजा (तले हुए बैंगन) की तरह जल-भुन जाते हैं।'

'भय नही रहता, मि० बैनर्जी !' एम० के० न दी का स्वर सुनायी दिया।

बेटी के ब्याह और लडके की नौकरी के लिए बगाली तो हमेशा से ही पीछे पडते है, मि० न दी !' बुलबुल अचानक बोल पडी। बाद

मे उसे लगा, शायद यह बात मि० नन्दी को पसन्द न भी आये।

"बगाली लडको की नौकरी !" एक बार सिहर-से उठे मि० नन्दी। फिर बोले, 'यदि बुरा न मानें तो एक सच्ची बात कहूँ। बगाल के शिक्षित बेकार भी विधाता की एक अभूतपूव रचना ही है। ये स्कूल-कालेज मे घूम घमकर दो-एक अग्रेजी शब्दाथ की किताब रट लेते हैं, पर एक लाइन अग्रेजी की खुद लिख पायें, इतना भी नही सीखते। बारह चौदह वर्षों तक प्रतिदिन स्कूल-कालेज जा-जाकर, य और इनके मास्टर क्या करते हैं, भगवान ही जाने ! दुनिया की कोई खबर ही नही रखते। य नही जानते कि मोटर कैसे चलती है धान किस समय होता है, सिपिया और लाल रग म क्या अन्तर है। कलम से भारी कोई चीज इन्होंने कभी नही उठायी। ये खाना पकाना नही जानते, खाना खाने के बाद अपने जूठे बतन नही साफ कर पाते, अपने पहनने के कपडे भी नही धो पाते। दूसरा कोई यदि झाड़ू न लगाये तो इनका कमरा भी साफ न हो। शारीरिक परिश्रम क्या होता है, ये जानते ही नही। इन लोगो ने कोई हाथ का काम नही सीखा, मैनस नही जानते, कोई भी ज्ञान इन लोगो को नही। ये केवल अनएम्प्लायड (बेकार) नही है, हम लोगो के प्रोफेशन म इन्हें अनएम्प्लायेबुल—काम करने और दिये जाने के नाकाबिल कहा जाता है। इन लोगो को नौकरी देने से कोई लाभ नही।"

कमरे म बैठा सोमनाथ सोचता है छोटे भैया अपनी कोई राय नही दे रहे हैं यही काफी है।

लगता है, मि० नन्दी ने एक और सिगरेट सुलगायी है क्योकि दिया-सलाई जलाने का शब्द हुआ। उनकी आवाज फिर सुनायी पडी, "इस प्रकार के लाख लाख अद्भुत जन्तु हमारे एम्प्लायमेण्ट-एक्सचेंज म नाम लिखा नौकरी की आशा मे चुपचाप घर मे अथवा मुहल्ले के चबूतरे पर बैठे हैं। पचास हजार स्कूल कालेज इसी प्रकार के कई लाख जन्तुओ को प्रत्येक वर्ष नौकरी के बाजार मे छोड देते हैं। इन अभागो के लिए देश मे किसी के भी कानो मे जू नही रेंगती सिर मे दद नही होता। ये समाज के किस काम आयेंगे, बता सकते हैं ? स्कूल कालेजो मे हम लोग इसी प्रकार के निकम्मे बाबुओ को तैयार करते हैं, यह दुनिया भर म कोई नही

सौंपा नही गया, नही तो इंडिया की यह हालत नही ह
ने हँसते-हँसत उत्तर दिया।

पसनल अफसरो के हाथ मे भी देश नही। अगर
कम स्कूल-कालेजो, कल-कारखानो, आफिस-अदालतो
डिसिप्लिन कायम की जा सकती थी।" मि० नन्दी न
हुए कहा।

'तब देश किसके हाथ मे है ?" थोडी अवाक मु
नन्दी ने प्रश्न किया।

"माँ जननी के हाथ मे!" मि० नन्दी ने चुटकी
"साथ ही तालीम दे रहे हैं, कई प्रोफेसर (मामले न पा
और कुछ पाठ्य-पुस्तकें पढे हुए प्रोफेसर। मनजमेंट का
जानते।"

अब मिसेज नन्दी ने तुलनात्मक समालोचना करनी
"पसनल अफसरो से आप लोग बहुत अच्छे हैं, मि० बनर्जी

"इतनी दुखी क्यो हो रही हैं, मिसेज नन्दी ?" बुलबुल

'बहुत-सारे कारण हैं। घर पर भी चैन नही है।
जानते हैं कि पसनल अफसर है, वैसे ही नौकरी पाने की त
देते हैं।'

मि० नन्दी न भी सहारा दिया, "मित्र के घर, विवाह
तक कि बाजार जाने का भी उपाय नही। हजारो परि
नौकरी के लिए जान खाते रहते हैं। नौकरी क्या मैं
महाशय ?"

मिसेज नन्दी बोली, "पहले इनका मिजाज
ठीक से बात करते थे—आजकल नौकरी का नाम
(तले हुए बैंगन) की तरह जल भुन जाते हैं।"

'धय नहीं रहता मि० बनर्जी!" एम० के० नन्दी क
दिया।

'बेटी के ब्याह और लडके की नौकरी के लिए बग
से ही पीछे पडते हैं, मि० नन्दी!' बुलबुल अचानक बोल

वे कलकत्ते म रहते हैं। उनके बच्चो ने भी तो लिखना पढना सीखा है पर एम्प्लायमेंट एक्सचेंज मे आपने कभी किसी चीनी को देखा है ? उन्ह नौकरी की आवश्यक्ता नही है, ऐसा नही है। पर वे जानते है इस समाज म कोई उन्ह सरक्षण नही देगा, काई उन्ह सहयोग नही देगा, अपनी व्यवस्था उन्ह स्वय करनी होगी। इसलिए चुपचाप उसी स्थिति के लिए, अपने बच्चो को उन्होन तैयार किया है। और व बहुत कष्ट या दुख म नही हैं।"

मिसेज नन्दी थोडी खिन्न हुइ, "हम लाग तो चीनी नही हैं—इसलिए बार बार चीनियो का गुणगान करने से क्या लाभ ?"

मि० नन्दी हँस पडे, "मेरी श्रीमतीजी की धारणा है कि मै प्रो-चायनीज (चीनसमथक) हूँ !"

"हम लोग भी प्रो-चायनीज हैं—विशेषकर खान पान के मामले मे।" अभिजित ने मत दिया।

एक बार जोरो का ठहाका लगा।

मि० नन्दी बाले, स्वीडन के प्रा० जारगनसन कुछ दिन पहले आये थे। विश्वविख्यात पण्डित है। इसी नौकरी चाकरी क स दभ मे अनक देशा मे उन्होने छान-बीन की है। मुझसे एक डिनर पर आध घण्ट के लिए मिले थे। वह बोले, 'अथशास्त्र और राजनीति के बहुत स बुनियादी नियम ही तुम्हारे बगाल मे लागू नही हाते। दूसरे दशो मे बेकार शब्द कहते ही एक भयावह चित्र आखो के सामन खिच जाता है। एक रूखे मिजाज का, विध्वसकारी चेहरा जिसकी कोई सामाजिक जिम्मेदारी नही जो गुस्से मे पागल है। इगलैण्ड के कुछ प्री वार (युद्ध पूव) उपन्यासो म एसे लागो का परिचय मिलेगा। ऐसा व्यक्ति एक बम की तरह है—क्योकि वह भूखा, मत्यु के सामने खडा है उसके पास घर नही है, पहनने को कपडे नही हैं। वह कभी भी फट सकता है।'

थाडा ठहर मि० नन्दी फिर बोले, "प्रा० जोरगनेसन ने कहा, 'लेकिन तुम्हारे इस बगाल मे आकर तो मैं चकित रह गया। रास्ते-रास्ते, मुहल्ले-मुहल्ले, यहा तक कि एम्प्लायमेंट एक्सचेंज के सामने खडे होकर भी बेकारी की समस्या की बाहरी भयावहता देख नहीं पाया, जबकि तुम्हारे

जानता।"

"हमारा समाज ही तो इन लोगों को इस तरह बना रहा है, मि० नन्दी।" अभिजित ने दुख के साथ हल्का प्रतिवाद किया।

लगता है, मि० नन्दी ने सिगरेट का एक कश खींचा है। फिर बोले, "इंटरव्यू में बैठ इन सब बंगाली लड़कों को मैं देखता हूँ। देखने पर रोना आता है। उग्रपन्थी जो यह कहा करते हैं कि बम फोड़कर सभी स्कूल कालेज एवं विश्वविद्यालय बन्द कर देने चाहिए, उसमें कुछ लाजिक (तर्क) है मिसेज बैनर्जी! क्योंकि स्कूल-कालेज और विश्वविद्यालयों के इन सब लड़कों को स्वयं भगवान भी समाज में नौकरी प्रोवाइड नहीं कर पायेंगे।'

कसूर सिर्फ इन लड़कों का ही तो नहीं।" अभिजित की आवाज आयी।

'यही तो अधिक दुख की बात है। इन्हें पता नहीं है कि इन लोगों को किस सर्वनाशी पथ की ओर धकेला जा रहा है। जिस रफ्तार से नयी नौकरियाँ पैदा हो रही हैं उसको देखते हुए जो नाम अभी एम्प्लायमेंट एक्सचेंज में दर्ज हो गये हैं, उन्हीं को नौकरी देने में अस्सी पचासी वर्ष लग जायेंगे। अर्थात यदि अभी बाइस-तेइस वर्ष की उम्र है, तो नौकरी की चिट्ठी आयेगी—एक सौ दो वर्ष की उम्र में।"

मि० नन्दी बोले, "एक सौ सरकारी नौकरियों के लिए दस लाख एप्लिकेशन्स आ सकते हैं, ऐसी बात संसार में कभी किसी ने सुनी है? सबसे दुख की बात तो यह है कि सरकार इन लोगों से बेतहाशा झूठ बोले जा रही है। अरे बाबा, नौकरी देना तो दूर, कम-से-कम सच तो बोलो। 'यंग मेन' से यह तो कबूलो कि इस समस्या के समाधान की क्षमता किसी सरकार में नहीं है। इससे लड़कों को कम-से-कम यह भाव आयेगा कि उन्हें अपनी व्यवस्था खुद ही करनी पड़ेगी।

'अपनी ओर क्या व्यवस्था करेंगे, मि० नन्दी?" अभिजित दुख से बोला।

"जिनका कोई नहीं, उन्हें करनी ही होती है।" मि० नन्दी ने जवाब दिया "आप कलकत्ते के चीनी लोगों को देखिए। तीन चार सौ वर्षों से

वे कलकत्ते म रहते हैं। उनके बच्चो ने भी तो लिखना पढना सीखा है पर एम्प्लायमेंट एक्सचेंज मे आपने कभी किसी चीनी को देखा है ' उन्ह नौकरी की आवश्यकता नही है, ऐसा नही है। पर व जानत है, इस समाज मे कोई उन्ह सरक्षण नही देगा, कोई उन्ह सहयोग नही देगा, अपनी व्यवस्था उन्ह स्वय करनी होगी। इसलिए चुपचाप उसी स्थिति क लिए, अपने बच्चो का उन्होंने तैयार किया है। और वे बहुत कष्ट या दुख म नही हैं।"

मिसेज नन्दी थोडी खिन्न हुईं, "हम लाग ता चीनी नही हैं—इसलिए बार-बार चीनियो का गुणगान करने स क्या लाभ ?"

मि० नन्दी हँस पडे, "मेरी श्रीमतीजी की धारणा है कि मैं प्रो-चायनीज (चीनसमर्थक) हूँ।"

"हम लोग भी प्रो-चायनीज हैं—विशेषकर खान पान के मामले म।" अभिजित ने मत दिया।

एक बार जारो का ठहाका लगा।

मि० नन्दी बोले, ' स्वीडन के प्रा० जोरगनसन कुछ दिन पहले आये थे। विश्वविख्यात पण्डित हैं। इसी नौकरी चाकरी के सन्दर्भ मे अनेक देशा मे उन्होंने छान-बीन की है। मुझसे एक डिनर पर आध घण्टे के लिए मिले थे। वह बोले 'अथशास्त्र और राजनीति के बहुत से बुनियादी नियम ही तुम्हारे बगाल मे लागू नही होते। दूसरे देशो मे बेकार शब्द कहते ही एक भयावह चित्र आखो के सामने खिच जाता है। एक रूखे मिजाज का, विध्वसकारी चेहरा, जिसकी कोई सामाजिक जिम्मेदारी नही जो गुस्से मे पागल है। इगलैण्ड के कुछ प्री-वार (युद्ध पूव) उपन्यासो मे ऐसे लोगो का परिचय मिलेगा। *ऐसा व्यक्ति एक बम की तरह है—क्योकि वह भूखा,* मत्यु के सामने खडा है उसके पास घर नही है, पहनने को कपडे नही हैं। वह कभी भी फट सकता है।'

थोडा ठहर मि० नन्दी फिर बोले, "प्रो० जोरगनेसन न कहा, 'लेकिन तुम्हारे इस बगाल मे आकर तो मैं चकित रह गया। रास्ते रास्ते, मुहल्ले मुहल्ले यहा तक कि एम्प्लायमेंट एक्सचेंज के सामने खडे होकर भी बेकारी की समस्या की बाहरी भयावहता देख नहीं पाया जबकि तुम्हारे

यहाँ जितने बेकार हैं उनका दसवाँ हिस्सा भी किसी अन्य सभ्य देश का छिन भिन कर देता। तुम लोगो मे बेकार अस्वाभाविक रूप मे शात हैं और बेकारी भत्ता न रहने पर भी तुम लोगो की ज्वाइट फैमिली (सयुक्त परिवार) इनका सवनाश कर रही है। बहुतो को यन केन प्रकारेण खान को मिल जाता है। तुम लोगो की पारिवारिक पद्धति इन वर्गों को पगुज कर देती है—ये फट नही पाते हैं। नय जीवन-क्षेत्र मे उतरने का साहस इनको नही होता। इसलिए समस्या के समाधान की कोई जल्दी नही। नाउ आर नेवर अभी या कभी नही—यह बात किसी के मुह से नही सुनी जाती।"

मि० नन्दी रुके नही, "जानते हैं मि० बैनर्जी, प्राइवेट फम म यदि नही रहता तो कहता—बेकारी बहुत कुछ मलेरिया और कालाज्वर-जसी है। अभी मृत्यु का भय नही है, पर धीमे धीमे जीवन का दीपक बुझता जा रहा है। सारी दुनिया म मनुष्य ने हमेशा यौवन को जयमाल पहनायी है। कैपिटलिस्ट हो, सोशलिस्ट हो, कम्युनिस्ट हो, सभी देशो मे यौवन की जय जयकार है और हमार इस अभागे बगाल मे युवको का कितना अपमान है! लाखो निरपराध शिक्षित लडके-लडकियो का यौवन किस तरह विषाक्त हो गया है! देखिए यदि ये लोग कहते कि समस्या को आज ही हल करना पडेगा और ऐसा न करने पर हम कल जो मरजी आयेगी वही करेंगे, तो शायद देश का भाग्य पलट जाता।"

मि० नन्दी की बातें सुनते सुनते सोमनाथ का खून खौल उठा। एक बार लगा मानो षडयन्त्र करके उसे सुनाने के लिए ही मि० नन्दी को आज इस घर मे बुलाया गया है।

ये सारी बातें सोमनाथ तक भी पहुँच रही हैं इसकी कल्पना भी बुलबुल और छोटे भैया नही कर सकते थे। सोमनाथ के कमरे मे आकर बुलबुल बोली सोम, तुम भी चलो, सब एकसाथ ही खाना खा लें।" सोमनाथ तैयार नही हुआ। बोला, "सोचता हूँ, आज खाना नही खाऊँ। पट गडबड है।'

बुलबुल चली गयी। खबर पा कमला भाभी आयी, 'पेट कब गडबड हुआ? पहले तो नही बताया?"

सोमनाथ बोला, "ऐसी कोई बात नहीं है, आप अतिथियों को सँभालिए।"

कमला भाभी बोलीं, "फ्रिज में रोहू मछली है—थोड़ा पतले शोरबे का इंतजाम करती हूँ।"

"पागल हो गयी हैं ?" सोमनाथ ने आपत्ति की, "एक दिन पेट खाली रहने से अपने आप ठीक हो जायेगा। कई दिनों से इसको अधिक भरा है तभी यह हाल हुआ है।"

सोमनाथ ने तय कर लिया है, पर घर के लोग समझ नहीं पाये। उस दिन सुबह बाहर जाने के समय भाभी फिर सोमनाथ को याद दिला गयी, "बाबूजी ने कहा है कि आज एम्प्लायमेंट एक्सचेंज के कार्ड को रिन्यू कराने का दिन है।"

सोमनाथ की इसमें खास दिलचस्पी नहीं है, यह भाभी समझ गयी। तभी बोली "बाबूजी ने कहा है कि कार्ड चालू रखना ही होगा। कार्ड न रहने पर बहुत-से आफिसवाले बात तक नहीं करेंगे।"

सोमनाथ ने सुबह एम्प्लायमेंट एक्सचेंज में बितायी। वहां से लौटते वक्त विशु बाबू से भेंट हो गयी।

विशु बाबू के साथ खेल के मैदान में परिचय हुआ था। सुकुमार ने ही विशु बाबू से प्रथम परिचय करवाया था। महाशय ईस्टबंगाल क्लब के विशेष भक्त हैं। विशु बाबू बिजनेस करते हैं, यह खबर भी सोमनाथ ने खेल के मैदान में कई बार सुनी थी।

विशु बाबू का रंग आबनूस की काली लकड़ी की तरह है। सिर के बाल माथे की तरफ से उड़ने लगे हैं, जिससे माथा चौड़ा लगता है। मध्य प्रदेश अर्थात पेट पर भी चरबी जमने लगी है, उम्र चौवालिस-पैंतालिस के लगभग होगी।

हाथ में एक पोर्टफोलियो लिये विशु बाबू सड़क पर एक हिंदुस्तानी (उत्तरी भारत के हिंदी बोलनेवाले लोगों को बंगाली लोग हिंदुस्तानी कहते हैं) की दुकान से बंगला पान खरीद रहे थे। सोमनाथ को देख गला

फाइवर चिल्लाये, "क्या मोहनबगान ? क्या खबर है ?"

सोमनाथ से पूछे बिना ही बिशु बाबू ने एक और पान का आर्डर दे दिया। पान लेने म सोमनाथ आनाकानी कर रहा था। बिशु बाबू ने डाँट बतायी, 'यह जान लो कि पान खान का कोई समय नही होता। किसी भी समय कितने भी पान चबा सकते हो—केवल वह लाल मसाला मत खाना।"

पानवाले से अपने लिए मोहिनी जर्दा बिशु बाबू ने अलग से माँग लिया। फिर बोले 'कल मोहनबगान के कई दुष्ट लडके ईस्टबगाल स्पोर्टिंग युनियन का खेल देखने आये थे, उद्देश्य था—ईस्टबगाल का एक प्वाइट मार लेना। दिस इज बैड (यह गलत है)। अपने क्लब को सपोर्ट करने का तुम्हारा राइट है पर विघ्न डालने के लिए बदमाश लडका को इसलिए भेज दिया जाये कि वे दूसर दल को सपोट कर, प्वाइट छीन लें—यह तो एकदम स्पोट समैनवाली बात नही है।"

और कोई वक्त होता तो सोमनाथ हँस देता या बिशु बाबू स तक करता कि शत्रु को परास्त करने के लिए कोई चीज गलत नही है। सच बात तो यह है कि सुकुमार के इसी तरह भडकाने पर सोमनाथ ने एक बार ईस्टबगाल का एक प्वाइट मार लिया था। आज इन सब प्रसगों पर चर्चा करने की मन स्थिति सोमनाथ की नही थी।

पान चबाते चबाते बिशु बाबू ने जानना चाहा, "व्हेयर इज योर फ्रेंड, (कहाँ है तुम्हारा दोस्त) सुकुमार ?"

सुकुमार बरबाद हो रहा है। आज सुबह ही बस स्टैंड के पास सुकुमार को देखा था सोमनाथ ने। एक भद्र पुरुप को मोटर साइकिल से उतारकर पूछ रहा था, 'पृथ्वी का वजन कितना है ?"

सोमनाथ के दौडकर न पहुँचने पर शायद वह आदमी बेचारे सुकुमार को मार बैठता। मार खाने से बचकर सुकुमार बोला, 'देख रहा है, कोई आदमी जेनरल नालेज मे सहायता नही करना चाहता। मुझे नौकरी मिल जायेगी तो तुम्हारा क्या चला जायेगा, बाबा ?" किसी तरह समझा बुझाकर सोमनाथ ने उसे यादवपुरवाली बस मे बठा दिया था और कण्डक्टर को किराये के पसे देकर उसे सुलेखा स्टाप के बाद उतारने के

लिए समझा दिया था।

विशु बाबू को सोमनाथ ने यह सब नहीं बताया।

"तुम्हारे क्या हाल चाल हैं ?" विशु बाबू ने पूछा।

सकोच छोडकर अब सोमनाथ ने पूछा "विशु दा' जिनको नौकरी नहीं मिलती उन्हे क्या करना चाहिए ?'

पान की पीक गले मे उतार विशु दा' शात से बोले, "कूद जाना पडता है। सामने जो भी मिले, उसे ही पकड लेना पडता है।" थोडा सोचकर काफी हँस लेने के बाद विशु दा बोले, 'एम्प्लायमट एक्सचेंज म लाइन लगाते लगाते ऊब गये हो क्या ? 'बम काली कलकत्तेवाली' बोलकर कूद पडो।"

'कहा कूद पडू ?' सामनाथ हडबडाकर बोला।

"हडबडाने की कोई बात नहीं है।" विशुदा ने पीठ पर एक धौल जमाकर कहा 'चलो मेरे साथ।"

सोमनाथ विशु बाबू के साथ चलने लगा। जी० पी० ओ०, राइटर्स बिल्डिंग और लालबाजार पार कर वे दोनों अब चितपुर रोड पहुँचे। थोडा और आगे दाहिनी तरफ पोद्दार कोर्ट है। फिर बागडी मार्केट। विशु बाबू बोले, जवान लडको को चाहिए कि इच्छा होते ही तुरन्त काम शुरू कर दें।"

सोमनाथ बोला, "अच्छा विशु दा', बिजनेस करने मे कितने रुपये लगते है ?"

विशु दा' हँस पडे। बोले, "सारे व्यावसायिक जीवन मे किसी ने इतना कठिन प्रश्न मुझसे नहीं किया है। इसका उत्तर है—दस पैसे से दस करोड रुपये। यह जो केलेवाला दिख रहा है इसकी पूजी दो रुपये भी नहीं है और सामने पोद्दार कोर्ट देख रहे हो, समझ सकते हो कि इसे बनाने मे कितना खर्च हुआ होगा ! टाटा बिडला के रुपयो का यदि हिसाब पूछोगे तो सिर पर हाथ रखकर बैठ जाओगे। उनकी कम्पनियो की बैलेन्स शीट से आँकडे निकाल यदि जोड लगाओगे तो बेहोश हो जाओगे।"

"रुपयो के बिना भी व्यापार हो सकता है ?" सोमनाथ ने थोडा

हिचकते हुए पूछा ।

"जरूर होता है । कलकत्ते में ये जो लखपति-करोड़पति, गोयनका, जालान, थापर, कानोडिया, बाजोरिया, सिंघानिया आदि हैं, क्या ये राजस्थान हरियाणा से कलकत्ते में व्यापार करने के लिए लाखों-करोड़ों रुपये साथ लेकर आये थे ? शुरू में मूलधन के नाम पर इनमें से अधिकांश के पास था—बस लोटा और कम्बल ।"

विशु दा' बोले, "औरों की क्या ? मुझे ही देखो ना । पार्टीशन (देश-विभाजन) के समय जैसोर से आ गया था । पूंजी के नाम पर बस यह पतृक शरीर था, विद्या के नाम पर टी० टी० एम० पी० या अर्थात टान-टून कर मैट्रिक पास । कलकत्ता में हाइकोर्ट की इमारत छोड़, कुछ भी नहीं पहचानता था । यह इमारत तब प्रत्येक बंगाल (पूर्वी बंगाल के लोग) को पहचाननी ही पड़ती थी, क्योंकि घटी* लोग सबसे पहले उनको हाइकोर्ट दिखा देते थे । उस समय, इस शहर में मुझे कौन नौकरी देता ? इसीलिए 'जय माँ काली कलकत्तेवाली' बोल बिजनेस में जुट पड़ा । उसके बाद क्वाटर-आफ ए-सेन्चुरी तो निकल गयी ।"

इसके बाद विशु दा' सोमनाथ को कानोडिया कोर्ट में अपने दफ्तर ले गये । बोले, "यह एक और अनजाना संसार है, समझे ब्रदर ! सत्तर अस्सी कमरे हैं इस मकान में । और प्रत्येक कमरे में कितनी कम्पनियाँ हैं, यह भगवान ही जानें । पन्द्रह वर्ष पहले, जब मेरी स्थिति खूब अच्छी थी, तभी छठी मंजिल पर बहत्तर नम्बर का कमरा मकानमालिक के दरबान को ढाई हजार रुपये सलामी देकर मनेज कर लिया था । अब भी उसी दफ्तर में काम चला रहा हूँ ।"

इस मकान में एक प्रागैतिहासिक लिफ्ट है । लिफ्ट के सामने लम्बी लाइन है । विशु दा' बोले, "हमेशा ही भीड़ रहती है । पहले समय अच्छा था । पांच रुपये महीना बख्शीश देने पर लिफ्टमैन सुन्दरलाल प्रेफरेंस देकर ले जाता था, कह देता था कि मालिक के आदमी हैं । अब

---

*घटी पश्चिमी बंगाल के लोगों को कहा जाता है—घटी का मतलब घड़ा है और पूर्वी बंगाल के लोगों को बाटी कहा जाता है—बाटी का मतलब है कटोरी ।

यह तरकीब नहीं चलती। बाबू से लेकर बैरे तक सब आपत्ति करते हैं। लाइन में खड़ा होना पड़ता है, बहुत वक्त लग जाता है।"

सोमनाथ अवाक् हो बिशु दा' की बातें सुन रहा था। बिशु बाबू बोले, "जानते हो ब्रदर, बिजनेसमैन बनते ही सीधे रास्ते कुछ भी करने का मन नहीं करता। जल्दी-जल्दी मैनेज करने के लिए छटपटाहट होने लगती है। या तो लाइन तोड़ आगे बढ़ जाने की इच्छा होती है, नहीं तो दो-चार पैसे देकर मैनेज करने की—और यदि यह सम्भव न हो तो सीढ़ी से ही ऊपर चढ़ना पड़ेगा।"

इसके बाद बिशु दा' ने सीढ़ी से ऊपर चढ़ने का प्रस्ताव किया। सोमनाथ को कोई आपत्ति न थी। हाफते हाफते छठी मंजिल पर पहुँचकर बिशु दा' बोले, "अब समझ में आ रहा है कि उम्र बढ़ चली है—अब छह-तल्ले पर चढ़ने में तकलीफ होती है। तुम लोगों का क्या—यंगमैन हो, कैसे धड़धड़ाते हुए ऊपर चले आये।"

छठी मंजिल अपने-आपमें एक छोटे मुहल्ले जैसी है। इसमें कितने ही गलियारे इधर-उधर चले गये हैं। सोमनाथ बोला, "इनमें लोग अपना दफ्तर कैसे ढूंढते होंगे?'

बिशु बाबू ने उत्तर दिया, "शुरू शुरू में मुझे भी ऐसा ही लगता था। अपना दफ्तर भी नहीं ढूंढ पाता था। अब आदत पड़ गयी है।"

बहत्तर नम्बर कमरे के सामने आ बिशु बाबू बोले, "यही मेरा दफ्तर है।"

बिशु बाबू ने और जो कुछ बताया, उससे सोमनाथ की समझ में आया कि पहले यह पूरा दफ्तर बिशु बाबू का था। अब उन्होंने कई लोगों को इसे सबलेट' कर दिया है। इसी कमरे में करीब बीस कम्पनियां चल रही हैं। ये सब थोड़ा थोड़ा बिशु बाबू को देते हैं, जिसमें से मकानमालिक को देने के बाद भी बिशु बाबू के पास थोड़ा-बहुत बच रहता है।

बिशु बाबू कहते हैं, ' इस कमरे में जितने दफ्तर हैं, उतने लोग नहीं दिखते। करीब दस टेबुल हैं।" बिशु बाबू हँसकर बोले, "प्रत्येक टेबुल दो कम्पनियों के हिसाब से है। एक कम्पनी टेबल के इस तरफ, दूसरी कम्पनी उस तरफ। दफ्तर में बैठे रहने से तो पेट भरता नहीं।

हिचकते हुए पूछा।

"जरूर होता है। कलकत्ते में ये जो लखपति-करोड़पति, गोयनका, जालान, खेतान, कानोडिया, बाजोरिया, सिंघानिया आदि हैं, क्या ये राजस्थान हरियाणा से कलकत्ते में व्यापार करने के लिए लाखों-करोड़ों रुपये साथ लेकर आये थे? शुरू में मूलधन के नाम पर इनमें से अधिकांश के पास था—वन लोटा और वन् कम्बल।"

विशु दा' बोले, "औरों को क्या? मुझे ही देखो ना। पार्टीशन (देश-विभाजन) के समय जैसोर से आ गया था। पूंजी के नाम पर बस यह पैतृक शरीर था, विद्या के नाम पर टी० टी० एम० पी० या अर्थात टान-टून कर मैट्रिक पर्यन्त। कलकत्ता में हाइकोर्ट की इमारत छोड़, कुछ भी नहीं पहचानता था। यह इमारत तब प्रत्येक बंगाल (पूर्वी बंगाल के लोग) को पहचाननी ही पड़ती थी, क्योंकि घटी* लोग सबसे पहले उनको हाइकोर्ट दिखा देते थे। उस समय, इस शहर में मुझे कौन नौकरी देता? इसीलिए 'जय माँ काली कलकत्तेवाली' बोल बिजनेस में जुट पड़ा। उसके बाद क्वार्टर-आफ ए-सेन्चुरी तो निकल गयी।"

इसके बाद विशु दा' सोमनाथ को कानोडिया कोर्ट में अपने दफ्तर ले गये। बोले, "यह एक और अजाना संसार है, समझे ब्रदर! सत्तर अस्सी कमरे हैं इस मकान में। और प्रत्येक कमरे में कितनी कम्पनियाँ हैं, यह भगवान ही जाने। पन्द्रह वर्ष पहले, जब मेरी स्थिति खूब अच्छी थी, तभी छठी मंजिल पर बहत्तर नम्बर का कमरा मकानमालिक के दरबान को ढाई हजार रुपये सलामी देकर मैनेज कर लिया था। अब भी उसी दफ्तर में काम चला रहा हूँ।"

इस मकान में एक प्रागैतिहासिक लिफ्ट है। लिफ्ट के सामने लम्बी लाइन है। विशु दा' बोले, "हमेशा ही भीड़ रहती है। पहले समय अच्छा था। पांच रुपये महीना बख्शीश देने पर लिफ्टमैन सुन्दरलाल प्रेफरेंस देकर ले जाता था, कह देता था कि मालिक के आदमी हैं। अब

*घटी पश्चिमी बंगाल के लोगों को कहा जाता है—घटी का मतलब घड़ा है और पूर्वी बंगाल के लोगों को बाटी कहा जाता है—बाटी का मतलब है कटोरी।

यह तरकीब नही चलती। बाबू से लेकर वरे तक सब आपत्ति करते है। लाइन मे खडा होना पडता है, बहुत वक्त लग जाता है।"

सोमनाथ अवाक हो बिशु दा' की बातें सुन रहा था। बिशु बाबू बोले, "जानते हो ब्रदर, बिजनेसमैन बनते ही सीधे रास्ते कुछ भी करने का मन नही करता। जल्दी-जल्दी मैनेज करने के लिए छटपटाहट होने लगती है। या तो लाइन तोड आगे बढ जाने की इच्छा होती है, नही तो दो-चार पैसे देकर मैनेज करने की—और यदि यह सम्भव न हो तो सीढी से ही ऊपर चढना पडेगा।"

इसके बाद बिशु दा' ने सीढी से ऊपर चढने का प्रस्ताव किया। सोमनाथ को कोई आपत्ति न थी। हाफते हाफते छठी मजिल पर पहुँचकर बिशु दा' बोले "अब समझ मे आ रहा है कि उम्र बढ चली है—अब छह तल्ले पर चढने मे तकलीफ होती है। तुम लोगो का क्या—यगमन हो, कैसे घडधडाते हुए ऊपर चले आये।"

छठी मजिल अपने-आपमे एक छोटे मुहल्ले-जैसी है। इसम कितने ही गलियारे इधर उधर चले गये हैं। सामनाथ बोला, "इनमे लोग अपना दफ्तर कैसे ढूढते होगे ?'

बिशु बाबू ने उत्तर दिया, "शुरू शुरू मे मुझे भी ऐसा ही लगता था। अपना दफ्तर भी नही ढूढ पाता था। अब आदत पड गयी है।"

बहत्तर नम्बर कमरे के सामने आ बिशु बाबू बोले, "यही मेरा दफ्तर है।"

बिशु बाबू ने और जो कुछ बताया, उससे सामनाथ की समझ मे आया कि पहले यह पूरा दफ्तर बिशु बाबू का था। अब उन्होने कई लोगों को इसे 'सबलेट' कर दिया है। इसी कमरे मे करीब बीस कम्पनिया चल रही है। ये सब थोडा थोडा बिशु बाबू को देते हैं जिसमे से मकानमालिक को देने के बाद भी बिशु बाबू के पास थोडा-बहुत बच रहता है।

बिशु बाब कहते हैं, "इस कमरे मे जितने दफ्तर हैं, उतन लाग नही दिखते। करीब दस टेबुल हैं।" बिशु बाबू हँसकर बोले, "प्रत्यक टेबुल दो कम्पनियो के हिसाब से है। एक कम्पनी टेबल के इस तरफ, दूसरी कम्पनी उस तरफ। दफ्तर मे बैठे रहने से तो पेट भरता नही।

सभी मालिक लोग बाजार मे मछली पकड़ने गये हैं।"

विशु बाबू के यहा ही एक और आदमी से परिचय हुआ। बिशु बाबू बोले 'यही है हमारे कमाण्डर इन चीफ फकीरचन्द सेनापति। यथा नाम तथा गुण—नाम से सेनापति, काम से भी सेनापति। मेरे साथ पिछले बाइस वर्षों से हैं। बाबा सेनापति! सोमनाथ बाबू नये आये हैं, जरा चाय नही पिलाओगे?"

सेनापति अभी तक एकटक सोमनाथ की ओर देख रहा था। उसने एक मैली धोती पहन रखी थी और उस पर घर म धुला साफ, लेकिन बिना इस्त्री किया एक खाकी कोट था। सेनापति के ओठ लाल थे और दाँतो पर भी पान खाने की छाप लगी हुई थी। फकीरचन्द केतली हाथ मे ले बिशु बाबू से इशारे से कुछ पूछना चाह रहा था।

विशु बाबू हँसते हँसते बोले, "हे भगवान, भूल ही गया था! तीन नम्बर चाय ले आओ।"

सेनापति के जाते ही बिशु बाबू बोले, "यह नम्बरवाली बात तुम नही समझे होगे। तीन नम्बर चाय हुई—अच्छी चाय विथ आमलेट एड टोस्ट। दो नम्बर हुई, अच्छी चाय विथ बिस्कुट और एक नम्बर हुई सिर्फ चाय। किसी भी अच्छी जगह मे आर्डिनरी चाय का नम्बर तीन होता। पर यह बिजनेस की जगह है। कस्टमर या गेस्ट कुछ भी नही समझ पायेंगे—सोचेंगे कि मि० बोस एक नम्बर स्वागत कर रहे हैं।"

फकीर सेनापति के चाय और खाने के समान लेकर आते ही बिशु बाबू बोल, "इन्ही श्रीमान को देखा। पहले जहाँ काम करता था, वहाँ सभी लोग फकीर कहकर पुकारते थे। यह बात मुझे अच्छी नही लगी। व्यापार म हममे से कोई भी फकीर बनने नही आता—यहाँ हर समय यह अभागा सम्बोधन अच्छा नही लगता, इसीलिए तब से श्रीमान को मैंने सेनापति बना दिया।'

फकीरचन्द शरमाकर हस पडा। विशु बाबू ने कहा "श्रीमान के गुणा का अन्त नही। धीरे-धीरे सब जान लोगे। मि० सेनापति इसी कमरे म रात मे रहते हैं और दफ्तर के पूरे मालिक है।'

फकीर सेनापति फिर दबी हँसी हँसा।

अब विशु बाबू ने सोमनाथ से कहा, "यदि तुम्हारी इच्छा हो तो ार म लग जाओ। मेरा कमरा तो है ही। छ नम्बर टेबुल की ह नम्बर सीट खाली है। नोपानी नाम के एक लडके ने किराये पर ी। तीन महीने से उसका कोई पता-ठिकाना नहीं है। पता लगाने पति का नोपानी के घर भेजा था, पर वहाँ से भी श्रीमान गायब हैं। यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो इस खाली कुर्सी पर बैठ सकते हो।"

िशु बाबू बोले, 'मेरी बहुत इच्छा है, बगाली व्यापार मे आये न वह आता नही। तुम यदि साहस दिखा पाओ, तो बहुत खुशी ो। तीन महीने किस्मत आजमाकर देखो। इन तीन महीनो का ाया मैं नही लूगा। पर उसके बाद अस्सी रुपये महीने के हिसाब से । अस्सी रुपये बहुत कम हैं। इसी मे मकान भाडा फर्नीचर भाडा, पति की सर्विस, और बिजली पखे का खर्चा भी आयेगा। बाहर ॉल आने पर फोन भी फ्री। केवल यहाँ से फोन करने पर एक कॉल ोछे चालीस पैसे लगेंगे। पैसे भी हाथो-हाथ नही देने होगे, सेनापति म दज कर लेगा। टेलिफोन तालाबन्द रहता है—बोलते ही सेना- 'खोल देगा।"

सोमनाथ को थोडा सहारा मिल रहा है। नौकरी पाने की इच्छा तरह से मिटी नही है, तब भी वह सोच रहा है कि व्यापार भी क्या वस्तु है ?

विशु बाबू बोले "बैठे मत रहो बदर! बैठे रहने से ही जग लग ा है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, जग लगकर खत्म होने से घिस कर खत्म होना हजार गुना अच्छा है।"

विशु बाबू ने घडी की ओर देखा। बोले 'आज मुझे बाजार म ा काम है। तुम यदि कल यहा आकर मिलो, तब समझूगा कि व्यापार ने का मन है। नही तो जैसे मदान मे मिलते थे वसे ही मिलना ा।"

कानोडिया कोट से निकलकर पदल चलते चलते डलहौजी स्क्वायर आ गया सोमनाथ। रास्ते के दोनो ओर बहुत से लोगो को देख, वह

भरोसा पा रहा है—ये सभी तो नौकरी नहीं करते, पर साधारणत खाने पहनने लायक कमाकर जी रह हैं। तब सोमनाथ भी यदि एक बार कोशिश कर देखे तो क्या नुकसान है।

पाच नम्बर बस म बैठकर भी सोमनाथ सोच रहा था। उसे याद आया, थोडे दिन पहले कमला भाभी को ट्रेन से श्रीरामपुर ले गया था। लौटते वक्त इलेक्ट्रिक ट्रेन मे एक फेरीवाला, जोर जोर से बहुत मजेदार बात कह रहा था "मेरा नाम निशीथ राय, उम्र तेइस वष, पढाई लिखाई स्कूल फाइनल। अपनी नौकरी के नियुक्तिपत्र पर खुद ही हस्ताक्षर कर मैं आज से मनेजिंग डायरेक्टर भी बन गया हूँ। अपने कमचारियो के हिसाब से अपनी तनख्वाह भी मैं तय करता हूं। पिछले महीने छियासी रुपये दिये थे। निशीथ राय यदि मेहनत से काम करेगा तो उसको धोखा नहीं दूगा। डेढ सौ दो सौ, अढाई सौ तक मासिक तनख्वाह दूगा।" इसके बाद फेरीवाले ने बेचने के लिए पाकेट से कुछ फाउटेन पेन निकाले थे।

घर आकर सोमनाथ चुपचाप अपने कमरे मे चला गया। कमला भाभी चाय ले आयी, बोली "बाबूजी चि ता कर रहे थे। एम्प्लायमेंट एक्सचेंज म अवश्य ही लम्बी लाइन रही हागी?"

'नहीं वहा तो दो तीन घण्टे मे ही काम हो गया।" सोमनाथ बोला।

कमला भाभी ने अखबार की दो कतरनें दी, "बाबूजी ने आज काटी थी।"

सोमनाथ ने दोनो कटिंग हाथ मे ले ली पर उनकी ओर देखा तक नहीं।

भाभी ने पूछा, "धूप म घूमे थे क्या? मुह सूख गया है।' देवर पर भाभी को बहुत दया आ रही है, यह कोई भी समझ सकता था।

सोमनाथ न भाभी की ओर देखा, पर जवाब नहीं दिया।

भाभी बोली 'दोपहर मे सुकुमार आया था। तुम्हारे लिए दो जेनरल नालेज के प्रश्न रख गया है। कह गया है, जसे भी हो उत्तर ढूढ रखे।"

सुकुमार की अंग्रेजी मे लिखी चिटठी सोमनाथ ने पढी। सुकुमार ने तत्काल जानना चाहा था—समुद्र का पानी खारा क्यो है ? और फ्रांसीसी क्रान्ति के समय किस नेता की हत्या नहाने की टब मे हुई थी ?

भाभी बोली, "बेचारे को क्या हो गया, बताओ तो ? मुझसे भी उसने एक प्रश्न पूछा और बोला कि इसका जवाब खोजकर बताना ही होगा।"

सोमनाथ ने बहुत उद्विग्न हो पूछा, "कौन सा प्रश्न ?" कमला भाभी बोली, "सुकुमार ने पूछा कि दशरथ के चार पुत्रो को राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के नाम से सब जानते हैं, परन्तु उनकी पुत्री का नाम क्या है ?"

"आपको इस तरह तग करने का क्या मतलब है ?" सोमनाथ थोडा चिन्तित हो गया।

कमला भाभी बोली, "उत्तर तो मुझे पता था, मा से सुना था कि रामचन्द्रजी की बहन का नाम शान्ता था। यह सुन सुकुमार खूब खुश हुआ। बोला, 'आपको कोई चिन्ता करने की जरूरत नही, मैं कल ही नियुक्तिपत्र भेज दूगा।'"

सुकुमार पूरा पागल हो गया है, लेकिन सोमनाथ क्या कर सकता है ? एक अपना ही ठिकाना नही, ऊपर से दूसरे की चिन्ता।

सोमनाथ बोला, "तो आपको खूब परेशान कर गया है।"

भाभी चुप रही। किसी की निन्दा करना उनका स्वभाव नही है।

सोमनाथ बोला, "पर मैं पागल नही होऊँगा, भाभी।"

'बकवास बन्द। तुम किस दुख से पागल होओगे ? मा खुद बोल गयी है—तुम्हारा भाग्य खूब अच्छा है।"

"एक आदमी कभी कुछ बोल गया है, उस पर आप विश्वास करती हैं, भाभी ?" सोमनाथ ने पूछा।

'क्या नही करूँगी ? मा की कोई भी बात गलत नही हुई।" भाभी बोली।

भाभी की ओर विस्मय से अवाक हो देखता रहा सोमनाथ। फिर कृतज्ञता से अभिभूत हो बोला, "मैं यदि शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय होता तो

छपी तो सबसे पहले रहेगा—'जिन्होंने मुझे सर्वप्रथम कवि-रूप में स्वीकार किया—उन्हें।'

भाभी बोली थी, "इसका अर्थ सन्दिग्ध है। कारण, यह मोक्षदा भी हो सकती है। तुमने जब भी मोक्षदा को कविता सुनायी है उसने सुनी है। इतिहासकार प्रमाणित कर देंगे कि तब इस घर में मेरा विवाह ही नहीं हुआ था।"

सोमनाथ ने हँसकर कहा, "इतिहासकारों से कौन पूछता है? अपनी आत्मकथा में सब गुप्त बातें लिख दूँगा। लिख दूँगा कि मोक्षदा की स्वीकृति के पीछे पूरा लोभ छिपा हुआ था। दो आने के पान खिलाने के वायदे के बिना वह किसी भी तरह कविता सुनने नहीं बैठती थी, जबकि भाभी की स्वीकृति के पीछे कोई स्वार्थ नहीं था। रवीन्द्रनाथ की काव्य-लक्ष्मी और सोमनाथ की काव्य कमला।"

भाभी तब भी छोटी बच्ची की तरह सरल थी। बात को मजाक मानकर पूरी तरह उड़ा नहीं पायी। देवर पर बेहद विश्वास था। बोली थी, "तुम प्रसिद्ध कवि बन जाओगे तब कितना शानदार रहेगा! कवि सोमनाथ के साथ मेरा नाम भी हो जायगा।"

स्कूल फाइनल की परीक्षा के समय भी सोमनाथ कविता लिखता था। कविता का नशा न होने पर शायद उसका रिजल्ट बढ़िया होता। सोमनाथ में प्रतिभा का अभाव नहीं था। कालेज में प्रवेश कर भी सोमनाथ ने ढेरों कविताएँ लिखी थीं। कब बहुत-सी कापियाँ कविताओं से भर गयीं, यह सोमनाथ खुद भी नहीं समझ पाया।

पर कालेज से निकल, एम्प्लायमेंट एक्सचेंज के खाते में अपना नाम दर्ज कराते ही काव्यधारा अकस्मात सूख गयी। सोमनाथ अब कापी कलम लेकर नहीं बैठता। भाभी ने कितनी ही बार शिकायत की, पर सोमनाथ अब लिख ही नहीं पाता। बेकार सोमनाथ के जीवन से काव्य लक्ष्मी ने विदा ले ली है। जो बेकार हैं, दुनिया में उनको कुछ भी नहीं शोभता।

ऐसा क्यों हुआ, सोमनाथ ने सोचा है। जिन लोगों को पूरा आत्म विश्वास रहता है, सोमनाथ उनमें नहीं है। जो थोड़ा बहुत आत्मविश्वास बचा था, हजार एक दरख्वास्तें लिखकर वह भी खत्म हो गया। जिस

आप पर एक बडा उपन्यास लिखता ।"

रहने दो । पहले तो फिर भी भाभी के लिए दो एक कविता लिखते थे—अब वह भी बन्द कर दी है ।" भाभी ने देवर को स्नेह से फटकारा। बाबूजी ने पुकारा, और कमला भाभी ऊपर चली गयी।

घर में सिर्फ कमला भाभी ही सोमनाथ की प्रशंसा किया करती हैं। तब माँ जीवित थी। गणित की कापी मे सोमनाथ ने एक कविता लिखी थी। उस पर मा ने बहुत डाँटा था "गणित की कापी मे कविता लिखकर क्या तुम रवि ठाकुर बनोगे ?"

पर भाभी ने छोटे देवर का मान रखा। चुपचाप भैया से वह आक्सफाड की दुकान से एक काली नम चमडे से मढी डायरी खरीदकर मँगायी। उसके पृष्ठ पर स्वय लिख दिया था 'एक तरुण कवि को—उसकी भाभी'। डायरी हाथ मे पकडाकर भाभी ने देवर को चकित कर दिया था। भाभी बोली थी, "मुझे कविता बहुत अच्छी लगती है देवर ! जितनी जल्दी हो सके, इसे भर दो फिर एक और डायरी खरीद दूगी।"

सोमनाथ को दुख है कि भाभी ने कुपात्र को इतना स्नेह और विश्वास दिया था और आज भी उस कुपात्र पर अपना स्नेह बरबाद कर रही हैं।

बचपन म वह डायरी सोमनाथ ने बहुत जल्दी ही भर दी थी। बहुत-सारी कविताएँ लिखी थी सोमनाथ ने। दोपहर मे जब सब सो जाते तब भाभी के साथ सोमनाथ की काव्य-आलोचना चलती। सोमनाथ कहता, 'स्कूल मे दो एक कविताएँ सुनायी थी भाभी, लेकिन मास्टर साहब बोले—ये कविताए नही है।" भाभी मानती नही, "बोलने दो। तुम्हारी कविता मुझे खूब अच्छी लगती है। लिखते लिखते तुम्हारी कविता जरूर मँज जायेगी, तब पूरे देश मे तुम्हारा नाम हो जायेगा।"

कापी को सँभालकर रखने को कहा था भाभी ने। कही सुना था भाभी ने कि कवियो की प्रथम कविताओ की कापी बाद मे बहुत अधिक कीमत पर बिकती है।

सोमनाथ कुछ नही बोला। पर कापी के एक कोने मे उसने अपने अलिखित प्रथम काव्यग्रन्थ का समर्पण लिखा था। यदि कभी किताब

छपी तो सबसे पहले रहेगा—'जिन्होने मुझे सर्वप्रथम कवि-रूप मे स्वीकार किया—उन्हें ।'

भाभी बोली थी, "इसका अर्थ सन्दिग्ध है। कारण, यह मोक्षदा भी हो सकती है। तुमने जब भी मोक्षदा को कविता सुनायी है उसने सुनी है। इतिहासकार प्रमाणित कर देंगे कि तब इस घर मे मेरा विवाह ही नहीं हुआ था।"

सोमनाथ ने हँसकर कहा, 'इतिहासकारो से कौन पूछता है ? अपनी आत्मकथा मे सब गुप्त बातें लिख दूगा। लिख दूगा कि मोक्षदा की स्वीकृति के पीछे पूरा लोभ छिपा हुआ था। दो आने के पान खिलाने के वायदे के बिना वह किसी भी तरह कविता सुनने नही बैठती थी, जबकि भाभी की स्वीकृति के पीछे कोई स्वार्थ नही था। रवीन्द्रनाथ की काव्य लक्ष्मी और सोमनाथ की काव्य कमला।"

भाभी तब भी छोटी बच्ची की तरह सरल थी। बात का मजाक मानकर पूरी तरह उडा नही पायी। देवर पर बेहद विश्वास था। बोली थी,' तुम प्रसिद्ध कवि बन जाओगे तब कितना शानदार रहेगा ! कवि सोमनाथ के साथ मेरा नाम भी हो जायेगा।"

स्कूल फाइनल की परीक्षा के समय भी सोमनाथ कविता लिखता था। कविता का नशा न होने पर शायद उसका रिजल्ट बढिया होता। सोमनाथ मे प्रतिभा का अभाव नही था। कालेज मे प्रवेश कर भी सोमनाथ ने ढेरो कविताएँ लिखी थी। कब बहुत सी कापिया कविताओ से भर गयी, यह सोमनाथ खुद भी नही समझ पाया।

पर कालेज से निकल एम्प्लायमेंट एक्सचेंज के खाते मे अपना नाम दर्ज कराते ही काव्यधारा अकस्मात सूख गयी। सोमनाथ अब कापी-कलम लेकर नही बैठता। भाभी ने कितनी ही बार शिकायत की, पर सोमनाथ अब लिख ही नही पाता। बेकार सोमनाथ के जीवन से काव्य लक्ष्मी ने विदा ले ली है। जो बेकार हैं, दुनिया मे उनको कुछ भी नही शोभता।

ऐसा क्यो हुआ सोमनाथ ने सोचा है। जिन लोगो को पूरा आत्म-विश्वास रहता है, सोमनाथ उनमे नही है। जो थोडा बहुत आत्मविश्वास बचा था, हजार एक दरख्वास्तें लिखकर वह भी खत्म हो गया। जिस

आदमी म आत्मविश्वास नही है, वह कवि कैसे बन सकता है ? सोमनाथ था इन मानसिक अवस्था को केवल सुकुमार जानता था। सुकुमार ने कहा था 'थोड़े दिन ठहर, नौकरी मिलने पर जादू की तरह आत्म-विश्वास लौट आयगा। पर तब तू धोखा मत देना—मुझ पर भी एक कविता लिखना। बाबूजी, माँ, बहनें सबको सुना दूंगा जिससे तुरन्त ही प्रेस्टिज बढ जायेगी।"

बाबूजी से बात कर भाभी फिर आ गयीं। सोमनाथ बोला, "भाभी, आपके साथ एक बहुत गुप्त बात करनी है।"

भाभी हँस पड़ी, "गुप्त बात सुनने मे मुझे डर लगता है। मेरे पेट म कुछ पचता तो है नहीं, अन्त मे यदि किसी से कह दू तो ?"

सोमनाथ बोला, "आपको छोड और किसी को नहीं बताऊँगा, भाभी, आप भी चुप रहिएगा।" फिर व्यापारवाली बात की ओर सकेत कर सोमनाथ बोला, 'ट्रेन के उस फेरीवाले की तरह अपने अप्वाइंटमेंट लेटर को खुद ही साइन कर देखू।"

भाभी काफी उत्साहित हो उठी। पूछा, "बाबूजी को बताने मे क्या आपत्ति है ?'

सोमनाथ राजी नही हुआ, "क्या होगा यह अभी निश्चित नही है। हो सकता है, जग हँसाई ही हो। पहले करके देखता हूँ, जम जाने पर बाबूजी को बताऊँगा।"

भाभी मान गयी। हँसकर बोली, "तुम्हारे भैया से झूठ बोलना मुश्किल है। पर इस समस्या का समाधान भी हो गया है। वह एक महीने और बम्बई ही रहगे। वहा एक सज्जन छुट्टी पर जानेवाले हैं, जिनसे वह ट्रेनिंग ले रहे हैं।"

भाभी बोली, पर बाबूजी की बात भी मानना। जहाँ एप्लिकेशन भेजने को कहे भेज देना। और बचे हुए समय मे नयी लाइन म पूरी कोशिश करना।'

"जानती हैं भाभी ! व्यापार बहुत कुछ लाटरी की तरह है। बहुत से लोग जल्दी ही पैसेवाले हो जाते हैं।"

अत्यधिक प्रसन्नता से भाभी बोली, "तुम जल्दी ही व्यापार मे खडे

हो जाओ तो मजा आ जाय। बाबूजी तो विश्वास ही नही कर पायेंगे। तब मुझे ही डांट खानी पडेगी, कहेंगे—बहूरानी ! सब जानकर भी हम लोगो से क्यो छिपाया ?'

भविष्य की मधुर कल्पना से दोनो एकसाथ खूब हँसे। भाभी ने जानना चाहा, "व्यापार करने म रुपय की जरूरत नही होती, खोकोन ?"

इस बात की ओर अभी तक सोमनाथ का ध्यान नही गया था। माथा खुजला वाला, ' पहले होती थी। अब शायद नही होती। शिक्षित बेकारो को उधार देने के लिए बैंक तैयार रहते हैं।"

कमला भाभी को इतना ज्यादा विश्वास है कि उसमे किन्तु-परन्तु की गुंजाइश नही। सिफ इतना ही बोली, "माँ के रुपये तो तुम्हारे और मेरे ज्वाइंट नाम से बैंक म पडे हैं। पासबुक देखोगे ? वे तीन हजार तो होगे ही !"

इन रुपयो की बात सोमनाथ को याद ही नही थी।

भाभी के जाने के थोडी दर बाद ही बुलबुल कमरे मे आयी।

जितनी उम्र बढ रही है, छोटे भैया की बहू उतनी ही बच्ची होती जा रही है। आजकल घर म भी गुडिया की तरह सज धजकर रहना उसे अच्छा लगता है। यही दीपान्विता घोषाल एक बार कालेज मे युनियन इलेक्शन की अन्यतम नायिका थी ! वोट के लिए तब दीपान्विता न सोमनाथ को पकडा था। ' देश को यदि प्यार करते हैं—यदि शोषण से मुक्ति चाहते है तो हमारे दल को वोट दीजिएगा, यही सब और न जानें क्या क्या तब ही दीपान्विता घोषाल धाराप्रवाह एक ही सास म बोलती गयी थी। विवाह के बाद वे सारी बातें कहा चली गयी हैं ! अब पति, पति की नौकरी और अपने पेटीकोट ब्लाउज को छोड कुछ भी नही जानती है—भूतपूर्व युनियन नेत्री बुलबुल घोषाल।

बुलबुल पढने मे तेज नही थी। सोमनाथ और सुकुमार दोना से भी खराब रिजल्ट हुआ था उसका। पर बुलबुल के पास रूप था—लडकियो के लिए यही आवश्यक है। साधारण तौर पर सोमनाथ और सुकुमार

-दोनो ही अच्छी तरह बी० ए० पास करके भी जीवन की परीक्षा पास नही कर पाये और बी० ए० कम्पाटमेटल लाकर भी बुलबुल जीत गयी। कोई उससे नही पूछता कि क्या परीक्षा अच्छी तरह नही दी। लडकियो का रूप ही भाग्य है !

बुलबुल के हाथ म एक अतर्देशीय पत्र है। किसी महिला की लिखावट म सोम की चिट्ठी। बुलबुल बोली 'यह लो। लेटरबाक्स म पडी थी। मैं तो भूल ही गई थी।" कहकर बुलबुल हँस दी।

इस हँसी के पीछे बुलबुल का स्त्रियोचित प्रश्न है यह सोमनाथ समझ गया। पर अपने छोटे भया की पत्नी को उसन कुछ नही बताया।

लिफाफे पर हाथ की लिखावट एक बार फिर सोमनाथ ने देखी फिर बिना खोले ही चिट्ठी तकिये के नीचे रख दी।

"मेरे सामन तो यह चिट्ठी पढोग नही, मैं जाती हूँ।' थोडे मान स बुलबुल बोली।

बुलबुल के जाने के बाद भी सोमनाथ थोडा विचलित रहा। चिट्ठी किसी के हाथ नही लगती तो सोमनाथ को और भी अच्छा लगता। लिफाफे की ओर उसने फिर एक बार देखा। यह चिट्ठी इस दुनिया मे एक लडकी लिख सकती है। उसकी लिखावट से वह पूर्ण रूप से परिचित है। पर जिसके पास नौकरी नही अपना भविष्य नही, जो बाप और भाइयो के लिए बोझ है, वह ऐसी चिट्ठी पाने के योग्य नही। इस प्रकार की चिट्ठी सोमनाथ को शोभा नही देती।

सोमनाथ को चिट्ठी खोलने की हिम्मत नही हो रही है। एक काली कजरारी आखोवाली भावुक लडकी का निश्छल चेहरा उसकी आखो के सामने तरने लगा। शान्त स्निग्ध, गम्भीर आंखोवाली इस लडकी का नाम किसने तपती रख दिया ? उसको देखते ही घर-बाहर उपन्यास की विमला की मा की बात याद आ गयी थी सोमनाथ को—"हमारे देश मे सुन्दर उसी को कहते है जो गोरे रग का होता है। पर जो आकाश रोशनी देता है, वह नीला है।'

सोमनाथ ने अब लिफाफा खोल डाला। तपती ने लिखा था एकदम ही भूल गये क्या ? ऐसी तो बात नही थी। कल यू० जी० सी० से

स्कालरशिप की सूचना मिली, इसका मतलब—सरकारी अनुदान से डि० फिल० करने की स्वतन्त्रता। सोचा, इस खबर को पाने का पहला अधिकार तुम्ही को है। कैसे हो? इति—तपती।"

इति और तपती के बीच कुछ लिखा हुआ था, पर लिखने के बाद उसे खूब सावधानी से काट दिया गया था। सोमनाथ ने अन्दाज लगाने की चेष्टा की। उसने चिट्ठी को रोशनी के सामने करके कटी हुई बात को पढ़ने का प्रयास किया। मन कह रहा था, लिखा था—'तुम्हारी ही'। यदि सोमनाथ का अन्दाज ठीक है तो इस बात को तपती ने काटा क्यों? 'तुम्हारी ही तपती' लिखने मे तपती को क्या आजकल दुबिधा होने लगी है? अपनी चिट्ठी मे कुछ भी काटने का अधिकार तो तपती को है ही, पर तब चिट्ठी लिखने का ही क्या उद्देश्य था? उसकी यू० जी० सी० स्कालरशिप की सूचना भी सबसे पहले सोमनाथ को ही देने की क्या आवश्यकता थी?

इधर बाबूजी अवश्य ही सोमनाथ की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सोचते हैं, एम्प्लायमेंट एक्सचेंज की सारी घटनाएँ पूरे विवरण-सहित सोमनाथ से सुनेंगे। कितने लोग लाइन मे खड़े थे? कितना समय लगा? अफसर ने बुलाकर कुछ कहा या क्लर्क ने ही कार्ड नया कर दिया?

पर इस विषय मे पूछने पर लड़के को खीझ पैदा होती है। एक्सचेंज आफिस के सामने साढ़े पाँच घण्टे लाइन मे खड़े रहने के अपमान को वह भूलना चाहता है। एक समवयस्क युवती की मधुर चिट्ठी को छाती से चिपकाये वह लेटे रहना चाहता है। तपती से बहुत दिनो से सोमनाथ की मुलाकात नही हुई है। बहुत बार उससे मिलने को मन करता है, भवानीपुर की राखाल मुखर्जी रोड भी दूर नही है, पर दुबिधा और संकोच को सोमनाथ दूर नही कर पाता।

जिसे दूर कर रखा था, उसकी चिट्ठी ही आज उसे पास ले आयी। हालांकि पत्र छोटा था, फिर भी उसे दुबारा पढ़ना बहुत अच्छा लगा। जो अच्छा लग रहा है, वह है इस चिट्ठी का अलिखित अंश—और उन सब रिक्त स्थानो की सिर्फ सोमनाथ ही पूर्ति कर सकता है। जिस जगह तपती की चिट्ठी मे कोई सम्बोधन नही, वहां बहुत कुछ लिखा जा

सकता है—सविनय निवेदन—चौकोन—सोमनाथ—सोमनाथ बाबू—मेरे प्रिय, प्रियतम । और भी एक शब्द तपती के मुह से सुनने की इच्छा है उसकी लिखावट म देखने की प्रबल आकाक्षा है। इस शब्द का भाव तपती के श्यामल चेहरे पर सोमनाथ ने कई बार देखा है, वह बहुत गम्भीर एव सकोचशील स्वभाव की लडकी है। कई लोग ऐसे होते हैं जो जैसा अनुभव करते हैं उससे दुगुना बोल देते हैं। तो भी उस काल्पनिक बात को सोमनाथ ने चिट्ठी स जोड लिया। तपती की अनभ्यस्त बगला लिखावट म प्रियतम सम्बोधन कैसा आकार लेगा, इसकी कल्पना करने मे सोमनाथ को कोई असुविधा नही हो रही थी।

उसके बाद तपती ने लिखा है, "एकदम ही भूल गये क्या ?" तपती के छोटे छोटे नम हाथो को सोमनाथ देख पा रहा था। लिखते समय बायें हाथ से कागज को तपती ने जरूर ही दबा रखा था। उस हाथ मे तपती कई माने की चूडियाँ और कगन पहनती है जो बहुत-कुछ भाभी के कगनो के डिजाइन जैसे हैं।

तपती के दाहिने हाथ की कनिष्ठा अगुली का नाखून काफी बडा है। इस नाखून को लेकर छात्रजीवन मे सोमनाथ ने एक बार मजाक किया था, 'लडकिया शौक से नाखून क्यो रखती हैं?" तपती शरमा गयी थी—उसके अग प्रत्यग को कोई बारीकी से देख रहा है, यही उसकी परेशानी का सबब था। तपती के साथ उस दिन श्रीमयी राय थी। बहुत निर्भीक लडकी है। श्रीमयी बोली थी, "बहुत दुखी होकर ही लडकियाँ आजकल नाखून बढाती हैं, सोमनाथ बाबू ! लडकी होकर यदि कालेज आते, तब पता चलता। कई लोग ऐसा व्यवहार करते हैं कि वे सभ्य मनुष्य हैं या जगली जानवर, यह समझ म नही आता।"

श्रीमयी के बोलने की भगिमा से तपती बहुत झेंप रही थी। उसने अपनी सहेली को रोकने का प्रयास किया, "चुप भी रह ! इनको यह सब बताने से क्या फायदा ? ये क्या करेंगे ?"

जन अरण्य की बात तभी सोमनाथ के मन में आयी थी। कविता लिखने का उत्साह तब कम नही हुआ था। कालेज की लाइब्रेरी मे बठ सोमनाथ ने एक कविता लिख डाली थी। सोमनाथ ने इस विशाल

कलकत्ता शहर की तुलना पशुओ से भरे एक गहन अरण्य से की थी—जहा सभ्यता की लिबास मे अरण्य के ही कानून चालू हैं। यहाँ कोई भी सुरक्षित नही है। इसलिए अरण्य की आदिम पद्धति से ही आत्मरक्षा करनी होगी। प्रकृति भी वही चाहती है—नही तो सुकोमल रूपवती के कोमल अगा मे भी तीक्ष्ण नाखून क्या होते ? दाता की चन्द्रच्छटा म क्यो आदिम युग की तेज धार होती ?

कविता की कुछ पक्तिया सोमनाथ को आज भी याद हैं

इस आदिम अरण्य शहर कलकत्ते मे
घूमत हैं असख्य जतु
मनुष्यो के मुखौटा मे
जो इस पतली झिल्ली के पार,
सिफ —जानवर है।

कविता का शीपक दिया था 'जन अरण्य'।

सोमनाथ ने उसकी कोई प्रतिलिपि रखे बगैर वह कविता कापी से फाडकर तपती को दे दी थी और उस फटे हुए पन्ने को तपती ने सँभालकर रख लिया था।

बिस्तर पर लेटे लेटे एम्प्लायमेंट एक्सचेंज का काड होल्डर सोमनाथ हँसा। कालेज के उन सदाबहार दिनो म तपती ने आशा की थी, सोमनाथ के बडे कवि होन की। जन-अरण्य उसने कण्ठस्थ कर ली थी। कालेज से निकलकर सडक पर बस की प्रतीक्षा मे खडे खडे तपती बोली थी "एक कविता सुनिए—'यह भी एक आदिम अरण्य है शहर कलकत्ता ।' उसने पूरी कविता सुना दी। तपती के मुँह से वह कविता कितनी प्यारी लगी थी !

श्रीमयी राय बगल मे ही खडी थी। तपती के मुह से कविता सुन वह आश्चयचकित रह गयी। पूछा 'तुझको कविता का शौक कब से हुआ ? मैं तो सोचती थी कि तुझे हिस्ट्री छोड और किसी विषय मे रुचि नही है।"

तपती लाल हो गयी। श्रीमयी ने पूछा, "कविता किसकी लिखी हुई है ?" तपती और सोमनाथ दोनो ने ही उत्तर छिपा लिया। तपती बोली

थी, कविता अच्छी लगती है तो पढ लेती हूँ। कवि का नाम-वाम मुझे याद नहीं रहता।'

श्रीमयी दूसरी बस से रीजेंट पार्क चली गयी। दो नम्बर बस की प्रतीक्षा करते-करते तपती बोली थी, "आपकी कविता अच्छी है—पर निगेटिव है। खीचकर आपने प्रहार तो किया है, पर समाज में आशा की कोई बात आपको नजर नही आयी।"

सोमनाथ ने मन ही-मन खुश होकर भी प्रतिवाद किया। लावण्यमयी तपती की चलमलाती देह पर दृष्टि डाल मधुर हँसी हँसते हुए सोमनाथ बोला था, "दांत और नाखून तो आघात करने के ही हथियार हैं।

उसके स्वर की गम्भीरता तपती को अच्छी लगी। पर उसने तुरन्त ही उत्तर दिया था, "लडकियो को आप बिल्कुल ही नही जानते। नाखून क्या केवल नोचने के लिए हैं ? तो फिर लडकियाँ नाखूनो पर पालिश क्या लगाती हैं।"

सोमनाथ को उत्तर बहुत अच्छा लगा था। तपती की बुद्धि की कान्ति अकस्मात उसकी नाजुक कोमल देह पर देदीप्यमान होने लगी थी। सोमनाथ मुग्ध हो बोला था, "अब समझ पाया, पतले लम्बे और तीखे नाखूनो से कवि की कलम भी बन सकती है।"

ऐसा कोई घनिष्ठ परिचय दोनो के बीच नही था। झट से इस तरह की बात सोमनाथ के मुह से निकल गयी, इससे वह थोडा क्षुब्ध हुआ। अचानक दो नम्बर की बस आती देख तपती तत्परता से आगे बढी और राष्ट्रीय परिवहन की भीड मे खो गयी—उसे कहीं बुरा तो नही लगा, सोमनाथ यह समझ नही पाया।

दूसरे दिन कालेज मे पहले पीरियड म तपती कोनेवाली बेंच की पहली पंक्ति म बैठी थी। दूर स उसका गम्भीर चेहरा देख, सोमनाथ की चिंता और बढ गयी—प्राध्यापक का लेक्चर सोमनाथ के कानो म गया ही नही। पद्रह मिनट तक उसकी ओर देखत रहने पर दोनो की आँखें मिलीं। दृष्टि में कोई विशेष नाराजगी का भाव न देख सोमनाथ निश्चिन्त हुआ। तपती को सर्दी लग गयी है। बीच-बीच मे रूमाल निकालती है।

दोपहर को दोनो फिर मिले। एक क्लास से दूसरी क्लास जाने के

रास्ते मे तपती जल्दी से उसके हाथ मे एक छोटा पैकेट पकडाकर गायब हो गयी। मित्रो की तीक्ष्ण दृष्टि से बचते हुए कालेज लाइब्रेरी मे जाकर सोमनाथ ने पैकेट खोला था। एक पायलट पेन—साथ ही एक छोटी सी चिट। कोई सम्बोधन नही—लिखनेवाली का नाम भी नही। सिर्फ लिखा था— नाखून को कलम बनाना नितान्त कवि कल्पना है। कविता लिखी जाती है कलम से।"

हरे रग की वह कलम आज भी सोमनाथ के हाथ के पास रखी हुई है। तपती की आशा पूरी नही कर पाया सोमनाथ। कविता नही लिख-कर—ढेर-के ढेर आवेदनपत्र लिख लिखकर सोमनाथ ने कलम को घिस डाला है। बीमार कलम बीच बीच मे बिना किसी कारण अचानक स्याही उगलने लगती है। सोमनाथ बनर्जी की यह परिणति होगी तपती अगर ऐसा जानती तो निश्चित ही यह कलम उसको उपहार मे नही देती। कलम से तपती की चिटठी पर तरह-तरह के टेढे मेढे निशान बनाकर उन्हे काटते-काटते सोमनाथ अर्थहीन चिन्ताओ के जाल मे फस गया।

सुबह दस बजे। हाथ मे एक अटैचीकेस ले नयी जिन्दगी शुरू करना अच्छा लग रहा है सोमनाथ को। कमला भाभी ने अटचीकेस जबदस्ती हाथ मे पकडा दिया है—बडे भैया के पास कई हैं, काई काम नही आते।

इस बार भी कमला भाभी ने जेब मे फूल रख दिया। आशीर्वाद देकर बोली, "तुम आदमी बनोगे इसमे मुझे कोई सन्देह नही।"

सोमनाथ ने मन ही मन स्वय से प्रश्न किया—आदमी बनना किसका कहते है ? फिर उसके मन म आया कि अपना अन्न खुद जुटा लेने की व्यवस्था करना मनुष्य होने का प्रथम सोपान है।

सामनाथ समझ गया है बहुत देर हो चुकी है। अब भी अपने पैरो पर न खडा हो पाया तो मनुष्यत्व नही बचेगा।

कानोडिया कोट के बहत्तर नम्बर कमरे म विशु बाबू बैठे थे। सामनाथ को देखते ही प्रफुल्ल हो बाले, 'आओ, आओ।'

सोमनाथ तब भी नही समझ पा रहा था कि निर्मम निरपेक्ष समय

उसे किस ओर लिये जा रहा है।

अगर आज बस-स्टैंड के पास सुकुमार न मिल जाता तो यह चिन्ता उसके मन में नहीं घुमड़ती। सोमनाथ के साफ सफेद कपड़े देख सुकुमार बोला था, वाह! क्या कहने! चुपके चुपके नौकरी का इंटरव्यू देने जा रहा है?"

सुकुमार की रूखी दृष्टि एवं बेतरतीब दाढ़ी देखकर सोमनाथ को दुख हो रहा था। सुकुमार बोला दस मिनट रुक—कपड़े बदलकर मैं भी तेरे संग इंटरव्यू दे आऊंगा।"

सोमनाथ को मूर्ति की तरह खड़ा देख सुकुमार कातर होकर बोला, "मैं गारण्टी ले सकता हूँ कि लाट साहब, चीफ मिनिस्टर, टाटा, बिड़ला कोई भी मुझसे जेनरल नालेज में नहीं जीत सकते।"

सोमनाथ ने उसके दोनों हाथ पकड़ कहा, ' विश्वास कर, मैं इंटरव्यू देने नहीं जा रहा।"

' तुम भी मुझसे झूठ बोल रहे हो।" सुकुमार अचानक चीख उठा। फिर अकस्मात रो पड़ा "नौकरी के बिना मेरा जीना मुश्किल है, भाई।"

सोमनाथ की गम्भीर मुखमुद्रा देख विशु बाबू ने गलत समझा। बोले, "क्या भई? अफसर न होकर बिजनेसमैन होना पड़ रहा है, इसलिए मन उदास है क्या?"

सोमनाथ बोला, "नौकरी जब मुझे नहीं चाहती तब मैं क्यों नौकरी को चाहने जाऊँगा?"

विशु बाबू बोले, 'पाकिस्तान में सब खोकर जब आया था तब मेरी हालत सोचनीय थी। मुर्गीहट्टा में मौका उठा (बोझ उठाने का काम) कई दिन मजूरी की थी। उसके बाद ज्यादा सूद पर दस रुपये उधार लेकर एक टोकरी संतरे खरीदने गया। अनाड़ी था, फलों के बक्सा पर लाल हरे निशान देखकर क्या समझता? मेरी स्थिति देख चितपुर के थोक बाजार में एक बूढ़े मुसलमान को दया आ गयी। देख परखकर भले आदमी ने संतरों का एक बक्सा खरीद दिया। पहले दिन बढ़िया माल निकला। पांच घण्टे सड़क पर बैठकर नेट दो रुपये लाभ कर लिया—

o h1
n

खुशी में अनजाने दो सन्तरे भी खा डाले थे। मूछोंवाला, हट्टा-कट्टा आदमी शाम को सूद-सहित रुपये उगाहने आया तो अवाक् रह गया। उसने सोचा था, कि मैं रुपये नहीं चुका पाऊँगा। दस रुपये दस आने उसे तुरन्त पकड़ा दिये बचे एक रुपया छः आने।

अपनी कहानी बन्द कर विशु बाबू ने कहा, "छोड़ो ये सब बातें। अब तुम्हारे प्रथम पाठ का प्रबन्ध करता हूँ। मल्लिक बाबू को बुलवाना हूँ।"

सेनापति मल्लिक बाबू को बुलाने दौड़ा। कुछ ही देर में एक कमानी टूटा हुआ चश्मा लगाये बूढ़े मल्लिक बाबू हाजिर हुए। जैकेट पहने पैरों में विद्यासागरी चप्पलें डाले। यह महाशय इसी मुहल्ले में छपाई-सम्बन्धी सब तरह के काम करते हैं।

विशु बाबू बोले, "मल्लिक महाशय, सोमनाथ के लेटरहेड और विजिटिंग कार्ड्स की व्यवस्था कर दीजिए। मेरे दफ्तर का पता और टेलीफोन नम्बर दे दीजिएगा।

"नाम क्या होगा ?" मल्लिक बाबू ने तन्द्रिल अवस्था में पूछा।

"हाँ। सच ही, एक नाम तो चाहिए।" विशु बाबू बोले। "कोई प्रिय नाम है क्या ?" उन्होंने पूछा।

प्रिय नाम एक है—कमला। पर इस जीवन की उलझनों के साथ उसको बेकार में जोड़ लेने में क्या लाभ ? उससे अच्छा है—जिम्मेदारी पूरी अपने ऊपर ही रहे—कम्पनी का नाम रखा जाय, सोमनाथ उद्योग।

नाम सुनते ही विशु बाबू बोले, "फर्स्ट क्लास ! यह उद्योग शब्द मारवाड़ी लोग खूब प्रयोग करते हैं। और तुम्हारा अपना नाम भी सुन्दर है। किसकी हिम्मत है जो पकड़ ले कि बंगाली का कारबार है ? अवसर पड़ने पर गुजराती कम्पनी कह देने से भी चल जायगा। सोमनाथ नाम गुजरातियों का बहुत पसन्द है—उनकी संवेदना को भी छूता है। सोमनाथ मन्दिर को कितनी बार विदेशियों ने आकर भूमिसात कर दिया।

मल्लिक बाबू के जाते ही विशु बाबू बोले "यह जो मुहल्ला देख रहे हो, यहाँ लाखों-करोड़ों रुपये उड़ते रहते हैं। जिनको पकड़ना आता है, वे हवा से ही रुपये बना लेते हैं। ये सब कहानियाँ नहीं हैं। आज भी

उसे किस ओर लिये जा रहा है।

अगर आज बस-स्टैंड के पास सुकुमार न मिल जाता तो यह चिन्ता उसके मन में नहीं घुमड़ती। सोमनाथ ने साफ सफेद कपड़े देख सुकुमार बोला था, 'वाह! क्या कहने! चुपके-चुपके नौकरी का इंटरव्यू देने जा रहा है?"

सुकुमार की रुखी दृष्टि एवं बतरतीब दाढ़ी देखकर सोमनाथ को दुख हो रहा था। सुकुमार बोला, "दस मिनट रुक—कपड़े बदलकर मैं भी तेरे संग इंटरव्यू दे आऊंगा।"

सोमनाथ को मूर्ति की तरह खड़ा देख सुकुमार कातर होकर बोला, 'मैं गारण्टी ले सकता हूँ कि लाट साहब, चीफ मिनिस्टर, टाटा, बिड़ला कोई भी मुझसे जेनरल नालेज में नहीं जीत सकते।"

सोमनाथ ने उसके दोनों हाथ पकड़ कहा, "विश्वास कर, मैं इंटरव्यू देने नहीं जा रहा।"

'तुम भी मुझसे झूठ बोल रहे हो।" सुकुमार अचानक चीख उठा। फिर अकस्मात रो पड़ा, नौकरी के बिना मेरा जीना मुश्किल है, भाई!"

सोमनाथ की गम्भीर मुखमुद्रा देख विशु बाबू ने गलत समझा। बोले, "क्या भई? अफसर न होकर बिजनेसमैन होना पड़ रहा है, इसलिए मन उदास है क्या?"

सोमनाथ बोला, 'नौकरी जब मुझे नहीं चाहती तब मैं क्यों नौकरी को चाहने जाऊंगा?"

विशु बाबू बोले, 'पाकिस्तान में सब खोकर जब आया था तब मेरी हालत सोचनीय थी। मुर्गीहट्टा में झाँका उठा (बोझ उठाने का काम) कई दिन मजूरी की थी। उसके बाद ज्यादा सूद पर दस रुपये उधार लेकर एक टोकरी संतरे खरीदने गया। अनाड़ी था, फलों के बक्सों पर लाल हरे निशान देखकर क्या समझता? मेरी स्थिति देख चितपुर के थोक बाजार में एक बूढ़े मुसलमान को दया आ गयी। देख-परखकर भले आदमी ने संतरों का एक बक्सा खरीद दिया। पहले दिन बढ़िया माल निकला। पाँच घण्टे सड़क पर बैठकर नेट दो रुपये लाभ कर लिया—

ohl

खुशी में अनजाने दो सन्तरे भी खा डाले थे। मूछोवाला, हट्टा कट्टा आदमी शाम को सूद-सहित रुपये उगाहने आया तो अवाक् रह गया। उसने सोचा था, कि मैं रुपये नहीं चुका पाऊंगा। दस रुपय दस आने उसे तुरन्त पकड़ा दिये, बचे एक रुपया छ आने।"

अपनी कहानी बन्द कर विशु बाबू ने कहा, "छोड़ो, वे सब बातें। अब तुम्हारे प्रथम पाठ का प्रबन्ध करता हूँ। मल्लिक बाबू को बुलवाता हूँ।"

सेनापति मल्लिक बाबू को बुलाने दौड़ा। कुछ ही देर में एक कमानी टूटा हुआ चश्मा लगाये बूढ़े मल्लिक बाबू हाजिर हुए। जकेट पहने, पैरों में विद्यासागरी चप्पलें डाले। यह महाशय इसी मुहल्ले में छपाई सम्बन्धी सब तरह के काम करते हैं।

विशु बाबू बोले, "मल्लिक महाशय, सोमनाथ के लेटरहेड और विजिटिंग कार्ड्स की व्यवस्था कर दीजिए। मेरे दफ्तर का पता और टेलीफोन नम्बर दे दीजिएगा।'

"नाम क्या होगा ?" मल्लिक बाबू ने तन्द्रिल अवस्था में पूछा।

"हां। सच ही, एक नाम तो चाहिए।" विशु बाबू बोले। 'कोई प्रिय नाम है क्या ?" उन्होंने पूछा।

प्रिय नाम एक है—कमला। पर इस जीवन की उलझनों के साथ उसको बेकार में जोड़ लेने से क्या लाभ ? उससे अच्छा है—जिम्मेदारी पूरी अपने ऊपर ही रहे—कम्पनी का नाम रखा जाय, सोमनाथ उद्योग।

नाम सुनते ही विशु बाबू बोले, "फर्स्ट क्लास ! यह उद्योग शब्द मारवाड़ी लोग खूब प्रयोग करते हैं। और तुम्हारा अपना नाम भी सुन्दर है। किसकी हिम्मत है जो पकड़ ले कि बंगाली का कारबार है ? अवसर पड़ने पर गुजराती कन्सन कह देने से भी चल जायेगा। सोमनाथ नाम गुजरातियों को बहुत पसन्द है—उनकी संवेदना को भी छूता है। सोमनाथ मन्दिर को कितनी बार विदेशियों ने आकर भूमिसात कर दिया।'

मल्लिक बाबू के जाते ही विशु बाबू बोले, "यह जो मुहल्ला देख रहे हो, यहां लाखों करोड़ों रुपये उड़ते रहते हैं। जिनको पकड़ना आता है, वे हवा से ही रुपये बना लेते हैं। ये सब कहानियां नहीं हैं। आज भी इस

कलकत्ता शहर मे हर महीने लखपति बनते है। मैंने भैया, तुमको पानी मे उतार दिया है, अब तैरना तुमको खुद ही सीखना पडेगा। इस लाइन मे चम्मच स दूध पीना नही सिखाया जाता।"

विशु बाबू के बात करत करते ही कम उम्र का एक लडका कमरे मे आया। उम्र सत्रह-अटठारह से अधिक नही होगी। विशु बाबू बोले, "अशोक अग्रवाल। इसके पिता श्रीकिशनजी मेरे मित्र हैं। राजस्थान क्लब के अन्ध वक्त है फिर भी जब से राजस्थान क्लब शील्ड हार गयी, तब से ईस्टबगाल को सपोट करते है।"

विशु बाबू न अशोक को आवाज दी, 'अशोक, कसे हो ? पिताजी की तबीयत कसी है ?'

पिताजी अच्छे हैं—विनीत भाव से अशोक ने विशु बाबू को यह बात बतायी। विशु बाबू ने पूछा, "अशोक, तुम किसके समथक हो ?"

अशोक बिना दुविधा के बोला, "राजस्थान और ईस्टबगाल।"

'राजस्थान तो समझा, पर ईस्टबगाल क्यो ? मर मित्र मि० सोमनाथ को जरा समझाकर बताओ तो।'

अशोक के उत्तर से पता चला कि ईस्टबगाल उसके पिता का जन्म-स्थान है। नारायणगज मे उनका पाट का व्यापार था, इसीलिए वे बढिया बगला जानते है। श्रीकिशनजी तो बगला उपन्यास भी पढते हैं।

उन दोनो का परिचय हो गया। अशोक लडका अच्छा है। विशु बाबू ने पूछा आज कुछ जाल मे फँसा ?"

अशोक बोला, 'बाजार खराब है कुछ भी नही हो रहा था। आखिर म चालीस फ्लैट फाइल का आडर मिला है केवल चार रुपये बचेंगे।'

अशोक के हाथ म कागज का एक बडा पकेट है। अशोक बोला "टैक्सी से जाने म तो कुछ भी नही बचेगा। सोचता हूँ, अभी बस की भीड कम है इसी बीच डेलिवरी दे आऊँ।'

फाइल का पैकेट ले अशोक तजी स चला गया। विशु बाबू बोले, "उसके पिता रुपया के पहाड पर बठे हैं। दो-तीन बडी-बडी कम्पनियो के मालिक हैं। तीन चार सौ आदमी उनके नीचे काम करते हैं। अब एक

केमिकल फैक्टरी बैठा रहे हैं । अशोक सुबह म बी कॉम पढता है। पर वाप ने लडके को दोपहर के व्यापार मे लगा दिया है । '

सोमनाथ ने सुना, अशोक को अपनी कम्पनी मे जगह नही दी श्रीकिशनजी अग्रवाल ने । लडके के हाथ म ढाई सौ रुपये देकर कमाने-खान के लिए भेजा है । श्रीकिशनजी चाहते ह कि लडका अपनी मर्जी के मुताबिक व्यापार करे । अशोक बिशु बाबू की आफिस मे ही बैठता है और बाजार मे अकेला घूम घूमकर तय करता है कि कौन सा व्यापार करेगा ।

"क्या पैसेवाले वगाली ऐसा सोच सक्ते हैं ?" विशु वाबू ने दुख प्रकट किया, "उन लोगा के लडको के शरीर, जरा धूप लग जाये ता मक्खन की तरह गल जायेंग ।"

अशोक म काम करने का वहुत उत्साह है । अपने कालेज मे ही बिजनेस करने का अवसर ढूढ लिया । वह वहा फाइल सप्लाई करेगा ।

विशु वाबू बोले "बिजनेस मे वहुत सी बातें छिपानी पडती हैं । इसलिए तुमको रोज तोते की तरह नही पढाऊँगा । अपनी गन्दगी खुद साफ करना, अपनी गडबड खुद ही ठीक करना । मैं पूछने भी नही आऊँगा ।"

परन्तु विशु वाबू का मन व्यापार मे खास नही लगता । किसी तरह चला लेते हैं । सेनापति वोलता है, ' साहव को क्या ? विवाह तो किया नही । घर का मोह मा के लिए था । दो वष हुए, वह भी चल वसीं ।" अब कमजोरी के नाम पर सिफ ईस्टबगाल ही है । ईस्टबगाल का खेल होन पर मैदान जायेंगे ही । चाहे बिजनेस जाये या रहे ।"

विशु बाबू मे एक दाप और है । शाम को विशु वाबू थाडी ड्रिंक करते हैं । उनकी भाषा म 'रात को नियमित रूप से सन्ध्या पूजा पर बैठना पडता है । ब्रदर, बुरी आदत पड गयी है । इसी एलफिन्स्टन बार मे जा बैठता हूँ । यार दोस्तो के साथ एक दो मन की बात कर लेता हूँ । वहा से भी बीच बीच मे दो चार आडर मिल जाते हैं । पिछल सप्ताह एलफिन्स्टन बार म ही सुना कि एक महाशय एक लारी बेचेंगे । सुना था, श्रीकिशनजी की एक लारी थोडे दिन पहले धनवाद के पास एक्सिडेंट मे

नष्ट हो गयी थी। एलफिन्स्टन बार मे ही श्रीकिशनजी को पोद्दार कोट मे फोन किया। उसके बाद गार्डेस कालो का नाम लेकर दोनों पार्टियो को एक चँदवा-तले ले आया और पाकेट मे पाच सौ रुपये बिना कोई पैसा लगाये आ गय। इसका नाम है भगवान का बोनस। हो सकता है, अचानक विश्वनाथ बोस की याद भगवान को आ गयी हो—सोचा, अभागे के लिए बहुत दिनो से कुछ नही किया।"

इसके बाद विशु बाबू सोमनाथ को ले बाजार म निकले थे। भीड को धकेलते सडक पर चलते चलते विशु बाबू बोले, 'दुनिया म जितने व्यापार हैं उन सबम यह आडर-सप्लाई का काम सबसे सरल है। आराम का भी कह सकते हो—हाँ यदि चल पडे तो।'

सामनाथ ने इस व्यवसाय के बारे मे जानना चाहा। विशु बाबू बोले 'दूसरे के कधे पर नाल रखकर बन्दूक चलाने की तरह यह है निशाना लग जाय तो चादी ही चाँदी है।"

इसके बाद विशु बाबू न व्याख्या की "किसी के यहाँ माल है। तुमने छान बीन करके दाम का पता लगाया। उसके बाद यदि एक खरीददार को खोज लो जो कुछ अधिक पैसे देकर वह माल लेने को राजी है, तो इतना होते ही किला फतह!'

"इससे क्या सिद्ध हुआ?' विशु बाबू ने प्रश्न किया, "बाजार म कौन सी चीज किसके पास कितनी सस्ती मिल सकती है, यह जानना होगा। फिर वह माल किसको दिया जाय इसकी खबर रखनी होगी। बस—मेरी बात पूरी हो गयी, नोट की गडडी जेब मे आ गयी!'

इस नयी दुनिया मे सोमनाथ अभी भी विशेष आश्वस्त नहीं हो पा रहा है। किसी अनजाने क्षेत्र मे लापरवाह मस्त आदमी की तरह अचानक कूदकर अपनी मनोकामना पूर्ण करने की मन स्थिति सामनाथ की नही है। हो भी कैसे? बहुत ही निरीह प्रकृति का आदमी है वह। कलकत्ते के लाखो शिक्षित मध्यवित्त परिवारो में लडको की तरह ही वह आदमी बना है—जन-अरण्य के निरीह मेमने को छोड और किसी के साथ ऐसे लोगों की तुलना नहीं हो सकती।

विशु बाबू इन सब बातो की चिन्ता नही करत। अपने ख्यालो म

डूबे वह बोले, 'बिजनेस की परिभाषा देते वक्त जिन महाशय ने कहा था—'व्यवसाय माने सस्ता खरीदना मँहगा बेचना', उनकी बहुत लाग आलोचना करते है। पर सार तत्त्व इसी बात म है।'

कई लोगो की ओर सकेत कर विशु बाबू बोले, "इस बाजार म हजारो लोग आडर-सप्लाई के कारण जी रहे हैं। ये लोग दफ्तर की आलपीन स लेकर चिडियाघर के हाथी तक जो कहोगे वही सबकुछ, सप्लाई कर देंगे। बस, मार्जिन चाहिए।"

हाथी की बात सुन शायद सामनाथ के चेहरे पर मुस्कराहट आ गयी। विशु बाबू बोले हँसते हो ? विश्वास नही होता ? चलो श्याम-नाथ बाबू के पास।'

एक छोटे दफ्तर म मुह उतारे बैठे है श्यामनाथ केडिया। माटे-नाटे-से अधेड उम्र के व्यक्ति हैं। थोडा तुतलाकर बोलते हैं। विशु बाबू को देख केडियाजी मधुर भाव से हँसे। बोले क्या बोस बाबू कुछ खोज खबर की ?"

विशु बाबू बोले, नही केडियाजी, दो-तीन सकस कम्पनियो म पूछताछ की थी पर हाथी का बाजार बहुत नरम है। सामने वर्षा का मौसम है, कोई भी अभी स्टाक म हाथी रखना नही चाहता।"

केडियाजी ने मुह बनाकर भविष्यवाणी की 'अभी लेते नही हैं—फिर अफसोस करेंगे। वही हाथी तीन हजार रुपये अधिक देकर खरीदना होगा।'

विशु बाबू बोले 'आखिर सकस कम्पनी ठहरी ! खोपडी म इतनी बुद्धि कहाँ ? आप हाथी को सोनपुर मल मे भेज दीजिए। वहाँ एक ग्रॉस (बारह दजन) हाथी बिक्री करने म भी दिक्कत नही होगी।'

सब जगह ही झंझट। हाथी के लिए वगन मिलने म ही बहुत टाइम लग जायगा।' दुख प्रकट करते हुए केडियाजी बोले।

"तब आप एक्सपोर्ट की चेष्टा कीजिए। दुनिया म और जगहा म हाथी की बडी कदर है।' विशु बाबू ने तरकीब सुझायी।

केडियाजी न इसके बारे मे भी पूछताछ की थी। वेलिंगटन नाम का एक साहब बीच बीच म जानवर खरीदने कलकत्ता आता है। उसन आत

ही केडियाजी सदर स्ट्रीट के फेयर लैंड होटल मे आदमी भेजेंगे। पर सितम्बर के पहले वेलिंगटन साहब की कलकत्ता आने की सम्भावना नही है। इसके अलावा फॉरेन मार्केट' म सिफ बेबी हाथी की कदर है। ऐरा-प्लन म भेजने मे खच कम पडता है। पाकेट स प्लेन का भाडा चुका कई टन वजन का जवान हाथी विदश भेजन का सौदा वसा ही है जैसाकि बैंड-वाला को पसे देन मे दूल्हा बेचना पडे।

अब विशु बाबू ने सामनाथ का परिचय केडिया से करवाया "यह मिस्टर बनर्जी हाई सोसाइटी मे मूव करते हैं। इनके रिश्तेदार बडी-बडी कम्पनियो मे बडे-बडे पदा पर हैं।'

अब केडियाजी बिशु बाबू को एक ओर ले गये और पता नहीं क्या बातें करने लग। फिर वापस आ केडियाजी दबी दबी हँसी हँसने लगे। सामनाथ से बोले, 'अच्छा, आप किसी कम्पनी को हाथी सेल करें। अच्छा कमीशन मिलेगा।"

"बडी बडी कम्पनिया हाथी क्यो खरीदेंगी ?" व्यापार मे अनभ्यस्त सोमनाथ ने साफ साफ कहकर सन्देह प्रकट किया।

इस लाइन म कोई सेल्समैन ऐसा प्रश्न नही करता पर केडिया न खीज प्रकट नही की। बोले, 'जान पहचान हा तो फारेन-कम्पनी के बडे साहब सभी चीजें ले लेंगे।"

केडियाजी के यहा से निकलने पर विशु बाबू बोले, "अति लोभ के कारण ही केडियाजी डूबेंगे। बिजली के सामान की दलाली कर पच्चीस-एक हजार रुपये पिछले साल कमाये थे। इस वष के आरम्भ म एक सिनेमा-कम्पनी के चक्कर म पड गये। उसने एक हाथी खरीदकर शूटिंग की थी शूटिंग के बाद फिल्म कम्पनी हाथी को बम्बई नही ले गयी। पानी के भाव हाथी मिल रहा है, सोच केडियाजी ने हाथी खरीद डाला। एक सक्स कम्पनी के दलाल के साथ इनकी जान पहचान थी, उसने लालच दिया कि खूब नके मे हाथी बेच देगा।'

उसी दलाल ने केडियाजी को डुबोया। हाथी के बाजार मे दाम बढेंगे, इसके लिए केडियाजी दो चार महीने प्रतीक्षा करने को तयार थे। पर हाथी की खुराक पर रोज पचास रुपये खर्च करने होगे, यह हिसाब उन्होंने

सक्ता।"

'मतलब ?" कुछ आश्चय से सोमनाथ ने पूछा।

'आप बगाली लडके हैं, इसलिए बता रहा हूँ। कम से कम तीन कम्पनियाँ चाहिए। नही तो कोटेशन कसे देंगे ? परचेज अफसर को आप पटा लेंगे—पर वह भी तो अपने को बचाना चाहेगा। पट जाने पर परचेज अफसर आपसे खुद ही कहेगा– तीन कम्पनियो के नाम से कोटेशन ले आइए। दो वे कोटेशन मे अधिक दाम लिखे हुए होंगे—और आपके कोटशन म दाम कम लिखा होगा।"

आडर सप्लाई के बारे म सोमनाथ बुनियादी बातें भी नही जानता, यह जानकर वृद्ध मल्लिक बाबू को आश्चय हुआ।

"सिफ अलग कम्पनी करन से तो होगा नहीं, ठिकाना भी तो अलग चाहिए ?" सोमनाथ ने पूछा।

'यह बात तो एक सौ बार ठीक है।' मल्लिक बाबू एकमत होकर बोले, "ऊटपटाँग कोई भी दो पते लिखने से हो जायगा। कलकत्ते मे पतो का अभाव है ? कई तो मेरे छापेखाने का पता ही छापने को कह देते हैं।" अनुभवी की तरह मल्लिक बाबू बोले, "आप तीन की चिन्ता कर रहे हैं ? और आपके पास के श्रीधरजी की ग्यारह कम्पनियाँ हैं। ग्यारह तरह के चालान ग्यारह प्रकार के बिल, ग्यारह प्रकार की रसीद, ग्यारह प्रकार की चिटिठया के कागज हैं। मेरे भी दो पैसे बन जाते हैं।"

सामनाथ की मुखमुद्रा देख मल्लिक बाबू बोले रुपये-पैसे की तगी हा तो अभी एक कम्पनी ही बनाइए। और उसमे कही बाधा आये तो मेरे पास आ जाइएगा, दा-चार पुरानी फर्मों के लेटरहेड ऐसे ही दे दूगा। कितनी फर्मे बनती हैं, कितनी उठ जाती हैं—मेरे पास बहुत सारे लेटर हेडा के नमूने रह जाते हैं।"

मल्लिक बाबू ने जिन श्रीधरजी की बात बतायी थी, वह सफेद चका-चक कुर्ता, धोती और चप्पल पहने सुबह के वक्त पद्रह मिनट के लिए दफ्तर आते हैं। कोई चिटठी विटठी आयी है क्या, इसकी पूछताछ करते हैं। इसके बाद पूरे चार पान एकसाथ गाल मे दबा, बाजार चले जाते हैं।

श्रीधर बाबू के पास एक पाट-टाइम खाता पत्तर करनेवाले बाबू हैं।

वह दो-तीन वार आफिस का चक्कर लगा जाते हैं। उनका नाम है आदक बावू—पतला, पका हुआ चेहरा। बहुत स लोगो का हिसाव रखते हैं। सोमनाथ ने सुना इस लाइन म आदक बावू का खूब नाम है—खासकर सल्स टैक्स की समस्याओ का समाधान करना तो उनके बायें हाथ का खेल है। लोग कहते हैं—सल्स टैक्स क विधान राय। कितना भी मरा हुआ केस क्यो न हो आदक बावू पार्टी को साफ बचा देंगे।

आदक बावू एक दिन सोमनाथ स बोले आप चलाते जाइए। खरीद-बिक्री कर पैसा लाइए—उसके बाद तो खाता बनाने को मैं हूँ ही।'

सोमनाथ चुपचाप उनकी बात सुनता जा रहा था। बिजनेस का ठिकाना नही और अभी सेलस टैक्स इनकम टक्स की चिन्ता ! शायद आदक बावू असन्तुष्ट हुए। सोमनाथ स बोले बिजनेस करने जब आये हैं तब इस खाता चीज को हेय मत समझिएगा सर। आपकी उस टेबुल पर ही तो मोहनलाल नोपानी वठता था। बिजनेस की कूटबुद्धि तो उसम खूब थी। वम्बई से प्लास्टिक का पाउडर मँगवाकर उसम नकली माल मिला, अच्छे पस कमा लिये थे। पर अचानक डेरा डण्डा छोड नोपानी को गायव क्या होना पडा ?'

उत्तर आदक बावू न स्वय ही दिया, 'खाते ठीक नही रख। सोचता था, उस भी वह खुद ही मनेज कर लगा। अब इनकम टक्स और सेलस टैक्स—दोनो ही राहु केतु की तरह लडके पर नजर लगाये वठे है।

सोमनाथ को याद आया विशु बावू नोपानी की ही बात तो बता रह थे। 'मि० वोस ने सेनापति को उस भलेमानुस के घर भी भेजा था, पर नोपानी वहाँ भी नही है। कलकत्ता छोडकर चला गया है।' सोमनाथ बोला।

पान से रँगे हुए दाँतो की पक्ति दिखाते हुए आदक बावू हँस पडे। फुसफुसाकर बोल, 'घर छोडन के सिवाय उपाय क्या है ? सत्ताईस हजार रुपया का प्रेमपत्र लिये सेलस टैक्सवाले पीछे चक्कर लगा रहे हैं। प्रेमपत्र क्या होता है समझते हैं न ?' आदक बावू ने पूछा।

बिना समझे कोई चारा है ? तपती की चिट्ठी कल ही तो पाँच बार पढी है। माथे पर सलवटें डाल आदक बावू बोले "हम लोगा की लाइन

में प्रेमपत्र का मतलब सर्टिफिकेट है। ठीक समय पर टैक्स न देने पर अलीपुर के सर्टिफिकेट अफसर सम्पत्ति की जब्ती के लिए यह सर्टिफिकेट जारी करते हैं। सर्टिफिकेट अफसर के कारिंदे रसमय हाजरा का तो आपने देखा नहीं है—साक्षात चंगेज खाँ है! रुपये न देने पर चावल की हंडिया तक ठेले पर चढ़ाकर ले जायेगा। जरा भी दया माया नहीं है।'

कोई व्यापार किये बिना ही, सर्टिफिकेट अफसर के पियादे रसमय हाजरा की काल्पनिक भयावह मूर्ति ने सोमनाथ को घबरा दिया। इतने दिनों तक सर्टिफिकेट के नाम पर बेचारा केवल परीक्षा और करेक्टर के सर्टिफिकेट ही समझता था। अलीपुर के सर्टिफिकेट अफसर का नाम उसने कभी नहीं सुना था। आदक बाबू ने फुसफुसाकर बताया "आप सोचते हैं, नोपानी कलकत्ते से चम्पत हो गया है? एकदम फालतू बात है। इसी कलकत्ते में घूम रहा है। पर अब यदि उसको नोपानी कहकर बुलायें तो पहचानेगा ही नहीं। नाम रखा है—प्रेमनिधि गुप्ता।'

खाता लिखना बन्द कर आदक बाबू बोले, 'आपको सच बता रहा हूँ, अब छिप छिपकर मुझसे मिलता है। मेरे हाथ पकड़कर कहता है, आदक बाबू, बचाइए!' रोगी के मरने के बाद खबर देने पर डाक्टर क्या करेगा, बताइए?'

आदक बाबू ने चश्मे की फाक से सोमनाथ की ओर देखा। फिर पूछा, "क्या समझे?"

"समझा, नोपानी फँस गया है।'

आदक बाबू सोमनाथ के उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हुए। बोले, "नोपानी की जाति ही व्यापारी है—वह अपनी विपत्ति अच्छी तरह सँभाल लेगा। आप क्या समझे? आपको देख देखकर सीखना होगा—ठगाकर सीखने का मतलब इस लाइन में सिर्फ गाड़ी के नीचे दबकर मरना होता है अर्थात इससे यही सीख मिलती है कि सिर्फ व्यापार की चेष्टा करने से ही नहीं होगा—उसके साथ साथ हिसाब के खाते वगैरह भी साफ स्वच्छ रखने होंगे।"

बूढ़े आदक बाबू को सोमनाथ से ममता हो रही है, यह सेनापति

दरवाजे के पास ही बैठा समझ रहा है। आदक बाबू धीरे से फुसफुसाये, "जिस लाइन मे आये हैं—दो पैसे हैं। बहुत से अब भी रातो-रात लाल हो रहे हैं। यही जो श्रीधरजी हैं—केमिकल बचकर अच्छा कमा रहे हैं। पर ग्यारह फम—इसकी टोपी उसके सिर, इस ढग से पहनाय जा रहे हैं कि आपको लगेगा कि रामकृष्ण मिशन का हिसाब है। सेल्स टैक्स अफसर नाक घुसाकर भी सूघेगा तो अगरबत्ती की खुशबू आयेगी।"

इस लाइन की प्रथम बोहनी आदक बाबू की कृपा से ही हुई। जायसवालो की स्टेशनरी दुकान के खात बही लिखते है। वहा के बज बाबू से सामनाथ का परिचय आदक बाबू ने ही करवाया था। बोले थे, "बैठे क्या रहगे ! कोशिश कीजिए।"

बज बाबू ने छोकरे सोमनाथ पर ज्यादा भरोसा नही किया। फिर भी बोले, "डुप्लिकेटिंग कागज और लिफाफो का अच्छा स्टाक है। देखिए, यदि बेच पायें। आदक बाबू जब बीच मे हैं तो आप पर अविश्वास नही करूँगा।"

सडक पर आ, सोमनाथ की आखों के आगे सौ रीम डुप्लिकेटिंग कागज और एक लाख लिफाफे बार बार तरने लगे। एक लाख लिफाफे वह कहाँ बेचेगा, यह कल्पना ही नही कर पा रहा था। सोमनाथ के दिमाग मे अजीबोगरीब ख्याल आ रहे थे। एक लाख लिफाफे यानी एक लाख चिट्ठी—यह क्या कोई मामूली बात है ?

लालबाजार के सामने बी० के० साहा की मशहूर चाय की दुकान के पासवाले रेस्तरा म बैठ, चाय पीते पीत, सोमनाथ हिसाब लगाने लगा। एक वप मे ३६५ लिफाफे लगेंग। दस वप तक यदि लगातार चिट्ठी लिखता रहे तो भी सिफ ३६५० लिफाफे लगेंगे। आल राइट, तपती को भी यदि सोमनाथ कुछ लिफाफे भेज दे और वह भी यदि रोज एक चिटठी लिखे तब आगामी दस वर्षों मे ३६५० लिफाफे और काम म आ जायेंगे। अर्थात कुल मिलाकर सात हजार तीन सौ लिफाफे। यह गणित नशे की तरह सोमनाथ के सिर पर चढकर बोल रही थी। अत एक सौ वप मे भी एक लाख लिफाफे खच नही हो पायेंगे—कुल ७३ हजार लिफाफे ही लगेंगे।

सोमनाथ ने चाय का एक घूट और पिया । नही, हिसाब ठीक नही लग रहा है—न जाने कहाँ भूल हो रही है । एक सौ वर्ष मे कम-से कम पच्चीस लीप इयर' (२६ फरवरी) आयेंगे—इसका मतलब पच्चीस दिन और बढ़ेंगे जिसका मतलब और पचास चिट्ठियाँ ।

हिसाब के बोझ से जब दिमाग खूब भारी हो रहा था तभी अचानक सोमनाथ न बाहर आकर देखा । एक लडका कोट-पैंट पहन लालबाजार पुलिस के हेडक्वाटर के गेट से निकलकर बाहर आ रहा था । कालेज-सहपाठिनी श्रीमयी का नवविवाहित पति ।

जैसे ही भद्र पुरुष बी० के० साहा की दुकान के पास खडी एक गाडी के सामने रुके, वैसे ही सोमनाथ दुकान से बाहर आया, "मि० चटर्जी हैं न आप ? मुझे पहचान रहे हैं ?"

अशोक चटर्जी गाडी मे बैठने जा रहा था । सोमनाथ की आवाज सुन ठहर गया । सोमनाथ की ओर मुड प्रसन्न मुद्रा म अशोक चटर्जी बोला, "अच्छी तरह पहचान रहा हूँ । आप ही तो मि० बनर्जी हैं ? उस दिन गडियाहाट की मोड पर श्रीमयी ने परिचय कराया था ।'

लालबाजार के सामने गाडी खडी नही करने देते । इसलिए अशोक चटर्जी ने सोमनाथ को गाडी मे बैठा लिया ।

मिशन रो मे ही उसका दफ्तर है । वहाँ एक अच्छे पद पर अशोक चटर्जी है । अच्छा पद न होने पर, श्रीमयी जैसी चतुर लडकी, असमय गजे और काले रग के मोटे लडके से क्यो विवाह करती ? कालेज के दिना मे श्रीमयी जिसके साथ घूमती फिरती थी, वह समीर सचमुच ही सुदशन था । तपती से सुना था—श्रीमयी का कहना था कि लडके सुदर न हो तो बात करने का मन नही करता । सेब की तरह गुलाबी गोरे, स्माट और लम्बे लडके को छोड श्रीमयी किसी भी कीमत पर विवाह नहीं करेगी । सिनेमा के हीरो की तरह चेहरा था समीर का पर वह ए० जी० बेंगल मे लोअर डिवीजन क्लर्क बना है ।

अशोक चटर्जी की गाडी मे बठ श्रीमयी के भूतपूव मित्रा की याद करना सोमनाथ के लिए उचित नही है । वह बोला, ' उस दिन आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा ।'

गाडी चलाते चलाते अशोक बोला, "एक दिन घर पर आना होगा। श्रीमयी बहुत प्रसन्न होगी, पर अकेले आने से नही होगा—गृहिणी को भी लाना होगा।'

सामनाथ हँस पड़ा। अशोक अकचका गया। बेवकूफो की तरह हसकर बोला 'शायद यह काय अभी तक सम्पन्न नही हुआ?'

सोमनाथ ने अब पूछा अच्छा आपको आफिस म स्टेशनरी कौन खरीदता है?"

'मैं नही खरीदता। पर जो खरीदते हैं वह मेरे खास दोस्त हैं।" अशोक बोला।

'जरा उनके साथ परिचय करवा देंगे। पाट टाइम बिजनेस करता हूँ। मि० चटर्जी आप जानते तो है ही कि बिजनेस छोड बगालियो की अब मुक्ति नही है।'

आपन ठीक ही कहा।" अशोक न प्रोत्साहन दिया।

लडका सचमुच ही भला है। सोमनाथ को तुरन्त मिस्टर गागुली के पास ले गया। बोला 'मेरे विशेष परिचित हैं। यदि सम्भव हो तो इनकी थोडी सहायता कीजिएगा।'

भाग्य अच्छा था। मि० गागुली ने कागज का नमूना देखा। शीघ्र ही पच्चीस रीम की आवश्यकता बतायी। वह रेट जानना चाहते थे। मल्लिक बाबू के छापे हुए पैड को निकाल सोमनाथ ने एक कोटेशन वही लिख दिया।

मि० गागुली ने कमचारी को बुलाकर कहा, 'देखिए तो पिछली बार किस दाम म कागज खरीदे थे।' उन महाशय ने एक फाइल लाकर मि० गागुली के सामने रख दी। ओट करके दाम देख, गागुली बोले 'आपके रेट ठीक ही हैं। हम लोग नकद रुपये देकर खरीद लेंगे।"

लिफाफा के लिए थोडा समय लगेगा। नमूना और कोटेशन छोड जाने के लिए कहा। स्टाक की स्थिति देखनी होगी।

पाँच बजे तक व्यापार खत्म हो गया। सब हगामा मिटा। खर्चा बाद दे दस-दस के तीन करारे नोट 'सोमनाथ उद्योग' के मालिक सोमनाथ बनर्जी की पाकेट मे हाजिर हो गये। जीवन का प्रथम व्यापार।

प्रथम प्रेम की तरह ही अपूर्व अनुभूति से भर उठा। कलकत्ता शहर का मलिन रूप मिट गया और अचानक पूरा शहर सोमनाथ की आँखों के सामने दुग्ध धवल हो गया। व्यापार में रस है, यह सोमनाथ अब अनुभव कर रहा था। उत्तेजना न दबा पाने के कारण सोमनाथ ने मनीबैग एक बार फिर बाहर निकाला और रुपये गिने।

दफ्तर में वापस आ सोमनाथ ने बिशु बाबू को खोजा। वह नहीं हैं—किसी काम से कलकत्ते से बाहर गये हैं। आदक बाबू के आते ही सोमनाथ मिठाई मँगवा रहा था कि आदक बाबू 'हूँ हूँ' करने लगे, "इसीलिए बगालियों का बिजनेस नहीं होता। यह तो आपकी अपनी पहली पूँजी है। अभी ही खा पीकर उड़ा देने से कैसे चलेगा? पहले दसेक हजार रुपये हों—उसके बाद आपसे जोर-जबदस्ती मिठाई खाऊँगा।"

सोमनाथ खुश था। बोला "देखिएगा। यदि लिफाफा का कोटेशन भी जँच जाय, तो मुझे कौन पा सकेगा?'

बृज बाबू जायसवाल के रुपये भी चुका दिये हैं, सोमनाथ ने यह आदक बाबू को बताया। "वे क्या बोले?" आदक बाबू ने जानना चाहा।

"खूब खुश हुए। कहाँ किस दाम में बेचा, सब बताया उनको।"

'एँ!' आतंकित हो उठे आदक बाबू, "यह क्या किया महाशय, अपनी पार्टी का नाम बृज बाबू को बता दिया?"

इसमें ऐसा क्या महाभारत अशुद्ध हो गया, यह सोमनाथ नहीं समझ पाया। आदक बाबू काफी झुंझलाये और दुखी हो बोले, "आप बड़े घर के लड़के हैं, बिजनेस करने आये हैं, और मैं गरीब आदमी खाते लिखकर रोटी खाता हूँ—मेरे मुँह से ये सब बातें अच्छी नहीं लगतीं। तो भी बताता हूँ—इस लाइन में कभी भी अपने पत्ते दूसरे को मत दिखाना। किसको सप्लाई कर रहे हैं, यह भूलकर भी किसी को मत बताइएगा। हम लोग जहाँ घूम फिर रहे हैं—यह बाजार भी है और जंगल भी है।'

इसी बीच तीस रुपयों की कमाई हो गयी सुनकर कमला भाभी बहुत खुश हुई। छिपकर इन रुपयों से भाभी को मिठाई खिलाना चाहता

था सोमनाथ। भाभी राजी नही हुई। ज्यादा पीछे पडने पर बोली, "इसके बदले गाडी निकाल, मुझे कबीर रोड पर मामाजी के घर थोडा भेंट-मुलाकात करवा लाओ।" भैया सेल्फ ड्राइव करते हैं। बीच-बीच मे गाडी को चालू रखने के लिए भाभी को लिखा था। गाडी चलाना भाभी और सोमनाथ दोनो ने एक साथ ही शुरू किया था। कमला भाभी ने दो-चार दिन चलाकर ही गाडी चलान की हिम्मत छोड दी। पर सोमनाथ ने ड्राइविंग लाइसेंस बी० ए० मे पढते समय ही बनवा लिया था।

भाभी को उस दिन मामाजी के घर पहुँचाकर फिर एक घण्टा बाद *वापस भी ले आया सोमनाथ।* रास्ते मे लेक के पास गाडी रोककर सोमनाथ ने जबरदस्ती भाभी को कोका कोला पिलाया, कोई प्रतिवाद नही सुना। देवर की पहली कमाई के पैसो से कोका-कोला पीने मे भाभी को खूब आनन्द आया। उनकी इच्छा थी, बाबूजी के लिए थोडी मिठाई खरीदी जाय। पर सोमनाथ यह स्थिति घर पर किसी को नही बताना चाहता। भाभी ने भी सोचकर जोर नही दिया कि कही इस बिजनेस मे सोमनाथ असफल हो जाये और यदि यह बात सब जान जायें तो बेचारे का आत्मविश्वास सवदा के लिए नष्ट हो जायेगा। उसके आत्मसम्मान को आघात लगे, ऐसा कुछ भी करने को कमला भाभी प्रस्तुत नही थी।

अन्त मे एक तरकीब निकली। सोमनाथ के पसे से बाबूजी के लिए सौ ग्राम छेना खरीदा जायेगा। पर पैसे किसने दिये, यह बाबूजी को नही बताया जायेगा। इसम सोमनाथ को कोई आपत्ति न थी।

लडके लडकिया के जोडो को लेक पर घूमते देख कमला भाभी की इच्छा सोमनाथ को छेडने की हुई। कमला भाभी की बहुत इच्छा है कि कम उम्र मे ही सोमनाथ का ब्याह कर दें पर विवाह का प्रसग उठाने की हिम्मत नही हुई। जैसा दिनमान है, पता नहीं विधाता ने लडको के भाग्य मे क्या लिख रखा है!

पाइप से कोका कोला पीते पीते कमला भाभी बोली, "मेरा मन कह रहा है, व्यापार मे तुम्हारा नाम खूब चमकेगा।"

"आपके मुह मे घी शक्कर भाभी!" सोमनाथ गदगद होकर बोला।

भाभी बोली, "अच्छा देवर राजा, अगर तुम बहुत बडे बिजनेसमैन

हो गये तो क्या करोगे ?"

माथा खुजाता सोमनाथ बोला, "आपको कम्पनी का चेयरमैन बनाऊँगा और बेचारे सुकुमार का एक बड़ी पोस्ट दूंगा। सुकुमार ने अक्ल लगाकर मेरे लिए एक इटरव्यू देने का अवसर जुटाया था, मैं तो उसके लिए कुछ भी नही कर पाया।'

कमला भाभी बोली, "सुना है, उन लोगों को बहुत कष्ट है। उससे मिलो तो कहना, नौकरी के एप्लिकेशन के लिए रुपये पैसे की आवश्यकता हो तो मुझे कहे। तुम्हारे भैया स हर महीने तीस रुपये जेब-खर्च के लिए वसूलती हूँ।"

आदक बाबू की बात गलत नही थी, इसका प्रमाण सामनाथ को तीन दिनो मे ही मिल गया। अशोक चटर्जी के दफ्तरवाले आडर के लिए वह प्राय निश्चित था। पर मि० गागुली ने गम्भीरता के साथ दुख प्रकट कर कहा, "वह नही हुआ। आपके दाम बहुत ज्यादा हैं।"

मुँह लटकाये लौटते वक्त मि० गागुली के दफ्तर के उसी क्लर्क से भेंट हो गयी। शिक्षित बेकार को हताश हो लौटते देख भद्र पुरुष को दया आयी। उन्होंने कह ही दिया, 'जायसवाल की दुकान से लिफाफे खरीद यहाँ सप्लाई करते थे? वे ही तो आपसे सस्ते कोटेशन दे गये। बोले, सीधे उन लोगो से लेने पर हमे लाभ रहेगा।"

सोमनाथ दग रह गया। पूछने पर बृज बाबू मानो आकाश से गिर पड़े। साफ नकार गये। ऊपर से बोले, 'व्यापार मे हम सब भाई भाई हैं, मैं आपकी पीठ मे छुरा कैसे भोकता ?"

उनका एक कमचारी कुण्डु बाबू उन लोगो की बातचीत सुन रहा था। बज बाबू के चले जाने के बाद बोला, "उन्होने ही तो आदमी भेजा था। और क्यो नही भेजेंगे ? यही तो व्यापार का नियम है। आपको यदि बज बाबू से सस्ते लिफाफे कही मिल जाते तो आप छोड देते क्या ?"

सब सुन आदक बाबू बोले, 'यह तो मैं जानता ही था। आप यदि जायसवाल को सबक सिखाना चाहते हैं तो मि० गागुली को पटाइए। बज बाबू को अगर यह दिखा दें कि आपके बीच मे रहने पर किसी भी

तरह जायसवाल को आडर नही मिलेगा, तो वह आपके तलुवे चाटेगा।"

"उनका अपमान तो नही होगा ?" सोमनाथ ने पूछा।

'अरे छोडिए महाशय ! मान हो तभी तो अपमान होगा ? यह तो वाजार है, एक दूसरे को पटखनी देनी और लेनी दोना पडती है, यह जानकर ही ये बाजार मे आय हैं।"

खूब गुस्सा आ रहा है सोमनाथ को। बज बाबू को सबक सिखाने की बडी इच्छा हो रही है। पर आदक बाबू जैसा बता रहे हैं, वैसा नही हो सकता। मि० गागुली उसकी बात क्यो मानेंगे ? फिर जहा सस्ता मिले, वही से खरीदने के लिए ही तो फम ने उन्ह रखा है।

आदक बाबू ने यह सब नही माना। बाले, "इस लाइन मे बहुत दिना से हूँ। परचेज अफसरो की बातें कान मे पडती ही रहती हैं। उनकी इच्छा हो तो जो चाहे कर सकते हैं।

घर लौटकर बिस्तरे पर अधलेटी मुद्रा मे बज बाबू को हराने की तरकीबें सोमनाथ के माथे मे घूम रही हैं। भाभी से इस विषय मे पूछने से लाभ नही हुआ। सोमनाथ जानना चाह रहा था कि प्रतिहिंसा की भावना उचित है या अनुचित ? भाभी ने हमेशा की तरह मा की बात उठायी। मा कहा करती थी, "कुत्ता तुमको काटने आये तो उसे भगा दोगे, पर उसे वापस काटने तो न जाओगे !"

तो भी सोमनाथ का मन शान्त नही हो पा रहा था।

देवर व्यापार को लेकर माथा खपा रहा है, यह देख कमला भाभी को सन्तोष हुआ।

सोमनाथ दूसरे दिन अशोक चटर्जी के दफ्तर गया था। उसने सोचा कि एक बार श्रीमयी को फोन किया जाय, नवविवाहिता पत्नी का कोई अनुरोध अशोक चटर्जी नही टाल पायेगा। फिर ऐसा करने की इच्छा नही रही। पर जहाँ साझ होती है वही शेर का डर रहता है। दफ्तर के दरवाजे पर ही अशोक मिल गया। उदार मन का अच्छा लडका ढूढा है श्रीमयी ने। सोमनाथ से नमस्कार विनिमय हुआ।

अशोक चटर्जी ने आज भी सौजन्य प्रदर्शित किया—कामकाज की

खबर पूछी। सुनकर खुश हुआ कि आडर मिला पर सोमनाथ लिफाफे-वाली बात नही बता सका।

आदक बाबू ने फिर पूछा "जायसवाल को कुछ सबक दी ?"

सोमनाथ न हार स्वीकार कर ली। बोला "मि० गागुली के सामने अपने को नहीं गिरा पाया।"

आदक बाबू बोले ' इस लाइन मे कुछ करना चाहते हैं तो परचेज अफसरो से मेल मिलाप दोस्ती कीजिए।"

चार नम्बर टेबुल पर उमानाथ जोशी मन मारे बैठा है। लडका किसी भी काम मे जम नही पा रहा। राठी नाम के एक सज्जन के यहाँ काम करता था। थोडी अनबन हो गयी तो नौकरी छोड व्यापार शुरू किया, पर यहाँ भी कोई खास काम हाथ नही आया।

जोशी जिस लाइन पर काम करता है उसी पर दो नम्बर टेबुल का सुधाकर शर्मा करता है जबकि सुधाकर शर्मा को दम लेने की फुसत नही। एक पार्ट-टाइम टाइपिस्ट है, पर वह काम से बोखलाया रहता है। सुधाकर एक फुल टाइम टाइपिस्ट रखने की सोच रहे हैं। सुधाकर बाबू के नाम बहुत-से फोन आते हैं। फकीर सेनापति बार बार हाँके लगाता है— साहेब, आपका फोन।'

सुधाकर शर्मा की सफलता का रहस्य सोमनाथ की समझ मे नही आता। जोशी को काम धन्धा नही है—इसलिए सोमनाथ से अक्सर बातें करता है। उसका कहना है, "शर्माजी जादू जानते हैं। परचेज अफसर को मन्त्र पढा वशीभूत कर लेते हैं।'

शर्माजी का काम आदक बाबू नहीं करते, वह कहते हैं, "परचेज अफसर यदि कोबरा साप है—तो शर्माजी सँपेरा हैं। चाहे जितना भी फन उठाये अफसर को वश म करके अपनी टोकरी मे भर लेते हैं शर्माजी।

सुधाकरजी क्या व्यवसाय करते हैं, सोमनाथ यह नही समझ पाता। वह गुड से लेकर साबुन टायलेट पेपर काच के गिलास, सबकुछ सप्लाई करते है।

जोशी बोला, "सुधाकरजी की लक्ष्मी है कोननगरका एककारखाना। वहा ये सज्जन साढे आठ सौ पीस साबुन प्रत्येक महीने सप्लाई करते थे। इनकी पत्नी के साथ वहा के मैनेजर वाबू से दूर की रिश्तेदारी है। पहले प्रत्येक वर्कर को एक साबुन प्रतिमास हाथ धोने को मिलता था। उसके बाद सुधाकर ने युनियन के पण्डो से मिलकर उन्ह सिखा दिया। उन लोगो ने हर महीने दो साबुन का दावा किया—कम्पनी को राजी होना पडा। सुधाकरजी महीने मे सत्रह सौ साबुन सप्लाई करने लगे। उनका काम इतना बढ गया है, कि अपनी अलग आफिस करने की सोच रहे हैं।"

सोमनाथ बीच-बीच मे सपने देखता है—वह भी सुधाकर शर्मा की तरह काम बढाता जा रहा है। पर जो मत्र सुधाकरजी जानते हैं, उस वह जान ही नही पाया। इधर से-उधर वह भी सारे दिन दफ्तरो के चक्कर लगता है, पर कुछ भी नही कर पा रहा है।

सुधाकर शर्मा किसी प्रश्न का जवाब ही नही देते। सिफ हँस देते है। और शाम होते ही आफिस से चले जाते हैं। फकीर सेनापति बता रहा था, 'शर्माजी कभी कभी काफी रात को लौटकर आत हैं। उस वक्त उन्ह थोडी अस्तव्यस्त स्थिति म देखा जा सकता है। सेनापति गुस्सा नही हो पाता क्याकि सुधाकर शर्मा उसे हर महीने अलग से पच्चीस रुपय देते हैं। हाँ उसके बदले म सेनापति को एक सौ रुपये की रसीद पर सही करनी पडती है। पर सेनापति को इसम कोई तक्लीफ नही। कुछ रुपये तो मिलते है।

सुधाकर शर्मा के कपडे खूब साफ सुथरे रहते हैं। बुशशर्ट और टेरेलीन की पैंट पहनते हैं। दफ्तर की अलमारी मे एक कोट और टाई भी है। किसी बडी पार्टी से अप्वायटमेट होने पर टाई लगाकर कोट चढा लेते हैं। सेनापति ब्रश से कोट झाड देता है।

पासवाले दफ्तर के कई लोगो स सोमनाथ का परिचय हुआ। इनम से दो एक के तो अपने गोदाम भी ह। बैंक से रुपये उधार लेकर ये लोग

बहुत-सी चीजें गोदाम मे रख लेते हैं। दूसरा के कन्धे पर रखकर बन्दूक चलाने की तरह—ये लोग व्यवसाय करते हैं। कलकत्ते के अलावा उडीसा और असम आदि दूर-दूर जगहों म भी इनकी खरीद-बिक्री चलती है।

इस कमरे म हीरालाल साहा नाम के एक बगाली सज्जन टिमटिम करते जलत रहते हैं। हीरालाल साहा रेलवे दफ्तर मे नौकरी करत थे। एक बार साइड बिजनेस के लिए कुछ पुराने रेलवे स्लीपर नीलाम मे खरीद लिय थे। उससे पाँच हजार रुपये का लाभ हुआ था। उसी समय श्यामबाजार म एक पुराना मकान टूट रहा था। उस मकान के इट, लक्डी, खिडकियाँ, दरवाजे आदि सब हीरालाल साहा ने खरीद लिये। दफ्तर के सहकर्मी पीछे पड गय, हीरालाल बाबू ने नौकरी छोड दी।

हीरालाल बाबू कहते हैं, "गाडेस मगला चण्डी की काइन्डनेस से जी रहा हूँ। जानते हैं मि० बैनर्जी बगालिया के सबसे बडे दुश्मन बगाली ही हैं। मुझे देखिए नौकरी भी करता था और व्यापार से भी चार पैसे कमा लेता था—यह मेरे बगाली मित्रो को नही सुहाया। और इस व्यापारी मुहल्ले मे दखिए—गुजराती गुजराती को, सिन्धी सिन्धी को चाहता है। मारवाडिया की बात ही छोड दीजिए—जिस दफ्तर मे मारवाडी है वहा परचेज हो सेलिग एजेन्सी हो, सबमे जाति भाई का जमाई की तरह आदर होता है।"

हीरालाल बाबू सबकी खबर रखते हैं। बोले, "आपने भी तो जायसवाल के काम मे धोखा खाया है? आपको दो पस देने म उनकी जान निकल गयी जबकि मैं जानता हूँ कि अपने गाव के तीन चार लडका को वे छ महीने की क्रेडिट पर माल देते हैं।"

हीरालाल बाबू का समय अभी बढिया चल रहा है। बोले, "बहू-बाजार के पास गाडेस मगला चण्डी हैं। उनको बीच-बीच मे अपना दुख बता आइएगा—माँ काई कष्ट नही रहने देंगी। मा की करुणा से एक के बाद एक दो साहबो के मकानो की टालिया काडियो के भाव खरीदी। झूठ क्या बोलू दो महीने मे ही चार पैसे आ गये।"

हीरालाल बाबू बोले, 'आजकल पूरे दिन इधर उधर घूमता रहता हूँ। एक भी तोडने लायक मकान मिल जाये ता अच्छा काम बन जाये।

इसमे कुछ अडगा भी नही है। सोदा पक्का कर अखबार मे एक विज्ञापन देता हूँ—'साहब का मकान तोडा जा रहा है। अति मूल्यवान लकडी और विनिमियन टाइल्स बिकेंगी, अमुक पते पर सम्पर्क करें। एक बाड बनवा रखा है। उस पर लिखा रहता है—'सेल ! सेल ! सेल ! साहब का मकान तोडा जा रहा है। भीतर पूछिए। मेरा एक हिन्दुस्तानी दरवान है, वह टूटे मकान मे ही बठा रहता है—वही इट, पत्थर, लकडी, दरवाजा, खिडकी यहाँ तक कि मेम-साहबा के व्यवहार किये हुए पुराने कमोड तक बिक जाते हैं।"

हीरालाल बोले, ' साहन के मकान की कोई खबर हो तो बताइएगा। आपको 'सूटेबल' कमीशन दूगा।"

टूट-फूटे मकान की बात पर सोमनाथ बोला, "ठहरिए, जरा सोचता हूँ।"

सोमनाथ कल सोच रहा था कि तपती के घर जाये या नही। चलते-चलते एलगिन रोड पर एक पुराने मकान की ओर सोमनाथ की दृष्टि गयी थी। वहाँ लगता है, कोई नयी मल्टी स्टोरीड बिल्डिंग बनेगी—क्योंकि कुली लारी से एक नया साइनबोड उतार रहे थे। सामनाथ ने हीरालाल बाबू को पता दे दिया।

' देखना माँ चण्डी !" कह हीरालाल बाबू तुरन्त भागे और पूरे दिन गायब रहे।

दो दिन बाद सुबह हीरालाल बाबू की खबर मिली। बहुत खुश लग रहे थे। सोमनाथ की पीठ पर हाथ रखकर बोले, "गाडेस चण्डी की कृपा के बिना यह सुअवसर नही आता, मि० बनर्जी ! ठीक देखा आपने—बिल्कुल साहब का मकान है। सिर से पैर तक बर्मा टीक से सजा हुआ। आज ही एडवान्स दे आया।"

हीरालाल बाबू बोले, "आप ये डेढ सौ रुपये लीजिए। यदि अच्छा लाभ हुआ तो और भी दो सौ रुपये दूगा।"

सोमनाथ रुपये नही लेना चाहता था, पर हीरालाल बाबू भी पक्के थे। बोले, "सूचना देना भी तो व्यापार है महाराज ! गाडेस चण्डी क्या सोचेंगी यदि आपका प्राप्य आपको न दूगा ? और भी खबर लाइएगा।

पर होना चाहिए असली साहबी मकान। बंगाली मकान तोड़ने में मजा नहीं है, महाशय! पानी डाल डालकर मकान का सर्वनाश कर देते हैं।"

असली साहबी मकान किसे कहते हैं, यह जानने का मन सोमनाथ को हुआ। हीरालाल बाबू बोले, "जो मकान साहब लोगों के लिए बनाये गये थे।" फिर दाँत दिखाकर हँसे। बोले, "साहबी मकान कलकत्ते में एक भी नहीं बचेगा। हम लोग सब तोड़कर बेच देंगे। जमीन के दाम बहुत बढ़ गये हैं। एक साहबी मकान में ज्यादा से ज्यादा दो साहब किराये पर रहते थे। अब उसी जगह पर तीस चालीस फ्लैट बनेंगे—बहुत किराया उठेगा।"

हीरालाल बाबू बोले, "तो नजर रखना मत भूलिएगा महाशय! इस एलगिन रोड से ही मैं पिछले महीने दो बार गुजरा था, और यह मकान हाथ से निकला जा रहा था।"

रुपये पाकेट में रख सोमनाथ को इस दोपहरी में, उस साँवली लड़की की याद आ रही है। व्यवसाय के समय यहाँ कोई दूसरी बातें नहीं सोचता। पर सोमनाथ क्या सचमुच ही एक दिन इन्हीं जैसा हो पायेगा? वह आशा निराशा के झूले पर झूल रहा है। शाम को एक मीटिंग है मि० मौजी के साथ। उसके पहले बहुत-सा समय है।

इसी समय दफ्तर का फोन बज उठा। सेनापति ने अपने तरीके से फोन उठाया। फिर सोमनाथ को अवाक् करता बोला "बाबू, आपका फोन!" सोमनाथ को कौन फोन कर सकता है?

फोन के उस तरफ तपती है यह सोमनाथ सोच भी नहीं सकता था।

कालेज स्ट्रीट से तपती ने फोन किया है आज अचानक रिसर्च के काम से छुट्टी मिल गयी।

तपती को अभी ही बुला लेना उचित है, यह सोमनाथ समझ रहा है। तपती अवश्य ही कुछ बताना चाहती है, नहीं तो वह फोन क्यों करती?

फोन पर सोमनाथ बोला, "यदि समय हो तो आ सकती हो।"

ढूढते ढूढते आध घण्टे मे तपती कानोडिया कोट के बहत्तर नम्बर कमरे मे पहुँच गयी। सोमनाथ उसे कही और भी आने को कह सकता था। और तो और, मेट्रो सिनेमा के नीचे खडे रहने मे भी उसे सुविधा होती पर जानबूझकर ही सोमनाथ ने उसे यहा बुलाया था। तपती को धोखा देने से क्या फायदा? वह अपनी आखो से ही सोमनाथ की स्थिति देख ले।

दूर से तपती को पास आत देख बहुत दिनो बाद सोमनाथ उच्छवसित हो उठा।

तपती के दाहिने हाथ मे कई किताबें है। मिल की एक छपी हुई साडी सफेद ब्लाउज के साथ पहने हे, तपती। उसके श्यामल वण को अचानक जैसे किसी उज्वलता ने इन दिना असामान्य रूप प्रदान कर दिया है। उसके माथे के सामने के बाल उसके मुह पर आ रहे हैं। आज तपती सचमुच ही विदुषी सुन्दरी लग रही है।

पहले तपती चश्मा नही लगाती थी। एक काले फ्रेम का नय डिजाइन का चश्मा उसने लगा रखा है। सचमुच ही चश्मे ने उसके चेहरे का भाव बदल दिया है। वह अत्यन्त गम्भीर लग रही है। उसकी उम्र बढ रही है। अब वह कालेज की छोटी लडकी नही, यह समझ मे आ रहा है।

लगता है सोमनाथ कुछ अधिक देर तक तपती के चेहरे की ओर देखता रहा। कमरे मे सेनापति के सिवा और कोई नही है। तपती को इस वातावरण मे अच्छा महसूस नही हो रहा है।

अब सोमनाथ ने निस्तब्धता तोडी। अन्तरग स्वर मे बोला, "तुम्हे पहचान ही नही पाया। कब चश्मा लिया?"

तपती उसकी ओर थोडी देर देखती रही, फिर पुराने दिनो की तरह सहज भाव से बोली, "दो महीने हुए। बहुत सिरदर्द करता था। डाक्टर देखते ही बोला काफी पावर हो गया है।'

"बहुत पढ रही हो न?" सोमनाथ ने स्नेहिल स्वर मे पूछा।

"जो कम्पिटीशन है उसमे पढे बिना उपाय कहाँ?" तपती की बाता मे एक किशोरी बालिका सा विस्मय है, जो सोमनाथ को मुग्ध किये लेता है। उम्र के साथ-साथ बहुत सी लडकिया के जीवन से विस्मय चला

जाता है । तपती ने अभी भी यह ऐश्वय नही खोया ।

सोमनाथ और तपती म अभी बहुत दूरी है । तब भी इस क्षण यह इस अप्रिय सत्य को स्वीकार नही करना चाहता । उसने सोचा, अभी भी वे दानो सह शिक्षावाले कालेज मे छात्र छात्रा हैं । सोमनाथ ने प्रेम भरी नजर से फिर एक बार तपती को निहारा, उसकी तीखी नाक, बडी-बडी आँखें, लम्बी गदन । फिर किसी तरह बोला, ' चश्मा तुमको खूब सोहता है, तपती !"

तपती और लडकियो की तरह नखरेवाली नही है । मृदु हँसी हँसकर बिना प्रतिवाद किये, उसने अभिनन्दन ग्रहण कर लिया । सोमनाथ की ओर देखा तपती न । पलको को कई बार द्रुत गति से बन्द कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, "थैंक्स !" फिर अनजाने ही हाथ से पेन को खोलते-बन्द करते हुए उसने कहा, "फ्रेम बनवाते समय मुझे डर लग रहा था तुम्हें पसन्द आयेगा कि नही ।"

तो आज भी तपती सोमनाथ की पसन्द नापसन्द को महत्त्व देती है— अपना चश्मा खरीदते समय भी सोमनाथ याद आता है ।

"तपती, तुम्हारे लिए चाय मँगवाऊँ ?" सोमनाथ ने पूछा ।

तपती थोडी परेशान हुई । बोली, 'क्या जरूरत है ?"

"यहाँ हम लोग कैसी चाय पीते हैं, देखोगी नही ?" सोमनाथ ने पूछा ।

तपती तुरन्त राजी हो गयी ।

चाय खतम कर सोमनाथ बोला, "चलो, घूमने चलें ।'

"वाह रे ! तुम्हारे काम में हज नही होगा ?" तपती ने पूछा । उसका मन बहुत साफ है । बगाल के बाहर बचपन बिताया है सो कलकत्ते की बहुत सी क्षुद्रताएँ और सकीर्णताएँ उसे छू नही पायी हैं ।

गम्भीर सोमनाथ ने उसकी ओर देख कहा, ' काम रहने पर तो असुविधा होती । अभी तो मुझे कोई काम नही है ।"

तपती की एक अच्छी आदत है, कभी बाल की खाल नही निकालती । बेवजह कौतूहल नही दर्शाती । जो जान लेती है उसी मे सन्तुष्ट रहती

है। उसका मानसिक स्वास्थ्य इस देश की बहुत-सी लड़कियों का आदर्श हो सकता है, यह सोमनाथ भलीभाँति जानता है।

तपती बोली, "तब चलो।"

एस्प्लेनेड से बस पकड़ व नदी किनारे, चाँदपाल घाट के सामने उतरे।

"इतनी किताबें तुम्हें कष्ट दे रही हैं, मुझे थोड़ी देर भार वहन करने दो।" सोमनाथ ने कुछ किताबें लेने को तपती की ओर हाथ बढ़ाया।

तपती ने और भी कसकर किताबें जकड़ लीं। गम्भीर होने के प्रयास में वह हँस पड़ी, हँसी को दबाकर बोली, 'आज तुमसे झगड़ा करने आयी हूँ, सोम!"

सोमनाथ को ऐसी आशंका हुई थी। फिर भी साहस जुटाकर बोला, "किताबें देने के बाद भी झगड़ा किया जा सकता है, तपती!"

तपती बोली, "भारी झगड़ा करना है। उसके बदराये साँवले चेहरे पर फिर हँसी की धूप झाँकने लगी।

स्ट्राड राड से वे धीरे धीरे दक्षिण की ओर चल रहे हैं। दोपहर में इस ओर उतनी भीड़ नहीं रहती। बीच बीच में कुछ दूरी पर कालेज की किताब-कापियाँ लिये दो एक छात्र छात्राओं के जोड़े कभी-कभी नजर आ जाते हैं। सड़क के उस तरफ इडेन-गार्डन है। पश्चिम में गंगा की ओर दोनों ही बीच-बीच में देख लेते हैं।

अब तपती ने चुप्पी तोड़ी। पूछा, "तुम्हारा कोई पता नहीं रहता, क्यों?"

सोमनाथ सोच नहीं पा रहा था कि क्या जवाब दे। बिना उत्तर दिये ही वह चलता रहा।

तपती बोली "जिसे खबर चाहिए उसे अगर खबर नहीं मिले, तो मन की क्या हालत होगी?"

"खूब कष्ट होता है। यही ना?" सोमनाथ को परेशानी हो रही है।

'तुम तो कवि हो। तुम्हीं जवाब दो।" तपती ने सरलता से जिम्मेवारी सोमनाथ पर डाल दी।

कवि! दुनिया में सिर्फ तपती ही अब भी उसको कवि मानती है,

वर्ना बेकार सोमनाथ का कविता स कोई सम्बन्ध नही रह गया है।

आज नदी के सुनसान किनारे खडे सोमनाथ को अतीत की बहुत सारी भूली बिसरी बातें याद आ रही है।

हवा मे उडते बालो को सँभालकर सोमनाथ बोला, "बहुत दिन पहले जब पहली बार हम यहा आये थे, उस दिन की तुम्हे याद है ?'

तपती हँसी। बोली, "दिन था—पहला आषाढ।"

तुम्हे दिन भी याद है तपती ?" सोमनाथ ने आश्चय से पूछा।

' इतिहास की छात्रा हूँ। पुरानी सारी बातें याद नहीं रखूगी तो पास कस होऊँगी ? तपती ने सहज भाव से कहा।

सोमनाथ ने तपती के चेहरे की ओर देखा। उसे बहुत मोह हो रहा था। एक बार मन हुआ, उसकी दोनो नरम हथेलिया को पकडकर कहे, 'तपती, प्यार कर तुमने मुझे धन्य कर दिया, पर तुम्हारे चुनाव पर सच-मुच ही मुझे दुख होता है। एक सहपाठी के रिश्ते से—आइ जेनुइनली फील सॉरी फॉर यू (मुझे सचमुच तुम्हारे लिए दुख होता है)।

पर सोमनाथ तपती से कुछ भी नही कह पा रहा है। लडकी होने पर भी उसमे आत्मविश्वास है। तपती कोमल है पर लता की तरह किसी पर निभर नही है।

बहुत से पुराने चेहरे याद आ रहे हैं। सोमनाथ बोला, "तपती ! पुराने दिनो को याद करना बडा अच्छा लग रहा है।"

नदी की तेज हवा के झोके से अपनी साडी सँभालती तपती बोली, "इतिहास की छात्राएँ तो रात दिन ही अतीत को लिये बठी रहती हैं फिर भी कभी-कभी भविष्य की ओर झांक लेन का मन करता है।

सोमनाथ ने सोचा, एक बार कह ऐसा तो नही लगता, तपती ! भविष्य के सम्बन्ध म यदि तुम जरा भी सोचती तो आज बेकार सामनाथ बनर्जी के साथ घूमने नही आती।

'तुम्हे दीपकर की याद है ?' सोमनाथ ने पूछा।

'अच्छी तरह याद है। भीषण खुराफाती था।" तपती ने उत्तर दिया।

"सुना है, आइ०ए०एस० हो गया है। अलीपुर म ए०डि०एस० होकर

था रहा है।" सोमनाथ ने बताया।

तपती ने कोई दिलचस्पी जाहिर नही की। सोमनाथ को याद आया—यह दीपकर फस्ट इयर मे तपती की नजरो मे चढन के लिए कितनी कोशिश करता था, पर तपती उसकी तरफ रुख ही नही करती थी। पढने मे अच्छा होने के कारण दीपकर कुछ दम्भी था और तपती ऐसे लडको को बिलकुल पसन्द नही करती थी। अन्त मे दीपकर ने तपती को एक लम्बी चिट्ठी लिखी, जिससे तपती को और अधिक खीझ हुई। जवाब देना तो दूर, चिट्ठी को तपती ने खुद अपने हाथ से दीपकर को वापस कर दिया था।

'तपती, यदि भविष्य के लिए तुम्हारे मन मे जरा भी मोह होता, तो आज तुम दीपकर राय की पत्नी बन सकती थी। सोमनाथ न मन-ही-मन कहा।

कालेज से भागकर जब वे उस दिन पहली बार इस नदी-किनारे आये थे, वह सोमनाथ को पूरी तरह याद है। श्रीमयी, समीर, तपती को अपने जन्म-दिन पर सामान्य अल्पाहार कराने का आयोजन सोमनाथ ने किया था।

कमला भाभी से उस दिन सुबह ही तीस रुपये जन्म-दिन के उपहार स्वरूप सोमनाथ को मिले थे।

उस समय भी सोमनाथ के जीवन मे कितनी ही रगीन कल्पनाएँ थी। नित्य नूतन प्रेरणाओ से कवि सोमनाथ तब ढेर सारी कविताएँ लिख रहा था। उनकी नियमित पाठिकाएँ दुनिया-भर मे दो थी—कमला भाभी और तपती। तपती तभी मेरठ से आकर उसके कालेज मे भर्ती हुई थी। इतने दिन इग्लिश मीडियम से पढी थी। अच्छी बगला न जानने के कारण उसे बहुत शर्म आती थी। बगला साहित्य एव बगला लेखको के प्रति उसे असीम श्रद्धा थी। सोमनाथ की 'जन अरण्य' कविता उसे बहुत अच्छी लगी थी।

कवि के साथ उसका परिचय तभी से प्रगाढ हुआ था। तपती के लिए इस बार सोमनाथ ने एक लम्बी कविता लिखी थी। शीर्षक था—'अन्धकार को पार कर'। उच्छवसित तपती बोली थी, "पेन खरीदने के पस

वसूल हो गये। 'जन-अरण्य' कविता मे आप मनुष्य का प्यार नही कर सके थे इस बार आपने मनुष्य पर विश्वास प्रकट किया है।"

आलोचना के लायक कुछ हो तो बताइए।' सोमनाथ ने अनुरोध किया था।

तपती बहुत प्रसन्न हुई थी। नाखून को दाँत से काटती हुई बोली थी, मुझे बहुत बड़ी जिम्मेवारी आपने दे दी है।" थोड़ा सोचकर बोली, "हर वक्त बहुत गम्भीर मत रहा कीजिए। कवियो के हँसना तो मना नही है।"

तपती की आलोचना को दृष्टि मे रख सोमनाथ ने एक सहज-सरल हल्की कविता लिखी—'वनलता सेन के ब्वाय फ्रेंड के प्रति'। वह कविता पढकर कमला भाभी खूब हँसी थी। बोली थी, "यह जो नये चलन की कविता देख रही हूँ—क्या किसी का ब्वाय फ्रेंड बनने का प्रयत्न कर रहे हो, सोम ?" सोमनाथ हँसी दबाकर उत्तर टाल गया था। कविता पढकर तपती बोली थी, "यदि कभी पुस्तक प्रकाशित हो तो लिखना होगा—'तपती राय के परामर्श से लिखित', नही तो एडवाइस फीस देनी होगी।"

तपती को भी क्या यह सब याद है ? सोमनाथ को जानने की इच्छा होती है।

नदी की हवा का झोका और प्रबल हो गया। सोमनाथ को किताबें पकडा तपती ने आँचल सँभाला, फिर पूछा, "जिस दिन पहली बार तुम्हारे साथ यहाँ आयी थी, उस दिन क्या इस जगह और भी हरियाली थी ?"

"तब हमारा मन हरा था, तपती !" सोमनाथ ने शान्त भाव से उत्तर दिया।

तपती बोली, "तुम तब भी बहुत गुमसुम थे। तुम्हारे मन मे क्या चिन्ता है, यह किसी को नही समझने देते थे। उस दिन कालेज जाते समय बस स्टैंड पर ही तुम मिल गये थे। मेरे साथ श्रीमयी थी। तुम बोले, 'आप दोनो को आज खिलाऊँगा, बीच-बीच मे घूस न देने पर कविता के पाठक कैसे जुटेंगे !'

"मेरी तरह श्रीमयी भी फारवर्ड थी। कुछ भी कहने मे हिचकती नही थी। तुमसे तुरन्त बोली, 'जब खिलाना ही है, तो नदी किनारे चलिए।

सुना है, ग्रेड जगह है।' तुम तैयार हो गये। हँसकर बोले, 'तीन जनो की यात्रा निषिद्ध है, इसलिए एक चतुथ व्यक्ति को हम दोनो मनोनीत करते हैं।' मैंने सोचा था, ललिता को ले चलेंगे। पर श्रीमयी तुरन्त बोली, 'प्राकृतिक सन्तुलन नष्ट हो जायेगा।' मैं बगला नही जानती थी। यह समझ नही पायी कि श्रीमयी यह कहना चाह रही है कि ललिता को साथ लेन से लडके लडकियो का अनुपात गडबडा जायगा।

"श्रीमयी ने मुझसे चुपचाप पूछा, तेरा नोमिनी कौन है ?' मैं हँसकर बोली थी, 'वही तो खिला रहे हैं।' श्रीमयी की इच्छा थी समीर को लेने की। इसलिए तुमने उसे ही निमन्त्रण दिया।"

सोमनाथ हँसकर बोला, ' समीर को लेने के पीछे तुमने इतना सोचा था, यह मैं नही जानता। तो भी समीर लडका इतना चालू है, इसका अन्दाज नही था।"

अतीत को याद कर सोमनाथ बोला, "तुम्हे याद है जब यहा पहुँचे थे, तब दोपहर के बारह बज रहे थे। पन्द्रह मिनट हो हुल्लड कर समीर ने अचानक घडी की ओर देखा। फिर बोला, 'नदी किनार से रेस्तरा मे हम लोग पौने-एक के पहले नही जायेंगे। इसलिए थोडी देर के लिए विछोह।' जितने मत उतने पथ। हम लोगो के सामने दो विकल्प थे—इडेन-गार्डेन या नदी किनारा। श्रीमयी ने चवन्नी उछालकर 'चितपट' किया। वे चले गये इडेन गार्डेन के अन्दर और हम दोना हृतप्रभ से नदी के किनारे खडे रहे।"

' तुम उस दिन खूब घबरा गये थे, सोमनाथ!"तपती ने याद दिलायी।

"घबराता क्यो नही ? तुम्हारी ही बात सोच रहा था कि कही तुम न सोचो कि हम दोनो ने मिलकर एक सुनियोजित षड्यन्त्र से तुम दोनो का अलग कर दिया।"

सुदशना तपती ने अपने नये चश्मे से सोमनाथ की ओर स्निग्ध-प्रशान्त दृष्टि से देखा। बोली "कवि लोग षडयन्त्री नही होते, यह मेरा सवदा से विश्वास था, सोम !"

"तपती, उस दिन तुम खू उन्व अच्छी लग रही थी। बादल-घिरे दिन के प्रथम कदम्ब फूल-जैसी।"

"पर तुम बड़े सरल थे, सोमनाथ! श्रीमयी और समीर के सड़क के उस पार गायब होते ही तुम एकदम घबरा गये थे। फिर बोले थे, 'आप अगर चाहें, तो मैं तुरत ही उनको बुला लाता हूं।' मैं अगर नहीं रोकती, तो शायद तुम उन लोगों को खोज में निकल जाते। मैं पश्चिम में बड़ी हुई। मेरठ के रास्तों पर साइकिल चलाती थी। जिमनाशियम में युयुत्स सीखा था। लड़का से इतना डरती नहीं। बोली 'उन्हें क्यों बेकार में डिस्टर्ब करेंगे?' तुम तब भी नवर्सनेस नहीं मिटा पाये थे। उत्तेजना में गुप्त सूचना दे बैठे। बोले, आज मेरा जन्म दिन है। भाभी ने तीस रुपये देकर कहा, जैसे इच्छा हो खर्च करना।'"

सोमनाथ हल्के से हँसा। बोला, "पर बाद में तुमने मुझे डरा दिया था तपती! गम्भीर मुद्रा में तुमने पूछा, 'सोमनाथ बाबू, जन्म दिन पर मिले रुपये आप किसी भी तरह खर्च कर सकते थे। पर हम लोगों को क्यों बुलाया?'"

उस दिन की याद कर इतने दिन बाद भी तपती शरारत में हँस दी। बोली, "तुम्हारा चेहरा देख, मुझे उस वक्त दया आ रही थी। तुम घबराकर बोले, 'आपने जन अरण्य कविता पसन्द कर अपने पास रखी, उसके बादवाली मेरी कविताओं को कष्ट करके पढ़ा—इसीलिए कृतज्ञता व्यक्त करने की इच्छा हुई।'"

बिखरे बालों को ठीक करते सोमनाथ को तपती की बातों से आनन्द हो रहा था, 'तुम जो मेरी हालत का मजा ले रही थीं, यह आभास तो तब तुमने होने नहीं दिया था। एकदम सहजता से बोली थीं, 'कृतज्ञता पाठिकाओं की ओर से होती है, सोमनाथ बाबू! एक पूरी अप्रकाशित कविता आपने मुझे दे दी।' फिर तुम नाराजगी दिखाती हुई बोली थीं, 'अपने जन्म दिन पर आपने मुझे इस तरह संकट में क्यों डाला? कुछ उपहार लाने का अवसर ही नहीं दिया।'"

तपती बोली, "तुम्हारी हालत काफी खस्ता हो रही थी। मुझे ममता हो रही थी, जब तुम बोले 'जन्म दिन की सूचना सिर्फ आपको दूंगा, यही सोच रखा था। श्रीमयी और समीर न जान पायें।'"

सोमनाथ भी बिलकुल नहीं भूला था। तपती से कहा, "तुम इस बात

पर राजी हो गयी तो मेरी सास मे सास आयी। और जब तुम बोली, 'जन्म-दिन पर शुभकामनाएँ दी जाती है, सोमनाथ बाबू ! आप बहुत महान हो बहुत नाम करें और मेनी हैप्पी रिटन ऑफ द डे', तो जानती हो, उस क्षण तुम बहुत ही प्यारी लगी थी। एक बार सोचा, मन के इस आनन्द को प्रकट कर दू, पर हिम्मत नही हुई।"

तपती चुप रही। फिर गम्भीर होकर बोली, "तुम्हारा यही स्वभाव तो मुझे सोचने को बाध्य करता है, सोम ! तुम्हारा आनन्द, तुम्हारा दुख—किसी मे भी तुम मुझे हिस्सा नही लेने देते।"

सोमनाथ बिना जवाब दिये चलने लगा। दूर वही परिचित रेस्तरां दिख रहा है। वही पहली मजिल पर बैठ एक दिन उन लोगो ने एक दूसरे को जाना था।

सोमनाथ बोला, 'याद है तुम्हे हम लोग पश्चिम की ओर कोने-वाली टेबुल पर बैठे थे !'

फिर अपने आप ही बोला "काच की बडी खिडकी से गगा का पानी दिख रहा था। मैंने अस्पष्ट स्वर मे कहा, पतितउद्धारिणी गगे ! तुमने कुछ नहीं कहा केवल एक बार आश्चर्यचकित हो मेरी ओर देखा। मैं भी गगा की शोभा से मुह फिराकर तुम्हारी ओर देखता रहा। अचानक लगा कि हम पहली बार एक दूसरे को पहचान रहे है।'

तपती गम्भीर हो बोली, "अर्थात तुम्हे भी याद है ? मैं सोच रही थी " कहते कहते तपती चुप हो गयी।

'क्या सोच रही थी ? बताओ ना तपती !" सोमनाथ ने अनुरोध किया।

मानिनी तपती ने कह ही दिया, 'मैंने सोचा था—अतीत को तुमने वेस्ट पेपर बास्केट मे डाल दिया है।"

सोमनाथ हतप्रभ रह गया। क्या बोले, कुछ भी नही समझ पा रहा था।

स्नेहमयी तपती ने खूब मीठे स्वर मे पूछा "गुस्सा हो गये ?"

"नही तपती ! गुस्सा क्यो होने लगा ?" सोमनाथ काफी घबरा रहा था। "जानती हो तपती," सोमनाथ ने फिर कुछ कहने की चेष्टा

की।

"कहो।" तपती ने करुण भाव से अनुरोध किया।

'जीवन को किसी भी तरह सुलझा नहीं पाया।" सोमनाथ ने सकुचा कर स्वीकार किया। तपती को यह सब कहते उसे सकोच हो रहा था। पर आज वह कुछ भी नहीं छिपायेगा "तुम, बाबूजी, भाभी, भैया सब मेरी ओर अधीरता से देख रहे हो—पर मैं अपने पैरों पर खड़ा ही नहीं हो पा रहा हूँ। तुम सबको मैं निराश कर रहा हूँ। कहीं-न-कहीं मुझमे ही कोई कमी है।"

तपती इस बारे मे बिल्कुल खिन्न नहीं है। बोली, "तुम बहुत ज्यादा सोचते हो सोम! तुममें कविता है, तुम सोचोगे ही। बहुत से लोग एकदम ही नहीं सोचते—न अपने बारे मे, न ही दूसरों के बारे में।'

'वे बड़े सुखी हैं। हैं ना ?" सोमनाथ ने पूछा।

"हो सकता है, हो—पर मुझे वे लोग बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। तुम दीपंकर की बात बता रहे थे। वह भी ऐसा ही है। आइ० ए० एस० हो सकता है, पर उसे सिर्फ अपने से मतलब है।"

सोमनाथ चुप रहा। इसके बाद दूर जाती एक नौका को देखते हुए बोला, "याद है तुम्हें ? श्रीमयी और समीर ने हमें किस आफत में डाल दिया था ? पौने एक बजे रेस्तराँ मे आने की बात थी, हम दोनों बेवकूफों की तरह बैठे रहे। डेढ़ बजे वे आये। डाटने पर समीर हँसकर बोला 'घड़ी गड़बड़ थी।' श्रीमयी की आखों में भी क्रोध का कोई भाव नहीं था।"

तपती ने अपनी घड़ी देखी, अभी सवा बजा है। तपती बोली, "एक बात कहूँ ? नाराज तो नहीं होगे ?"

'पहले बात सुनूं।" सोमनाथ ने उत्तर दिया है।

'तुमको लंच का निमन्त्रण देती हूं।' तपती ने खूब डरते डरते कहा।

सोमनाथ ने आपत्ति तो नहीं की, पर उसका चेहरा उतर गया।

पश्चिमवाली उसी परिचित सीट पर वे बैठे। कालेज का वह पुराना सोमनाथ कहीं खो गया था। जो सोमनाथ आज तपती के सामने बैठा है,

वह प्राणहीन और निष्प्रभ है। सुदर रसमय कविता की भाषा म बोलने-वाला सामनाथ अब चुप बैठा रहता है। नितात जरूरी न हो, तो मुह भी नही खोलता। पर उस ही केद्र बनाकर तपती ने अपने सारे सपने सँजो रखे हैं।

सोमनाथ इस क्षण प्रेम म भी पैसे का जहर देख रहा था। इस गगा के किनारे 'प्रिय बाधवी' को लेकर वह बार बार आयगा, यह स्वप्न उसने अवश्य देखा था। पर इसे पूरा करने के लिए तपती खच देने का प्रस्ताव करेगी, यह अकल्पनीय था।

तपती समझ पा रही है कि कही छद टूट रहा है। उसन जो सहज भाव स लिया है वह सोमनाथ स सम्भव नही हो पाता।

"गुस्सा हो गये ?" तपती ने पूछा।

सोमनाथ ने प्रश्न को टालने का प्रयास किया। कहा, "नही।"

सोमनाथ सोच रहा है, प्रथम आषाढ के उस प्रथम आविष्कार के बाद इस नदी से बहुत सा पानी बह गया है। ज्वार क जोर से तपती आगे बढती जा रही है और अपने भाटे के कारण सोमनाथ पीछे घिसटता जा रहा है। उस दिन जब पहले पहल भेंट हुई थी तब दोनो ही कालेज के प्रथम वष के छात्र छात्रा थे। सुदशन सोमनाथ भद्र परिवार की भद्र सतान था और ऊपर से कवि—साधारण लडकी के साधारण दुख से 'जन-अरण्य' जसी कविता लिख सकता था। और तपती एक साधारण सुदर श्यामली लडकी थी। स्वभाव से अच्छी, पर इस बगाल म नयी। अच्छी तरह बगला उच्चारण भी नही कर पाती थी—कविता लिखना तो दूर की बात थी। सोमनाथ को श्रद्धा कर पायी तभी तो अपना मन इस प्रकार दे बैठी थी।

पर इसके बाद ? तपती पढने म अच्छी थी। छात्रा के रूप म उसने नाम किया है। और सोमनाथ आर्डिनरी रह गया है। तपती को बहुत नम्बर मिले थे, सोमनाथ किसी प्रकार फेल होने से बच गया था। तपती बढिया अग्रेजी लिख सकती थी, बोल तो और भी बढिया लेती थी। सोमनाथ अग्रेजी लिखने बोलने दोनो म ही उतना सिद्धहस्त नही था। सोमनाथ ने पास कास मे बी० ए० किया, जबकि तपती को आनस मे

भी अच्छा रिजल्ट लाने मे कोई असुविधा नही हुई। तपती युनिवर्सिटी म भर्ती हो गयी। फस्ट क्लास एम० ए० की डिग्री को उसने बहुत ही सहज भाव से वैनिटी वैग मे रख लिया। सोमनाथ ने इन ढाई वर्षों मे नौकरी के लिए सकडो आवेदनपत्र लिखे, लेकिन सब व्यथ। अब तपती राय रिसच स्कालर है। सोमनाथ का कवि होने का सपना कभी का झडकर सूख गया है। उसके एम्लायमेंट एक्सचेंज काड का नम्बर है, दस हजार सत्रह।

यह सब तपती मे छिपा नही है। लेकिन किसी एक पहले आषाढ मे उसने जिसे अपना बना लिया था, जिसे हृदय से स्वीकार कर लिया था, उसे आज भी अस्वीकार नही करती। सोमनाथ के परवर्ती जीवन की घटनाओ से मानो तपती के प्रेम का कोई सम्बन्ध नही है। तपती इस बीच और भी निखर आयी है। तपती देखने मे अब बहुत सुन्दर हो गयी है, फस्ट इयर मे तो वह इतनी मनोहारिणी नही थी।

सोमनाथ ने सोचा, यौवन के प्रथम आवेग मे लोग तरह तरह के आकषणो से मुग्ध होते है। थोडे समय के लिए कोई लडकी किसी अयोग्य या कुपात्र को अपना हृदय दे भी डालती है। पर बुद्धिमती लडकी उसी को अन्तिम मान लेने की बेवकूफी नही करती। समीर के साथ श्रीमयी कितना घूमती थी! इडेन गार्डेन मे निजन पैगोडा के पास पहले आषाढ को, वे दोनो अपनी इच्छा से ही तो डेढ घण्टा बैठे थे। श्रीमयी ने चुम्बन पर भी आपत्ति नही की थी। इसके बाद सुदशन समीर का हाथ पकड, कितने ही दिनो तक श्रीमयी लेक के किनारे, बोटेनिकल गार्डेन और बैंडेल चच के प्रांगण मे घूमती फिरती रही थी। पर जसे ही समीर पढने मे पिछडता गया, जसे ही समझ म आया कि उसका भविष्य अच्छा नही, तभी श्रीमयी ने ब्रेक लगा दिया और फिर बेवकूफी नही की।

सोमनाथ ने सोचा, ठीक ही तो किया श्रीमयी ने। अपनी राय बदलने का अधिकार हर मनुष्य को है। नहीं तो, श्रीमयी आज कष्ट पाती—लाल सुहागसिन्दूर के बल पर अफ्सर अशोक चटर्जी की नयी फियेट गाडी मे इतनी शान से बैठ नही पाती।

सिफ श्रीमयी ही क्यो? कालेज की कितनी ही लडकियाँ तो क्लास

के कितने ही लडको से प्रेम करती थी, एकसाथ सिनेमा-ड्रामा देखती थी, अँधेरे म अधीर प्रेमी को थोडा-बहुत देह दान करती थी। अरविन्द की तरह जिन लडको को नौकरी मिल गयी है, वे अपनी प्रेमिकाओ को माला पहना पाये हैं। बाकी सभी सगिनिया कही खो गयी हैं। जिसकी जीवन-सगिनी बनने की अभिलाषा थी, उसे ही रास्ते पर देख अब लडकिया पहचानती तक नही। बेकारो से प्रेम करने की विलासिता मध्यवित्त परिवार की लडकियो मे नही है। उन्ह आर्थिक सुरक्षा चाहिए। अपनी बहन होने पर सोमनाथ भी यही खोजता।

"लगता है, तुम बहुत गुस्सा हो गये हो। कुछ भी नही बोल रहे हो।" तपती ने फिर शिकायत की।

छोटे बच्चे की तरह सोमनाथ हुसा। उसकी यह हँसी ही तपती को बहुत अच्छी लगती है। उससे रहा न गया, "तुम्हारी हँसी एकदम वैसी ही है, सोम! बहुत कम लोग ऐसे हँस पात हैं।"

"हँसी से किसी आदमी के बारे मे निणय कर लेना, आज के युग मे खतरनाक है, तपती!" सोमनाथ ने हँसी रोकते हुए कहा।

"जो भले नही है, वे इस तरह हँस नही सकते।" सोमनाथ की ओर देख तपती ने जरा जोर से उत्तर दिया। इसी सहज निमल हँसी को देखकर ढेरो सहपाठियो की भीड मे से तपती ने सोमनाथ को खोज निकाला था।

खाने का आडर तपती ने दिया। सोमनाथ को क्या पसन्द है यह वह जानती है।

खाते खाते सोमनाथ बोला, "तुम कह रही थी कि बहुत झगडोगी।"

तपती हँस पडी, "वह तो करूँगी ही लेकिन खाते समय लडको से झगडना नही चाहिए।"

"इजाजत देता हूँ।" सोमनाथ बोला।

अब तपती बोली, 'सोम, तुम मुझे इस तरह दूर क्यो रखते हो ?" बहुत कष्ट से तपती कह रही है, यह समझना सोमनाथ के लिए अब बाकी न था।

थोडी देर के लिए सोमनाथ स्तम्भित रह गया। फिर उसके चेहर

की ओर देख बोला, "मैं जिसके योग्य नही, वही तुमने पूरे मन से मुझे दिया है, तपती। पर मैं जानवर नही हूँ। तुम्हारा नुक्सान नही कर सकता।"

शान्त तपती ने गम्भीर हो पूछा, 'किसी से बात करने, चिट्ठी लिखने और मिलने का मतलब क्या उसको नुकसान पहुँचाना होता है?"

"हमारे इस देश मे लडकियो के मामले मे यही होता है, तपती। तुम्हारा कुछ भी भला नही कर पाया, तुम्हारे योग्य स्वय को बना भी नही पाया—पर तुम्हारा भविष्य नष्ट नही करूँगा।" शायद सोमनाथ का स्वर कुछ काप उठा।

पर तपती न सहज भाव से सोमनाथ की ओर देखा। फिर प्रश्न किया, "लडकियाँ और लडके बराबर हैं, यह तुम मानते हो सोम?"

"अरे बाबा! जरूर मानता हूँ। सवैधानिक अधिकार को स्वीकार किये बिना कोई चारा है? सामने ही हाइकोट है।" दूर कलकत्ता हाइकोट का शिखर यहा से दिख रहा है।

तपती बोली, "तब फिर मुझे नाबालिग क्या समझते हो? तुमने मुझसे कुछ छिपाया तो है नही।"

"मैं अपने विवेक को तो नही मार सकता, तपती। मेरी कोई प्रतिष्ठा नही है नौकरी नही, व्यापार नहीं, और तुम्हारे पास सब है।"

तपती ने पूछा, "तो क्या मेरा अपना कोई अधिकार नही है? मुझे किसे पसन्द करना चाहिए, यह मैं तय नहीं कर सकती? क्या नौकरी को छोड पुरुष की और किसी भी चीज से लडकिया प्यार नही कर सकती? विदेश मे तो ऐसा नही होता। इग्लैंड अमरीका मे तो कितनी ही लडकियाँ नौकरी करके पति को पढाती हैं—उसे अपने पैरो पर खडे होने मे मदद करती हैं?"

सोमनाथ गम्भीर हो उठा। बोला, "तुम और मैं अगर विदेश मे पैदा होते तो अच्छा होता, तपती।"

तपती मे मनोबल का अभाव नही है। बोली, 'जन्म कही भी हो, जो मन चाहेगा वही करूँगी।"

सोमनाथ चुप रहा। वह सोच रहा है, विदेश मे पैदा होने पर कोई

भी समस्या नही रहती। वहाँ कोई इस तरह बेकार नही बैठा रहता।

"क्या सोच रहे हो ?" तपती ने पूछा।

उदास, पर शान्त सोमनाथ बोला, "तुम दे रही हो, सिर्फ इसीलिए मैं ग्रहण कर लू तो मुझे कोई माफ नही करेगा, तपती ! सोचेगा, जान-बूझकर इस बेकार निकम्मे ने एक शिक्षिता, सुन्दरी, सरल लडकी का सर्वनाश किया है। तपती जानती हो ? ढाई वर्षों से दर-दर की ठोकरें खा, सबसे नौकरी की भिक्षा माग, दुनिया के सामने छोटा हो गया हूँ। पर अभी अपने-आपके सामने छोटा नही हुआ हूँ। अपने आपके सामने छोटा होने मे मुझे बहुत डर लगता है।"

तपती बिना कुछ बोले उसके मुह की ओर देख रही है। लडकियाँ कितने बडे-बडे विषयो पर कितनी सहजता से निर्णय ले लेती हैं—लडके नही ले पाते, उनमे कितनी दुविधा, कितना द्वन्द्व रहता है !

सोमनाथ बोला 'हो सकता है, तुम और कमला भाभी विश्वास न करो—पर आजकल कभी-कभी डर लगता है कि आखिर मे कही मैं अपने ही निकट छोटा न हो जाऊँ।"

बैरा बिल दे गया। सोमनाथ ने बिल लेना चाहा, तपती ने अकस्मात उसका हाथ पकड लिया। तपती के उष्ण अग का प्रथम कोमल स्पर्श सोमनाथ को रोमाचित कर गया। प्रगाढ सान्निध्य की एक अनजानी सिहरन को क्षण भर के लिए अनुभव करके भी, उसने दूसरे ही क्षण हाथ छुडा लिया। सोमनाथ को लगा कि वह अब सचमुच ही अपने निकट छोटा होता जा रहा है।

तपती ने गम्भीरता से प्रश्न किया, "तुमको यहाँ कौन ले आया था ?"

सोमनाथ बोला, "सब चीजो का एक नियम होता है, तपती। लडको का अपमान नही करना चाहिए।"

तपती बोली, "प्लीज सोमनाथ ! मेरी बात सुनो। पहली बार आज यू० जी० सी० स्कालरशिप के ढाई सौ रुपये मिले थे। मेरी बहुत दिनो से इच्छा थी, पहले महीने के रुपये लेकर तुम्हारे पास आऊँगी।"

तपती ने अब कुछ भी नही सुना। बिल के पैसे दे वह बाहर आ

गयी।

बस स्टाप की ओर चलते चलते सोमनाथ बोला, "तुमने विश्वास नहीं किया। मेरे पास रुपये थे। आज अचानक डेढ़ सौ रुपये की आमदनी हुई थी।"

तपती बोली, "यह तो केवल शुरुआत है। मैं जानती हूँ, बिजनस में तुम बहुत पैसे कमाओगे। और तब "

तपती बात पूरी नहीं कर रही है। इसी बीच तपती की बस आ गया—वह भवानीपुर जायेगी। सोमनाथ आफिस लौट जायेगा।

बस में तपती को बैठाते बैठाते ही सोमनाथ ने प्रश्न किया, "तब ?"

"तब कोई बात नहीं सुनूंगी—जीवन भर तुम्हारा दिया खाऊँगी।"

तपती की अन्तिम बात असख्य वाद्य यन्त्रो की एक अनिर्वचनीय झकार के साथ अब भी सोमनाथ के कानो मे गूज रही है। सोमनाथ को अपने पैरो पर खडे होना ही पडेगा। पराश्रित होकर सोमनाथ अब अपने समय को बरबाद नहीं करेगा।

शाम को मिस्टर मौजी से मिलने की बात है। मौजी लोग तरह तरह के केमिकल्स का व्यापार करते हैं। आदक बाबू ने इन लोगो के बारे मे बताया था, "बहुत भले आदमी हैं, बम्बई के मुसलमान हैं। आपके बृजबाबू की तरह केवल अपने रिश्तेदार कुटुम्बियो और गाव के लोगो से ही लेन देन के सम्बन्ध नही रखते। मुखर्जी, चटर्जी, हाजरा, दास, बोस आदि सबके साथ ये सम्पर्क रखते हैं। सारा का सारा लाभ अपने ही घर भेजने के लिए भी ये उतने तत्पर नही रहते।

सोमनाथ इसी बीच मौजियो के साथ कई बार मिल आया है। उन्होने उसे एकदम उल्टे पैरो नही लौटाया। सोमनाथ को जाचा परखा है। दो एक दफ्तरो से जानकारी भी मँगवायी है। सोमनाथ ने यथासाध्य प्रयत्न किया है, और दो एक अच्छी खबर भी लाया है।

मि० मौजी ने आज पूछा, 'काम-काज कैसा चल रहा है, मिस्टर बनर्जी ?"

सोमनाथ ने इस क्षेत्र मे इतना सीख लिया है कि कभी यह नही कहना चाहिए कि कुछ काम नही है। इससे पार्टी का विश्वास घट जाता है, सोचती है, इससे कुछ नही होगा। इसलिए व्यापारिक नियम के मुताबिक सोमनाथ बोला, "आप लोगो की शुभेच्छा से ठीक चल रहा है।"

मौजी ने पूछा, "आजकल कौन सी लाइन मे काम कर रहे है ?"

सोमनाथ क्या बोले, यह सोच नही पा रहा है। कही साहबी मकान के टूटन की खबर रख रहा हूँ, यह बताने पर तो मिस्टर मौजी प्रभावित होगे नही। अचानक लिफाफे और कागज की बात याद आ गयी। बोला, "पपर, स्टेशनरी, इन्ही सबकी आफिस सप्लाई पर ध्यान दे रखा है।"

मौजी बोला, "उन सब लाइनो मे तो अत्यधिक भीड है। उनमे बहुत सुविधा तो नही होगी ?"

"दफ्तरो मे बडे अफसरो से जान पहचान है किसी तरह चला लेता हूँ।" सोमनाथ ने बढिया अभिनय किया। मौजी यदि जान लेता कि पिछले कई महीनो म उसने कुल तीस और डेढ सौ रुपयो का व्यापार किया है !

"काम बढाते जाइए।" मिस्टर मौजी बोले, "बिजनेस ऐसी चीज है कि रुक जाना ही मौत है। हरदम आगे बढते रहना ही होगा।"

इन बातो का जवाब क्या दे, यह सोमनाथ समझ ही नही पा रहा है। अत मे बोला, "समझते ही होगे—पूजी का अभाव है, रुपये न होने पर व्यापार नही होता। सरकारी बैंक कहते रहते है कि रुपये हम देंगे, पर यह सब सिफ कहने की बात है। उनसे रुपये लेकर तो पूजी नही बढायी जा सकती।"

इसी समय मौजी के एक और भाई कमरे मे घुसे। सीनियर मिस्टर मौजी ने अपने छोटे भाई से परिचय करवाया। जूनियर मौजी ने सोमनाथ की ओर देख कहा, "आपको कही देखा है।"

"कहा बताइए तो ?" कही महाशय स्ट्राड रोड के रेस्त्रा मे तो नही बैठे थे ! सोमनाथ को थोडी चिन्ता हुई।

मौजी बोले, "अब याद आया। लेक के किनारे। आप एक एम्बेसडर

गाडी ड्राइव कर रहे थे, साथ में एक भद्र महिला थी। आप लोगों ने कोका-कोला पिया, हम भी उसी दुकान में कोक पी रहे थे।"

सीनियर मौजी ने समझ लिया कि सोमनाथ के पास गाडी है। वह बोले, "हाँ! तो मैं कह रहा था, मि० बानर्जी! अपनी नजर ऊपर उठाइए, आपके पास गाडी है, बड़ी-बड़ी कम्पनियों में जान पहचान है, आप बड़े-बड़े काम लाने की कोशिश कीजिए। रुपये की चिन्ता मत कीजिए। रुपये की कोई आवश्यकता नहीं है। आप केवल आर्डर बुक कीजिए। कम्पनी सीधे माल भेज देगी, आपको कमीशन मिल जायेगा।"

मिस्टर मौजी क्या कह रहे हैं, यह सोमनाथ नहीं समझ पा रहा है।

मौजी बोले, "हम लोगों के कुछ रिश्तेदारों ने बम्बई में एक केमिकल फैक्ट्री खोली है। कई प्रोडक्ट हम खुद ही बाजार से बचते हैं। आप जरा रुकिए—मेरे कज़िन बम्बई से आये हैं, अभी मिलना हो जायेगा।"

मिस्टर मौजी के कजिन थोड़ी देर में ही आ गये। सब बातें सुन बोले, "आपको मौका मैं दे सकता हूँ। हमारे नये माल को दो चार जगह चलाने का प्रयत्न कीजिए। आपकी कोई आर्थिक जिम्मेवारी नहीं रहेगी। सीधे यहाँ आर्डर भेज दीजिएगा। उसके बाद यदि बढ़िया काम कर पाये तो—आपका फ्यूचर ब्राइट होगा। हम लोग आपको एजेंसी दे देंगे। कमीशन मिलेगा।"

सोमनाथ को बहुत उत्तेजना महसूस हो रही है। आदक बाबू बोले, "देखिए आपका भाई काम बन जाये। उस कमरे में मि० सिंघी ने बम्बई की एक अच्छी कम्पनी की एजेंसी ले रखी है। सोते-सोते भी महीने में बारह सौ रुपये की आमदनी हो जाती है।'

इसलिए कहा नहीं जा सकता—हो सकता है, इस बार सचमुच ही सोमनाथ बनर्जी का भाग्योदय हो जाये।

भाभी इधर अधीर हो उठी हैं। कहती हैं, "अब भी बाबूजी से छिपाने में क्या फायदा !"

सोमनाथ बोला, "ठहरिए, पहले थोड़ी आशा की किरण देख लूं। आज तक तो आपके दिये हुए पैसों से ही टिफिन कर रहा हूँ।"

सोमनाथ ने तय किया कि किसी को नहीं बतायेगा। पर भाभी के सामने छिपा नहीं पाया। "भाभी, देख रहा हूँ, बड़ी जगहों में बड़ा आडम्बर करना पड़ता है। गन्दे कपड़े पहन, बस-ट्राम में लपक, परचेज अफसर के पास पहुँचने पर काम नहीं होता। दो-एक दिन अगर गाड़ी ले जाने की जरूरत पड़े तो ?"

"इसमें ऐसा क्या है ? भाभी आश्चर्य से बोली, 'फिर तुम्हारे भैया भी यहाँ नहीं हैं। बीच-बीच में गाड़ी चलाने से बल्कि ठीक ही रहेगा। तुम मुझसे पेट्रोल के दाम ले लेना।'

पेट्रोल के पैसों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अभी भी डेढ़ सौ रुपये जेब में हैं। मछली के तेल से मछली तलेगा सोमनाथ।

पर सोमनाथ का भाग्य ही खराब है। नये केमिकल के नमूने और सिफारिशी चिट्ठियाँ ले, सोमनाथ आस-पास कई जगह जाकर मिला। सबने फोन-नम्बर तक लिख लिये। सोमनाथ रोज सेनापति से पूछता है कि कोई फोन तो नहीं आया ? सेनापति कहता "आपका फोन कहाँ ?"

फोन बहुत बजता है पर हमेशा सुधाकर शर्मा के लिए ही। सुधाकर शर्मा काम के प्रेशर से दबे जाते हैं।

इतने कामों के बीच भी जिसको रोज शाम को सुधाकर बाबू फोन करते हैं, उसका नाम है नटवर मित्तिर।

सोमनाथ ने कई बार नटवर बाबू को देखा है। सुधाकर शर्मा उनको साथ लेकर ओट में चले जाते हैं। दोनों में जानें क्या क्या गुप्त बातें होती हैं।

इस मित्रहीन संसार में सोमनाथ को एकमात्र आदक बाबू पर भरोसा है। बिशु बाबू कहाँ गायब हो गये हैं, यह कोई नहीं जानता। सेनापति का ख्याल है कि वह एक मित्र के साथ बिजनेस कम प्लेजर ट्रिप (व्यापार-मनोरंजन-यात्रा) पर गये हैं—गाड़ी से बिहार और उड़ीसा घूमेंगे। बिशु बाबू होते तो दो एक प्रश्न पूछे जा सकते थे।

आदक बाबू ने पूछा "इतना क्या सोच रहे हैं, मि० बनर्जी ?"

सोमनाथ बोला, "यदि आप हँसी न उड़ायें तो एक सवाल करूँ।"

"पूछिए।" आदक बाबू ने सम्मति दी।

'अच्छा एक ही कमरे में इतने लोग चुपचाप हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते है, फिर सुधाकर बाबू को इतना काम कैसे मिल जाता है?"

हँस पड़े आदक बाबू फिर बोले, "गलत क्या कहूँ श्रम! इस दुनिया म भाग्य तो विधाता गढ देता है, पर श्रम मनुष्य को स्वय करना पड़ता है।

इसी बीच नटवर बाबू के आने की तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया। नटवर बाबू से आदक बाबू का परिचय है। नटवर बाबू का गोल मटोल चेहरा है। बुशशर्ट के नीचे पाँच नम्बर की फुटबाल जितना पेट निकला हुआ है। सिर के बीच तीन इच व्यास का गोल गजा है। वहाँ की क्षतिपूर्ति हुई है अन्य जगहों पर। मि० नटवर के दोनों कानों पर अच्छे अनुपात म बाल उगे हुए हैं।

नटवर बाबू ने हुँकारकर कहा, 'क्या कहा? बहुत गलत! व सब वन्स अपान ए-टाइम की बातें करके आप क्यों इस यगमैन का बारह बजा रहे हैं? 'श्रम' से ही यदि कुछ होता तो कुली और रिक्शावाले कलकत्ते के सबसे बड़े आदमी होते।"

सोमनाथ स्तब्ध हो उनके मुह की ओर देखने लगा। नटवर बाबू बोले, 'व्यापार का एकमात्र आधार है—पी० आर०।"

'यह क्या चीज है?' आदक बाबू ने खीझकर प्रश्न किया।

नटवर खूब हँसने के बाद बोले, 'पब्लिक रिलेशन अर्थात जन सम्पर्क।"

सोमनाथ अभी भी बुद्धू की तरह ताक रहा है। नटवर बाबू बोले, "अभी भी नहीं समझ पाये? क्षमतावान व्यक्ति आपसे माल खरीदेंगे, उनसे आपके सम्बन्ध कैसे हैं, इस पर पूरा काम निभर करता है।'

सोमनाथ के मुह की ओर देखकर नटवर अधीर हो बोले, 'अभी भी नहीं समझे? और जातियो के लड़के तो यह मा के पेट मे पहले ही सीख लेते हैं।'

सुधाकरजी अभी भी नहीं आये थे। उनकी मेज की ओर कनखियो

से देख नटवर मित्तिर बोले, "इ ही शर्माजी को क्यो नही देखते ! माल खराब, वजन कम, दाम ज्यादा—तो भी शर्माजी को क्या फटाफट आडर मिलते हैं ? इसी जन सम्पक के बल पर ही तो ! आप इ ही कम्पनियो को कम दाम पर बढिया माल आफर कीजिए, एक आऊ स केमिकल भी नही बेच पायेंगे। और यदि बेच भी लेंग, तो पमेट नही मिलेगा। आठ महीने, नौ महीने बाद आप पैसा के अभाव मे अपना व्यापार ब द कर रोते रोते घर चले जायेंगे। अस्तु, ठीक से जन सम्पक कीजिए "

बातचीत मे व्यवधान पड गया है। सुधाकरजी आ गये थे। नटवर मित्तिर बोले, "उनके साथ आवश्यक बाते करनी है। यदि यह सब सीखना चाहते हैं तो आइएगा इस गरीब के पास।' यह कह अपना एक विजिटिंग काड सामनाथ के हाथ म थमा, नटवर मित्तिर सामने की टबुल पर चले गये। दो मिनट म ही दोनो फिर बाहर चले गये।

आदक बाबू अभी तक चुप थे। अब कुछ झुंझलाकर बोले, "कुछ अजीब लगता है यह आदमी। सुधाकर बाबू से बहुत पटती है, पर मुझे तो बिल्कुल ही अच्छा नही लगता।"

थोडे दिन बाद रवी द्र सरणी पर सोमनाथ को नटवर मित्तिर मिल गये। " ओ मिस्टर बनर्जी ! सुनिए, " नटवर मित्तिर ने सोमनाथ को पुकारा।

सोमनाथ न नटवर को नमस्कार किया। मि० मित्तिर न पूछा "बिजनेस कैसा चल रहा है ?'

सामनाथ ने कुछ नही छिपाया। बोला, "कई कॉटन मिलो मे एव पपर मिला मे नियमित रूप से परचेज अफसरा से मिलता हूँ। दो एक अच्छे केमिकल्स हैं।"

'कुछ हो रहा है ?" मि० मित्तिर ने हल्के से मुस्कराकर पूछा।

"कोशिश कर रहा हूँ।" सोमनाथ बोला।

अब 'हो-हो' कर जोर से हँस पडे नटवर मित्तिर "बस चेष्टा ही करते रह जायेंगे। और आपकी नाक के नीचे से आडर ले जायेगी सुधाकर कम्पनी।"

पाकेट से डिबिया निकाल नसवार सूघ नटवर मित्तिर बोले, "आप

सन आफ द सायल (इसी धरती के पुत्र) हैं, इसलिए कह रहा हूँ। नही तो मेरा क्या ? आप पूरे जीवन ही बस पर चढते उतरते रहिए, मेरा कुछ बनता-बिगडता थोडे ही है। सुनिए महाशय, सीधी बात—बडी-बडी कम्पनिया आपसे माल नही खरीदेंगी। वे प्रसिद्ध कम्पनिया से सीधे माल लेंगी। विलायती कम्पनी का माल छोड, वे आपकी मौजी कम्पनी का माल छुयेंगी नही। ठीक है कि नही ?"

सोमनाथ ने स्वीकृति मे गर्दन हिलायी।

नटवर मित्तिर बोले, 'अत आपको जाना होगा दरमियानी और छोटी छोटी कम्पनिया मे। ठीक है कि नही ?"

"जी हा।' सोमनाथ बोला।

नटवर मित्तिर मीठे मीठे हँसकर बोले, "छोटी मोटी सब कम्पनिया अब इडियन लोगो के हाथ मे हैं। चोरी चमारी मे सहूलियत के लिए मालिको ने अपने भतीजे, भाजे और गाँव के परिचितो को परचेज अफसर बनाकर बैठा दिया है। वे मालिको का फायदा देखते हैं और उसके साथ ही अपना भी फायदा कर लेते हैं।"

सोमनाथ चुपचाप सुन रहा है। नटवर मित्तिर बोले, 'इसलिए आपको पहले वशीकरण मन्त्र सीखना होगा, जो सुधाकरजी को आता है। और न आता हो तो हमारे जैसे पब्लिक रिलेशन कसल्टेंट से सीखना पडेगा।"

नटवर मित्तिर बोले "टैक्सी नही मिल रही है, इसलिए आपके साथ इस तरह समय नष्ट कर पा रहा हूँ। नही तो, आज का यह जन-सम्पर्क सलाहकार बहुत व्यस्त है। आडर सप्लाई लाइन मे जो पुराने पके हुए आदमी हैं, वे नटवर मित्तिर का दाम जानते है।'

नटवर मित्तिर ने फिर नसवार ली। बोले, "छोडिए ये सब फालतू बातें—अपनी प्रशसा अपने मुह से अच्छी नही लगती। आप परचेज देवता को सतुष्ट करने का मन्त्र सीखिए। सुधाकर बाबू एक बढिया बात कहते हैं—जब तक अफसर से रकम की बात नही हो जाती, तब तक चिन्ता बनी रहती है। जैसे ही पता चलता है कि शराब पीता है, रुपये लेता है, तो चिन्ता आपने आप मिट जाती है। काम पटने का पूरा भरोसा

हो जाता है। अपने स्वार्थ के ही कारण अफसर मेरा स्वार्थ देखेगा।"

सोमनाथ को ये बातें बिल्कुल अच्छी नहीं लग रही हैं। बोला, "अपने आपको गिराने से क्या फायदा, मिस्टर मित्तिर?"

नटवर मित्तिर भभक पड़े, "अरे बाप रे! यह तो फिजिक्स की बात कर रहे हैं। सारी फिजिक्स नहीं—फिलासफी। यहाँ महाशय, कोई फिलासफी बघारने नहीं आता—दो पैसे कमाने आता है। इसमें अपने-आपको गिराने की बात कहाँ है? ग्रेट विवेकानन्द स्वामी कह गये हैं—प्रत्येक मनुष्य में भगवान है। आप यही सोचिए कि साक्षात नारायण की सेवा कर रहे हैं, भले ही वह परचेज अफसर ही क्यों न हो।"

नटवर मित्तिर ने घड़ी की ओर देखा। बोला "नहीं महाशय, अब टैक्सी मिलने की उम्मीद नहीं लगती। मैं ट्राम से ही जाता हूँ। पर तो भी मेरी एक चलेंज है और दुनिया में ऐसा कोई आदमी पैदा नहीं हुआ, जिसमें कोई न-कोई कमजोरी न हो। बाहर से लगेगा कि अभेद्य किला है, पर खोज करने पर पता चलेगा कि कहीं एक दरवाजा खुला है। मुझे मनुष्य के इन्हीं भिड़े दरवाजों की खोज करने की धुन है। खूब अच्छा लगता है। आप भी महाशय फिलासफी-टॉफी भूल जाइए और बिल्कुल मन लगाकर जन सम्पर्क बढ़ाइए।"

सोमनाथ गम्भीर हो चलने लगा। चितपुर रोड से चलते चलते डलहौजी स्क्वायर आया तो वहाँ अचानक हीरालाल साहा मिल गये। वह मुँह फाड़े राइटर्स बिल्डिंग की ओर देख रहे थे। उनकी आँखों में छोटे बच्चे सा लोभ है, यह सोमनाथ समझ गया। पकड़े जाने के कारण हीरालाल बाबू झेंप गये। चेहरे पर हँसी लाने की असफल कोशिश करते हुए वह बोले, "आपसे सही कह रहा हूँ, टूटे मकानों का बिजनेस करते-करते मेरी आदत खराब हो गयी है। कोई पुराना मकान देखते ही हिसाब लगाने का मन करता है कि इसको तोड़ने पर कितनी लकड़ी, कितना लोहा, कितना पत्थर मिल सकता है। पता नहीं, कब कोटेशन देना पड़ जाय।"

"आप इस राइटर्स बिल्डिंग को घूरेंगे?" सोमनाथ ने पूछा।

हीरालाल बाबू गुस्सा हो गये, "क्यों? इसमें क्या अपराध है,

महाशय ? यह इमारत हमेशा तो रहेगी नही, एक-न एक दिन तो इसे तोडना ही होगा।" हीरालाल बाबू बाले, "साहबी इमारत है, इसलिए मन ललच गया है। इडियन शासन म राइटस बिल्डिंग बनी होती तो मैं अपना वक्त बरबाद नही करता। स्वतत्रता के बाद जो माचिस की डिबिया-जसे मकान बने हैं, उनकी ओर तो मैं मुडकर देखता तक नही। जानते हैं मि० बनर्जी, भविष्य मे जो भी मकान तोडन की हमारी इस लाइन म आयगा, वह सडक पर ही ठाला बठा रहेगा। आज के मकानो म कुछ नही है। साहबो के मकान के खत्म होते ही कलकत्ता खत्म हो जायगा।"

इसके बाद हीरालाल बाबू बोले, "एलगिन रोडवाले मकान पर दो-एक हजार रुपये लगायेंगे क्या ? चार पाँच दिनो म ही प्राफिट मिल जायगा। मेरे रुपये कुछ कम पड रहे हैं। सोचा कि क्यो इन पगडीधारी, तोदियल पैसेवालो के सामने हाथ फैलाऊँ। आप लोकल आदमी हैं।"

कमला भाभी ने जरा भी पूछताछ नही की। बैंक की चेक की किताब निकालकर सोमनाथ को दे दी। कहा, "तुम जब व्यापार म लगा रहे हो, तो मैं इस बारे मे सोचनेवाली कौन होती हूँ ?"

सोमनाथ ने बैंक से रुपये निकाल हीरालाल बाबू के हाथ मे पकडा दिये। उन्होंने साथ ही साथ रसीद लिख दी। बोले, "मेरा मन कह रहा है कि आपको कम से-कम हजार रुपये का फायदा होगा। चार दिनो के लिए दो हजार रुपये लगाकर तीन हजार रुपये जेब मे आ जायें तो बुराई क्या है ? किसी भी बिजनेस मे इतना नही मिलेगा।"

सोमनाथ को लग रहा है, अब बादल छँट रहे हैं। नटवर बाबू की बातो से भी उसने कुछ सीखने की चेष्टा की है। सोमनाथ गलत रास्ते पर नही चलेगा, लेकिन लोगो का विश्वास पाने का प्रयास करना होगा—नही तो सचमुच वे उसे आडर क्यो देंगे ?

सोमनाथ की हिम्मत बढ रही है। थोडे दिन पहले ही एक कपडे की मिल मे गया था। वहा के मि० सेनगुप्त बोले, "आपके दो सैम्पल टेस्टिंग के लिए भेजे हैं—अभी रिपोट नही आयी। लेकिन महाशय, बडी बडी

कम्पनियों के पास भी यही चीज है इसी माल से बाजार पटा पडा है। फिर आप लोग इसी लाइन मे क्यो घुसे ?"

पहलेवाला सोमनाथ होता तो, सिर झुकाकर सब सुन चला आता। पर अब वह बोला, "बडे बडे तो हर समय ही रहगे सर ! बम्बई मे इतनी विशाल बडी बडी कपडा-मिलो के रहते, आप लोगो ने भी तो एक दिन हिम्मत कर यहा मिल बैठायी थी—और इतना नाम भी किया है।"

"वाह, बात तो आप ठीक कहते हैं। मेरे दिमाग मे यह बात आयी ही नही। ठीक ही तो है अब कहा खुला मैदान पडा है ? रोहू कातला के रहने के बावजूद चूनो पूटी (छोटी मछलिया) भी साहस कर घुस आयी हैं, और अपनी योग्यता से हमारी कम्पनी की तरह साख बढा रही हं।" मि० सेनगुप्त काफी खुश हुए।

उन्होंने सोमनाथ को बिठाया। फिर बोले, "आप यग बगाली हैं—आपको साफ बताता हूं—मुझको पकडने से कुछ नही होगा। अपने डायरेक्टर मि० गोयनका से आपका परिचय करवा दूगा।"

सोमनाथ बोला, "गोयनकाजी बहुत बडे आदमी हैं, वह मेरे जसे मामूली हैसियत के आदमी को क्या अपने पास फटकने भी देंगे ?"

सेनगुप्त बोले, ' वह खुद बहुत बडे आदमी नही हैं—उनके ससुर मि० केजरीवाल जरूर बडे आदमी है। उ ही की मिल है—कई वर्षों से गोयनकाजी को बडी पोस्ट पर बिठा रखा है। आप कोशिश कीजिए, आपका माल हमारी मिल मे काफी लग सकता है। इसके अलावा केजरीवाला की एक और मिल का सामान भी गोयनकाजी खरीदते हैं।"

गोयनका देखन मे सुदर हैं। एयरकूलर लगे कमरे मे पतला कुर्ता और पायजामा पहने वह बैठे हैं। पके मत्तमान केले जैसा चम्पई रग और तोते जसी तीखी नाक। शरीर भी स्थूल नही, वरन थोडा दुबलेपन की ओर ही है। उम्र चालीस वप।

उनसे सामनाथ की मुलाकात हो गयी। कमरे मे एक तरफ एक काली दुबली एग्लो इडियन टाइपिस्ट अपना काम कर रही है।

सोमनाथ बोला, 'सर ! आपका कीमती समय नष्ट नही करूंगा। केवल आपका रिस्पेक्ट जताने आया हूं।'

टेलीफोन पर सेनगुप्त से सारी बातें गोयनकाजी ने जान ली थी। गाल का पान सँभालते हुए बोले, "देखें, माल की क्या रिपोर्ट आती है।"

केमिकल्स की कोई बात ही सोमनाथ ने नहीं की। बोला, "वह सब तो आपके हाथ म है, गोयनकाजी ! आपका इतना नाम सुना है।"

"मेरा नाम कहाँ सुन लिया ?" प्रसन्न हो गोयनकाजी ने प्रश्न किया। मँहगे फ्रेंच सेंट की खुशबू से कमरा महक रहा था।

सोमनाथ थोडी परेशानी मे पड गया। फिर किसी तरह बोला, "आपका नाम कौन नही जानता ? आप अच्छी चीजा की कदर करते है—नयी कम्पनी का नया माल है सुनकर दूर नही फेंकते। तभी तो कलकत्ते से दौडकर आने का साहस हुआ है।"

गोयनकाजी की ओर अपनी महँगी सिगरेट सोमनाथ ने बढा दी। उन्होने एक सिगरेट ले ली। पान को गाल के बायी ओर से दाहिनी ओर ट्रासफर किया, फिर बोले, "कलकत्ते से दूरी ही हम लोगो की परेशानी है।

"ऐसी क्या दूरी है, मि० गोयनका ? विदेश मे चालीस मील कुछ नही।" इतनी देर बाद सोमनाथ को बात करने की कोई चीज मिली है।

"पर सडको का जो यह हाल है। इतनी दूरी तय करने म ही पूरा दिन बीत जायगा। मि० गोयनका बोले।

"मजे की बात यह है कि म्युनिस्पलिटी और गवनमेट सडका की मरम्मत के लिए आप लोगो से ढेरो रुपये वसूल कर रही हैं।" सोमनाथ बोला।

"वे सब रुपये कहाँ जाते हैं ? गाड एलोन नाज (भगवान ही जाने)।" सोमनाथ की बातो से मि० गोयनका सन्तुष्ट हैं, यह उनकी बात-चीत से जाहिर था।

मौका देखकर सोमनाथ ने चाशनी घोलते हुए गोयनकाजी को करारा मस्का मारा। बोले, 'ऐसे सजे हुए सुरुचिपूर्ण दफ्तर कलकत्ते मे भी ज्यादा नही है। यहा तो सब जगह आपकी सुरुचि की छाप दिखायी पडती है।'

गोयनकाजी प्रशसा से नरम हुए, ऐसा लगा। तो भी प्रथम परिचय मे वह सोमनाथ का पूरा विश्वास नही कर पा रहे हैं यह समझने म

सोमनाथ को देर नही लगी। सोमनाथ और आगे नही बढा। उसने सिफ पूछा, "अकेला ही गाडी मे कलकत्ते जा रहा हूँ—यहा से और कोई जायेंगे क्या ?"

गोयनकाजी पहले तो झिझके। फिर घर पर पत्नी से बात की। इसके बाद जवाब दिया, "मेरी पत्नी की बुआ की एक दाई यहा पडी है। बेचारी अकेली नही जा सकती है। हम लोगो को भी ले जान का समय नही मिल रहा है। जरा आप उसे चितरजन एवे यू पर मेरी ससुराल पहुँचा दीजिए।"

सोमनाथ खूब उत्साह से उसे ल जाने के लिए राजी हो गया।

उन्नत वक्षवाली ऐंग्लो इडियन युवती को आफिस के एटिकेट का ज्ञान कुछ कम है। चिटठी टाइप करना बन्द कर आलपीन से नाखूनो का मल साफ करते हुए वह उन लोगो का वार्त्तालाप सुन रही थी। वह भी प्रफुल्लित हो उठी। उसे भी कलकत्ता जाना है। मधुर हँसी हँस मि० गोयनका उसे भी भेजने के लिए राजी हो गये।

लौटते वक्त गाडी चलाते चलाते सोमनाथ को लग रहा था मानो वह नाटक मे राजा बना है। एक क्लक की नौकरी मिलने पर जो सन्तुष्ट हो जायेगा, वही किस मजबूरी मे दूसरे की गाडी ले, थड पार्टी को लिफ्ट दे रहा है ? पीछे गोयनकाजी की ससुराल की बूढी दाई बैठी है। गोयनका के साथ परिचय की कडी होने के कारण वह भी सोमनाथ के लिए एक आदरणीया असाधारण महिला है।

सोमनाथ की बगल मे बैठी है, मिस जूडिथ जैकब। उसके शरीर से सस्ते सेंट की तेज गन्ध जोरो स आ रही थी। मोती की तरह सफेद दाँतो को दिखला मिस जैकब ने कहा, 'तुम तो बहुत स्टडी ड्राइव करते हो।' सोमनाथ रास्ते की ओर ध्यान से देखता हुआ धीमा धीमा मुस्कराया। मिस जैकब बोली, "तुम्हारे कारण मैं अपन फियान्सी (मगेतर) से मिल लूगी।" बक बककर बहुत सी व्यक्तिगत बातें मिस जैकब बताती जा रही थी। फियान्सी किसी कम्पनी मे दीमक मारने का काम करता है। उसके फ्लैट की डुप्लिकेट चाबी मिस जैकब के पास है। जब भी उसका मन हो, वह भावी पति के घर जाकर रह सकती है, कोई

असुविधा नही है। और भी क्या क्या बोलना चाह रही थी मिस जक्ब, पर सामनाथ का सुनने का आग्रह नही था।

गाडी चलाते चलाते सामनाथ दूसरी बात सोच रहा था। नटवर बाबू का चेहरा उसकी आंखो के सामने तैर रहा था। नटवर बाबू मनुष्य का बिल्कुल ही विश्वास नही करते।

नटवर ने कहा था, 'सभी लोगो म कोई-न-कोई कमजोरी होती है। रुपये और शराब से नव्वे प्रतिशत बिजनेस मैनेज हो जाता है। महाशय, एक बार बडी विपत्ति मे फँस गया था। उस सुधाकर शर्मा ने ही केस दिया था। बोला था— भाई साहब, बडा सख्त है, किसी भी तरह काम नही हो पा रहा है। यह मरदूद यदि नही राजी हुआ, तो एकदम मारा जाऊँगा। गवनमट को थोडा खराब माल सप्लाई किया है—साला धमपुत्र युधिष्ठिर यदि रिजेक्ट कर देगा तो एकदम फिनिश हो जाऊँगा।' सुधाकर को पहले थोडा डॉटकर मैंने कहा अपनी आदत बदलो—कम-से कम बीच बीच म थड क्लास माल सप्लाई करना बन्द करो। सुधाकर बोला, यह सब क्या अजीब बातें कर रहे हैं आप, नटवर दा'? लाड क्लाइव के राज्य से आज तक कब किसने गवनमट को जेनुइन माल सप्लाई किया है?' सुधाकर किसी भी तरह नही माना, उसने केस मेरे कधो पर जबदस्ती डाल दिया। गवनमटवाले आदमी को मैंने परखकर देखा— मरदूद सचमुच ही घूस नही खाता, दूसरे की गाडी पर नही चढता, शराब नही छूता। पर मैं भी तो नटवर मित्तिर हूँ। आशा नही छोडी। तीन चार दिनो तक भिन भिन सास से पता लगाया तो मालूम हुआ कि भला आदमी एक मद्रासी बाबा का बहुत भक्त है। और क्या उपाय था? मैं भी बाबा का अनन्य भक्त बन गया। बोला, 'आप महान भक्त हैं। और मैं—तुच्छ कीडे मकोडे के समान हूँ, अभी अभी ही भक्तिमाग म पर रखा है। आपको प्रकाश दिखाना ही होगा।' डेढ सौ रुपये मे बाबाजी का एक रंगीन चित्र जुटाकर उसे पाक स्ट्रीट के शॅमोल्ड (एक नामी दूकान) से कीमती फ्रेम मे मॅढवाकर भक्त बाबाजी के घर दे आया। मन्त्र की तरह काम बन गया। भद्र आदमी समय ही नही पाया, और मैंने अपना काम बना लिया।"

पर सोमनाथ नटवर मित्तिर नही बनेगा। अपनी नजरो मे खुद को नही गिरा पायेगा।

फिर भी सोमनाथ शिष्टाचार और सौजन्य बरतेगा। कलकत्ता आकर उसने गोयनकाजी के घर फोन कर दिया।

थोडे दिन बाद गोयनकाजी से मिलना हुआ। धन्यवाद दे गोयनकाजी बोले, "महरी को पहुँचा दिया था, यही काफी था—ट्रंक कॉल करने का कष्ट क्यो किया ?"

सोमनाथ बोला, "सोचा, भाभीजी चिन्ता करेगी।"

गोयनकाजी के कमरे मे विलायती टाइपिस्ट नही दिख रही थी। गोयनकाजी ने बताया, "नौकरी छोडकर भाग गयी है।" फिर परिहास से हँसकर बोले, "गाडी मे आपने क्या कर दिया था ? बस उस दिन जो आपके साथ कलकत्ता गयी, उसके दूसरे ही दिन रेजिग्नेशन दे दिया।'

अश्लील मजाक से सोमनाथ का चेहरा लाल हो उठा। भैया से भी बडी उम्र के है मि० गोयनका। गोयनकाजी बोले, "अरे, डर क्या रहे हैं ? यू ही मजाक कर रहा हूँ। हमारी मिल कलकत्ता से इतनी दूर है कि कोई अच्छी लडी टाइपिस्ट आना ही नही चाहती।"

सोमनाथ चुप रहा। गोयनकाजी बोले, "आप तो कई बडे बडे दफ्तरो म जाते है। आजकल क्या गाउनवाली मेमसाहब को रखने का फैशन है ? बडी बडी कम्पनियाँ क्या आजकल साडीवाली सेक्रेटरी ही नही रखती है ?"

हो सकता है और नही भी हो सकता है। यह सब जानकारी सोमनाथ थोडे ही रखता है !

बोला, "ऐसा तो कुछ नही सुना। दोनो ही तरह की महिलाए दफ्तरो मे काम करती है।"

गोयनकाजी हँसकर बोले "इसका मतलब है कि दफ्तरो मे आते-जाते बिल्कुल ही स्टडी नही करते। गाउनवाली मेमसाहबो की डिमाड बहुत कम हो गयी है। आपकी लाइन के ही एक सज्जन से यह सूचना

मिली है, उनका नाम है मि० नटवर मित्तिर।"

"उन्हे जानते हैं ?" सोमनाथ ने पूछा। एक परिचित नाम सुन सोमनाथ को थोडी आशा बँधी।

"मि० मित्तिर दो एक बार हमारे यहाँ आये हैं—उनके किसी मित्र का काम था। बहुत मजेदार आदमी हैं। एक्दम सुपर सल्समैन।"

सोमनाथ ने इन सब बातो मे दिलचस्पी नही दिखायी, वरन आर्थिक बातें करने लगा। बोला, "आप पर तो इ कम टैक्स का बहुत दबाव है।"

सहानुभूति पा, मि० गोयनका खुश हुए। बोले, 'गवनमट डकती कर रही है। रुपये मे सत्तर पैसे काटने से काम धाम मे आदमी का उत्साह कैसे रह पायेगा ?'

सोमनाथ बोला, 'सबको लगता है कि बडे बडे ओहदो पर आप लोग बहुत सुखी हैं, जबकि ऐसा बिल्कुल नही है।'

इसके बाद गोयनकाजी शायद रुपया की बात करते। पर अभी भी सोमनाथ का विश्वास नही कर पा रहे हैं। कुछ भी हो जान पहचान तो बहुत मामूली है।

गोयनका से सोमनाथ ऊब रहा है पर व्यवसाय म शिष्टाचार तो रखना ही पडता है। मि० मोजी ने कहा था, "बडी पार्टी हो तो थोडा-बहुत मनोरजन करिएगा।" इसीलिए सोमनाथ गोयनका से बाला, "कलकत्ते आयें तो कृपा कर फोन कर दीजिएगा। यदि मौका देंग तो कही पर भी एकसाथ लच का प्रोग्राम बनाया जायेगा।"

अबकी बार सोमनाथ को कसकर डाट खानी पडी। गोयनका न मुह पर ही कह दिया कि वे मास मछली नही खाते—ड्रिंक भी पसन्द नही करते। अत उनको दावत देने से कोई लाभ नही, बल्कि असुविधा ही है।

विदा करने के पहले गोयनकाजी बोले, 'यदि जान पहचान की कोई अच्छी लेडी सेक्रेटरी हो तो रिकमेड करिएगा। साडीवाली बगाली सेक्रेटरी रखने मे भी हमे कोई आपत्ति नही है।"

सोमनाथ का काफी परेशानी हो रही थी। नौकरी नही पाने पर जिस जगत मे सोमनाथ प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है, उसके विषय म

बगालियो को कोई जानकारी नही है। बिजनेस के विषय मे इतने दिनो तक एक अस्पष्ट धूमिल धारणा थी सोमनाथ के मन म—बिजनेस ऐसी चीज है जो बगाली नही कर सकते, क्योकि उनमे धैर्य नही है। सोमनाथ ने अब समझ लिया है, बिजनेस हजारो तरह के हैं। पर जिस व्यापार-जगत मे वह आगे बढने की व्यथ चेष्टा कर रहा है, उसमे दीघकाल के षडयन्त्रा की गन्दगी भरी हुई है। बिजनेस के अनेक रहस्य वशानुगत रूप मे गुप्त रखे जाते हैं, जिन्हे एकदम निकटतम व्यक्ति को छोड कोई नही जान पाता।

नटवर मित्तिर को सोमनाथ और आदक बाबू चाहे जितना नापसन्द करें, लेकिन उन्होने भीतर की बहुत-सी खबरें बता दी हैं, जो सारा जीवन बहत्तर नम्बर कमरे की ग्यारह नम्बर मेज पर बैठने के बाद भी सोमनाथ नही जान पाता।

मि० गोयनका के विषय मे भी, लगता है नटवर बाबू कुछ सहायता कर पायेंगे।

गले की टाई कुछ इच ढीली कर नटवर मित्तिर अपने दफ्तर मे बठे थे।

सोमनाथ को देख थोडा हँसकर नटवर मित्तिर बोले, "आइए, मि० बनर्जी! मुह देखकर ही समझ रहा हूँ, कुछ हो नही पा रहा। कितने ही हरियाणवी, पजाबी, राजस्थानी, सिन्धी डाकुओ ने बिजनेस के नाम पर सोनार बागला (स्वणभूमि बगाल) को लूट खाया। हम लोगो ने सिफ अगूठा चूस चूस ही दिन बिता दिये।"

सोमनाथ ने पूछा, "आप मि० गोयनका को पहचानते है?"

"बिजनेस मे हूँ इस कलकत्ते मे कम से-कम डेढ सौ गोयनका को पहचानता हूँ। आप किसकी बात कर रहे हैं?"

सोमनाथ ने परिचय दिया। नटवर थोडा मुस्कराकर बोले, "महात्मा मिल्स के सुदशन गोयनका की बात कर रहे हैं? लाडले जँवाई-जसा चेहरा है न जिसका?"

'हो हो' कर हँसे नटवर मित्तिर, "लगता है, आप वहाँ भी माल

बेचने की कोशिश कर रहे हैं ?"

"क्या, पार्टी खराब है क्या ?" नटवर मित्तिर की बातचीत के तर्ज से सोमनाथ को चिन्ता हुई।

"पार्टी किस दुख से खराब होने लगी, पर माटी बडी सख्त है !" टाई को और भी ढीला कर नटवर मित्तिर बोले, "मेरी एक पार्टी वहाँ फंस गयी थी। किसी भी तरह छुटकारा नही मिल रहा था। अन्त मे पाँच सौ रुपये के कान्ट्रैक्ट पर मुझे भेजा गया। मैंने कई बार प्रयास कर अन्त मे एक दिन गोयनका को ड्रिंक की टेबुल पर बैठाया, तब जाकर काम बना।

पर मि० गोयनका तो बोले कि वह शराब नही पीते !" सोमनाथ को थोडा आश्चर्य हुआ।

"आप अपरिचित अनजान व्यक्ति हैं। फिर आपको कहते भी क्या ? जैसा समय चल रहा है, हरेक से नही कहा जा सकता कि मुझे मुफ्त शराब पीना अच्छा लगता है। आपने तो सचमुच ही हँसा दिया, सोमनाथ बाबू !"

नटवर बाबू सामने झुक फुसफुसाकर बोले, "इस लाइन मे मेरी आँख डाक्टर बी० सी० राय जैसी है। पार्टी की छींक सुनकर बता सकता हूँ, कि मन मे क्या रोग है। आपके उस गोयनका को भी समझ गया हूँ। एक खुराक दवा मे जंगल का हाथी पालतू बन गया। मि० गोयनका अब मेरे मित्र की तरह हो गये है।"

'यही तो मि० गोयनका कह रहे थे। आपकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे। सोमनाथ ने बताया।

खूब सन्तुष्ट हुए मि० मित्तिर। गर्व से हँसकर बोले, "बल्कि देखिए, सिर्फ तिरपन रुपये की शराब का बिल बना था। आपके मकान के मि० मेहता ने हिन्दुस्तान होटल मे इन्ही मि० गोयनका पर साढे तीन सौ रुपये की फॉरेन ह्विस्की ढाली थी पर कर पाये कुछ ? '

सोमनाथ चुप रहा। नटवर बोला, "इतने घबरा क्यो रहे हैं, महाशय ? सेल करने मे कुछ टैक्स भी देना पडता है। इस लाइन मे इन सब खर्चों को सेल्स टैक्स समझना पडता है।"

सोमनाथ के व्यापार के बारे मे नटवर मित्तिर ने अब कुछ और प्रश्न किये। फिर बोले, "बहुत दुख से बता रहा हूँ, आपका मामला बहुत कठिन है। कुछ नकद रुपये खर्च करने से ही आप गोयनका का मान नहीं दे पायेंगे। कारण तो इसका अ आ क ख की तरह सरल है। वह जो ओप्थल्मिक व्हाइटनर और एक केमिकल आप बेचना चाहते है, इसके लिए मेरी ही जान पहचान की एक फर्म से गोयनका पिछले तीन वर्षो से प्रति सौ रुपये पर तीन रुपये के हिसाब से सलामी ले रहा है। आपको तो खुद ही ढाई परसेंट से ज्यादा कमीशन नहीं मिलेगा। तो क्या अपनी पाकेट से और आधा परसेंट देंगे ? मौजी के हाथ पाँव जोड अगर आप वही रेट देंगे तो भी लाभ नही होगा। किस दुख से गोयनका अपने देशवाले भाई को छोड आपके पास आयेगा ?

सोमनाथ उठ ही रहा था कि नटवर बोले 'आप एकदम निराश मत होइए। बाबा के भी बाबा हैं। जैसे हाइकोर्ट के ऊपर सुप्रीम कोर्ट। गोयनका को दूसरे रास्ते से पिघलाना पड़ेगा। मैं तो कल सुबह ही किसी और काम से, गोयनका से मिलने जा रहा हूँ। देखूगा आपके लिए भी कोई रास्ता निकाल सकता हूँ या नहीं।"

सोमनाथ बोला, "मुझे लगा कि आप पर उस भले आदमी का बहुत विश्वास है। यदि मेरे सम्बन्ध मे आप कुछ कह दें—मैं विश्वास योग्य हूँ, इतना ही वह जान लें।"

नटवर मुस्कराकर बोले, "इतना छटपटा क्या रहे हैं ? बैठिए, चाय पीजिए। जब इस लाइन मे पहले पहल आये तो आपका चेहरा कच्ची दूब सा था। इन कुछ ही दिनो मे क्या सूख गया ?"

'कुछ भी तो कर नहीं पा रहा हूँ, नटवर दा। मि० मौजी ने एक मौका दिया है, वह भी अगर हाथ से निकल जाये तो ?"

नटवर मित्तिर के पास दिल है। सोमनाथ की बात सुनकर तमक उठे। बोले, "आप चिन्ता मत कीजिए। मुझ पर छोड़ दीजिए। महात्मा मित्त के गोयनका को मैं आपके कब्जे मे कर दूगा। आप चिन्ता मत कीजिए आपसे इस केस के लिए मैं कोई फीस नही लूँगा।"

नटवर मित्तिर क्या करते-करते क्या कर बैठेंगे—कोई नहीं जानता

तो भी सोमनाथ ने आपत्ति नहीं की। बीच-बीच म वह हताश भी हो उठता है। मन मे आ रहा है—इस पार या उस पार, कुछ भी हो जाय।

दूसर दिन शाम को फोन करके, नटवर मित्तिर ने सोमनाथ को बुलाया।

वह अत्यधिक प्रसन्न दीख रहे थे। अपनी गजी खोपडी पर हाथ फेर नटवर बोले, 'लगता है आपका भाग्य खुल गया, मि० बनर्जी! गायनका को जो कहना था, कह आया हूँ।"

सोमनाथ बहुत उत्साहित महसूस कर रहा है। उसने नटवर बाबू को कृतज्ञता से भर हार्दिक धन्यवाद दिया।

नटवर बाबू दाशनिक की तरह बोले, 'केवल रुपयो से ही सारे काम नही बनते, मि० बनर्जी! हमारी इस लाइन मे रुपये से बडी चीजें भी हैं। सुप्रीम कोट के बाद भी जिस तरह राष्ट्रपति के पास मर्सी पेटिशन' है, उसी तरह।"

नटवर मित्तिर अब सामने की ओर झुक गये। बोले, "गोयनका के सम्बध म थोडी खोज खबर ली। फारेन मे इसी को कहते हैं—फील्ड रिसच। गुप्त अनुसधान के मुताबिक गोयनका की नब्ज पकडते ही सारी खबरें एक एक कर मिल गयी। यू विल बी ग्लड टू नो (आपको जानकर प्रसन्नता होगी) कि गोयनका को बहुत सारे दुख हैं। पैसे के लोभ मे केजरीवाल की लगडी बेटी से विवाह किया है। इतना सुदर कामदेव सा चेहरा है, फिर भी देह की बहुत सी साधे पूरी नही हो पायी।

सोमनाथ का चेहरा लाल हो उठा है नटवर बाबू ने यह गौर नही किया। वह बोलते गये, "कम उम्र की लडकियो का उसे खूब आकपण है, लेकिन डरता भी बहुत है। मैंने भी चास समझकर तुरत ही आपके नाम का जाल फेंका। कहा है, जिस दिन कलकत्ते आयेंगे कृपा कर फोन उठा, बनर्जी को सूचना दे दीजिएगा और शाम फ्री (खाली) रखिएगा।'

नटवर मित्तिर आशा कर रहे थे सोमनाथ इस दुरूह काम के लिए उन्ह धन्यवाद देगा। वह बोलते रहे, "बहुत सस्ते मे आपका काम हो जायेगा। सारा इतजाम मैं कर दूगा, आपको कोई फिक्र करने की

हल हो जाती। पर ताकत कहा है ? एटम बम तो दूर की बात है, कलकत्ते की सड़क पर खड़े होकर दो एक हरामजादो के गाल पर थप्पड मारने-जितना साहस भी भगवान ने सोमनाथ का नही दिया है।

ऐसी मन स्थिति मे सेनापति ने आवाज दी, "बाबू, आपका फोन !"

"हलो, मैं तपती बोल रही हूँ।"

तपती को भी फोन करने का और कोई वक्त नही मिला ? सोमनाथ की गम्भीर आवाज सुनायी पडी, "कहो।"

' थोडी देर पहले भी तुमको फोन किया था। सुना तुम किसी मि० नटवर मित्तिर की आफिस मे गये हो।"

'बहुत काम-काज रहता है, तपती !" सोमनाथ ने उसके प्रश्न को टालने की कोशिश की।

तपती बोली ' क्यो ? उस दिन के बाद तुमने तो मेरी खोज खबर ही नही ली ?"

सोमनाथ क्या कहे ? फिर अन्त मे उत्तर दिया, "तपती, कई लोगो के साथ मीटिंग चल रही है—वे बठे हैं। फिर किसी दिन मिलेंगे।"

"कल मैं नही रहूँगी। श्रीरामपुर जा रही हूँ। जालमोस्ट जाने को बाध्य हूँ। परसो तुम्हारे यहा आऊँगी। मिलन पर सब बताऊँगी। काफी सीरियस बात है।"

सोमनाथ ने फोन रख दिया। अग्रेजी और बगला तारीखो का मिला जुला कैलेण्डर सामने लटका हुआ था। परसो सोलह जून है, अर्थात पहला आषाढ।

जन्म दिन उत्सव और आनन्द का दिन क्यो है, यह प्रश्न पहले प्राय सोमनाथ के मन मे आता था। जन्म लेते समय शिशु रोता है—उसके सारे जीवन के दुख और यन्त्रणाओ का वही तो आरम्भ है। तो भी सब कहते है जन्म दिन पर खुशी मनानी चाहिए। बहुत दिन पहले माँ से भी यही प्रश्न पूछा था सोमनाथ ने, ' जन्मवाले दिन तो मैंने तुम्हे बहुत कष्ट दिया था, तो भी तुम पहले आषाढ को खुशी क्यो मनाती हो ?"

मा बोली थी, 'तू चुप रह। और कोई दिन होता तो तुझे डांटती।"
जन्म दिन पर मां किसी को डांटती नही थी। बल्कि खीर बनाती थी।
उसके बाद इस घर में पहले आषाढ़ पर उत्सव होना बन्द हो
गया। जोधपुर पार्क के इस मकान मे जन्म दिन पर ही एक दिन मृत्यु
का घना अन्धकार छा गया था। पहला आषाढ़ अब केवल सोमनाथ का
जन्म दिन ही नहीं, मां की मृत्यु का दिन भी है।

आज सोमनाथ का जन्म दिन है, यह अब कौन याद रखेगा?
सुबह-सुबह बिस्तर पर लेटा लेटा सोमनाथ सोच रहा था। पर, किस
काल में उज्जयिनी के प्रिय कवि ने अपनी कल्पनाओं में 'आषाढस्य
प्रथम दिवसे' को काव्य की माला पहना, अविस्मरणीय कर दिया था।
उससे ही ध्वनित हो अनेक शताब्दियों के बाद भी आज घर घर मे विरह-
मिलन की रागिनी बज उठेगी। थोड़ी देर बाद ही रेडियो पर महाकवि
और उनकी अमर रचनाओं के प्रति संगीतांजलि शुरू होगी। पर कौन
याद रखे कि बेकार, व्यर्थ कवि सोमनाथ बनर्जी ने भी उसी दिन पृथ्वी
पर प्रकाश देखा था? छन्द के मन्त्र पढ़ प्रेम प्रीत चाह को यह भी
अमरत्व प्रदान करना चाहता था।

जन्मोत्सव के पहले दिन ही कितने लोगों के यहाँ अभिनन्दन की
गरमा गरमी शुरू हो जाती है। फूल आते हैं, फोन आते हैं, रंगीन
टेलिग्राम पहुँचा जाता है डाकघर का चपरासी। लेकिन सोमनाथ के
भाग्य में आया है, बुरे संवाद का संकेत। हीरालाल साहा ने दो हजार
रुपय लिये थे, उन्हें कल लाभ सहित वापस देने की बात थी। भाभी का
सोमनाथ ने एक संकेत भी दे रखा था—पहले आषाढ़ को उसको एक
प्रेमोपहार मिलने की सम्भावना है। इस बार सोमनाथ कोई भी प्रतिवाद
नहीं सुनेगा। कमला भाभी बोली थी 'ठीक है। यदि सचमुच ही कोई
अच्छी बात हुई—तो तुम्हारा उपहार ले लूंगी। तुम्हारे भैया को भी
सनक मिल जायगा—समझते हैं उनको छोड़ मुझे कोई उपहार दे ।पाता
नहीं है।' पर पिछली रात हीरालाल को, सोमनाथ किसी भी तरह
नहीं ढूंढ पाया। दो-चार दफ्तर जाने पर भी मुलाकात नहीं हुई।
सुबह कुनकुन एक बार किसी काम से कमरे में आयी। पर क्रमश

नहीं बोली। सोमनाथ का आज जन्म दिन है, यह छोटे भैया की बालिका-वधू को ध्यान भी नहीं है। भैया सितम्बर में दफ्तर के काम से विलायत जा सकते हैं, यह खबर ही वह सुना गयी। बोली, ' मैं छोड़ूँगी नहीं। जैसे भी हो, किसी तरह मैं भी विलायत जाने के लिए मनेज करूँगी।"

सोमनाथ बोला, ' चेष्टा करती रहो—प्रतिदिन दो घण्टे के हिसाब से घनघनाती हुई भैया की लाइफ मिजरेबल करो।"

बिस्तरे पर उठकर बैठने में सोमनाथ को बहुत कमजोरी महसूस हो रही है। इस घर में वह कोई नहीं है। थोड़े दिनों के लिए जैसे अतिथि बनकर वह जोधपुर पार्क में आया था। निर्धारित समय के बाद भी अतिथि विदा नहीं हो रहा है। यह कमरा, यह पलंग, बिस्तरा, यह मेज, यह फूलदार चाय का कप—इन सब पर उसका कोई अधिकार नहीं है। भद्रता से अब भी गृहस्वामी अतिथि की खातिर करते हैं। सोमनाथ सब पर सन्देह कर रहा है। भय होता है, लगता है कि भाभी भी अब थक जायेंगी।

दरवाजा खोल, सोमनाथ मकान के बाहर बरामदे में खड़ा होने जा रहा था। इसी समय दुबले पके हुए चेहरेवाले एक वृद्ध सज्जन को पुरानी आस्टिन गाड़ी से उतरते देखा। महाशय ने द्वैपायन बाबू के लिए पूछा। बाबूजी से मिलने ऊपर जाने के पहले, भद्र पुरुष ने कनखियों से सोमनाथ को घूरकर देखा।

ये महाशय पिछले सप्ताह दो-तीन बार आये थे। बाबूजी के साथ बहुत देर तक पता नहीं क्या क्या बातचीत करते रहे। बुलबुल भैया के दफ्तर की टिफिन के लिए सैंडविच तयार कर रही थी। सोमनाथ ने पूछा, "कौन हैं ये ?"

सैंडविचों का अल्यूमिनियम फायल में मोड़ते मोड़ते बुलबुल ने ओठ टेढ़ा कर लिया। उसके दिमाग में कोई शैतानी है, यह सन्देह सोमनाथ को हुआ।

सोमनाथ बोला, "ओठ टेढ़ा कर रही हो, क्यों ?'

और भी ओठ टेढ़ा कर बुलबुल बोली, "वाह रे ! अपने ओठ भी टेढ़े नहीं कर सकती ?"

सोमनाथ को यह सब अच्छा नही लग रहा है। बुलबुल बोली, "अधीर क्या हो रहे हो ? वक्त पर पता चल जायेगा।"

सोमनाथ और भी गुस्सा हो उठगा, ऐसा बुलबुल ने सोचा भी नही था। काफी खीझकर बुलबुल ने बता दिया, "आधा राज्य जिससे मिल जाय उसी के लिए बाबूजी बात चला रहे है, उसी के साथ समझ गये ता।" यह कह बुलबुल गुस्से म भनभनाती अपने कमरे में चली गयी।

दुबले बूढे भद्र पुरुष ने आधा घण्टा बाद विदाई ली। इसके बाद ही ऊपर स बडी बहू के लिए आवाज आयी। दसेक मिनट तक बाबूजी से 'शिखर वार्त्ता' सम्पन्न कर भाभी नीचे आ गयी। छोटे भैया के साथ आड म पता नही उनकी क्या बातचीत हुई। भाभी फिर ऊपर चली गयी।

सोमनाथ ने बाथरूम मे छोटे भैया और बुलबुल की आपसी बातचीत सुनी। बुलबुल फुसफुसाकर कह रही थी 'तुम इन सबम मत पडना। बाबूजी की जो इच्छा हो करे। लडका भी तो अब दुधमुहा नही है ?'

नहाने के शावर के नीचे खडा सोमनाथ स्वय को शान्त रखने का प्रयत्न कर रहा है। बहुत सारे पहले आघात से सोमनाथ का परिचय हुआ है—पर कोई भी पहला आघात, आज जसा निरथक प्रतीत नही हुआ था सोमनाथ को। सोमनाथ अब बचपना कर बठा। पानी की धारा मे आँख खोल अचानक वह पूछ बैठा, 'मैंने क्या दोष किया है ? तुम्ही बताओ। मैंने तो कोई अपराध नही किया—मैं सिफ एक नौकरी ही तो नही ढूढ पाया।"

पर ये सब प्रश्न सोमनाथ किससे पूछता है ? सोमनाथ अब नाबालिग तो है नही। इस प्रकार के प्रश्न करन का अधिकार तो एकमात्र बच्चो को होता है। इसके उत्तर की आशा वह किससे करे ? ऊपर बरामदे मे मतप्राय जो दुबल वद्ध बैठे हैं, वह जवाब देगे या माँ—आकाश के उस पार के किसी इन्द्रजाल से कुछ देर के लिए आ सोमनाथ की समस्या का हल करेंगी ? कोई भी ये सब प्रश्न नही सुनेगा। जानकर भी उत्तर देने की जिम्मेवारी उनकी नही है, केवल बेचारी कमला भाभी ही सोमनाथ का हाथ कसकर पकड लेगी और उसके गम माथे पर ठण्डा हाथ फेर देंगी।

सोमनाथ के बाथरूम से निकलते ही कमला भाभी ने कहा, "बाबूजी तुमको बुला रहे हैं।"

हमेशा ही बाबूजी जिस तरह पूव की तरफ मुह किये आराम-कुर्सी पर बालकनी मे बैठे रहते है, उसी तरह बैठे थे। किसी तरह की भूमिका बाधे बिना वह बोले, "तुम आत्मनिभर बन सको, इसका एक अवसर आया है। नगेन बाबू आये थे—उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। खुद की सिमेंट की दुकान है। उनके लडका नही है—तीन लडकियाँ ही हैं। यदि छोटी लडकी से तुम्हारा सम्बन्ध हो जाय तो तुमको ही दुकान दे देंगे।"

बाबूजी के सामने बोलने की, विशेषकर प्रतिवाद करने की, आदत इस परिवार मे किसी की नही है। तो भी सोमनाथ बोला "आत्मनिभर होना कसे हुआ ?"

बाबूजी ने अब मुँह उठा अवनाकारी पुत्र की ओर देखा। फिर बोले, "उनका परिवार अच्छा है। अपने लायक सम्बन्ध है। लडकी के बायें हाथ मे थोडा सा फिजिक्ल डिफेक्ट है। दखने मे बुरी नही है, सुलक्षणा। सातवी क्लास तक पढी है। मैंने सोचकर देखा, तुम्हारी समस्या का हल इसी से होगा। बहूरानी के पास लडकी का फोटो है, तुम देख सकते हो।"

बिना कोई जवाब दिये ही सोमनाथ नीचे आ गया। बुलबुल ने पूछा, ' फोटो देखोगे ?"

सोमनाथ ने डाँट बतायी, "तुमको पचायत करने की जरूरत नही।"

लडके के रग ढग से ही बाबूजी ने कुछ अन्दाज लगा लिया। तभी फिर से बडी बहू को बुलाकर सलाह की।

इस तरह की बात से बाबूजी सन्तुष्ट नही यह कमला जानती है। बाबूजी की बिल्कुल इच्छा नही थी। पर कही से भी आशा की कोई किरण न देखकर उन्होंने यह फैसला किया था। इस देश मे सोमनाथ को नौकरी नही मिलेगी, यह अनेक कोशिशो के बाद द्वैपायन समझ गये थे।

बडी बहू सोमनाथ को बुलाकर आड मे ले गयी, सस्नेह देवर से बोली "राजी हो जाओ, देवर—जब बाबूजी की इतनी इच्छा है।"

"इससे अधिक अपमान की बात मैं कुछ भी नही सोच सकता,

भाभी !" सोमनाथ के सामने कमला की जगह अगर और कोई होता तो वह अब तक क्रोध से फट पड़ता।

भाभी के चेहरे पर उद्वेग का कोई चिह्न नहीं। देवर की पीठ पर हाथ रख बोली, "कुछ अन्यथा मत सोचना—बाबूजी की धारणा है कि जीवन मे प्रतिष्ठित होने के लिए यही अन्तिम अवसर है।"

सोमनाथ ने भाभी की आखो की ओर नही देखा। मुह घुमा लिया। भाभी बोली "कौन जानेगा कि तुम्हारा विवाह यहाँ क्यो हो रहा है।" इसके बाद बाबूजी ने जो कहने को कहा था, वह कमला भाभी जबान पर नही ला सकी। बाबूजी ने हुक्म दिया था, "उसको बता दो इस तरह का मौका हमेशा नही आता। और बात न मानने पर, इस परिवार का कोई भी, उसके लिए जिम्मेदार नही होगा।"

यह बात न सुनने पर भी, बाबूजी ने भाभी के माध्यम से चरम सन्देश भेजा है, यह सोमनाथ की समझ मे आ गया। भाभी का हाथ पकड़ सोमनाथ बोला, "कम-से कम तुम मुझे अपने आपके सामने छोटा होने के लिए मत कहो भाभी।"

कमला भाभी बेचारी घमसकट मे पड गयी। पात्री (लड़की) का फोटो उनके हाथ मे है। बाबूजी का निर्देश है, सोमनाथ को आज ही 'इस पार या उस पार' कर लेना होगा।

बाबूजी को सँभालने के लिए कमला भाभी फिर ऊपर दौडी। बोली, 'जो भी हो, शादी विवाह की बात है। सोम दो एक दिन सोच ले।"

बाबूजी को सन्तोष नही हुआ। बोले, जो लडके नौकरी-चाकरी करते हैं, उनके मुँह से ये सब बातें शोभा देती हैं, बहू! नगेन बाबू के यहाँ और भी एक दो सम्बन्ध आये हुए हैं। अपने परिवार के लिए इतना सुन रखा है इसीलिए उनका आग्रह अधिक है।"

बेचारी कमला भाभी। परिवार मे सबको खुश रखने के लिए, किस तरह अपना चैन नष्ट कर रही है।

खा पाकर कपड़े पहन बैग हाथ मे ले, सोमनाथ जाने की तयारी कर रहा था। छोटे भैया काफी पहले ही चले गये हैं। अब कमला भाभी सोमनाथ के कमरे मे आयीं। कितनी मधुर हसी है कमला भाभी की।

सोमनाथ की ओर देख कमला भाभी स्नेह सिक्त स्वर में बोली, "मुझ पर गुस्सा हो, खोकोन ? '

सोमनाथ ने मुश्किल से स्वय को सँभाला । फिर मन-ही मन बोला, 'पापी हुए बिना तो तुम्हारे ऊपर क्रोध कर नहीं पाऊँगा, भाभी !'

भाभी ने अब दायाँ हाथ बढाकर कहा, "झगडा नहीं, मेल करो—आज तुम्हारा जन्म दिन है । याद है, माँ तुमसे क्या कहा करती थीं ? जन्म दिन पर सबको प्यार करना चाहिए, किसी का अहित नही करना चाहिए, खुद भी खूब अच्छा बनने की कोशिश करनी चाहिए, सबको सुखी रखने की कोशिश करनी चाहिए ।' सोमनाथ पत्थर की तरह जड खडा रहा ।

भाभी ने अब आँचल की ओट से घडी का एक डिब्बा निकाला । एक कीमती स्विस रिस्ट वाच देवर के हाथ मे बाँध दी, कमला भाभी ने । फिर बोली, "अमर जब स्विटजरलैंड गया था, तब तुम्हारे लिए मँगवायी थी—जन्म दिन पर दूगी, सोचकर किसी को नही बताया ।" भाभी के छोटे भाई का नाम अमर है ।

सोमनाथ की आँखो मे पानी आ रहा है । उसने एक बार कहना चाहा, 'क्यो दे रही हो ? यह सब मुझे नही शोभता ।' पर भाभी की असीम स्नेह भरी आँखो की ओर देख, वह कुछ भी नही बोल सका । सोमनाथ की इच्छा थी कि वह कहे 'पूर्वजन्म मे तुम मेरी क्या थी ?' पर सोमनाथ के कण्ठ से स्वर नहीं फूटा ।

कमला भाभी मानो अन्तर्यामी हैं । क्षण भर मे ही सब समझ गयी । बोली, ' तुमको देर हो रही है, खोकोन !"

जोधपुर पार्क मे बस स्टैंड के पास एक सज्जन मिल गये । उन्होने अपना परिचय स्वय ही दिया—"तुम सोमनाथ हो ना ? मैं तुम्हारे मित्र सुकुमार का पिता हू । सुकुमार एकदम पागल हो गया है । दिन रात जेनरल नालेज के प्रश्नोत्तर बोलता रहता है । बहना को भी एक दो दिन मारा पीटा । रस्सी से हाथ-पर बाँधकर कई दिन रखना पडा था । दिमाग

मे 'इलेक्ट्रिक शॉक' देने के लिए बोलते हैं, पर हर बार सोलह रुपये का खर्चा है।"

'लुम्बिनी पाक अस्पताल मे किसी से परिचय है क्या ? सुना है, वहाँ फ्री देखत हैं।" सुकुमार के पिता वीरेन बाबू ने पूछा। भले आदमी रिटायर हो गये हैं। पत्नी को भारी रोग है—उनको भी फिटस आते है। लडकियाँ ही घर चला रही हैं। मँझली लडकी एक छोटा मोटा काम कर रही है। नही तो, पता नही क्या होता।

"मैं पता लगाऊगा," यह कह सोमनाथ गोल पार्क को ओर चलने लगा। बसस्टड पर खडा रहना अच्छा नही लगा।

तो पृथ्वी ठीक ही चल रही है। शिल्प, साहित्य सगीत और सस्कृति के शीर्ष केन्द्र इस सुसभ्य नगर कलकत्ता के गतिमान जन-स्रोत की ओर देख रहा है, सोमनाथ। आभिजात्य दक्षिणी कलकत्ते के नये बने गगनचुम्बी प्रासाद सुबह के सुनहले *प्रकाश म झिलमिल कर रहे हैं। 'नौकरी ! नौकरी !'* करता हुआ एक निरापराध स्वस्थ लडका पागल हो गया—इस सुसभ्य समाजवादी समाज मे उसके लिए किसी के मन मे कोई दुख नही, कोई चिन्ता नही, कोई शम नही।

ऐसा लगता है कि सोमनाथ की आँखो की कोरो मे पानी आ रहा था। निममता से अपन को सयत किया सोमनाथ ने, 'मुझे क्षमा करो, सुकुमार ! मैं तुम्हारे लिए आसू तक नही गिरा पा रहा हूँ। मैं अपने-आपको डूबने से बचाने के लिए प्राणण्न से तैरने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन मुझे डर लग रहा है, मैं तुम्हारी ही तरह डूबता जा रहा हूँ।'

कौन कहता है, सोमनाथ मे मनोबल नही है ? सारी मानसिक दुबलताओ को वह निममता से मन से हटा, व्यापार की बात सोच रहा है।

हीरालाल साहा से नफे के रुपये वसूल करने के लिए जाते वक्त रास्ते मे एक कपडे की दुकान पर सोमनाथ की नजर पडी। जन्म दिन पर वह भाभी को कुछ देगा यह उसने सोच रखा था। वहा से सोमनाथ ने एक तांत की साडी खरीदी। हीरालाल बाबू के पहलेवाले डेढ़ सौ रुपये पाकेट

में ही घूम रहे थे। कुछ सोच एक और साड़ी सोमनाथ ने खरीद ली। बुलबुल तो शायद इतने कम दाम की साड़ी पहनेगी ही नहीं। छिपाकर माधव की महरी को दे देगी। पर बड़ी भाभी का यह स्वभाव है, कि अकेली उन्हीं को देने पर वह लेंगी ही नहीं।

साड़ी के दो पैकेट हाथ में लिये हीरालाल बाबू की आफिस में जाते ही सोमनाथ का बुरी खबर मिली। हीरालाल साहा ने उसे डुबा दिया है। दो हजार रुपये, लगता है, पानी में गये। कातर स्वर में सोमनाथ बोला, 'हीरालाल बाबू, आपके पास बहुत रुपये हैं। पर ये दो हजार रुपये मेरे लिए सर्वस्व हैं।'

हीरालाल बाबू पर कोई असर नहीं हुआ। दाँत निपोरते हुए बोले, 'व्यापार में जब आये हैं, तब ठण्डा गर्म तो देखना ही होगा। महाशय, मैं आपको ठग तो नहीं रहा हूँ। एलगिन रोड का मकान ले ऐसे फँस जाऊँगा यह कौन जानता था? लारी ले मकान तोड़ने परसों पहुँचा तो सुना किसी ने मकान तोड़ना बन्द करवाने के लिए कोर्ट से इनजंक्शन लगवा दिया है।'

सिर पर हाथ धरे बैठा रहा सोमनाथ। हीरालाल बाबू बोले, "सिर्फ दो हजार रुपया के लिए आप विधवाओं से भी ज्यादा टूट गये। इनजंक्शन हमेशा नहीं रहेगा मकान भी टूटेगा, और रुपया भी मिलेगा। पर समय लगेगा।"

'कितना समय?" सोमनाथ ने करुण स्वर में पूछा।

यह जानकारी हीरालाल बाबू को नहीं है, 'कोर्ट का काम है तो दो-तीन वर्ष तो कुछ भी नहीं हैं।

अपनी आफिस में आ मृतप्राय सोमनाथ पत्थर की तरह बैठा रहा। जन्म-दिन की शुरुआत बढ़िया हुई है। वह भाभी को कैसे मुँह दिखायेगा?

चुपचाप शान्त बैठने की भी फुरसत नहीं है। मि० गोंजो ने फोन किया है। अभी बुलाया है।

भाभी की दी हुई नयी घड़ी की ओर सोमनाथ ने देखा। अचानक

याद आया, तपती के आने का समय हो गया है। सेनापति को बुलाकर कहा, एक दीदी आ सकती है। सेनापति उनको बैठने के लिए कहे। सोमनाथ कुछ देर के लिए जरूरी काम से बाहर जा रहा है।

सीढी पर ही दीदी मणि मिल गयी। तपती बोली "वस मे बहुत भीड थी, देर हो गयी।"

सोमनाथ कुछ नही बोला। लगता है, समय के बाजार मे आग लगी हुई है—जिसको जितने समय की आवश्यकता है, उसको उतना नही मिलता है।

लगता है, तपती का मन बठने का ह। पर सोमनाथ के पास समय कहा ? मि० मौजी उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

तपती उसको जन्म दिन की वधाई नही दे रही है। आज पहला आपाढ है, यह क्या उसे याद नही ?

इन थोडे ही दिनो मे तपती जसे सूखकर आधी रह गयी है। तपती की आखो के नीचे काले काले दाग पड गये हैं। मोटे फ्रेम का चश्मा भी दाग नही ढँक पा रहा है। तपती ने एक अति साधारण सफेद साडी पहन रखी है। फीके नीले रग के ब्लाउज पर ठीक से इस्त्री भी नही की हुई है। तपती वेचारी हाफ रही है। प्राय रोती रोती सी अब वह सोमनाथ स बाली 'तुम मेरे लिए कुछ नही सोचते।"

क्या हुआ तपती को ? एक बालिग लडके के सामने, एक कमसिन लडकी को इस तरह असहाय भाव से रोते देख रास्ते के लोग क्या सोचेग ?

तपती कातर स्वर म बोली, 'तुम चिट्ठी नही लिखते, खबर नही लत, मुझसे मिलते भी नही। आफिस टाइम मे एक लडकी के लिए इस चितपुर रोड पर आना कितना कष्टप्रद है ! आदमी सब जानवर हो गये हैं। भीड के बीच बस के दरवाजे के पास लडकिया का दबा लेने के लिए क्या क्या नही करते हैं।"

सोमनाथ चुप है। तपती ने उसके मुह की ओर देखते हुए करुण भाव से पूछा, "कही तुम नाराज तो नही हो रहे ? मेरी साडी का पल्ला फाड दिया है, और थोडा अधिक होने से सडक पर गाडी के नीचे दब जाती।"

सोमनाथ का चेहरा लाल हो उठा। दाँत भीचकर बोला, "कलकत्ता शहर जगल से भी गया-बीता होता जा रहा है, तपती! और खासकर इस इलाके मे तो कुछ गोरिल्ले भी हैं।"

तपती स्तब्ध हो उसका मुह असहाय भाव से देखती रही। फिर बोली "घडी क्या देख रहे हो? तुमसे मुझे बहुत सी बातें करनी हैं।"

"तपती! जिस व्यक्ति से मुझे बिजनेस मिल सकता है, वह मेरी प्रतीक्षा कर रहा है"

तपती बोली, 'तब तो तुमको रोका नही जा सकता। सुनो, घर म विवाह के लिए बहुत दबाव दे रहे हैं। मेरे लिए बादवाली दोना बहनें अकारण कष्ट पा रही हैं—उनके विवाह का समय हा गया है।"

जिस व्यक्ति के पास नौकरी नही आमदनी नही, अपना आश्रय नही—उसको यह सब कहकर अपमानित करने से क्या लाभ? सोमनाथ बोला, "विवाह कर डालो, तपती!"

'तुम अब भी मुझे इस तरह कष्ट देना चाहते हो?" तपती कातर हो उठी, घर मे भयकर झगडा मचा हुआ है। गुस्सा हो, श्रीरामपुर मौसी के घर चली गयी थी। सोम, हम लोगो को अपना हिसाब पक्का कर लेना चाहिए। चलो, हम लोग विवाह की रजिस्ट्री करवा लें। घर के लोग तब दबाव डालकर भी हमारा कुछ नही कर सकेंगे। रोज रोज की यह अशान्ति मुझे अच्छी नही लगती।"

सोमनाथ मे 'हाँ' कहन की क्षमता नही है। 'आज इस जन्म दिन पर, लाखो आदमियो के सामने हे ईश्वर! पराश्रित बेकार सोमनाथ को क्यो इस तरह सता रहे हो? मुझे जो दण्ड देना चाहो दो पर एक निष्कलक लडकी के प्रथम पवित्र प्रेम को क्यो इस प्रकार अपमानित कर रहे हो हे ईश्वर?'

पर किससे यह प्राथना कर रहा है सोमनाथ? ईश्वर कहा है?

सामनाथ के मुह की ओर अधीर आग्रह से एकटक देख रही है, तपती। प्रगाढ स्वर मे उसने अनुरोध किया, "क्या? कुछ बोलो।"

कही भी अगर थोडी सी आशा का प्रकाश सोमनाथ देख पाता ता अभी ही तपती को इस असह्य अपमान से मुक्ति दिला देता। अब और

चुप नही रहा जा सकता। सोमनाथ कापते स्वर मे बोला, "मुझे थोडे समय की भीख दे सकती हो, तपती ?"

"तुम मेरी स्थिति समझ रहे हो, सोम ?" रुँधे गले से तपती बोली, "बाबूजी, मा, भाई, बहन, कोई भी मेरे पक्ष मे नही है। अब तुम पीछे हट जाओगे तो मेरा क्या रह जायेगा ?"

जिसके नौकरी नही, आमदनी नही, उसको इस समाज म आदमी नही कहा जाता—वह भरोसा करने योग्य नही—इतनी साधारण-सी बात बुद्धिमती तपती क्यो नही समझ पा रही है ?

तपती बोली, ' मैं तो तुमसे कुछ भी नही चाहती। केवल मुझे लेकर एक बार रजिस्ट्री आफिस चलो।"

' तपती, स्त्री के भरण पोषण का दायित्व पुरुष का है—हजारो वर्षों से यही नियम चला आ रहा है।" सोमनाथ बात खत्म नही कर पाया।

पर तपती अविचलित है। वह बोली, "वह सब मैं कुछ नही समझना चाहती। कल मैं फिर आऊँगी।"

मि० मौजी की आफिस से आ सोमनाथ, बहत्तर नम्बर कमरे मे ग्यारह नम्बर सीट पर, सिर नीचा किये बठा है। आज इस पहले आषाढ को ही, उसके जीवन के सब अध्यायो की एकसाथ ही दुखान्त परिणति हानेवाली है। बाबूजी ने नोटिस दे दिया है हीरालाल बाबू ने डुबा दिया है, तपती समय देने मे असमर्थ है। बाकी बचे हैं मि० मौजी। वह भी बोले, जल्दी काम न लाने पर और अधिक समय नष्ट नही कर पायेंगे। केमिकल वेचने के लिए मिला मे नय लोगो को भेजेगे। मि० मौजी से भी समय की भीख मांगी है, सोमनाथ ने। कहा है कम से-कम एक सप्ताह का समय वे उसे और दे दें।

अत खेल समाप्त हो गया। व्यापार के नाम पर जो सामान्य पूजी थी, उसको डुबो रिटायर्ड डब्ल्यू० बी० सी० एस० द्वैपायन बनर्जी का कनिष्ठ पुत्र सोमनाथ बनर्जी, अब कहाँ जायेगा ?

'क्रिग, क्रिग।' सेनापति नही था। सोमनाथ ने ही फोन उठाया।

"हलो, हलो। मि० बनर्जी ?" महात्मा मिल से सुदर्शन गोयनका फोन कर रहे हैं "मि० बनर्जी, उस दिन आपके मित्र नटवर मित्तिर ने सब बताया था। मेनी थैंक्स। थोड़ा-सा समय मिला है। आज कलकत्ते आ रहा हूँ। ग्रेट इण्डियन होटल में, शाम आपके लिए फ्री रखूंगा, हलो, हलो पर सारी रात नहीं।"

सोमनाथ का हाथ काँप रहा है। गोयनका को जो कहना है, वह पहले से ही ठीक कर रखा था पर उसके बोलने के पहले ही गोयनका बोले 'तभी आपके केस को लेकर भी बात होगी—कोई अच्छी खबर हो सकती है।"

सोमनाथ जो कहना चाह रहा था, उसके कहने के पहले ही लाइन कट गयी। सोमनाथ ने दो-तीन बार लाइन मिलाने की कोशिश की, फिर टेलिफोन रिसीवर को यथास्थान रख माथे पर हाथ धर बैठ गया।

सोमनाथ अब और बाधा नहीं देगा। समय के स्रोत में स्वयं को डुबो देगा। गोयनका को ट्रंक-कॉल कर नहीं कहेगा कि व्यस्त है और नटवर मित्तिर ने जो सारी बातें कही हैं, उसके लिए सोमनाथ जिम्मेदार नहीं है।

सोमनाथ के लिए और कोई उपाय नहीं है। अब नटवर बाबू को *पकड़ने से ही काम होगा। भले आदमी यदि कहीं कलकत्ते से बाहर गये* होंगे तो मरण है।

सोमनाथ को तेजी से काम करना होगा। सेनापति छिपकर बंधक का काम करता है। नयी सोने की घड़ी जमा रखकर क्या सेनापति पाँच सौ रुपये उधार नहीं देगा ?

कहते ही सेनापति तैयार हो गया। बोला, "पाँच सौ, छः सौ, जो इच्छा हो ले लीजिए बाबू !"

'तो छः सौ रुपये दे दो। अचानक एक पार्टी कलकत्ते के बाहर से आ रही है। कितना खर्च होगा, पता नहीं।' सोमनाथ बोला।

सेनापति ने कहा, "आपको उधार देने की चिंता नहीं है। आप शराब भी नहीं पीते, लड़कियों के पास भी नहीं जाते। बोस बाबू यदि शाम को रुपये माँगते हैं, तो मुझे चिंता होती है। व्यापार में न लगाकर वह सब रुपये होटल में दे आते हैं।

गोयनका का प्रतीक्षित फोन आया था और सोमनाथ ने अपना निर्णय बदल लिया है, यह सुन नटवर मित्र खूब प्रसन्न हुए। हाथ मिलाकर बोले, "यही तो चाहता हूँ, सच्ची बात कहने में क्या है—जैसी पूजा वैसा मन्त्र।"

नाक में चुटकी भर नसवार भरकर नटवर बाबू बोले, 'लड़कियां का व्यापार करने देने में बंगालियों को कितनी आपत्ति है—पर जापान की ओर देखिए। बड़े-बड़े बिजनेस ट्रांजेक्शन गीशा घरों में बैठकर हो जाते हैं। लड़कियों पर खर्च की रसीद तक आफिस में जमा करवाकर जापानी लोग रुपये लेते हैं—उसका नतीजा देखिए। पृथ्वी पर आज चिपटी नाकवाले जापानियों का एक भी शत्रु नहीं है।"

सोमनाथ सिर झुकाकर बैठा रहा। नटवर बोले, 'इतनी दूर जाने की क्या जरूरत है? बंगाली लड़कियों को व्यवसाय में लगा, कितने ही सेठजी, इसी कलकत्ता शहर में लाल हो रहे हैं।'

सोमनाथ ने अपने स्नायुओं को शान्त रखने की प्राणपन से चेष्टा की।

गोयनका आज ही कलकत्ता आ रहा है, यह नटवर बाबू नहीं समझ पाये थे। खबर मिलते ही वह उछल पड़े। बोले "जहां शेर का डर हो वहीं शाम घिर आती है। गोयनका को और कोई दिन नहीं मिला। आज मैं अत्यधिक व्यस्त हूँ। एक बड़ी पार्टी को लड़की भेजकर खुश करना करना होगा, जबकि अभी तक कोई व्यवस्था नहीं हो पायी है। चलू-चलू कर रहा था कि इसी समय आप आ गये।"

घड़ी की ओर देखा नटवर बाबू ने। बोले "आपका तो छोटा-मोटा केस है। इस पार्टी ने मेरे एक मित्र को दो महीनों में छियासठ हजार रुपयों की कमाई करवा दी है। बहुत अनुरोध करने पर पार्टी ने मित्र की दावत मंजूर की है। मित्र भी आप जैसा ही है। व्यापार करता है, रुपये कमाता है, पर इन सब लाइनों की कोई जानकारी नहीं रखता। मुझ पर पूरी तरह भरोसा किये बैठा है। सुबह से तीन बार फोन किया है—भैया खर्च की चिन्ता मत करो। आदमी बहुत उपकारी है। किसी तरह की विपदा, कष्ट या नुकसान उसका नहीं होने पाये। मैंने कहा, उस

ओर से निश्चित रहो। इस लाइन में जब एक बार नटवर मित्तिर के पास आ गये हो, तब नाक पर सरसों का तेल लगा सो जाओ। नटवर मित्तिर इज नटवर मित्तिर।"

सोमनाथ की बोलती गायब हो रही है। वह सिर्फ सुनता जा रहा है। नटवर बाबू ने सिर खुजलाकर दुख प्रकट किया, "दो केस एकसाथ पड़ गये। तो भी आप चिन्ता मत कीजिए। गोयनका भी आपके लिए जीवन-मरण का प्रश्न है, यह समझ रहा हूँ। आपके लिए कोई व्यवस्था करनी ही होगी। लेकिन मेरे साथ घूमना पड़ेगा, क्योंकि दोनों केस एक साथ हैं एक की तो पूरी जिम्मेवारी सिर पर है। मित्र भी यहां नहीं है— पार्टी को लाने, कलकत्ते से बाहर चला गया है।"

नटवर ने घड़ी की ओर देखा। फिर हँसकर पूछा, "चेहरा क्यों सूख रहा है ? सोच रहे हैं, नटवर मित्तिर बहुत खर्च करवा देगा ? आपके केस में यह नहीं होगा। वह आपके बहत्तर नम्बर कमरे का श्रीधर शर्मा, उसके पास से तो प्रत्येक केस के कान मसलकर डेढ़ दो हजार रुपये वसूल कर लेता हूँ। पर आपके केस में माँ काली की सौगन्ध खाकर कहता हूँ एक भी पैसे का लाभ नहीं करूंगा।"

फिर घड़ी की ओर देख नटवर ने कहा, "गोयनका कहाँ ठहरेगा ? कहीं आपको ही जगह की व्यवस्था भी तो नहीं करनी है ?"

ग्रेट इंडियन होटल की बात सुनकर नटवर मित्तिर खुश हुए, "थोड़ी सुविधा हुई। अपने मित्र की पार्टी को भी वहीं ले जाने की सोच रहा था।'

नटवर बाबू ने दस मिनट का समय मांगा। बोले, "पोद्दार कोर्ट के सामने प्रतीक्षा कीजिए, ठीक दस मिनट बाद मैं आ जाऊंगा।"

रवीन्द्र सरणी और नयी सी० आई० टी० रोड का मोड़ पर एक जीर्ण लैम्प पोस्ट के पास, पत्थर की तरह खड़ा है—सोमनाथ बनर्जी।

रिक्शा, ठेला गाड़ी, बस, लारी और टेम्पो की भीड़ में ट्रफिक उलझ कर जाम हो गया है। इसी जमघट के बीच एक ट्राम का बूढ़ा ड्राइवर बागबाजार जाने की उत्कण्ठा में 'टन टन' करके घण्टी बजा रहा है।।

सोमनाथ को लगा, मानो एक प्रागैतिहासिक गिरगिट किसी तरह, काल के सतक प्रहरी की आँख बचाकर कलकत्ते के इस जन अरण्य को देखने आकर फँस गया है। वृद्ध गिरगिट मत्यु यन्त्रणा से बीच बीच मे कातर स्वर मे आत्तनाद कर रहा है। सामनाथ को दया आ रही है। पथ्वी पर इतन प्रशस्त राजमाग होत हुए भी किस दुर्भाग्य के मारे यह बेचारा इस जमघट भरी रवीन्द्र सरणी म फस गया? पहले के दिन होते तो सोमनाथ, सच ही एक कविता लिख बठता। शीपक देता, जन-अरण्य मे प्रागतिहासिक गिरगिट।

आज पहला आषाढ है, सोमनाथ को फिर याद आया। आकाश की ओर देखा सामनाथ ने। नही, आकाश म प्रथम आषाढ क उस प्रतीक्षित मेघदूत का काई चिह्न नही। यह विराट शहर मरुभूमि हो गया है—यहाँ अब वर्षा नही होगी। वर्षा होने पर सोमनाथ को बहुत खुशी होती। यहा खडा खडा वह भीगता। आषाढ की प्रबल वर्षा मे यदि सबकुछ कालगभ मे डूब जाता तो और भी अच्छा होता।

रवीन्द्र सरणी मे कितन ही लोग तेज रफ्तार से चल रहे हैं। दो एक चलनवालो ने सोमनाथ की ओर भी देखा। ये क्या जाने, तरुण सोमनाथ बनर्जी क्यो सडक पर खडा है? वह कहा जा रहा है?

यहा खडे खडे ही अतीत की एक अन्तहीन परिक्रमा सोमनाथ ने लगा ली। अपने जीवन की प्रत्येक घटना अब सोमनाथ स्पष्ट देख पा रहा है। सोमनाथ ने घडी की ओर देखा। नटवर मित्र देर कर रहे है। निर्धारित दस मिनट बीत चुके हैं।

दूर से हाफते हाफते नटवर बाबू आते दिखे। वाले, 'बडी आफत है! आज पहला आषाढ है यही सोच क्या बहुतो के मन मे रोमान्स जग रहा है? आफिस से उठ रहा था कि इतन मे आपके मित्र श्रीधरजी का फोन आ गया अपनी एक पार्टी के लिए कुछ व्यवस्था करवाना चाहते थे। मैंने कह दिया, आज मेरे लिए और कोई केस लेना सम्भव नही है। यदि बहुत ही जरूरी हो जाये, तो खुद रिपन स्ट्रीट मे मिस साइमन के पास चले जायें।"

"चलिए चलिए महाशय, पहले ग्रेट इडियन होटल ही निपटा लें।"

नटवर बाबू ने अपनी ढीली पैंट को कमर तक खींच, जल्दी मचायी।

ग्रेट इंडियन होटल में अपनी पार्टी के लिए स्पेशल कमरा रिजर्व करवाया मि० मित्तिर ने। ऐसा लगा, उनके साथ होटल के रिसेप्शनिस्ट की अच्छी जान पहचान है।

"आपकी बुकिंग कौन करेगा?" नटवर मित्र ने अब सोमनाथ से पूछा।

सोमनाथ को तो यह मालूम नहीं है। नटवर बाबू ने मीठी डाट बतायी, "डुबायेंगे महाशय? पूरी जानकारी रखनी चाहिए। गोयनका होटल बुक कर रहा है या आपको ही करनी होगी? जरा पता लगाकर देखूं।"

पूछने पर पता चला, मि० गोयनका के नाम से इक्कीस नम्बर आज सुबह ही बुक कर लिया गया है। राहत की साँस ली नटवर ने, 'बच गये—आजकल चाहते ही तुरंत ग्रेट इंडियन में बुकिंग नहीं मिल जाती।"

होटल से सोमनाथ बाहर आ गया है। नटवर बाबू ने फिर डाटा बिजनेस में अगर जमकर रहना चाहते हैं तो जन सम्पर्क अच्छी तरह सीखिए। हम लोगों को यह सब किसी ने नहीं सिखाया है—गिरते पड़ते, धक्के खा खाकर बीस वर्षों में सीखा है। यहाँ बैठ मि० गोयनका के नाम एक प्यारी सी चिट्ठी लिखिए। कहिए, 'वेलकम टू कलकत्ता (कलकत्ते में स्वागत है)। सब व्यवस्था पक्की है। मैं शाम सात बजे आ रहा हूँ।"

मंत्रमुग्ध की तरह सोमनाथ ने चिट्ठी लिख दी। नटवर मित्तिर बोले, "लिफाफे पर गोयनका का नाम लिखिए और बायीं ओर लिखिए—'टू वेट ऐराइवल' (आने की प्रतीक्षा करें)।"

नटवर मित्तिर ने नसवार ली। पूछा "यह सब क्या किया, बताइए तो? आपकी पार्टी सोचेगी—मि० बनर्जी का मैनेजमेंट खूब बढ़िया है। होटल में पैर रखते ही चिट्ठी मिलने पर गोयनका को और कोई उद्विग्नता नहीं रहेगी—कोई दूसरी पार्टी आकर कोई लोभ दिखा सस्ते में उससे अपना काम नहीं निकाल पायेगी।"

फिर बोले, "दस रुपये दीजिए। जब हो ही रहा है तो सबकुछ अच्छी तरह ही हो।"

रिसेप्शनिस्ट मि० जैकब से नटवर बोले, "भाई मेरे, मि० गोयनका के आने के साथ ही इक्कीस नम्बर कमरे में कुछ फूल भेज दीजिएगा और

साथ म मि० बनर्जी का यह् बाड दे दीजिएगा।"

आत्ममुग्ध हँसी हँसकर नटवर मित्तिर बोले, "प्राथमिक काम सब हो गये है। सोचता हूँ, रिटायर होने के बाद बगाल के लडको के लिए एक स्कूल खोलूगा। मिस्टर बनर्जी, बगालियों मे सब गुण हैं, लेकिन जन-सम्पर्क का गुर न जानने के कारण वे कम्पिटीशन म पिछड रहे हैं।'

'नाउ, मि० नटवर ने सिर पर हाथ फेरा, "अब स्पेसिफिकेशन (बारीकियां)! मेरे मित्र की पार्टी ने जो स्पेसिफिकेशन दिये हैं उसम मैं तो सिर पर हाथ रखकर बैठा हूँ। गोयनकाजी की पसन्द क्या है बताइए?'

अबकी बार नटवर मित्तिर सचमुच ही गुस्सा हुए, "बस, महाशय, आपसे कुछ नही होगा। बिजनेस लाइन छोड दीजिए। एक सम्मानित अतिथि का मनोरजन करेंगे, पर उससे उसकी पसन्द नापसन्द के बारे मे नही पूछा। जिस व्यक्ति को कटलेट पसन्द हो उसको सन्तरा देने पर, क्या वह पसन्द करेगा? अब उन महाशय को कहा ढूढू! फोन पर भी सा नही मिलेंगे।'

दुरूह समस्या का समाधान नटवर मित्तिर ने खुद ही कर लिया, 'जो बातें सुनी हैं, उनसे लगता है कि उन महाशय को गाउन म रुचि नही है—साडी की ओर ही झुकाव है। जाति की बात मैं बिल्कुल नही सोच रहा हूँ। यही एक मामला है जिसमे गोयनकाजी जैसे लोगो को अपनी जाति से लगाव नही है। पसन्द लायक बगाली काल गर्ल मिलने से बहुत प्रसन्न होगे। पर प्रश्न है—हल्की कि भारी? बहुत डिफिकल्ट क्वेश्चन है! यही गलती करने के कारण तो श्रीधरजी ने उस बार पचास हजार रुपये का आर्डर खो दिया। परचेज अफसर स्वस्थ लडकी पसन्द करता था। वह बिना सोचे समझे ले गये, आधुनिका रत्ना को। बिल्कुल गाँजे की चिलम जैसा दुबला चेहरा, फ्रेंच साहब जैसा पसन्द करते हैं वैसा। रत्ना के बत्तीस साइज के ब्लाउज पर एक नजर डाल, व्यग्य से हँसे। कहा, 'लडकी है या लडका, समझ ही नही पा रहा हूँ। अभी बहुत व्यस्त हूँ, अचानक एक मीटिंग की खबर आयी है, फिर न्योता जायेगा। गया आर्डर चूल्हे मे। ऊपर से रत्ना साहा को भी रुपये देने

पड़े श्रीधरजी का। लेकिन गदरायी हुई लड़कियों से भयानक अरुचि रखनेवाली पार्टी भी मैंने काफी देखी है। उनको बाँस की फट्ठी जैसी संगिनी चाहिए।"

सोमनाथ का सिर दुखने लगा। गर्दन के पासवाला हिस्सा गरम हो रहा है। चिन्तित और परेशान नटवर बोले, "सोचने से अब क्या होगा? चलिए, एन्टाली की ओर। रिस्क ली जाये। मलिना गांगुली का चेहरा ठीक ठाक है। दुबली भी नहीं, मोटी भी नहीं। वैसे ऊपरवाला हिस्सा भारी है, पर खूब टाइट है—गोयनका को पसन्द आयेगी।"

गाड़ी चल रही है। धर्मतल्ला और चौरंगी की मोड़ पर दूर से सोमनाथ ने जिसको देखा उससे उसका चेहरा निस्तेज हो गया। ढेरों किताबें हाथ में लिये तपती बस की प्रतीक्षा कर रही थी। लगता है, तपती ने सोमनाथ को देख लिया—नहीं तो इस तरह गाड़ी की ओर क्या देख रही है?

सोमनाथ ने शीघ्रता से मुँह दूसरी ओर घुमा लिया। नटवर मित्तिर ने यह देख मजाक किया, "क्यों मि० बनर्जी? लड़कियाँ क्या शेर हैं? इस तरह पसीना क्यों आ रहा है? बस स्टैंड पर एक महिला ने जिस तरह आपकी ओर देखा, ऐसा कभी हमारा भी समय था। अब इस चपाती जैसी गोल गंजी खोपड़ी को कोई नहीं देखता।"

यूरोपियन असाइलम लेन के पास पीले रंग के इकमंजिले मकान के सामने गाड़ी रोकने को कहा नटवर मित्र ने। धीमे स्वर में सोमनाथ से बोले, "आप गाड़ी में ही बैठिए। बिल्कुल भले आदमियों का मुहल्ला है। किसी को शक हो गया तो आफत हो जायेगी। मिसेज गांगुली भी पूरी जेनुइन गृहिणी हैं। पति कारपोरेशन में क्लर्क हैं—थोड़ी शराब पीने की आदत है, इसीलिए वेतन से घर खर्च नहीं चलता।" सोमनाथ गाड़ी में बैठा रहा। मि० मित्तिर ने दरवाजे की कालिंग बेल बजायी और भीतर चले गये। थोड़ी देर बाद हँसता चेहरा लिये बाहर आ सोमनाथ से बोले, "चलिए। मिसेज गांगुली से परिचय करवा दूँ।" नटवर अब फुसफुसाये,

"एकदम बन्दगोभी जैसा वक्ष है—गोयनका को बहुत पसन्द आयेगी।"

नटवर के पीछे पीछे सोमनाथ ने कमरे मे प्रवेश किया। बैठक का कमरा परम्परागत साफ सुथरा सजा हुआ था। सॉफ्ट लेदर चढे नम सोफासेट पर सोमनाथ बैठा। कमरे के एक कोने म कुछ बगला और कुछ अग्रेजी की किताबें रखी थी। दीवार पर दो तीन श्रद्धेय मनीषियो के चित्र थे। एक कोने म एक टाइमपीस घडी रखी थी और उसके पास ही क्रामियम पालिश किये हुए एक सुन्दर फोर्टिंग फ्रेम मे गागुली और एक सज्जन का फोटो था। जरूर ही मि० गागुली होंगे।

मिसेज गागुली की उम्र इकतीस बत्तीस से अधिक नही है। काफी लम्बी है और चमकते श्याम वर्ण की। चेहरा सरल है—गृहवधू की तरह ही कही भी पाप की छाया नही है। लगता है मलिना अभी नीद से उठी है। दोनो आखो मे अभी दोपहर की नीद की खुमारी बाकी है। मिसेज गागुली ने हल्के नीले रग की फुल बायल साडी पहन रखी है—उसके साथ ही चोली टाइप का सफेद छोटा सा ब्लाउज, जिससे सामने का बहुत-सा हिस्सा दीख पडता है।

भद्र महिला तिरछी आँखो से सोमनाथ की आर देखकर हँसी। सोमनाथ ने आँखें झुका ली। नटवर बोले "ये ही मेरे मित्र मि० बनर्जी हैं। समझ ही गयी हागी।'

मिसेज गागुली ने दोनो हाथ उठा इस मुद्रा मे नमस्कार किया जिससे अन्दाज होता था कि बचपन मे उन्होने नाच सीखा है।

"अब एक फोन लीजिए, टेलीफोन के बिना अब और नही चलेगा, मिसज गागुली!" उलाहना देते हुए नटवर बाबू बोले। थोडा रुककर मिसज गागुली हँसी—दाहिनी आर का स्ट्रैप झाक रहा था, उसको ब्लाऊज म खासते-खासते बोली, "उनकी इच्छा नही है। कहते हैं, फोन होते ही लोग तुमको हर वक्त तग करेंगे। ऐरे गैरो की कमी तो है नही।

नटवर बाबू विनयपूर्वक बोले, ' ऐरे गैरो से आपका काम कहाँ पडता है ? मुझे तो मालूम है, एकदम हाइयस्ट लेवल पर खूब जान पहचान की पार्टी छोड आप कही जाती ही नही।

मिसेज गागुली खुश हुई। दह डुलाती हुई बोली, "गुड और मिसरी

का फर्क जो समझते हैं वे ही मेरे पास पाते हैं। आप तो जानते ही हैं, केवल लचीला शरीर हाने से ही इस लाइन मे काम नही चलता। आज के मनुष्य को कितनी परशानी है कितनी दुश्चिन्ता है। बातचीत करके दुश्चिन्ता को दूर कर देना प्यार मनोरजन कर दो क्षण की शान्ति देना, थोडा बढावा देकर खेल मे उतारना, क्या सहज काम है ? भेजे म बुद्धि न रहने पर, इस लाइन मे नाम नही कमाया जा सकता।"

"वह तो है ही।" नटवर ने मिसेज गागुली की हाँ मे-हाँ मिलायी।

मुह टेढा कर मिसेज गागुली बोली, "आजकल जो अनाडी लडकियाँ आती हैं, वे पुरुष के मन की भूख को ही नही जानती। वे खाक गुप्त जानकारी प्राप्त करेंगी ? रुपये खच कर जो बिजनेसमैन उन्ह भेजता है, कोई लाभ नही होता।"

नटवर मित्तिर फिर बोले, "सो तो है ही।"

मिसेज गागुली थोडा-सा हँसी। फिर नटवर पर हमला कर बैठी, "आपकी तो कोई खबर ही नही रहती।"

'काम काज वैसा नही है। तबीयत भी ठीक नही चल रही है।" नटवर थोडे हतप्रभ हो गये।

मिसेज गागुली ने विश्वास नही किया। मह पर हाथ रख जम्हाई ली। फिर थोडा हँसकर बोली, "मैंने सोचा, मिसेज विश्वास को सारा काम दे रहे हैं। मुझे भूल ही गये हैं।'

'क्या यह मुमकिन है ?' नटवर बाबू ने अच्छा अभिनय किया, "बात तो दरअसल यह है कि मुझे आपको काम देने म सकोच होता है। आप लगातार ऊँचे लेवल पर उठ रही हैं। मि० बाजोरिया के पैनल मे आप प्रवेश कर रही हैं यह सूचना भी मुझे मिली है। हमारी जितनी पार्टियाँ हैं, उनमे से अधिकाश बाजार की चीज ही खरीदना चाहते हैं। आज जैस ही सुना, इस मित्र को खास चीज की आवश्यकता है, तुरन्त आपके पास घेरकर ले आया। एक बार सोचा कि चिटठी ही लिखकर दे दू।"

"नही देकर अच्छा ही किया।' लाल पत्थरवाली कान की बालियाँ हिलाती मिसेज गागुली बोली, "अनजान और अपरिचित व्यक्ति से मैं

बात तक नहीं करती। आजकल जैसा समय है। आपको मिसेज विश्वास न चुपचाप पुलिस म सूचना दे हम लोगो की जान-पहचान की एक लडकी को पकडवा दिया है। अजन्ता मित्र खूब चल निकली थी। मिसेज विश्वास यह सह नही पायी। इतनी ईर्ष्या की क्या बात है बाबा ? क्या हुआ जो तुम्हारे दो-एक रेगुलर ग्राहक अजन्ता के पास चले गये ? मैं तो मिसेज विश्वास स ईर्ष्या नही करती। मेरे एक ग्राहक साहब को उन्होंने हडप लिया है।"

नटवर मित्तिर जल्दी-जल्दी बातें खत्म करना चाहते हैं। इसलिए बोले "ता मरे इस मित्र के ?'

'कब ?"जम्हाई ले मिसज गागुली ने मुह के सामने तीन बार चुटकी बजायी।

'आज ही' सुनकर मिसेज गागुली बहुत उत्साहित नहीं हुई। बोली, "यह ता वसी ही बात हुई कि 'ऐ उठो छोकरी, तुम्हारा विवाह हो गया, मित्तिर महाशय ! मैं तो सोचती थी कि आज थोडा आराम करूंगी। एक के बाद एक कई दिनो से बहुत ज्यादा मेहनत हो रही है।"

"आज का दिन निकाल दीजिए। मि० नटवर मित्तिर ने अनुरोध किया, "पास ही का काम है।"

सामने का पल्ला सँभालते सँभालते मिसेज गागुली बोली "आजकल काफी रातवाला काम मैं नही लेती, नटवर बाबू ! ये नाराज होते है।"

अबकी बार नटवर बाबू खुश हुए, ' रात का काम होता तो आपको कहता ही नहीं। पार्टी खुद ही दस बजे चली जायगी।'

नटवर बाबू ने अब रुपयो का आँकडा जानना चाहा।

' पार्टी है कौन ?" सुगठित देह को पतले कपड से ढकते ढँकते मिसेज गागुली ने प्रश्न किया।

'भद्र पुरुष बडे फस्ट क्लास आदमी हैं—मेरे छोटे भाई की तरह हैं। मिस्टर गोयनका।'

मिसेज गागुली ने ओठ बिचकाये "कई आदमी बडे पाजी होते हैं।"

"जो सोच रही है—वह एकदम नही है। कार्तिकेय जैसा सुदर चेहरा है। वह महाशय बहुत मिलनसार हैं।"

मिसेज गागुली बोली, "गेस्ट हाउस या घर पर हो तो दो सौ रुपये। यहा से ले जाना होगा, और यहीं पहुँचाना होगा। लेकिन होटल होने पर तीस रुपये अधिक लगेंगे, पहले से बता देती हूँ।"

"आपकी सब बातें मान लेता हूँ, मिसेज गागुली ! आप तो जानती हैं, मुझे भाव ताव करना अच्छा नही लगता। पर, यह होटल के लिए रेट बढा देना तो कुछ अजीब लग रहा है।"

गुस्सा हो गयी मिसेज गागुली। गर्दन झटककर बोली, 'होटल मे हमारा खर्च अधिक है, नटवर बाबू ! आक्ट्राय (चुगी) देनी पडती है। एक दिन की बात तो है नही—दरबान से लेकर मैनेजर तक सबको खुश रखने मे तीस रुपये लग जाते हैं। वे हमारे चेहरे पहचान गये है—बिना काम के किसी गेस्ट से भी मिलने जाओ तो विश्वास नही करते। आज यदि रुपये देकर खुश न रखू, तो फिर कल होटल मे घुसने ही नहीं देंगे। घुसने भी देंगे, तो कमरे मे आ हगामा करेंगे। पहले से कहना अच्छा है—नही तो कई सोचते हैं काम निकालकर तीस रुपये ठग रही हूँ।"

घडी की ओर देख मिसेज गागुली ने पूछा, "जरा चाय पियेंगे ?'

सोमनाथ राजी नही हुआ। नटवर बाबू बोले, "और किसी दिन पी लेंगे। सिर्फ चाय क्यो लूची (पूडी) मास भी खायेंगे। मि० गागुली से कहिएगा, अपनी पसन्द से मछली मास खरीदकर लायेंगे।'

हल्का सा हँसी मिसेज गागुली। फिर बोली, "तो फिर घण्टे-भर मे आ जायें। इतनी देर मे तब तक मैं तैयार हो जाऊँगी।"

सोमनाथ को साथ ले नटवर मित्र सर्कुलर रोड पर आकर रुक गये। नटवर मित्र अब विदा लेना चाहते हैं। सोमनाथ से बोले, "आपकी समस्या का हल तो हो गया। घण्टे भर बाद आकर मिसेज गागुली को लेकर सीधे ग्रेट इडियन होटल चले जाइएगा।'

पर नटवर बाबू नही जायें, यह सोमनाथ की इच्छा है। सोमनाथ के अनुरोध को वह टाल नही सके। बोले, 'मुझे तो बहुत काम है। एक नम्बर पार्टी की अभी भी व्यवस्था नही हुई।"

सोमनाथ सोच रहा था, किसी चाय की दुकान पर बैठ एक घण्टा बिता देगा। नटवर बाबू बोले, "कहाँ बैठे रहिएगा ? चलिए, मेरे साथ

घूमकर आ जाइएगा।"

नटवर बाबू को सच ही बड़ी चिन्ता है। मुझलाकर बोले, इस लाइन मे बगाली लडकियो का आजकल इतना नाम है कि एक्सपोर्ट तक होती हैं। तो भी मेरे मित्र की पार्टी ने एक अदभुत शर्त रखी है। पजाबी, गुजराती, सिन्धी लडकियाँ तक सप्लाई कर रहा हूँ—पर इनको बडा बाजारी अर्थात मारवाडी लडकी चाहिए। कहाँ मिलेगी, बताइए तो? इस लाइन म सप्लाई ही नही है। बहुत खोज के बाद एक मित्र स उषा जैन नाम की एक लडकी की खबर मिली। फिरगी मुहल्ले म रहती है। जाऊँ, एक बार देख आऊँ।"

राउडन स्ट्रीट पर गाडी रुकी। नटवर बाबू ने नसवार लेकर कहा, "चलिए ना? आपकी जान पहचान हो जायगी।"

सोमनाथ राजी नही हुआ। उसका सिर दुख रहा है। माथे को दबा वह गाडी मे चुपचाप बैठा रहा।

काफी देर बाद नटवर बाबू उषा जैन के यहाँ से वापस आये। भुनलाये से बोले "बडा घमण्ड है भाई! नहा रही थी, आधा घण्टा बैठाकर रखा। मैंने सोचा, न मालूम कितनी सुन्दर, बिना परो की परी होगी। सज धजकर जब सामने आयी तो देखा, एकदम साधारण है। शरीर का रग गोरा है पर कैसा तो ढुलमुल चेहरा है, बिल्कुल ही आकर्षण नही। कम से-कम छत्तीस की होगी, पर कहती है कि बस पच्चीस शुरू हुआ है।" अपने सिर पर एक बार हाथ फेरा नटवर बाबू ने, "इसी रूप पर इतना घमण्ड? मि० श्याम सहाय कसेरा अपने मित्र के साथ आठ महीने पहले इस लडकी को कलकत्ता ले आये थे। दोनो मिलकर खच बाट लेते थे। मित्र का ब्लड प्रेशर बढा, तो महाशय को बदमाशी कम करनी पडी। इसीलिए अब यह लडकी कुछ कुछ प्राइवेट प्रैक्टिस करती है। खुद मि० मोर ने टेलिफोन पर मेरा परिचय करवाया था बोले थे, मेरा अन्तरग मित्र है। तो भी उषा जैन सात सौ से कम रुपये मे राजी नही हुई। बोली, 'बम्बई मे तो अब एक हजार रुपये रेट है।' तो महाशय, लका म सोने के दाम बढने से मुझे क्या, बोलिए तो? कोई और समय

होता तो कौन साला राजी होता—केवल इस उपा जैन नाम के लिए ! मेरी कोई पस द नही है। यहा की लडकी होती तो एक सौ रुपये भी नही मिलते।"

मिसेज गागुली तैयार हो बठी थी। इस एक घण्टे मे पूरी देह पर उस भद्र महिला ने अच्छी पुताई की थी। नाक, आख, माथा, ओठ, क धा, ठाडी से लेकर हाथ के नाखून, यहा तक कि पाव के पजो तक भी प्रसाधन का सयत लेप नजर आ रहा है। नटवर मित्तिर ने मसखरी की, 'आप तो पहचान मे नही आती—देवी दुर्गा लग रही हैं।"

खूब खुश हुई मिसेज गागुली। बोली, "गोयनका है, इसीलिए तो ऐसी सजी हूँ। ये लोग चमक दमक के कपडे पस द करते हैं, गहरी रूज इन लोगो को खूब पस द है। पर लिपस्टिक इन लोगो को कम पस द है—कुर्ते या गजी पर लगने से कई लिपस्टिक के रग छूटते ही नहीं। पत्नी द्वारा पकडे जाने की आशका रहती है।"

मिसेज गागुली ने अब सिगरेट सुलगायी। थोडा सा धुआ छोड बोली 'कस्टमर के सामने मैं स्मोक नही करती। इसलिए अभी एक पी लेती हूँ।'

'एक क्यो दस सिगरेट पी सकती है आप, अभी काफी समय है।" नटवर मित्र बोले।

सिगरेट का एक कश और लगा, कमनीय मगर गठी हुई देह को थोडा सा हिलाकर मिसेज गागुली बोली, "दो सौ रुपये मे अब चलता नही है, मित्तिर महाशय ! चीजो के दाम कितने वढ रहे हैं। एक बार तैयार होने म ही उन्नीस बीस रुपये खच हो जाते हैं। इन कपडो की धुलाई के ही पाँच रुपये लग जायेंगे—एक बार जो कपडे पहन मैं काम पर जाती हूँ, दुबारा उन्ह पहनने का मन नही करता—घणा होती है। इसके अलावा कीमती लैवेंडर पाउडर और शैचेट सेंट मैं बैग म ले जाती हूँ। किसी-किसी कस्टमर के शरीर स ऐसी पसीने की दुग घ आती है कि आधा डिब्बा पाउडर लगाने पर भी दुग घ के मारे उबकायी आने लगती है।'

"आप लोगो के काम की कीमत क्या रुपयो से चुकायी जा सकती है ?" विनय विगलित स्वर मे नटवर ने उत्तर दिया, "हाइ लेवल के लोगो का आप सरीखा मनोरजन कौन कर सकता है ?"

'आपकी कृपा से बहुतेरे बाघ और सिहो को वश म करके अपने अगूठे के नीचे रखा है।" घमण्ड से मिसेज गागुली ने उत्तर दिया, "पालतू नही बना पाऊँ तो आप लोग भी पैसे क्या लुटायेंगे ? कही कोई उद्देश्य है, तभी तो पार्टी के बिस्तरे पर मुझे ले जा रहे हैं।"

"आप तो सब जानती हैं, मिसेज गागुली ! बिलायत अमरीका म तो आप-जैसी स्पशलिस्ट लाखो रुपयो का धधा करती।" नटवर मित्तर बोले।

नाक की नोक पर पाउडर लगाते लगाते मिसेज गागुली बोली, "गोयनका से कुछ पता लगाना हो तो अभी बता दीजिए। ऐसी स्थिति म अच्छी तरह शराब आदि पिलाऊँगी।'

ह ह' कर हँसे नटवर, 'कोई भी बिजनेस नही है। सिफ सौजय के लिए मनोरजन करना है। मि० गोयनका का पूरा सैटिस्फेक्शन होना हमारी प्रसन्नता है।'

"फलेन परिचयते (फल से ही पता लगता है) ! पद्रह दिना के भीतर ही मुझे दुबारा ले जाने के लिए, अगर आपको गोयनका तग नही करें तो मेरे नाम पर थूक दीजिएगा।" यह कहकर मिसेज मलिना गागुली सोफे से उठी।

अब एक बडे काच के गिलास म डाब (कच्चा नारियल) का पानी पिया मिसेज गागुली न। बोली, "आप लोगो को नही दे पायी—केवल दो ही डाबें थी। यह हमारी लाइन मे दवा की तरह है। शरीर की रक्षा के लिए काम पर निकलन स ठीक पहले ही पीना पडता है।"

पर निकलते समय ही गडबड हो गयी। मिसेज गागुली के पति वापस आये। आफिस से निकलकर रास्ते मे कही शराब पी आये थे। मुँह से जोरो की गध आ रही थी।

"तुम कहाँ जा रही हो ?" क्रोध से महाशय ने पूछा।

मिसेज गागुली की हँसी कही खो गयी। बोली, "काम पर। बहुत

जल्द ही आ जाऊँगी।"

महाशय शराब के नशे म बोले, तुमको इतनी तकलीफ नहीं सहन दूगा, मलिना! एक के बाद एक तीन दिनो से रोज तुमको जाना पड रहा है और कल भी तुमको मि० अग्रवाल लेन आयेंगे।"

मिसेज गागुली न पति को सँभालने का प्रयत्न किया, पर वह गुस्सा हो गये, "साले सोचते क्या हैं! पैसा देते हैं, इसीलिए क्या तुम पर मनमाना अत्याचार करेंगे? कल रात को तुम्हे डेढ बजे वापस भेजा। मैं तुम्हारा पति हूँ—मैं तुमको हुक्म देता हूँ, आज तुमको आराम करना होगा।"

परेशान मिसेज गागुली ने अपने पति को समझाने का फिर एक बार प्रयास किया। बोली "इनको हाँ कर दी है—इनको असुविधा हो जायेगी।"

खूनी आँखो से मि० गागुली ने एक बार सोमनाथ को और एक बार नटवर बाबू को देखा। फिर दाँत भीच अपनी स्त्री से बोल, "मैं तो फॉरेन ह्विस्की छोड, देशी पीता हूँ मलिना! तुमको इतने रुपये कमाने की जरूरत नही।"

मिसेज गागुली अत्यन्त शम से दरवाजे पर आ गयी। माँफी मागकर बोली 'मुझे गलत मत समझिएगा। इसके सिर पर भूत चढा है अभी मानेगा नही। यदि अभी आप लोगो के साथ चली जाऊँ, तो घर लौटकर देखूगी कि सबकुछ तोड फोडकर रख दिया है। कसी मुसीबत है, बताइए तो? यह भी नही देखता कि मुहल्ले मे यदि बात फैल जाये, तो मेरा कितना बडा नुकसान होगा!"

सोमनाथ स्तम्भित हो गया। जान बूझकर पति ने इस तरह से पत्नी को व्यवसाय मे डाला है। 'और सोमनाथ तुम कहा जा रहे हो?'—सुदूर किसी अंधी गुफा से एक और सोमनाथ आर्त्तनाद कर रहा है।

लेकिन सोमनाथ इस आवाज से विचलित नही होगा। जो सोमनाथ भला बनकर जीना चाहता था, उसको तो समाज मे किसी न जीने नही दिया। सोमनाथ अब अरण्य के कानून ही मानकर चलेगा।

नटवर मित्र के जानकार और अनुभवी दिमाग मे अब बहुत सी

चिन्ताएँ हैं। खोपड़ी का पसीना पोंछ वाले, "इसीलिए बंगालियों का कुछ नही हो पाता। अभागे गागुली को घर लौटने का और कोई समय नहीं मिला। कितना पत्नी प्रेम है, देखा नही? तुम्हे रस्ट की आवश्यकता है, तुमको जाने नही दूगा। और कैसी सती साध्वी पत्नी? पतिदेवता के आदेश का उल्लघन नही किया।"

सोमनाथ को चिन्ता हुई, काय के आरम्भ मे ही विघ्न पड गया। अब क्या हागा?

नटवर बाबू ही बोले, "चलिए-चलिए, खडे-खडे सिर खुजलाते रहन से काम नही होगा। समय नही है। मि० गोयनका के सामने आपकी इज्जत रखनी ही होगी।"

नटवर मित्र वुड स्ट्रीट आये।

एक नये फ्लटवाले ऊँचे मकान की आटोमेटिक लिफ्ट का बटन दबाया नटवर बाबू ने। "देखू मिसेज चक्रवर्ती को। आप बहुत भोले हैं, यहा बोल मत बैठिएगा कि दूसरी जगह सप्लाई न मिलने पर यहा आये है।" नटवर बाबू ने सोमनाथ को सावधान कर दिया।

पाचवें तल्ले के दक्षिणी फ्लैट की बेल को काफी देर दबाये रखने पर मिसेज चक्रवर्ती का दरवाजा खुला। एक मद्रासी नौकर काफी देर तक अतिथियो को घूरता रहा, फिर बिना कुछ बोले भीतर चला गया। नटवर बाबू ने धीरे से कहा, "यह मिसेज चक्रवर्ती का फ्लैट तो जसे नशे मे सो रहा है।"

अब प्रौढ मगर खूबसूरत मिसेज चक्रवर्ती सिर ढँके दरवाजे के पास आयी। नटवर बाबू को देखते ही पहचान गयी। उदास स्वर मे मिसेज चक्रवर्ती बोली, "आपने नही सुना? मेरा भाग्य फूट गया। लडकियो को अचानक पुलिस पकडकर ले गयी।"

नटवर बाबू ने हार्दिक सहानुभूति जतायी।

मिसेज चक्रवर्ती बोली, "और जगह नही मिली। पुलिस के एक रिटायड अफसर ने बगल का फ्लैट खरीदा है। ऐसा लगता है, उसी व्यक्ति

ने सवनाश किया है। इतनी लडकियाँ सभ्य ढग से कमा खा रही थी।"

मि० नटवर मित्र ने फिर सहानुभूति व्यक्त की। रोनी रोनी आवाज म मिसेज चकवर्ती बोली, 'बगाली पुलिस बगालियो का खून चूसती है। भद्र परिवेश म सात आठ लडकियाँ मेरे इस फ्लैट म परवरिश पा रही थी। कई कालेज की छात्राओ को भी चास दे रही थी—सप्ताह म दो-तीन दिन, दोपहर म सद्भाव से दो चार घण्टे परिश्रम कर लडकियाँ अच्छा पैसा कमा रही थी। पर भाग्य से सहा नही गया।"

'गवनमट और पुलिस की माया अपरम्पार है जो भी कहिए कम है।" नटवर बाबू ने सान्त्वना के शब्द कहे।

थोडा ठहर मिसेज चक्रवर्ती बोली, "एक नय फ्लैट के लिए जोरो से कोशिश कर रही हूँ, मित्तर महाशय। कलकत्ते मे मकानो के किराये की क्या हालत है? साहबी मुहल्लो म डेढ हजार से कम म कोई बात ही नही करता। मैं मर खपकर आठ सौ तक दे सकती हूँ।"

नटवर बाबू से भी फ्लैट ढूढने का अनुरोध मिसेज चक्रवर्ती ने किया। फिर बोली, "जब फिर सब ठीक-ठाक कर लूगी, तब आना ही होगा।'

काफी हो गया। जन्म दिन पर मेरे लिए भाग्य मे क्या यही सब जानना बदा था मेरे विधाता? सोमनाथ अब लौटना चाहता है पर नटवर मित्तर अब डिस्परेट हो रह हैं, उनकी इज्जत का सवाल है। उनकी धारणा है कि सोमनाथ के सामने वह छोटे हो गये हैं। पाक स्ट्रीट की ओर जाते जाते नटवर बोले "कलकत्ते शहर म आपकी कृपा से लडकियो की कमी नही है। मिस साइमन अभी जाते ही एक दजन लडकियाँ दिखा देगी। पर सब रद्दी रद्दी चीज तो जान पहचान की पार्टी को दी नहीं जा सकती। तो भी मैं छोड़ूगा नही, मेरा नाम है—नटवर मित्त। करेंगे या मरेंगे।"

मिसेज विश्वास के फ्लट म पहुँचे नटवर बाबू। रूमा और झूमा—अपनी ही दोनो बेटियो को मिसेज विश्वास ने इस व्यवसाय मे उतारा है, सुन कर सोमनाथ अब अविश्वास नही कर रहा है।

मिसेज विश्वास के फ्लैट मे जाने के लिए सीढी से चढते-चढते नटवर बाबू बोले, "लड़कियो के विषय मे सेंटिमेंट-फेंटिमेंट बगला के उपन्यासो या नाटको मे ही पढिएगा। असली जीवन मे कुछ भी नही देख पायेंगे। रुपये देकर मा से बेटी को, भाई से बहन को, पति से पत्नी को बाप से बेटी को कितनी बार ले आया हूँ—रकम को छोड और किसी भी बात के लिए अभिभावको को चिंतित नही देखा। पिछले दस वर्षों मे बगाली बहुत प्रैक्टिकल हो गये हैं—बगालियो के सम्बध मे यही एकमात्र आशा की किरण है।"

नटवर मित्र ने यो ही मुस्कराते हुए मिसेज विश्वास से पूछा, "कैसी हैं? मैं तो बहुत दिनो से आ ही नही सका। कलकत्ते से बाहर चला गया था।"

"आप लोगो के आशीर्वाद से अच्छा ही चल रहा है," यह मिसेज विश्वास ने बता दिया। बोली, "पुराने फ्लैट को नये ढग से सजाने मे करीब दस हजार रुपये लग गये।

नया फ्लैट सस्ता पडता, पर इसका पता दिल्ली, बम्बई, मद्रास की बहुत सी अच्छी पार्टियाँ जान गयी है। कलकत्ते के टूर पर आते ही वे यहाँ चले आते हैं। पता बदलने पर शुरू मे बिजनेस कम हो जायगा।'

जगमग, सजे सँवरे हॉल की ओर देख नटवर बाबू खुश हुए 'यह तो बिल्कुल इन्द्रपुरी बना ली है आपने!" नटवर मित्तिर ने प्रशसा की, "लगता है, चार-पाँच छोटे छोटे चेम्बर बना लिये हैं।"

"जगह तो बढती नही पर कभी-कभी अतिथि बढ जाते हैं। इसलिए इसी मे सजा बजाकर रहना पडा।" मुँह टेढा कर मिसेज विश्वास बोली 'चीजो के दाम बेहद बढ गये हैं, फिर भी हर चेम्बर मे डनलपिलो के गद्दे लगाये हैं। नामी गिरामी लोग सारा दिन परिश्रम कर यहाँ पधारते हैं, उनको कोई कष्ट नहीं हो यह देखना तो मेरा कर्तव्य हो जाता है। भगवान यदि प्रसन्न रहे तो अगले महीने दो चेम्बरो मे एयर-कूलर लगवा दूगी।'

"किसे खोज रहे हैं? रमू को या झुमू को?' मिसेज विश्वास ने पूछा। फिर शान्त स्वर मे बोली झुमू एक कस्टमर के साथ है। दोरा

बैठिए ना, पन्द्रह मिनट में फ्री हो जायगी।"

नटवर मित्तिर ने घड़ी देखी। मिसेज विश्वास मुस्कराकर बोली, *"झुमू आप पर खूब प्रसन्न है। उस बार ग्रेट इंडियन होटल में जा जापानी गेस्ट दिया था—बहुत अच्छा आदमी था। झुमू को एक डिजीटेल टाइम-पीस भेंट कर गया—यहाँ नहीं मिलती। झुमू भी चालाक है। छोटा भाई है, कहकर साहब से एक दामी पेन भी ले आयी। तब भी, जापानी साहब ने पूरे पैसे दिये—एक भी पैसा नहीं काटा।"*

'लड़की आपकी हीरा है—उसने साहब को सन्तुष्ट किया, तभी तो भेंट मिली।" नटवर बाबू बोले।

मिसेज विश्वास ने मुंह बिचकाया, "सन्तुष्ट तो सभी को करती है, पर हाथ से कोई देना नहीं चाहता। रुमू की अवस्था देखिए ना।"

"आपकी बड़ी लड़की? क्या हुआ उसको?" नटवर बाबू ने आशंका व्यक्त की।

'पूछिए मत। आप लोगों का मि० केडिया एक नम्बर का शैतान है। रुमू को हांगकांग घुमाने का लालच दिखाया। यहाँ कई बार आया। रुमू झुमू दोनों के साथ घण्टा भर समय बिता गया। फिर रुमू के साथ प्रेम बढ़ा। एक बार नौ वाले शो में रुमू को सिनेमा दिखा लाया। उसके मन में इतना पाप है, कैसे समझती? महाशय मुझसे बोले, 'व्यापार के काम से हांगकांग जा रहा हूँ। रुमू को दो हफ्ते के लिए छोड़ दीजिए। लड़की को आमदनी भी हो जायेगी, विदेश घूमना भी हो जायेगा।' हजार रुपये में सौदा हुआ। वहाँ का सारा खर्च, प्लेन भाड़ा होटल भाड़ा, सब वही देंगे, यह तय हुआ। मैं तो बुद्धू हूँ ही, रुमू मुझसे भी बुद्धू है। उस राक्षस की शैतानी वह नहीं समझ सकी। विदेश जाने के लिए कच्ची लड़की छटपटाने लगी। काम धाम बन्द कर पासपोर्ट के लिए दौड़ धूप शुरू कर दी। झूठ क्या बालू केडियाजी के ट्रैवल एजेंट ने पासपोर्ट के काम में सहायता की। मैंने सोचा, अच्छा है कि जान पहचान के लड़के के साथ विदेश घूमने का एक सुअवसर जब आया है तब लड़की अपनी *इच्छा पूरी कर आये। थोड़े दिन मेरे काम को नुकसान हो तो हो।'*

'हजार हो, माँ का ही मन तो है?" अपने गंजे सिर पर हाथ फेरते

पोद्दार के जाते ही मिसेज विश्वास ने फिर डायरी देखी। फिर बोली, "लीला, तुम कॉफी पीकर थोडा आराम करो। अब्दुल को बोलो, तुम्हारे कमरे की चादर और तौलिया बदल देगा। पच्चीसेक मिनट म मि० नागराजन आयेंग। वह देर तक नही रुक पायेंगे। उन्ह यहाँ स सीधे एयरपोट जाना है।'

लीला के भीतर जाते ही मिसज विश्वास बोली, "रुपये तो लती हूँ—पर सविस भी देती हूँ। प्रत्येक कस्टमर के लिए मेरे यहाँ फ्रेश बेडशीट और तौलिये की व्यवस्था है। अटच्ड बाथरूम म नयी साबुन। प्रत्येक कमरे मे टल्कम पाउडर, लोशन, ओडिकोलान डेटाल। जितनी इच्छा हो, काफी पियो—एक भी पैसा नही देना होगा।"

नटवर मित्र को घडी की ओर देखते हुए मिसेज विश्वास बोली, झुमू का अभी भी नही हुआ। ठहरिये, फाक से देख आऊँ। लडकी मे यही दोष है। ग्राहक को झटपट खुश कर जल्दी से घर नही भेज पाती। सोचती है, सभी जापानी साहब हैं। अधिक देर तक लाड करवायेंगे ता खुश होकर उसे मोतिया का कण्ठहार दे देंगे। इन सबसे लीला चतुर है। नयी लाइन मे आकर भी तरीका सीख गयी है। पोद्दार एक घण्टा ठहरेगा, यही कहकर आया था, पर बीस मिनट म ही सन्तुष्ट होकर चला गया, जबकि लीला से बहुत पहले ही झुमू न ग्राहक को साथ लेकर दरवाजा बन्द किया था।'

फाक से लडकी की लेटेस्ट अवस्था देख, हिलती डुलती मिसज विश्वास आ गयी। बोली, 'अब देर नही होगी। खटखटा आयी हूँ।" फिर बोली, "आप लोगो की कृपा से झुमू का चेहरा बढिया हो गया है। जो देखता है वही सन्तुष्ट होता है। टोकियो से आपके जापानी साहब ने अपना एक मित्र भी भेजा था। होटल म सामान रख साहब खुद जगह खोज कर यहाँ आया था। अच्छी फोटो उतारता है। उसकी खूब इच्छा थी कि वस्त्रहीन झुमू की एक रगीन फोटो उतार। पाँच सौ रुपये तक देने को तैयार था, पर मैं राजी नही हुई।"

नटवर बाबू ने अब कहा, 'मेरे इस मित्र स झुमू का परिचय करा देती। उसे दो घण्टे के लिए जरा ग्रेट इडियन ले जाना चाहता है।"

मिसेज विश्वास ने मुँह टेढा किया। फिर सोमनाथ से बोली, ' होटल क्या बेटा ? मेरे यहा बैठो ना। मि० जायसवाल के जाते ही झुमू फ्री हो जायेगी। मेरे चेम्बर का भाडा होटल से आधा है।"

'हा, हा कर उठे नटवर बाबू, "यह नही, इनकी एक पार्टी है।"

मिसेज विश्वास बोली 'उसको भी यही ले आओ। मेरे पास आदमी कम है। लडकियों को बाहर भेजने से बहुत समय नष्ट होता है। इसके अलावा आजकल काम का बहुत दबाव है, मिस्टर मित्तिर ! होल नाइट बुकिंग के लिए लोग हाथ पैर जोडते हैं।'

नटवर बाबू ने बहुत अनुरोध किया। पर मिसेज विश्वास राजी नही हुई। बोली, "झूमू तो है ही। अपने उन साहब को समझा बुझाकर यही ले आइए। झुमू को स्पेशल खातिर-जतन करने को कह दूगी। देखिएगा, आपके साहब कैसे सन्तुष्ट होते है ! उन दो जनो को काम मे लगाकर, हम तीनो चाय पीते पीते गप्प लगायेंगे।"

सडक पर आ सोमनाथ ने देखा, नटवर मित्तिर पारी पारी से दोनो हाथो की मुट्ठियाँ बाधते खोलते हैं। सोमनाथ के सामने उनकी हेठी हो रही, ऐसा उन्ह लग रहा है। जबकि सोमनाथ वैसा सोच ही नही रहा। सामने पनवाडी से दो एस्प्रो खरीद, सोमनाथ ने गटक ली। समझा-बुझाकर उसने मन को तयार कर लिया है, पर शरीर मान नहीं रहा है। लगता है, थोडी कसरत कर देने से शरीर शान्त हो जायेगा।

नटवर बाबू बाले, "आपका भाग्य ही खराब है। नटवर मित्तिर जो चाहता है, वह आपको नहीं दे पा रहा है। और आज इस देश को क्या हो गया ? लडकियो की माँग दनादन बढ़ी जा रही है। छ महीने पहले यही मिसेज विश्वास लडकी को ले मेरी आफिस म आयी थी—पार्टी के लिए मुझसे कहा था। कितनी बार कहा है, 'केवल ग्राहक ही लाते हैं, एक दिन खुद भी झूमू झुमू के पास बठिए—कुछ खच नही लगगा।' पर महाशय नटवर मित्तिर इन सबस सौ गज दूर रहता है। खुद इन सबके बीच मत पड जाइएगा वर्ना बिशु बोस-जैसा सत्यानाश हो जायगा।"

नटवर ने कोई बात नही सुनी। सोमनाथ को ले जाकर पाक स्ट्रीट के क्वालिटी रेस्त्राँ मे बैठ कॉफी पी।

वहाँ से निकलते ही आलिम्पिया बार के सामने बूढ़ा चरणदास मिल गया।

"चरण हो ना ?" नटवर ने पूछा।

'जी हाँ, हुजूर !" बहुत दिन बाद नटवर को देख चरणदास खुश हुआ।

'तुम्हारी बोर्डिंग पर पुलिस का छापा पड़ा था ?" नटवर बहुत सी खबरें रखता है।

' केवल पुलिस का छापा ? मुझे अपराधियों के कटघरे तक मे पहुँचा दिया था।" चरण ने दुख स कहा, "किसी तरह छुटकारा पाकर आया हूँ।"

चरण की उम्र पचास से ज्यादा होगी। सूखी दाढ़ी, झुर्रियोंवाला चेहरा। पर देखते ही समझ मे आता है कि निरीह स्वभाव का व्यक्ति है। सोमनाथ से नटवर बाबू बोले, "चरण यहाँ के एक बोर्डिंग का बरा था—लडकिया सप्लाई कर दो पैसे कमा लेता था।"

अब क्या करते हो चरण ?" नटवर मित्तिर ने पूछा।

"पहलेवाले दिन अब नही रहे हुजूर। अब तो छोटी मोटी आडर सप्लाई करता हूँ। हमारे मनेजर करमचन्दानी बाबू ने जेल से निकल एक स्कूल खोली है। टेलिफोन आपरेटिंग सीखने का नाम ले कुछ लडकियाँ आती है—कई परिचित पार्टियो को पता है, किसी तरह काम चल जाता है।"

नटवर ने पूछा, "अच्छा चरण, क्या पहले से अब लडकियो की सप्लाई घट गयी है ?'

'एकदम ही नही, हुजूर ! गृहस्थ घरो से आजकल बेहिसाब लडकिया आती हैं, पर उन्हें हम जगह नही दे पाते। इन सब मुहल्लो मे जगह की बहुत कमी है।'

नटवर मित्तिर ने शांति की साँस ली। बोले, "चरण, तुम तो पुराने दोस्त हो। अभी ही एक अच्छी लडकी दे सकते हो ?"

चरण बोला 'क्यो नही दे पाऊँगा, हुजूर ? अभी ही चलिए, तीन लडकियाँ दिखा देता हूँ।"

'एकदम टॉप क्लास होनी चाहिए। सडक की चीज लेने के लिए

मुझे तुम्हारी सहयोग की जरूरत नही है।' नटवर ने कहा।

चरण ने अब बात की गहराई समझी। बोला, "तब हुजूर, थोडा इन्तजार करना होगा। पन्द्रह मिनट बाद एक अच्छी बगाली लडकी आयेगी। पर वह दूर जाने से डरती है। गृहस्थ घर की लडकी है, छिपकर आती है।"

'रहने दो, रहने दो—सभी गृहस्थ हैं!" नटवर ने व्यग्य किया।

चरणदास ने उत्तर दिया, "हुजूर, इस भरी साँझ मे आपसे झूठ नही बोलूगा।'

"चरणदास, भेंट के रूप मे देने लायक माल है न?" नटवर मित्तिर ने साफ साफ पूछा।

"बिल्कुल बेहिचक ले जा सकते है। बडे दिन (क्रिसमस) की डाली मे सजाकर देने लायक लडकी है, सर!' चरणदास ने काफी वजन से कहा।

चरणदास के पास सोमनाथ को छोड नटवर अब भागे। बोले, "उषा जन को अभी ही लेकर आना होगा। छिनाल का दिमाग जो चढा हुआ है। अगर देर हो गयी तो हो सकता है कि आडर ही कैसिल कर दे—साथ ही न आये। आप बिल्कुल चिन्ता मत करिएगा, सोमनाथ बाबू! जो काम दो बार मे नही होता, वह तीसरी बार जरूर हो जाता है। इस बार सब ठीक हो जायेगा।'

सोमनाथ को निश्चल पाषाण की तरह स्तब्ध देख, नटवर बोले, "डर क्या है? थोडी देर बाद ही तो ग्रेट इडियन मे मिलेंगे। अगर जरूरत हुई तो मैं खुद गोयनका से आपकी ओर से बात कर लूगा।"

'बाय बाय" कहकर नटवर मित्तिर चले गये। अपने दाँत पर-दाँत भीचे सोमनाथ अब चरणदास के साथ रसल स्ट्रीट से उत्तर की ओर चलने लगा। दो एस्प्रो की गोलियो से भी शरीर की यन्त्रणा कम नही हुई है, पर मन को बहुत प्रयासो के बाद सोमनाथ पूरी तरह अपने मे ले आया है।

क्या आश्चय है! द्वैपायन बनर्जी का सभ्य सुसस्कृत सुशिक्षित छोटा लडका इस अँधेरे मे लडकी के लिए पागल की तरह चक्कर लगा रहा है

और अंतरात्मा उसे कचोट नहीं रही है। सोमनाथ अब बेपरवाह हो गया है। पानी में जब डूबा हो है, तब एकदम नीचे गये बिना वह लौटेगा नहीं। इस जन अरण्य में वह बहुत बार हारा है—पर अंतिम राउंड (चक्कर) में वह जीतेगा ही।

कलकत्ता शहर पर अंधकार का आवरण पड़ गया है। रात घनी नहीं है, पर सोमनाथ को लग रहा है—गहन अरण्य में किनारे से जाते जाते अचानक सूर्य अस्त हो जाने पर डरावना अंधकार छा गया है।

चरणदास बोला 'नटवर बाबू इस लाइन में नामी आदमी हैं। उनको ठगकर आर्डर सप्लाई की लाइन में मैं नहीं टिक सकता। आप बेफिक्र रहिए। आपको घटिया रद्दी माल नहीं दूंगा।'

इस बूढ़े को कौन समझाये कि आदमी कभी रद्दी और बुरा नहीं होता, सोमनाथ ने खुद को कहा। चरणदास को अपने हमसफर के मन का कुछ पता नहीं था। बोला, "गोरमेंट का न्याय तो देखिए? खुद नौकरी दे नहीं पाती, बोर्डिंग में आठ-दस लड़कियाँ और हम तीन चार आदमी कमा खा लेते थे, वह भी बरदाश्त नहीं हुआ।"

चरणदास बोलता रहा, 'वेश्यावृत्ति बन्द तो कर नहीं पाते, केवल बच्चों-बच्ची लड़कियों को तकलीफ देना जानते हैं। कितनी दूर से सब आती हैं—गड़िया, मानिकतला, टालीगंज, वैष्णव घाटा और कुछ तो बारासात, दत्तपुकुर हावड़ा और गोबरडांगा तक से आती हैं। बोर्डिंग में बैठने की बहुत जगह थी। लड़कियों को तकलीफ नहीं होती थी। अब इस टेलिफोन स्कूल में दो-चार टूटी फूटी कुर्सी छोड़ कुछ भी नहीं है। कब पार्टी आकर ले जायेगी, इसी आशा में लड़कियों को तीर्थों के कौवे की तरह इंतजार में बैठे रहना पड़ता है।"

चरणदास को बकबक करने की आदत है। खामोश सुननेवाला पाकर वह बोले जा रहा है, "जिन लड़कियों की आँखों में शर्म नहीं, वे नाच के स्कूलों में चली जाती हैं। बाल रूम नाच सिखाया जाता है—यही कहकर वे विज्ञापन देते हैं। बहुत से नये लोग आते हैं, पर बात छिपी नहीं रहती। हमारे टेलिफोन स्कूल में सुविधा है—अभी भी इसके बारे में लोग खास नहीं जानते। भले घरों की लड़कियों को अपने घरों में भी

कहने म सुविधा रहती है। सात दिन 'आपरेटर ट्रेनिंग', इसके बाद ही डेली वेज (रोजाना मजदूरी) की कजुअल नौकरी। बाप मा ने अगर सख्ती भी की तो हमारी लडकिया कह देती हैं, एवजी आपरेटर की शाम तीन से रात दस तक की नौकरी ही आराम से मिलती है, क्योकि इस समय आफिस की मासिक वतनवाली लडकिया काम नही करना चाहती। बाप हमारे यहाँ कई बार फोन करते हैं। हम कहते हैं, लीव वेकेन्सी का काम करते करते ही परमानेंट नौकरी पा लेगी।' "

चरणदास अब एक पुराने मकान मे घुसा। दो लडकिया टेलिफोन स्कूल म अभी भी बैठी हैं। एग्लो इडियन लडकी का शरीर देखकर लगता है कि उसम कुछ नीग्रो खून है। वह उत्तेजक और फूहड कपडे पहने है। दूसरी सिन्धी है—उसने चालू फैशन की लुगी पहन रखी है। सामनाथ को देख, दोनो लडकियो ने दबी उत्तेजना से दो बार देखा। चरणदास बाला, "आप मित्तिर साहब के आदमी है—ये सब चीजें आपको नही दी जा सकती। ये बडी फूहड है—एकदम बाजारू वेश्या हैं। थोडा ठहरिए—आपकी चीज अभी आ जायेगी।'

रुककर हँसा चरणदास, "आप सोच रहे हैं, तीन बजे से ड्यूटी हैं, फिर अभी तक क्यो नही आयी ?'

चरणदास ने खुद ही उत्तर दिया "एकदम नयी है—कुछ ही दिन पहले इस लाइन मे ज्वाइन की है। गृहस्थवाली नौकरी के लिए पागल-सी घूमते घूमते, कुछ नही मिलने पर इस लाइन मे आयी है। शाम को हमारे ग्राहको की भीड नही रहती। मुझसे कह गयी है कि एक बार किसी से मिलने अस्पताल जायेगी।"

चरणदास बोला, "खूब अच्छी लडकी मिलेगी, सर! जिनकी डेट है, देखिएगा कि वे कितने खुश होते हैं। बहुत दिनो से इस लाइन मे हूँ। बचपन से देखता हूँ, इस लाइन मे नयी चीज की बहुत कद्र है। हमारे बोर्डिंग मे गहस्थ घर की नयी लडकी के आते ही हाय हाय मच जाती। कई बार देखा है—लाइन लग जाती थी। एक ग्राहक अन्दर है—और दो जन सोफा पर बठे सिगरट पी रहे हैं। नयी रिफ्यूजी लडकियाँ पाँच मिनट आराम तक नही कर पाती थी।" चरणदास ने एक बीडी जलायी।

बोला, "आपको जो लडकी दूगा, वह एकदम फ्रेश है। डर तक नही मिटा है। साढे नौ बजे के वाद एक मिनट नही रुकेगी। मुझे उसको बालीगज की मोड तक पहुँचाना होगा। मेरा घर जरूर रास्ते मे ही पडता है—दो एक रुपये टिप मिल जाते हैं।"

लडकी के आते ही चरणदास ने सारी व्यवस्था कर दी। बोला, "पाच मिनट समय दीजिए, सर ! थोडा डेस कर ले। हमारे यहाँ सारी सुविधा है।"

पाँच मिनट मे ही लडकी तैयार हो गयी। चरणदास ने अब सोमनाथ से पूछा, 'साडी का रग पसन्द तो आया—नही तो बोलिए हुजूर ! हमारे यहाँ स्पेशल साडिया है—खरीददार की पसन्द से बहुत बार लडकियाँ कपडे बदल लेती हैं।"

सोमनाथ ने घडी की ओर देखा अब विल्कुल समय नहीं है। लडकी को गाडी मे वैठा चरणदास ने अब सोमनाथ को लम्बा सलाम दिया। सोमनाथ ने पाकेट से दस रुपये निकाल चरणदास को दिये। चरणदास वहुत खुश है। बोला, "आप लोग कहाँ जा रहे हैं ?"

"ग्रेट इडियन होटल।' सोमनाथ ने उत्तर दिया। अपने शात कण्ठ-स्वर से सोमनाथ स्वय ही अवाक रह गया। इस अवस्था मे भी उसका गला काँपा नही। लडकी को गाडी मे बैठाने मे भी बिल्कुल शम नही आयी। क्यो शम आयेगी ?' लाल आखोवाले एक सोमनाथ ने एक दूसरे शात सुसभ्य सोमनाथ से पूछा। तीन वर्षों से जब तिल तिल कर यत्रणा सही, तब तो किसी ने एक वार भी सुध नही ली कि मरा क्या होगा ? मैं कैसा हूँ ?

लडकी एकदम नयी है। अभी भी ग्रेट इडियन होटल नहीं पहचानती। पूछा, "बहुत दूर है क्या ?'

सोमनाथ को लडकी बहुत डरपोक लग रही है। इस देश क लाखो लडके-लडकियो की तरह ही हमेशा शकित रहनेवाली। अपना नाम बताया—शिवली दास। "आपसे एक अनुरोध है।" अनुनय भरे कातर स्वर मे शिवली बोली।

"कृपा कर ज्यादा देर मत कीजिएगा। दस वजे तक घर नहीं पहुँचन

पर मेरी मा बेहोश हो जायेगी।"

सुनसान मेयो रोड से गाडी मे जाते जाते शिवली ने पूछा, "आपका नाम ?" शिवली ने जब अपना नाम बताया है, तब सोमनाथ का नाम जानने का अधिकार उसको है। पर सोमनाथ का कैसी तो हिचकिचाहट हो रही थी—जीवन मे पहली बार अपना परिचय देने मे उसे शम आ रही थी। प्रश्न का पूरा उत्तर उसने नही दिया। गम्भीरता से बोला, "बनर्जी।" लडकी सचमुच ही नयी है, क्योकि बनर्जी के पहले क्या है, यह उसने नही जानना चाहा। चाहने पर भी सोमनाथ एक झूठा जवाब देने के लिए तयार था।

चिन्ताओ के जाल मे फस गया है सोमनाथ। यह नगरी एक दिन गहन अरण्य लगी थी, उसी अरण्य का निरीह सवदा सन्त्रस्त मेमना सोमनाथ सहसा शक्तिमान सिंह शावक मे रूपान्तरित हो गया है। एक निरीह हरिणी को वह कसे क्रीडा के लिए चरम सवनाश की ओर लिये जा रहा है!

ग्रेट इडियन होटल के दरबानजी ने भी शिवली को देख कोई सन्देह नही किया। दरबानजी का क्या दोष ? शिवली को आज पहली बार ही देखा है।

गोयनकाजी ने कमरे के दरवाजे पर खटखट होते ही स्वय दरवाजा खोल दिया है। सोमनाथ की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आज गोयनकाजी खास तौर से बन ठनकर आये हैं। गरद का सफेद कुर्ता उन्होने पहन रखा है। धोती दूल्ह की तरह चुनट की हुई है। शरीर से विलायती सेंट की महक निकल रही है। पान की पीक स दोनो ओठ लाल हो रहे हैं। चेहरे पर चिकनाई नही है। लगता है, यहाँ आने के बाद फिर से नहा लिया है।

नटवर बाबू ने बार-बार कहा था, "गोयनका से कहना, स्पेसिफिकेशन न जानने के कारण हम लोगो ने अपनी पसन्द और समय के मुताबिक लडकी चायस की है। थोडे ध्यान से गोयनका का स्टडी करना।

अगर लगे कि चीज पसन्द नहीं आयी तो तुरन्त कहना, आगे से आप जैसी चाहेंगे, वैसी लाकर रखूंगा।"

ये सब सवाल ही नहीं उठे, क्योंकि गोयनकाजी के हावभाव से समझ मे आ गया कि संगिनी उनको खूब पसन्द आयी है।

सोमनाथ की देह अचानक मिस्र की ममी की तरह सख्त होती जा रही है। उसका मुंह खुल ही नहीं रहा है। नटवर बाबू ने बार बार कहा था, "पूछना, कलकत्ता आते वक्त रास्ते में कोई तकलीफ तो नहीं हुई?"

गोयनकाजी बोले, "मुझे आते ही आपकी चिट्ठी मिली। कमरे में फूल भेजने की तकलीफ क्यों की?"

'तुमको जूते मारना ठीक था', सोमनाथ अगर यह कह पाता तो उसे चैन मिलता। पर सोमनाथ की ममी कुछ नहीं बोली।

गोयनकाजी ने सूट लिया था। सामने बैठने की छोटी जगह है। भीतर से बेडरूम झांक रहा है।

मनुष्य की आंख भी जीभ की तरह हो सकती है, यह सोमनाथ ने पहली बार देखा। शिवली को देख रहे हैं मि० गोयनका—और आंखों की जीभ से उसका शरीर चाट रहे हैं।

शिवली सिर झुकाये सोफे पर बैठी है। अपनी लम्बी चोटी की नोक को शिवली बार बार अंगुली से मरोड़ रही है, यह भी गोयनका ने ध्यान से देखा है। संगिनी को सन्तुष्ट करने के लिए गोयनका ने पूछा कि वह कुछ खायेगी या नहीं, तो शिवली ने ना कर दी। शिष्टाचार के नाते गोयनकाजी ने अब सोमनाथ से पूछा, "कहिए, आप क्या खायेंगे?" सोमनाथ के ना करने पर वह भद्र पुरुष जैसे आश्वस्त हुए।

शिवली की देह को जैसे एक बार और चाटकर गोयनका बोले, "बैठिए ना मिस्टर बैनर्जी! शिवली से हम दोनों ही बातें करें।" नटवर बाबू का उपदेश तुरन्त मन में कौंध गया—"खबरदार, वह काम मत कीजिएगा! जिसके लिए डेट ली है, उसके लिए वह लड़की इस समय सर्वोपरि है यह बात कभी मत भूलिएगा। लड़की के साथ पार्टी जो कुछ भी रस रसिकता करे करने दें। शास्त्र कहते हैं—'परद्रव्यषु लोष्ट्रवत्' (पराया धन मिट्टी के समान है)।'

सोमनाथ ने घडी की ओर देखा। अधीर गोयनकाजी ने अब संगिनी से बेडरूम म जाने का अनुरोध किया।

काला मनीबैग उठाकर शिवली के पासवाले कमरे मे जाते ही सोमनाथ उठ खडा हुआ। गोयनकाजी ने खुशमिजाजी मे सोमनाथ के कन्धे को थपथपाया।

गोयनकाजी ने सोमनाथ को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। बोले, "बहुत-सी बातें हैं अभी ही घर मत चले जाइएगा।"

सोमनाथ ने बता दिया, वह थोडा घूमकर आ रहा है। गोयनका ने बेहया की तरह कहा, "आप डेढ घण्टे बाद आकर नीचे लाउज मे प्रतीक्षा कीजिएगा। मैं आपको फोन से बुला लूगा।"

डेढ घण्टे से सोमनाथ पागलो की तरह एस्प्लेनेड की सडको पर घूम रहा है। भीतर का पुराना सोमनाथ उसको तिक्त करने का प्रयत्न कर रहा था पर इस सोमनाथ ने एक झटके से उसे दूर कर दिया है।

अन्धकार म बहुत देर तक घूमते घूमते एक आश्चर्यजनक अनुभूति हो रही है। अब वह अपने आपको सिंह-शावक नही महसूस कर रहा। अचानक उसे लगता है कि वह एक थका हुआ गोरिल्ला है। बूढे गोरिल्ले की धीमी गति से सोमनाथ अब वापस 'दि ग्रेट इडियन होटल' मे आ गया और एक निरीह गोरिल्ला की तरह ही लाउज की नरम सीट पर बैठ गया।

डेढ घण्टे से केवल दस मिनट ज्यादा लिये गोयनका ने। एक घण्टे चालीस मिनट के बाद फोन पर सोमनाथ को बुलाया। गोयनकाजी के गले से मधुरता झर रही है, "हलो, मि० बनर्जी, वी हैव फिनिश्ड।"

फिनिश्ड ! इसका मतलब है कि अब सोमनाथ ऊपर गोयनकाजी के कमरे मे जा सकता है। नष्ट करने लायक समय अब नही है। पर इसी महान क्षण मे सोमनाथ के भीतर से पुराने सोमनाथ ने फिर से छटपटाकर उठने की कोशिश की। वह गोरिल्ला सोमनाथ से पूछ रहा है, "फिनिश्ड का मतलब क्या है ?" वही सोमनाथ फुसफुसाकर कहता है,

"फिनिश्ड का मतलब तो खत्म हो जाना है। गोयनकाजी फिनिश्ड हो जा सकते हैं, पर 'वी हैव फिनिश्ड' बोलनेवाले वह कौन होते हैं ? ता, उसके साथ और कौन कौन खत्म हुआ ?" "वाह," उस सोमनाथ पर बहुत क्रोधित हुआ यह सोमनाथ, "तुमको हाथ-पैर बांध, पगले सुकुमार की तरह रख दिया है, फिर भी तुम शान्ति क्या नहीं लेने देते।"

वह सोमनाथ कम जिद्दी नहीं—फिर कुछ करना चाहता था। पर वह सब फालतू बकवास सुनने का समय कहां इस सोमनाथ के पास? मि० गोयनका के साथ बिजनेस सम्बन्धी जरूरी बातें अभी कर लेनी होंगी। पढ़ा नहीं है ? 'स्ट्राइक दि आयरन व्हेन इटस हाट ! गोयनका अभी भट्टी से निकले हुए लाल लोहे की तरह नम होगा, देर करने से नहीं चलेगा।

सोमनाथ जरा तेज गति से ही जा रहा था, पर लिफ्ट के सामने नटवर मित्र ने उसे पकड़ लिया। काफी खुशी से बोले, 'कहा गये थे, महाशय ? मैं खोज खोजकर हैरान ! गोयनका का कमरा भी बन्द—'डोंट डिस्टर्ब' का बोर्ड लटक रहा था—मुझे डिस्टर्ब करने का साहस नहीं हुआ।'

सोमनाथ हांफते हांफते बोला, 'किले के मैदान मे घूम रहा था।"

'वाह महाशय ! आप किले के मैदान की हवा खा रहे हैं। मैं तो उषा जैन को मि० सुनील धर के कमरे मे चालान कर डेढ घण्टे से बार म बैठा हूँ। बैठे बिना नहीं रह सका महाशय ! मि० धर गवर्नमेंट मे बड़े इंजीनियर हैं। एकदम सख्त बंगाली हैं। शाम से नशे म चूर हैं। भले आदमी ने मुझसे हाथ मिलाया। नशे की झोंक म बोले लड़की के शरीर पर कभी हाथ नहीं लगाया। आज पहली बार कैरेक्टर नष्ट करूंगा। थैंक यू फॉर योर सिलेक्शन (आपके चुनाव के लिए धन्यवाद)।' मैंने समझा, उषा जैन को पाकर बहुत सन्तुष्ट हुए हैं। पर मिस्टर धर ने जो सुनाया, उससे एक शार्ट स्टोरी बन गयी। मिस्टर धर बोले, 'इन पैसेवाले प्रवासी शहरियों ने हमारे इस सोनार बांगला को चूस चूसकर सर्वनाश कर दिया है। रुपयों की गर्मी दिखा भूतों का नाच कर रहे हैं। हमारी असहाय इनोसेंट लड़कियों तक को अक्षत नहीं रहने देते। इसलिए मैं आज प्रतिशोध

लूँगा।' "

"सुनकर तो महाशय, मेरी हँसी खत्म ही नही हो रही थी। हँसी दबाने के लिए ही बाध्य होकर मुझे एक जाम लेकर बार में बठना पडा।"

नटवर मित्तिर बोले, "आप गोयनका के पास जाइए। व्यापार की बातें इस अच्छे समय म ही कर डालिए। मैं पाँच मिनट बाद ही आप लोगो के कमरे मे जाकर लडकी को देख आता हूँ—गोयनका यदि सन्तुष्ट हो गया है तो भविष्य म मुझस काम काज पायेगी।"

खटखटाने के साथ ही गोयनकाजी ने दरवाजा खोल दिया। कितनी मनोहर सौम्य मुद्रा मे उन्होंने सोमनाथ को भीतर आने के लिए कहा। शिवली नही दिख रही। वह कहा गयी? अभी भी भीतर के कमरे मे लेटी हुई है क्या?

सोमनाथ का अन्दाज ठीक नही निकला। शिवली बाथरूम से बाहर आयी। समुद्र के आलोडन की तरह फ्लश की आवाज आ रही है। शिवली किसी की ओर नही देख रही। उसने मुह घुमा रखा है। बेचारी क्लान्त और टूटी हुई लग रही है।

कैसा आश्चय है? इस कमरे म शिवली को छोड किसी की आखो म कही लज्जा का कोई आभास नही है। गोयनकाजी शान्त भाव से सिगरेट पी रहे है। सोमनाथ सिर ऊचा कर बैठा हुआ है। जितनी भी शम है, वह केवल शिवली दास को ही है। उसको उसकी रकम बहुत पहले ही सोमनाथ ने दे दी है। अपना वैनिटी बैग ले, सिर नीचा किये, बिना कुछ बोले, हरिणी की तरह शिवली कमरे से चली गयी।

गोयनका ने अब थोडी नकली व्यग्रता दिखायी। शिवली को जो देना था, वह बहुत पहले ही दे दिया गया है, यह कहकर सोमनाथ ने उनको आश्वस्त किया।

सन्तुष्ट गोयनका बोले, "शिवली इज वेरी गुड। पर लाइक आल बेंगाली, अपने व्यवसाय मे रहना नही चाहती। बिस्तरे म आकर भी बोलती है एक लडके को नौकरी दे दीजिए।'

आज मि० गोयनका कल्पतरु हो गये हैं। सोमनाथ का हाथ अपने हाथ म लेकर बोले, 'आपके आडर की चिटठी मैं टाइप करवाकर लाया

हूँ। आप रेग्यूलर हर महीने केमिकल सप्लाई करते जाइए। दो नम्बर मिल का काम भी आपको देने की कोशिश करूंगा। अब और देर नहीं। मेरी ससुराल में अभी डिनर का निमन्त्रण है।" यह कह मि० गोयनका ने अपनी चीजें सभालनी शुरू कर दी।

एक प्रचण्ड उल्लास का अनुभव कर रहा है सोमनाथ। गोयनका की चिट्ठी का उसने स्पर्श किया। तो, सोमनाथ बनर्जी अन्त में जीत गया। अब सोमनाथ प्रतिष्ठित है।

गोयनका के कमरे से निकल सोमनाथ रुककर खड़ा हो गया। उसने फिर चिट्ठी का स्पर्श किया।

कारिडर में ही नटवर बाबू मिल गये। हुँकारी दे नटवर बोले, "आज ही चिट्ठी मिल गयी? तब तो गोयनका ने आपको बिजनेस में खड़ा कर दिया। कांग्रेच्युलेशन, मैंने अन्दाज लगाया था बेटा चिट्ठी तैयार करके लायेगा।"

सोमनाथ के धन्यवाद की अपेक्षा नहीं की नटवर बाबू ने। बोले, "फिर बात होगी। मिसेज विश्वास के घमण्ड को मैं ताड़ना चाहता हूँ। लड़की को जरा देख आऊँ—कमरे में है तो?"

अभी ही तो शिवली दास चली गयी।" यह सोमनाथ ने बताया।

'अभी जिस लड़की को मैंने कारिडर में देखा वह? लाल रंग की तांत की साड़ी पहने? आँख पर चश्मा? हाथ में काला बैग?"

सोमनाथ बोला, "हाँ! वही तो है शिवली दास।"

"शिवली दास कहाँ?" थोड़े चकित हुए नटवर मित्र 'उसको तो मैं पहचानता हूँ। हमारे यादवपुर पाड़े में रहती है। तो नाम बदलकर इस लाइन में आयी है। वैसे इस लाइन में कोई भी लड़की अपना सही नाम नहीं बताती। उसका नाम तो है—कना।'

नटवर बाबू बोले, "दास कब से हो गयी! वे लोग तो मित्तिर हैं। उसके बाप को भी पहचानता हूँ। हाल में ही रिटायर हुए हैं। और भाई इन दिनों पूरा पागल हो गया है—शायद सुकुमार नाम है या क्या तो नाम है।

अप्रत्याशित आविष्कार में आनन्द से नटवर मित्तिर अभी भी मुग्ध

हैं। बोले, "कैसा आश्चर्य है, देखिए—पूरा शहर ढूढकर अन्त में जिसको लाया गया वह बगल के मकान की है। उनको बहुत कष्ट था, अच्छा ही कर रही है।'

अचानक सोमनाथ को भयकर डर लग रहा है। कल जब तपती उससे मिलने आयेगी तब यदि सोमनाथ का चेहरा गोरिल्ला-जैसा दिखे तो? तपती क्या तब भी प्यार कर पायेगी? तपती ने कहा था—सामनाथ के निष्पाप चेहरे की सरल हँसी देखकर ही उसने उसे हृदय दिया।

'कना, कना कना," पागल की तरह कना को आवाज देता हुआ सोमनाथ ग्रेट इडियन होटल के पोर्टिको तक भागता आया। पर कहाँ है वह सुकुमार की बहन? वह चली गयी है।

सोमनाथ बनर्जी जोधपुर पार्कवाले अपने मकान के सामने रुककर मदहोश की तरह चल रहा है। उसके हाथ में उपहार के लिए लायी हुई दो साडियाँ हैं एव पाकेट में चिट्ठी—जिसने उसको समस्त आर्थिक अपमानों से मुक्ति दिलायी है। सोमनाथ अब नौकरी का भिखारी नहीं है—वह अब सुप्रतिष्ठित व्यवसायी है। हर महीने एक आर्डर से ही वह हजार रुपये कमा लेगा। तपती को बता देगा कि वह अब किसी से नहीं डरता।

कमला भाभी को ही प्रथम खबर दी सोमनाथ ने, फिर साडी आगे कर दी। कमला भाभी समझ गयी—सोमनाथ ने आज कुछ बडी बात की है। "तो आज तुम अपने पैरों पर खडे हो गये!" कमला भाभी गहरे आनन्द से बोली।

आनन्द से आत्मविस्मृत हो भाभी ने अब देवर का दिया प्रथम उपहार खोला। बोली "वाह!" सोमनाथ को खुश करने के लिए भाभी अभी ही वह साडी पहनने चली गयी। बोली 'यह साडी पहनकर ही जन्म दिन की खीर परोसूगी।'

बगलवाले कमरे में भाभी के पहुँचते ही सोमनाथ ने कातर स्वर में पुकारा, 'भाभी!"

"क्या हुआ? इस तरह चिल्ला क्यों रहे हो?" भाभी ने वापस आ

आश्चय से पूछा।

सोमनाथ करुण भाव से बोला, "भाभी, यह साड़ी आप मत पहनिएगा!"

'क्यो? क्या हुआ?" कमला भाभी कुछ भी नही समझ पायी।

"उसम बहुत गन्दगी है, भाभी!" अटक-अटककर बोला सोमनाथ, "सुबह जब खरीदी थी, तब वह साफ थी। शाम को सहसा गन्दी हो गयी। उसमे बहुत तरह की गन्दगी है, भाभी! आप मत पहनिएगा।"

देवर की इस तरह से बात करने की मुद्रा कमला भाभी ने कभी भी नही देखी थी। बोली "लगता है, हाथ से गिरकर कही गन्दी हो गयी।"

सोमनाथ फिर बोला, "इसको पहनने से आपको तो मना किया ही है।" कमला ने लाचार हो साडी को धोने के लिए रख दिया।

और भी रात हो गयी। अभिजित आसनसोल फैक्टरी गया है—*आज नही आयेगा। सोमनाथ खाने नही आया, यह देख* बुलबुल उसको बुलाने उसके कमरे म गयी। सोचा था, उसी समय बधाई दे, अपनी साडी माग लेगी।

पर छोटा सा मुह लिये वह सोमनाथ के कमरे से बाहर आयी। जल्दी से दीदी के पास आ फुसफुसाकर बोली, "दीदी, क्या बात है? तकिये मे मुह घुसा छिप छिपकर सोम सुबकियां ले रहा है।"

कमला भाभी की आँखें छलछला आयी। बोली, "लगता है, अपने पैरो पर खडे होने के कारण उसको माँ कीयाद आ रही है।" भाभी ने कुछ सोचा, फिर बोली, "ठहरो! उसे सकोच म मत डालो रोने दो।"

श्री जे बगरहट्टा, श्री गनचन्द्र शर्मा
श्री हरिशंकर शर्मा [illegible]
श्री याज्ञवल्क्य शर्मा [illegible]
द्वारा - [illegible]

 [illegible]

हिन्दीव्याख्यासहितम्
श्रीभरतमुनिविरचितम्

नाट्यशास्त्रम्

साहित्य भण्डार
सुभाष बाजार, मेरठ।
[illegible]

[illegible] १९७८]   [[illegible]

प्रकाशक
रतिराम शास्त्री
अध्यक्ष
साहित्य भण्डार
सुभाष बाजार, मेरठ।

मूल्य दो रुपये
तृतीय संस्करण, सितम्बर १९७६

मुद्रक
वरदान प्रेस,
मेरठ-२।

प्रस्तावना

भरत संज्ञा विमर्श

भरत नाम से सब प्रथम भगवान रामचन्द्र के भाई और महाराज दशरथ के पुत्र भरत का परिचय हमको मिलता है किन्तु उसके साथ नाट्यशास्त्र का कोई सम्बन्ध किसी रूप मे भी नही। भरत नाम के दूसरे व्यक्ति दुष्यन्त के पुत्र भरत मिलते है, और तीसरे इसी भरत नाम के व्यक्ति मान्धाता के प्रपौत्र के रूप मे पाये जाते हैं। किन्तु यह दोनो राजा या राजपुत्र हैं मुनी नही। नाटयशास्त्र के निर्माता भरत 'मुनि' है, इसलिये ये दोनो भी नाट्यशास्त्र के निर्माता नही कहे जा सकते है। इन तीन भरत व्यक्तियो के अतिरिक्त आदि भरत, वृद्ध भरत', जड भरत' नाम से तीन भरतो का उल्लेख सस्कृत साहित्य म और पाया जाता है। इन्ही मे से किसी एक या इन तीनो को नाटयशास्त्र का निर्माता मानना होगा। तीनो को इसलिये कि वतमान नाटयशास्त्र जिस रूप म आज उपलब्ध हो रहा है वह उसका आदि रूप नही है। उसका कई बार सम्पादन (Recension) हुआ है। उसके दो सस्करणो का उल्लेख तो श्री शारदातनय ने अपने भावप्रकाशन ग्रन्थ मे किया है। जिसम प्रथम सस्करण का रचयिता आदि भरत या वृद्ध भरत को और द्वितीय सस्करण का रचयिता 'भरत' को बतलाया है। 'आदि भरत या 'वृद्ध भरत का बनाया हुआ नाटयशास्त्र अपने कलेवर की दृष्टि से वतमान नाटयशास्त्र की अपेक्षा दुगुना बडा था। उसका परिमाण बारह सहस्र श्लोको का था। इसलिये उसको सहस्री संहिता भी कहते हैं। 'आदि भरत' या वृद्ध भरत' का

हुआ नाटयशास्त्र बारह सहस्र श्लोको का अत्यन्त दीर्घकाय महा ग्रन्थ था। भरत मुनि ने उसका सक्षेप करके ६ सहस्र श्लोको का यह लघु सस्करण प्रस्तुत किया है। यही इन दोनो सहिताम्रो मे भेद है। इन दोनो का उल्लेख करते हुये शारदातनय ने 'भावप्रकाशन' ग्रन्थ में लिखा है —

"एव द्वादश सहस्र श्लोकरेक, तदर्धत।
षड्भि श्लोकसहस्र र्यो नाट्यवेदस्य सग्रह ॥"
(भावप्रकाशन, पृष्ठ २८७)

इससे यह अनुमान सरलतापूर्वक किया जा सकता है कि नाटयशास्त्र की द्वादश सहस्री सहिता का निर्माण जिन्होने किया था उनका आदि भरत या वृद्ध भरत के नाम से तथा षटसहस्री-सहिता के रचयिता का केवल 'भरत' या भरत मुनि के नाम से उल्लेख किया गया है। इन दोनों सहिताम्रो के निर्माता 'भरत' नाम के व्यक्ति ही है। इस ही आधार पर कुछ व्यक्ति भरत को व्यक्ति विशेष का नाम न मानकर उपाधि मानते हैं।

नाट्यशास्त्र के प्राचीन आचार्य

नाटयकला विषयक उपलब्ध समस्त ग्रन्थ मे यद्यपि वर्तमान भरत-नाटयशास्त्र सबसे अधिक प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है, किन्तु जिस प्रकार पाणिनि की अष्टाध्यायी की रचना से पहले भी व्याकरण के अनेक आचार्य थे, जिनका उल्लेख स्वय पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी मे किया है, इसी प्रकार भरत-नाटयशास्त्र से पूर्ववर्ती अनेक नाटयाचार्यों का उल्लेख भरत मुनि ने स्वय किया है। इनमें से 'शिलालिन' और कृशाश्व नामक नटसूत्रो के रचयिता दो आचार्यों का उल्लेख पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' मे 'पाराशर्य शिलालिभ्या भिक्षुनट सूत्रयो' (४ ३-११०) तथा कर्मन्दकृशाश्वादिनि' (४-३ १११) इन सूत्रो मे किया गया है। ये नट सूत्र' नाटयशास्त्र के मौलिक सूत्र रहे होगे। भरत के नाटयशास्त्र के बन जाने पर उनका भी प्रचार उठ गया।

कोहल—शिलालिन् और कृशाश्व के बाद 'कोहल' भरत से पूर्ववर्ती तीसरे प्रसिद्ध नाटयाचार्य हैं। भरत नाटयशास्त्र म उनका उल्लेख कई स्थान

पर है। नाटयशास्त्र के अन्तिम अध्याय मे कोहल, वात्स्य, शाण्डिल्य और धूर्तिल इन चार प्राचीन नाटयाचार्यों का एक साथ उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

"कोहलादिभिरेतर्वा वात्स्य शाण्डिल्य धूर्तिल ।
एतच्छास्त्र प्रयुक्त तु नराणा बुद्धिवर्धनम ॥१॥

अभिनवगुप्त न भी अपनी टीका मे अनेक जगह कोहलाचाय के मत का उल्लेख किया है। जसे प्रथमोध्याय मे (पृ० १३७) नान्दी का विवेचन करते हुये 'इत्येषा कोहल प्रदर्शिता नान्दी उपपन्ना भवति दिया है। छठे अध्याय मे (पृ० ४१६) दशम श्लोक म नाटय क रस, भाव आदि ग्यारह अग गिनाये गये है। अभिवनगप्त का मत है कि य ग्यारह अग भरत के मत से नहा, अपितु कोहल के मत स दिखलाये गय है। उन्होने लिखा है—

"अनेन तु श्लोकेन कोहलमतेन एकादशाङ्गत्वमुच्यते। न तु भरत'। इसी प्रकार अन्य अनेक स्थलो पर अभिवनगुप्त न भरत मुनि क मत से कोहलाचाय के मत की भिन्नता दिखलाते हुये कोहलाचाय के नाम का उल्लख किया है। इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि भरत मुनि क पूववर्ती कोहलाचाय का अपना कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ था। उसी के आधार पर अभिवनगुप्त ने उनके मत का इतना स्पष्ट और इतना अधिक उल्लेख अपने ग्रन्थ मे किया है।

धूर्तिल, शाण्डिल्य और वात्स्य—

नाट्यशास्त्र के अन्तिम अध्याय का जो श्लोक हम ऊपर कोहलाचाय क निर्देश मे उद्धृत कर आय है उसमे कोहल के साथ धूर्तिल, शाण्डिल्य तथा वात्स्य इन तीन आचार्यों क नाम का उल्लेख भी भरत क श्लोक म पाया जाता है। इससे प्रतीत होता है कि य तीनो भी भरत क पूववर्ती आचाय है। कोहलाचाय के समान दत्तिलाचाय क श्लोक को भी अभिवनगुप्त न नामग्राह पूवक उदधत किया है। सगीत सम्बन्धी अध्याय म लगभग १८ बार दत्तिल क मत का उल्लेख और उनक उद्धरण प्रस्तुत किये गय हैं, इसलिय यह स्पष्ट है कि कोहल के समान दत्तिल भी नाटयशास्त्र के भरत क पूववर्ती प्राचीन आचाय हैं। वात्स्य और शाण्डिल्य का उल्लख भरत मुनि क ऊपर उदधत

किये हुये अंतिम अध्याय वाले श्लोक म किया गया है, पर अभिनवगुप्त ने उनका कोई उद्धरण आदि नहीं दिया है। इसलिये यह नहीं कहा जा सकता है कि उन्होंने कोई ग्रंथ लिखा था या नहीं।

नखकुट्ट तथा अश्मकुट्ट—इन दोनों नामों की गणना नाट्यशास्त्र के प्रथमाध्याय म गिनाये हुये भरतमुनि के सौ पुत्रों के नामों में की गई है। इनके समान ही कोहल, दत्तिल, शाण्डिल्य और वात्स्य की गणना भी सौ पुत्रों के नामों में की गई है। परन्तु जैसे कोहल और दत्तिल के उद्धरण अभिनव भारती आदि म पाये जाते हैं इसी प्रकार 'नखकुट्ट और अश्मकुट्ट' के उद्धरण अन्य ग्रन्थों में पाये जाते हैं। ये दोनों व्यक्ति समकालीन और एक ही स्थान के रहने वाले प्रतीत होते हैं। साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ने (सा० द० के २६४ पृ०) नखकुट्ट का उद्धरण दिया है। सागरनन्दी ने नाटकलक्षणरत्नकोश नामक अपने ग्रंथ में 'अश्मकुट्ट' के उद्धरण (पृ० ८३ ४३०) आदि भिन्न भिन्न स्थानों में दिये हैं। इससे स्पष्ट है कि ये दोनों भी नाट्यशास्त्र के प्राचीन आचार्य हैं।

वादरायण—

भरत पुत्रों की सूची में ३२वें श्लोक में वादरायण नाम भी आया है। 'सागरनन्दी ने अपने नाटकलक्षणरत्नकोश ग्रंथ में (१९९२–१९९४ तथा २७७०–२७७१) दो स्थानों पर वादरायण या वादरि के नाम से उद्धरण दिये हैं। उन उद्धरणों से यह प्रतीत होता है कि वादरायण या वादरि' ने भी नाट्य के विषय में कोई ग्रंथ लिखा होगा।

शातकर्णी—

सनेवट इम्क्रिप्शन्स (पृ० १९१–२०७) के अनुसार विक्रम पूर्व प्रथम शताब्दी से लेकर विक्रम पश्चात प्रथम शताब्दी तक के शिलालेखों में 'शातकर्णी का नाम पाया जाता है। सागरनन्दी' के नाटयलक्षणरत्नकोश म (११०१—११०३) तथा उसकी रुचिपति कृत टीका (पृ० ७) में शातकर्णी के उद्धरण पाये जाते हैं। इनसे प्रतीत होता है कि ये नाट्यशास्त्र के प्राचीन आचार्य हैं, और इन्होंने नाट्य के विषय में कोई ग्रंथ भी लिखा था। शिला

मे नाम होने से यह प्रतीत होता है कि शातकर्णी सम्भवत कोई राजा ौर उन्होने नाटय पर कोई ग्रथ भी लिखा हो। इधर कालिदास ने रघु- के त्रयोदश सग के ३८–४० श्लोको मे शातकर्णी मुनि का उल्लेख किया भरत नाटयशास्त्र मे श्लोक स० २८ म 'शालिकण' नाम आया है। सम्भव सका इस 'शातकर्णि' नाम के साथ कुछ सम्बन्ध हो।

ी (नन्दिकेश्वर), तुम्बरु, विशाखिन् और चारायण —

ऊपर दिये हुये नाटयकारो के अतिरिक्त अभिनवगुप्त तथा शारदातनय ने : या नन्दिकेश्वर नाम के मध्यवर्ती नाटयकारो का भी उल्लेख किया अभिनवगुप्त न चतुथ अध्याय पृ० १६६ पर नन्दिमत का उल्लेख किया ये नन्दिकेश्वर तथा अभिनयदपण' के रचयिता नन्दिकेश्वर सम्भवत ही व्यक्ति हो। अभिनवगुप्त न पृष्ठ १६३ पर 'तुम्बुरुणेदमुक्तम'—लिख आगे 'तुम्बरू' का भी उद्धरण प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार पृ० १६७ विशाखिन का उल्लेख भी किया है और 'सागरनन्दी ने अपने 'नाटक- ग' म (श्लोक ३६२–३६३ मे) एक जगह 'चारायण आचाय का ाख किया है। इन सब उद्धरणो से प्रतीत होता है कि ये मध्यकालीन याचाय थे।

ाशिव, पदमभू, द्रौहिणि, व्यास तथा आञ्जनेय—

शारदातनय ने तथा दशरूपककार धनञ्जय न 'सदाशिव' का उल्लेख ा है। 'अभिनव भारती म भी (पृ० ६ पर) सदाशिव के मत का उल्लेख ा है। शारदातनय ने भावप्रकाशन म सदाशिव के अतिरिक्त पदमभू · ४७), द्रौहिणि (पृ० ४७) व्यास (पृ० २५१) तथा आञ्जनेय (पृ० २५१) भी नाटयकार के रूप मे उल्लेख किया है। परन्तु उनके किसी ग्रथ के रण आदि नही दिये गये है। इसलिये यह नही कहा जा सकता है कि ोंने वस्तुत किन्ही ग्रथो की रचना की थी या नही।

्यायन, राहुल तथा गर्ग—

अभिनवगुप्त ने अध्याय १४, पृ० २४५-२४६ पर "यथोक्त च।

"वीरस्य भुजदण्डानां वर्णने स्नग्धरा भवेत् ।
नायिकावर्णनेकाय वसन्ततिलकादिकम् ॥
शार्दूल लीला प्राच्येषु मन्दाक्रान्ता च दक्षिणे । इत्यादि"

यह कात्यायन का वचन उद्धृत किया है, इससे प्रतीत होता है कि कात्यायन ने नाटयशास्त्र तथा छन्द शास्त्र के विषय में कोई ग्रन्थ लिखा था। सागरनन्दी ने भी 'नाटयलक्षणरत्नकोश' (श्लोक १४८८-१ ८५) में कात्यायन का उल्लेख किया है।

भरतोत्तरवर्ती नाट्यशास्त्रकार—

भरत के उत्तरवर्ती सब नाटय साहित्यकारों ने यद्यपि स्वतन्त्र रूप से नाटय साहित्य के विषय में अपने ग्रन्थों की रचना की है किन्तु वास्तव में वे सब नाटयशास्त्र के ऋणी हैं। नाटयशास्त्र के आधार पर उसके किसी एक अंश को लेकर इन्होंने अपने ग्रन्थों की रचना की है। इन ग्रन्थों में (१) धनञ्जय का 'दशरूपक", (२) सागरनन्दी का "नाटयलक्षणरत्नकोश", (३) रामचन्द्र गुणचन्द्र का 'नाटयदर्पण", (४) शारदातनय का 'भावप्रकाशन', (५) शिंग भूपाल की "नाटकपरिभाषा' (अप्राप्य) तथा (६) रूप गोस्वामी की 'नाटक चन्द्रिका" ये मुख्य ग्रन्थ हैं, जो स्वतन्त्र रूप से केवल नाट्य विषयक विवेचना के लिये लिखे गये हैं। इनके अतिरिक्त भोज का 'शृंगार प्रकाश' और 'सरस्वती कण्ठाभरण' विद्यानाथकृत 'प्रतापरुद्रीय यशोभूषण' तथा विश्वनाथ का 'साहित्य दर्पण' तथा शिङ्गभूपाल का 'रसार्णवसुधाकर' इस प्रकार के ग्रन्थ हैं जिनकी रचना केवल नाटय सम्बन्धी विवेचना के लिये की गई है। इन ग्रन्थकारों का थोड़ा-सा परिचय हम आगे दे रहे हैं।

धनञ्जय—

स्वतन्त्र रूप से नाटय विवेचन पर लिखे गये ग्रन्थों में दशरूपक सर्वाधिक प्रचलित और प्रसिद्ध ग्रन्थ है इसके रचयिता धनञ्जय हैं।
धनञ्जय अपने ग्रन्थ के अन्त में अपना परिचय इस प्रकार दे रहे हैं—

"विष्णोः सुतेनापि धनञ्जयेन विद्वन्मनोरागनिबन्धहेतु ।
आविष्कृतं मुञ्जमहीशगोष्ठीवैदग्ध्यभाजा दशरूपमेतत् ॥

इससे प्रतीत होता है कि ये मालवा के परमार वंश के राजा मुञ्ज

या (वाक्पतिराजद्वितीय) की सभा के राजकवि थे । इसलिये इनका समय ९७४ से ९९५ के बीच निर्धारित किया जाता है। इसी श्लोक से यह भी प्रतीत होता है कि इनके पिता का नाम विष्णु था । इन्होने नाटयशास्त्र के आधार पर ही अपने ग्रन्थ की रचना की है किन्तु उसके सारे व्यापक अगो को छोड कर केवल नाट्य विषय से सम्बन्ध रखने वाले विषयो का ही वर्णन अपने ग्रन्थ मे किया है । इसलिये ग्रन्थ के आरम्भ के चतुर्थ श्लोक मे उन्होने स्पष्ट ही लिख दिया है कि—

'नाट्याना किन्तु किञ्चित प्रगुणरचनया लक्षण सक्षिपामि ।' इति

घनिक—

इन्ही "धनञ्जय के छोटे भाई "धनिक ने दशरूपक के ऊपर 'दशरूपकावलोक' नामक उच्च कोटि की टीका लिखी है । इसी टीका के चतुर्थ प्रकाश मे इन्होने 'यथाऽवोचाम काव्यनिर्णये' लिखकर यह सूचना दी है कि इन्होने 'काव्य निर्णय नाम का कोई दूसरा ग्रन्थ भी लिखा था । ये स्वय कवि भी थे, क्योकि अवलोक टीका' मे इन्होने कई जगह अपने पद्य उदाहरण रूप मे प्रस्तुत किये हैं।

सागरनन्दी—

सन् १९२२ मे स्व० 'सिल्वा लेवी ने नैपाल मे नाटयलक्षणरत्नकोश' नामक ग्रन्थ की पाण्डुलिपि प्राप्त की और उसके सम्बन्ध मे परिचयात्मक विवरण जनरल एशियाटिक मे १९२२ पृ० २१० पर प्रकाशित कराया । इससे विदित हुआ कि "सागरनन्दी' ने भी नाटय साहित्य पर एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की है । इसके पूर्व 'नाटयलक्षणरत्नकोश के कुछ उद्धरण तो विभिन्न ग्रन्थो मे मिलते थे किन्तु इनमे ग्रन्थ का पता नही था । उसके बाद १९३७ मे श्री एम डिलन ने इस ग्रन्थ को सुसम्पादित करके लन्दन से प्रकाशित करवाया है । नाटयलक्षणरत्नकोश' मे भरत मुनि के अतिरिक्त (१) 'हर्षवार्तिक', (२) मातृ गुप्त (३) गर्ग, (४) अश्मकुट्ट (५) नखकुट्ट (६) बादरि का भी उल्लेख पाया जाता है । इससे प्रतीत होता है कि सागरनन्दी ने भरत सहित सात आचार्यों के ग्रन्थो के आधार ग्रन्थ की रचना की है । किन्तु इन सब मे अधिकतया नाटयशास्त्र

लिया गया है। अनेक स्थानों पर भरत के श्लोकों को ज्यों का त्यों उतार लिया गया है। दशरूपक के समान यह ग्रन्थ भी कारिका रूप में ही लिखा गया है।

रामचन्द्र गुणचन्द्र—

काल की दृष्टि से धनञ्जय तथा सागरनन्दी के बाद तीसरा स्थान 'रामचन्द्र गुणचन्द्र' का आता है। इन्होंने नाट्य साहित्य पर नाट्यदर्पण नामक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना की है। ये दोनों जैन हैं और प्रसिद्ध जैन दार्शनिक हेमचन्द्राचार्य के शिष्य हैं। इनका समय १२वीं शताब्दी में निर्धारित किया गया है। 'नाट्यदर्पण' कारिका रूप में लिखा गया है। उसके ऊपर इन्हीं दोनों विद्वानों ने स्वयं अपनी वृत्ति भी लिखा है। इन दोनों विद्वानों में से रामचन्द्र ने अलग स्वतन्त्र रूप से लगभग १००सौ ग्रन्थों की—जिनमें अधिकांश नाटक हैं रचना की है। गुणचन्द्र का पृथक कोई ग्रन्थ नहीं पाया जाता। इन लोगों ने अपनी वृत्ति में पूर्ववर्ती अनेक आचार्यों के मतों का खण्डन किया है। इनमें से दशरूपककार धनञ्जय का स्थान मुख्य है। धनञ्जय के मत की रामचन्द्र गुणचन्द्र ने अनेक स्थानों पर आलोचना की है।

रुय्यक—

अन्य साहित्यिक विद्वानों के समान 'रुय्यक" भी एक काश्मीरी विद्वान् है। इन्होंने 'महिम भट्ट" के 'व्यक्तिविवेक' के ऊपर अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण टीका लिखी है। उसी टीका से यह पता चलता है कि इन्होंने नाटक मीमांसा' नामक कोई ग्रन्थ नाट्य साहित्य पर भी लिखा था किन्तु वह ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है।

शारदातनय—

धनञ्जय, सागरनन्दी और रामचन्द्र गुणचन्द्र के बाद अगला स्थान शारदातनय का आता है। शारदातनय का प्रसिद्ध ग्रन्थ भावप्रकाशन है। यह ग्रन्थ आकार में दशरूपक व नाट्यदर्पण आदि से बहुत बड़ा है, एवं लगभग नाट्य सम्बन्धी सभी विषयों का विस्तार के साथ इसमें विवेचन किया गया है। यह ग्रन्थ श्लोकबद्ध है। उसके १० प्रकरणों में रूपकों और उपरूपकों का

उदाहरणो के सहित विवेचन किया गया है। यह ग्रन्थ गायकवाड़ ओरिएण्टल सिरीज' बड़ौदा से प्रकाशित हो चुका है।

शिङ्गभूपाल—

शिङ्गभूपाल का समय १४वी शताब्दी मे आता है। इनके दो ग्रन्थ हैं। एक 'नाटक परिभाषा' और दूसरा 'रसार्णवसुधाकर'। नाटक परिभाषा के नाम से ही प्रतीत होता है कि वह मुख्य रूप से नाटक के विषय के प्रतिपादन के लिये ही लिखा गया था। किन्तु अभी तक इसका प्रकाशन नही हुआ है। इनका दूसरा ग्रन्थ रसार्णवसुधाकर' नाटक विषय पर नही, अपितु साधारणत साहित्य विषय पर लिखा गया है। किन्तु उसके अन्तिम भाग मे नाटक का विवेचन भी किया गया है।

श्री रूप गोस्वामी—

श्री रूप गोस्वामी प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य है। उनका समय १५वी शताब्दी के आसपास निर्धारित किया जाता है। उनका नाटकचन्द्रिका ग्रन्थ भरत नाट्यशास्त्र तथा शिङ्गभूपाल के 'रसार्णवसुधाकर' के आधार पर लिखा गया है। इसमे मुख्य रूप मे नाटक सम्बन्धी विषयो का ही विवेचन किया गया है। उसकी मुख्य विशेषता यह है कि उसमे उदाहरण प्राय वैष्णव ग्रन्थो से ही लिये गये हैं। श्री रूप गोस्वामी की दूसरी रचना हरिभक्ति रसामृत सिन्धु है। वह इससे कही अधिक प्रसिद्ध और कही अधिक महत्वपूर्ण कृति है।

राजा भोज—

राजा भोज का 'शृगार प्रकाश' ग्रन्थ भारतीय साहित्य शास्त्र का कदाचित सबसे अधिक विशाल ग्रन्थ है। यह ३६ प्रकाश मे विभक्त है। किन्तु इसका ३६वाँ प्रकाश अभी तक मिला ही नही है। इसके बारहवे प्रकाश मे नाट्य का वर्णन हुआ है। शेष भागो मे साहित्यशास्त्र सम्बन्धी अन्य विषयो का विवेचन किया गया है। ग्रन्थ सम्पूर्ण रूप से प्रकाशित नही हो पाया है। इन्ही राजा भोज का दूसरा ग्रन्थ सरस्वती कण्ठाभरण' है। इसके पाचवे परिच्छेद मे नाटक सम्बन्धी विषयो का प्रतिपादन किया गया है।

विद्यानाथ—

विद्यानाथ भी चौदहवीं शताब्दी के लेखक हैं। इनका ग्रन्थ प्र रुद्रयशोभूषण इनके आश्रयदाता काकतीय वंश के राजा प्रताप रुद्रदेव स्तुति के रूप में लिखा गया है। इसमें नौ प्रकरण हैं। तीसरे प्रकरण में ना सम्बन्धी विषय का विवेचन किया गया है। लक्षणों के उदाहरण दिखलाने लिये विद्यानाथ ने अपने आश्रयदाता की प्रशंसा में 'प्रतापरुद्र कल्याण' ना एक नाटक की भी रचना की है। 'प्रतापरुद्रीय' मल्लिनाथ के पुत्र कु स्वामी की रचना है, यह भी लक्षण ग्रन्थ है।

विश्वनाथ—

कविराज विश्वनाथ का 'साहित्य दर्पण' ग्रन्थ साहित्यशास्त्र का सम्मानित ग्रन्थ है। पाठ्य ग्रन्थों में उसका सर्वत्र सन्निवेश किया गया इसके छठे परिच्छेद में नाटक सम्बन्धी विषय का विवेचन भरत नाट्यशास्त्र आधार पर किया गया है।

संस्कृत भाषा में लिखे गये नाट्य साहित्य की यह संक्षिप्त रूप रेखा है भरत से लेकर अब तक नाट्य साहित्य पर हुये कार्य का संक्षिप्त विवर इसमें देने का यत्न किया गया है।

अभिनव गुप्तद्वय—

ऊपर हम नाट्यशास्त्र के टीकाकारों में अभिनव गुप्त के नाम का उल्ले कर चुके हैं। अन्य प्राचीन आचार्यों और ग्रन्थकारों की अपेक्षा अभिनव गु का परिचय कुछ सुलभ है क्योंकि उन्होंने अपने ग्रन्थों में—प्रायः अपने पूर्वज और ग्रन्थों के लिख जाने के समय आदि का उल्लेख कर दिया है। इस आधार पर उनके काल का निर्धारण और कुछ सामान्य परिचय सरलत से मिल जाता है। फिर भी उनके सम्बन्ध में एक समस्या उत्पन्न हो गई है और उस समस्या को उत्पन्न करने का कारण है 'माधव' का 'शङ्करदिग्विजय' नामक काव्य। शङ्करदिग्विजय में वेदान्त सूत्रों पर शाक्त सम्प्रदाय के मतानुसार भाष्य करने वाले अभिनव गुप्त नामक एक शाक्त भाष्यकार का उल्लेख किया गया है। ये शाक्त भाष्यकार कामरूप (आसाम) के निवासी हैं

ार अपने समय के महान् विद्वान तथा दार्शनिक माने जाते हैं। अत य कौन हैं ? इसका निश्चय पर पहुचना कठिन है।

नाटयशास्त्र का महत्त्व

भरत मुनि का नाटयशास्त्र अपने विषय की अद्वितीय पुस्तक है। ससार भर म इस विषय पर इतना परिपूर्ण और इतना प्राचीन ग्रन्थ कोई ग्रन्थ नही है। नाटय सम्बन्धी ज्ञान के अतिरिक्त इससे प्राचीन भारत की सामाजिक अवस्था का भी बहुत अच्छा परिचय प्राप्त होता है। कला और संस्कृत के क्षेत्र म हम लोग कितने समुन्नत थे इसका पता नाटयशास्त्र से भली भाँति चलता है। ६ सहस्र श्लोको क इस विशाल ग्रन्थ म प्राचीन भारत का एक ऐसा चित्र उपलब्ध होता है जैसा अन्यत्र दुलभ है। विदेशो म इस कोटि के ग्रन्थो म कोई ऐसा ग्रन्थ नही है जो इसके साथ प्रतिस्पर्धा कर सके। अरिस्तोतिली (एरिस्टोटल) की "परिपोइतिकीस नामक रचना नाटयशास्त्र के विषय मे यूरोप मे आकार ग्रन्थ के रूप म सम्मानित है। परन्तु उसमे नाटय के एक प्रकार—अर्थात शोकद (ट्रेजेडी) का ही साङ्गोपाङ्ग वणन किया गया है। यह छोटी सी रचना है। नाटयशास्त्र के दशमाश से भी इसका आकार छोटा है। इसकी अपूर्णता के विषय की चर्चा स्काटजेम्स' ने अपनी विख्यात पुस्तक दी मेकिङ्ग ऑफ लिटरेचर' म (पृ० ५७–५८) पर बडे पश्चात्ताप के साथ की है। उन्होने लिखा है कि 'अरिस्तोतिली' ने केवल त्रासदी (दुःखान्त नाटको) के काव्य रूप का विवेचन किया है न कि वास्तविक नाटय रूप का। यदि वह नाटक के अभिनय का भी पूरा पूरा विवरण दे देता तो "स्काट जेम्स' उस पर सवस्व न्योछावर कर देता। "अरिस्तोतिली' क इस ग्रन्थ के पश्चात यूरोप मे इस विषय की दूसरी प्रख्यात रचना "लेसिङ्ग की 'हाम्बुर्गिश ड्रामटर्जी' है। पर यह भी नाटयशास्त्र की तुलना म नही रखी जा सकती। अतएव डा० राघवन् न साहित्य के विश्वकोश म एनसाइक्लोपीडिया आफ लिटरेचर प्र० खण्ड (पृ० ४६८) पर लिखा है कि इसन ३६ अध्यायो मे यह नाटयशास्त्र अरिस्तोतिली की रचना की अपेक्षा अधिक पूर्ण है और संस्कृत नाटय-साहित्य क सम्बन्ध म पूर्ण ज्ञान (दृष्टि) कराता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इसके समान अन्य रचना 'न भूतो न भविष्यति'।

जम्बू द्वीप का वर्णन

नाट्यशास्त्र की कारिका १/१० में जम्बू द्वीप का उल्लेख किया गया है यह भूमण्डल सात द्वीपों में विभक्त है। आज भौगोलिक विद्वान् को पांच भागों में विभक्त करते हैं। सात महाद्वीपों में जम्बू द्वीप में हमारा भारतवर्ष है जो इस द्वीप के दक्षिण भाग में स्थित है। इसे एशिया महाद्वीप कहते हैं जम्बू द्वीप के बीच के भाग में हिमालय पर्वत और उसकी श्रेणियां एवं पामीर का पठार विद्यमान है। यह धरातल का सबसे ऊंचा भाग है। जम्बू द्वीप के मध्य भाग में सुमेरु पर्वत की स्थिति मानी गई है। सुमेरु और पामीर एक ही हों ऐसा सम्भव है। योगदर्शन ३/२६ के व्यास भाष्य में उदीचीनास्त्रय पर्वता यह लिखा मिलता है। जिनकी स्थिति सुमेरु के उत्तर की ओर है। आज की भाषा में इन तीनों पर्वतों को क्रमश 'अल्तायी', 'याब्लोनाई तथा 'स्तानोवोई और प्राचीन भाषा में रमणक, 'हिरण्यक और "उत्तर कुरु के नाम से पुकारते हैं। उत्तरकुरु आजकल का साइबेरिया कहलाता है। मंगोलियन जाति के व्यक्ति अपने पीतवर्ण के कारण हिरण्य देश के वासी कहे जाते हैं। रूस की ओर का एशिया का भाग रमणक कहलाता है। योगदर्शन के अनुसार सुमेरु पर्वत के दक्षिण भाग में निषध, हेमकूट, और हिमशैल नामक तीन पर्वत स्थित हैं। उन्हीं के समीप हरिवर्ष, किम्पुरुषवर्ष और भारतवर्ष का उल्लेख है। कादम्बरी में भी हेमकूट के समीप ही किम्पुरुषवर्ष का उल्लेख हुआ है। इन तीनों वर्षों के दूसरी ओर भद्राश्व और केतुमाल देश हैं। इनके बीच में इलावृत देश स्थित है। इस कारिका में भी जम्बू-द्वीप से इस ही भू खण्ड का उल्लेख किया गया है।

नाट्यशास्त्र के रूढ़ि शब्द

रंगपीठ—यह एक प्रकार से व्यासपीठ का ही नाम है। व्यासपीठ के दोनों ओर जो बरामदे बनते हैं यह मत्तवारणी कही जाती है। किसी किसी स्थान पर रंगपीठ के पीछे रंगशीर्ष बनाना लिखा है और उसके बाद पीछे

की तरफ नेपथ्यगह होना है। इसका मतलब यह है कि नटगण मध्य मे रहते थे और चारा और रगशाला होती थी। आजकल की तरह बिजली के द्वारा चित्र पर लाइट नही दिखाई जाती थी। किन्तु त्रिकोण रगशाला म एक ही तरफ नटगण उच्च स्थान पर वठते थे। रगपीठ और मत्तवारणी का निर्देश दूसरे अध्याय के ६३ श्लोक अर्थात 'रगपीठस्य पार्श्वे कत्तव्या मत्तवारणी' इस पद्य म किया गया है। विचार यह है कि इस मत्तवारणी शब्द का क्या अथ है क्याकि यह शब्द अन्य सस्कृत काव्यो मे दिखाई नही पडता। वहा पर मत्तवारण का प्रयोग हुआ है। 'कुट्टनीमतीम्' म मत्तवारणोपेता यह लिखा मिलता है। जिसका टीकाकारो न 'प्रसादवीथीना वरण्ड' यह अथ किया है।

महाकवि सुबन्धु ने भी मत्तवारण्योवरण्डकन यह लिखा है। अत मत्तवारण स मत्तवारणी उद्भव करना केवल प्रिय मित्र आचाय श्री विश्वेश्वर जी के मतानुसार नामैव स्थिति पेशलम का ही प्रभाव है और सम्भवत —

'पार्श्वयो रङगपीठस्य कत्तव्यो मत्तावारण,' वह पाठ यहा उचित हो, यह सहज ही कल्पना की जा सकती है।

प्रोफेसर सुब्बाराव जो बडौदा विश्वविद्यालय के टैक्नोलोजी और इन्जीनियरिंग के डीन है उन्होने मत्तावारणी शब्द का अथ 'मस्त हाथिया की पक्ति' किया है। किन्तु यह अथ अभिनवगुप्त की टीका से सगति नही खाता। अनेक विद्वान मत्तवारणी का अथ रङगपीठ के सामने बनाया गया कटहरा करते हैं। उनका आशय है कि नाटक देखते समय दशक लोग भावावेश मे आकर अभिनय करने वाले पात्रो के समीप मच पर पहुचना चाहते है। उन लोगो को यदि यह अवतर दे दिया जाय तो नाटक ही समाप्त हो जाये। यह अथ कल्पना मे सुदर है लेकिन नाटयशास्त्र के मूलग्रथ के विरुद्ध हैं। अत मत्तवारणी की व्युत्पत्ति मत्त शब्द को भाव प्रधान मान कर मत्तस्य अर्थात 'मत्ततायाश्चिह्नस्य स्वेदादे वारणी निवर्तनी अर्थात् जहाँ बठकर थकावट या प्रस्वेद हटाया जाय, उस स्थान का नाम मत्तवारणी है। यहाँ पिदगौरादिभ्यश्च से ङीप प्रत्यय हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक मे नाटयशास्त्र के मूल पाठ का निश्चय

प्रेस म मुद्रित नाटयशास्त्र के आधार पर तथा स्वर्गीय मित्रवर आचार्य विश्वेश्वर जी के द्वारा सम्पादित 'अभिनव भारती' टीका के आधार पर किया गया है। इसलिये स्व० श्री प्रो० भोलानाथ जी शमा के पाठो से श्लोक सख्या म अनेक स्थानो पर भेद हो गया है। पाठकवृन्द हमारे ३न को यदि प्रमित समझेंगे तो उन्हे वास्तविक ग्रन्थ के स्वरूप का पता चल जायेगा

इस पुस्तक के लेखन मे प्रिय मित्र प्रो० श्री बाबूराम पाण्डेय एम० ए० अध्यक्ष सस्कृत विभाग, डी० ए० वी० कॉलिज एव श्रीमति सौ० गुरुमीतकौर (नीना) एम० ए० न भी सहयोग दिया है। इसलिये मैं इन्हे आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। साथ ही इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तयार करने मे प्रिय ब्रह्मचारी धमपाल चतुदश श्रेणी तथा ब्रह्मचारी ऋषिश्वर चतुदश श्रेणी (गु० कु० महाविद्यालय ज्वालापुर) ने जो विशेष सहयोग दिया है तदथ मैं इन दोनो ब्रह्मचारियो के प्रति भी सद्भावना प्रकट करता हुआ भविष्य म उनकी उज्ज्वलता चाहता हू।

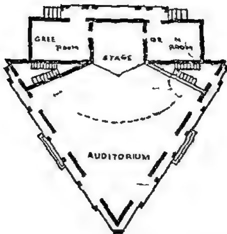
मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसके द्वारा छात्रों का लाभ होगा। नाटयगृह किस प्रकार के बनने चाहियें इस प्रकार का निर्देश भी चित्रो द्वारा कर दिया गया है। मैं अपने से पूववर्ती सभी उल्लिखित टीकाकारो का कृतज्ञ हूँ।

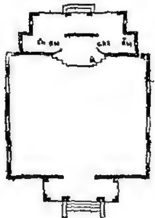
विजयादशमी सम्वत २०२३
१३ १० ६६ ई०

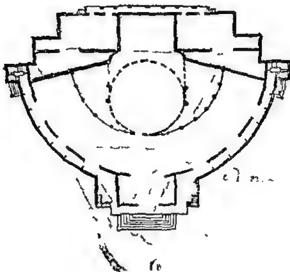
रामदत्त शास्त्री एम० ए०
प्राध्यापक
कॉलिज ऑफ इण्डोलोजी
एव
सस्कृत कॉलिज
गु० कु० महाविद्यालय,
ज्वालापुर।

परिशिष्ट

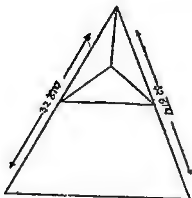
डॉ० पी० के० आचार्य भू० पू० अध्यक्ष
संस्कृत विभाग इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
द्वारा प्रस्तुत नाट्य मण्डप के चित्र



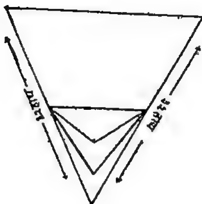




त्र्यस्र मण्डप (काल्पनिक)



त्रिकोण रंग मण्डप



चतुष्कोण मण्डप

नेपथ्य गृह १६×३२ हाथ

रङ्गशीर्ष ३२×८

मत्तवारणी ८×८ हाथ

रङ्गपीठ

८×३२

मत्तवारणी ८×८ हाथ

प्रेक्षकोपवेश

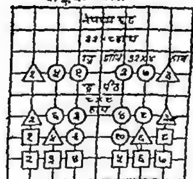
३२×३२

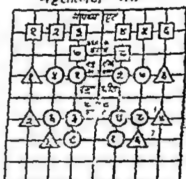
हाथ

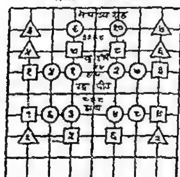
←३२ हाथ→

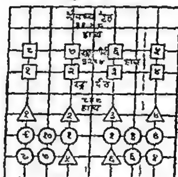
←३२ हाथ→

भिन्न भिन्न मतानुसार रङ्गशालाओं की आकृतियाँ

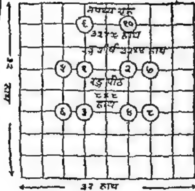


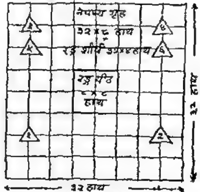


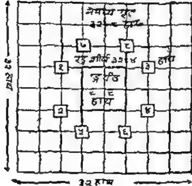


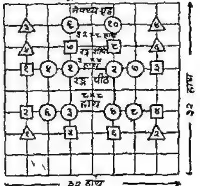


स्तम्भ स्थिति व्यवस्था
नाट्यग्रह

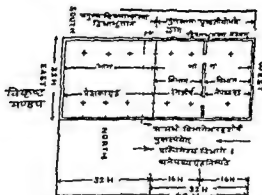


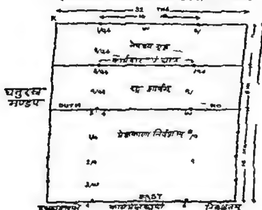






मण्डपो की विविध विधायें







द्विभूमियुक्त विकृष्ट मण्डप

द्वितीय भूमि

द्वितीय भूमि

नेपथ्य गृह १६ × ३२ हाथ

८ हाथ

मत्तवारणी १६ × ८ हाथ

रङ्गशीर्ष ३२ × ८ हाथ

रङ्गपीठ

८ × ३२ हाथ

मत्तवारणी ३२ × ८ हाथ

द्वितीय भूमि

प्रेक्षकोपवेश

३२ × ३२ हाथ

← — ३२ हाथ — →

← — ३२ हाथ — →

द्वितीय भूमि

श्रीभरतमुनिप्रणीतम्

नाट्यशास्त्रम्

अथप्रथमोऽध्याय

प्रणम्य शिरसा देवौ पितामहमहेश्वरौ।
नाट्यशास्त्रं प्रवक्ष्यामि ब्रह्मणा यदुदाहृतम् ॥

टीकाकर्तुर्मङ्गलम्

योऽयं शिवङ्करमयो प्रलयकरश्च,
स्थेम्नोऽवनस्यच विधौ जगतो नदीष्णम् ।
वेदत्रीमयमणभुवणमा तम,
त सर्वदेवमयमीश्वरतातमीडे ॥१॥

प्रणम्येति —पितामह —ब्रह्मा। महेश्वर —शिव (इन दोनो नाट्य शास्त्र के प्रवर्तक)। देवौ—देवताओ को। शिरसा—शिर झुका कर। प्रणम्य—नमस्कार करके। ब्रह्मणा—ब्रह्मा ने। यत—जिस। उदाहृतम् —नाट्यशास्त्र का उपदेश दिया उस नाट्यशास्त्र को। प्रवक्ष्यामि—मैं भरत निरूपण करूंगा।

विशेष—इस प्रथम पद्य मे सर्वप्रथम पितामह और महेश्वर इन दो शब्दो के द्वारा क्रमश नाट्यशास्त्र के २ प्रवर्तक ब्रह्मा और शिव को नमस्कार

किया है, क्योंकि नाट्यशास्त्र सर्वप्रथम ब्रह्मा ने बनाया और तदनन्तर शिव ने उसकी परम्परा प्रवर्तित की क्योंकि नृत्य भावाश्रित होता है, और ब्रह्मा के म भाव की प्रधानता है, तथा महादेव के नृत्य को नृत्त कहते हैं जो ताल लयाश्रित होता है। एवं नाट्य का एक प्रधान अङ्ग है। नमस्कार मन वचन कर्म होता है अतः 'शिरसा' पद से शारीरिक या कर्मणा नमस्कार किया गया, 'देवौ' पद से वाचिक किया गया तथा द्वारा 'ब्रह्मणा' पद से मानसिक नमस्कार किया गया। नाट्यशास्त्र शब्द का अर्थ 'नाट्यरूप वेद' है। क्योंकि शास्त्र शब्द शासनवाची है वेद ही संसार का शासक है। वेद शब्द का लाभ और ज्ञान भी है। यह अर्थ भी यहाँ लिया जा सकता है ॥१॥

अवतरणिका—अब भरत मुनि स्वयं अपने आप को अलग सा मानते हुए अग्रिम दो पद्यों के द्वारा नाट्यशास्त्र की लुप्त परम्परा के उद्भव का निरूपण करते हैं—

> समाप्तजप्यं व्रतिनं स्वसुतैः परिवारितम् ।
> अनध्याये कदाचित्तु भरतं नाट्यकोविदम् ॥२॥
> मुनयः पर्युपास्यैनमात्रेयप्रमुखाः पुरा ।
> पप्रच्छुस्ते महात्मानो नियतेन्द्रियबुद्धयः ॥३॥

एक बार कदाचित्—कभी छुट्टि के दिन। नाट्यकोविदम्—नाट्यशास्त्र के विद्वान। समाप्तजप्यम्—जप या जप्य को समाप्त कर बैठे हुये। व्रतिनम्—नियमानुष्ठान में निरत। स्वसुतैः—अपने पुत्रों से। परिवारितम्—घेरे हुए। एनम्—इस। भरतम्—भरत मुनि को। पुरा—पहले सृष्टि के आरम्भ में। नियतेन्द्रियबुद्धयः—नियम में स्थित हैं इन्द्रियाँ और बुद्धि जिनकी अर्थात् संयमशील। महात्मानः—विशाल बुद्धि वाले। ते—वे प्रसिद्ध। आत्रेयप्रमुखाः—आत्रेय आदि। मुनयः—मुनिगण। पप्रच्छुः—पूछने लगे।

विशेष—'स्वसुतैः' इस पद से नियमाचरण के अनन्तर पारिवारिक जीवन का सुख लेने वाले यह अर्थ ध्वनित होता है। 'अनध्याये' इस कथन

से उस दिन पठन पाठन का काय या कोई गूढ विचार नही किया जा रहा था यह वतलाया गया है। नाटयकोविदम् इस विशेषण से अय भरतो की व्यावत्ति की गइ है। 'नियतेन्द्रियबुद्धय से नाटक म भाग लेने वाले पात्रो का सयमशील होना चाहिए यहा उपदश दिया गया है ॥२–३॥

•आत्रेय आदि न क्या पूछा इसका वणन करते हैं—

योऽय भगवता सम्यग ग्रथितो वेदसम्मित ।

नाट्यवेद कय ब्रह्मन ! उत्पन्न कस्य वा कृते ॥४॥

हे ब्रह्मन्—नाटयवेद के वक्ता हे भरत जी य—जो कि। अयम्—हमारे द्वारा प्रत्यक्ष देखा गया। वेदसम्मित—वेदो के तुल्य। नाट्यवेद—नाटयशास्त्र है वह। भगवता—आपने। सम्यग्ग्रथित—अच्छी तरह बनाया है। वह कथम्—किस प्रयोजन से। उत्पन्न—बनाया गया है। वा—और। कस्य कृते—किन अधिकारियो के लिये इसका निमाण हुआ।

विशेष—उक्त पद से यह प्रतीत होता है कि प्रश्न करने के बाद भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र, नाटयमण्डप और किसी नाटक का प्रयोग मुनियो के समक्ष प्रदर्शित किया इसलिये अयम्' पद आया है। इस नाटयशास्त्र मे वीर और अद्भुत का शृङ्गार और हास्य का भी नायक और प्रतिनायक रूप म प्रदशन किया जाता है। अत ऐसा वैलक्षण्य सिवाय वेद के कही नही मिल सकता। यही नाट्यवेद की वेदता है ॥४॥

इसी नाट्यवेद के विषय मे अगला प्रश्न किया है कि—

कत्यङ्ग किम्प्रमाणञ्च प्रयोगश्चास्य कीदृश ।

सवमेतद्यथातथ्य भगवन्वक्तुमहसि ॥५॥

! कत्यङ्ग—इस नाटयशास्त्र के अर्थात वेद के कितने अङ्ग हैं ? किम्प्रमाणम्—इस नाटयवेद का कितना विस्तार है ? या इसके वेदत्व मे क्या प्रमाण है ? इस नाटयशास्त्र का अभिनय। कीदश—किस प्रकार होता है या किया जाता है ? सवमेतत्—यह सब कुछ। यथातथ्यम—सत्य रूप से। भगवन्—हे भरत ! आप। वक्तुमहसि—कहने की कृपा करें।

विशेष—यहा जो प्रश्न किये गये हैं उन सब का इसी क्रम से उत्तर दिया जाए ऐसा कुछ आग्रह नहीं है। जसे कोई बालक यह कहे कि मेरी क्षुधा के कष्ट को दूर कीजिए तो वह यह नहीं पूछता कि भूख मिटाने का साधन क्या है ? चावल या रोटी इसी प्रकार यह प्रश्न किया गया है ॥५॥

तेषा तद्वचन श्रुत्वा मुनीना भरतो मुनि ।
प्रत्युवाच ततो वाक्य नाट्यवेदकथा प्रति ॥६॥

तेषाम—उन आत्रेय आदि। मुनीनाम—ऋषियो के। तद्वचनम—उस वचन को। श्रुत्व—सुनकर। भरतोमुनि—मुनि भरत। नाट्यवेदकथा प्रति—नाट्यवेद की कथा के विषय मे। तत—तदनन्तर। वाक्यम—वचन को। प्रत्युवाच—मुनियो के सम्मुख कहने लगे।

भवदिम शुचिभिर्भूत्वा तथावहितमानसै ।
श्रूयता नाट्यवेदस्य सम्भवो ब्रह्मनिर्मित ॥७॥

इस श्लोक के द्वारा कथम' ? और कस्य वा कृते ? इन पूर्वोक्त प्रश्नो का उत्तर दिया जाता है। भवदिभ—आप लोग। शुचिभि—पवित्र। भूत्वा—होकर। तथा—और। प्रावहितमानस—सावधान मन के द्वारा अर्थात सावधान होकर। नाट्यवेदस्य—नाट्यवद का। ब्रह्मनिर्मित—ब्रह्मा जी का बनाया हुआ जो। सम्भव—वास्तविक स्थिति या सत्ता है, उसे श्रूयताम्—ध्यान देकर मुनिय।

पूव कृतयुगे विप्रा वत्ते स्वयभुवेऽन्तरे ।
त्रेतायुगेऽथसप्राप्ते मनोर्वैवस्वतस्य च ॥८॥

विप्रा—हे मुनियो ! पूवम—अर्थात पहले कल्पो में। कृतयुगे—सत्ययुग के। वत्ते—समाप्त होने पर। स्वायम्भुवे—ब्रह्मा नाम वाले। अन्तरे—मन्वन्तर के आने पर। अथ—और। त्रेतायुगेऽप सप्राप्ते—त्रेतायुग के आरम्भ होने पर। वैवस्वतस्य—सूर्य के पुत्र। च—और। मनो—मनु के अर्थात मन्वन्तर के आने पर (इन्द्र आदि देवताओ ने ब्रह्मा से कहा' यह ११वें श्लोक के वाक्य से अन्वित होता है)।

ग्राम्यधम प्रवृत्ते तु मामलोभवशङ्गते ।
ईर्ष्याक्रोधादिसमूढे लोके सुखित दु खिते ॥६॥

देव-दानव-गन्धव-यक्ष रक्षो महोरग ।
जम्बूद्वीपे समाक्रान्ते लोकपालप्रतिष्ठिते ॥१०॥

महेन्द्रप्रमुखर्देवरुक्त किल पितामह ।
क्रीडनीयकमिच्छामो दृश्य श्रव्य च यद् भवेत ॥११॥

एव लोके—ससार के । सुखिते दु खिते—सुख और दुख के प्रवाह म पडने पर । तु—तथा । ग्राम्यधमप्रवृत्ते—भोग प्रधान हो जाने पर और कामलोभवशङ्गते—काम और लोभ के वशीभूत होने पर । ईर्ष्याक्रोधादि सम्मूढे—तथा ईर्ष्या क्रोध मोह आदि से अभिभूत होने पर तथा । जम्बूद्वीपे—भारतवप के । देवदानव —देवो, दानवा गन्धर्वों, यक्षो राक्षसा और महानागो की पूजा मे लग जान पर । समाक्रान्ते—और इनके ही द्वारा मानव जाति के आक्रान्त होने पर । लोकपालप्रतिष्ठिते—और वरुण आदि लोकपालो के महात्म्य मे विश्वास बढ जाने पर अर्थात परब्रह्म की या आत्मज्ञान की चिन्ता नष्ट हो जाने पर इस प्रकार के लोगो की वत्ति को ईश्वराभिमुख करने के लिये । महेन्द्रप्रमुख —इन्द्र आदि मुख्य । देवै —देवताओ ने । पितामह—ब्रह्मा जी से । उक्त किल—यह प्रार्थना की कि हे ब्रह्मन् ! हम लोग क्रीडनीयकम्—मनोविनोद के साधन नाट्यवेद को । इच्छाम —चाहते है जो कि वेद । दृश्यम—आँखो के द्वारा तृप्ति का साधन । श्रव्य—कानो के द्वारा तृप्ति का साधन । भवेत्—हो सके ।

विशेष—यहा पर क्रीडनीयक' पद की सिद्धि क्रीडयते चित्त विक्षिप्यत येन इस व्युत्पत्ति के द्वारा करण मे 'अनीयर् प्रत्यय करने के बाद अज्ञात अथ मे 'क' प्रत्यय किया गया है अर्थात् गुडजिह्विका न्याय' से जो वद विनोद के साथ-साथ तत्व ज्ञान भी द सके ऐसा शास्त्र हमे प्रदान कीजिय यह कहा ॥९–११॥

इसके बाद नाट्यवेद की अन्य वेदों से महत्ता दिखलाते हैं कि—

न वेदव्यवहारोऽयं संश्राव्यः शूद्रजातिषु ।
तस्मात्सृजापरं वेदं पञ्चमं सार्ववर्णिकम् ॥१२॥

अयं वेदव्यवहार—यह प्रसिद्ध वेदों की पठन पाठन परम्परा। शूद्रजातिषु—शूद्र जाति में। न संश्राव्यः—श्रवण मनन के द्वारा नहीं की जाती। तस्मात्—इसलिये। सार्ववर्णिकम्—सारे वर्णों के लिए हितकारी ज्ञानवर्द्धक। अपरम्—इन चारों वेदों से भिन्न। पञ्च वेदम्—नाट्यवेद नामक पंचमवेद को। सृज—निर्मित कीजिये ॥१२॥

एवमस्त्विति तानुक्त्वा देवराजं विसृज्य च ।
सस्मार चतुरो वेदान् योगमास्थाय तत्त्ववित् ॥१३॥

तान्—उन देवों के प्रति। एवमस्तु—ऐसा ही हो। इत्युक्त्वा—यह कहकर। देवराजम्—इन्द्र को। च—और। विसृज्य—छोड़कर। योगमास्थाय—योगविद्या के द्वारा। तत्त्ववित्—लोक और वेद के तत्त्व को जानने वाले भरत ने। चतुरो वेदान्—चारों वेदों को। सस्मार—स्मरण किया ॥१३॥

(प्रक्षिप्त)

"नये वेदा यतः श्राव्याः स्त्रीशूद्राद्यासु जातिषु ।
वेदमन्यत्ततः स्रक्ष्ये सर्वश्राव्यं तु पञ्चमम् ॥"

यतः—क्योंकि। स्त्रीशूद्राद्यासु जातिषु—स्त्रियों में और शूद्रादि जातियों में अर्थात् उनके समूह के द्वारा। इमे वेदाः—ये वेद। न श्राव्याः—सुनने योग्य नहीं है। ततः—इस कारण से। सर्वश्राव्यम्—स्त्रीशूद्रादि से भी सुनने योग्य। अन्य—इससे भिन्न। पञ्चमम्—पाचवें वेद को। स्रक्ष्ये—बनाऊँगा।

धर्म्यमर्थ्यं यशस्यं च सोपदेशं ससंग्रहम्
भविष्यतश्च लोकस्य सर्वकर्मानुदर्शकम् ॥१४॥
सर्वशास्त्रार्थसम्पन्नं सर्वशिल्पप्रवर्तकम् ।
नाट्याख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम् ॥१५॥

सकल्प्य भगवानेव सर्वा वेदाननुस्मरन् ।
नाट्यवेद ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम् ॥१६॥

धम्यम—धमयुक्त । यशस्यम्—कीर्तिकारी । अय्यम् —अर्थोपाजन के साघन । सोपदेशम —उपदिश्यमान उपायो के सहित अर्थातधम अथ काम पय क प्रदशक ।ससग्रहम —सम्यक ग्रहण के सहित अर्थात जिसके ज्ञान के लिये किसी प्रमाणा तर की आवश्यक्ता नहीं होती, प्रत्यक्षभूत । सवशास्त्राय सपन्नम्—सारे शास्त्रो के प्रतिपाद्य विषयो से युक्त । सवकर्मानुदशकम् —सारे कृत और क्रियमाण कर्मों के फल का अर्थात शुभाशुभ का । अनु—करने के बाद ही । दशकम्—प्रदशक तथा भविष्यतश्च लोकस्य—भूत और भविष्यत जगत् के लिय । सज्ञशिल्पप्रवतकम —हर प्रकार के शिल्प के प्रवर्त्तक । सेतिहासम्—इति इस प्रकार से । ह—निश्चय रूप से । आस—स्थिति है जिसमे अयात आगम और निगम युक्त । नाटयाख्यपञ्चमवेदम —नाटयशास्त्ररूपी पञ्चम वेद को । अह करोमि—मैं बनाता हूँ । एव—इस प्रकार से । भगवान सकल्पपय—भगवान भरत ने निश्चय करके । सवनेदाम्—सारे वेदो को । अनुस्करन्—अपनी स्मरण शक्ति से अनुसन्धानपूवक देखा और तत चतुर्वेदाङ्गसम्भवम —चारो वेदो के द्वारा जन्म लेने वाले । नाट्यवेदम —नाटयशास्त्र को । चक्रे—बनाया ।

विशेष—अथवा यहाँ इतिहास शब्द का ज्ञान विकास करने वाले यह अथ है । इति—ज्ञान तस्य ह्रास —विकास यत्र यतो वा इस प्रकार व्युत्पत्ति करनी चाहिये और नाट्यशास्त्र के विकास काय दशरूपक आदि ग्रथो का ग्रहण करना चाहिये ।

जग्राह पाठ्य ऋग्वेदात्सामभ्यो गीतमेव च ।
यजुर्वेदादभिनयान रसानथवणादपि ॥१७॥

पाठ्यम्—काकु स्वर और अङ्कार आदि को । ऋग्वेदात—ऋग्वेद से ग्रहण किया, क्योकि ऋग्वेद मे ही तीनो स्वरो के उच्चारण का प्रकार विहित है । सामाभ्य —सामवेद से । गीत जग्राह—गान के प्रकार को ग्रहण

किया, ग्रत एव ग्रागे लिखेंगे कि "गीत प्राणा प्रयोगम्य" । यजुर्वेदात-यजुर्वेद से । ग्रभिनयान्—वेषग्रहण परिपाटी को ग्रौर सात्विक ग्रादि भा को ग्रहण किया, क्योंकि ग्रध्वयु प्रधान यजुर्वेद म प्रदक्षिणा ग्रादि करने विधान है। ग्रथर्वणादपि—ग्रौर ग्रथर्ववेद से रसो को ग्रहण किया क्यों ग्रथर्ववेद के मन्त्रो के द्वारा शान्ति, शत्रु मारण, उपद्रवनिवृत्ति ग्रादि सम्भ हैं। शान्ति के समय शान्त रस, मारण के समय वीर रस मनुष्य के मन ग्राते हैं।

'वेदोपवेदैः सबद्धो नाट्यवेदो महात्मना ।
एव भगवता सृष्टो ब्रह्मणा सववेदिना ॥१८॥

एवम्—इस प्रकार वेदोपवेद —वेद चारो वेद ग्रौर उनके ग्रायुर्वेदादि उपवेदा से सबद्ध। महात्मना —विशाल बुद्धि वाले। सववेदिना-सवज्ञ। भगवता ब्रह्मणा—भगवान ब्रह्मा ने। नाट्यवेद —नाट्यशास्त्र को सृष्ट —बनाया।

विशेष —चरणव्यूह के ग्रनुसार ऋग्वेद का उपवेद ग्रायुर्वेद है यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गान्धववेद ग्रथववेद का ग्रथवेद। तथापि कुछ महानुभाव ग्रायुर्वेद को ग्रथर्ववेद का उपवेद मानते है, ग्रौर ऋग्वेद का उपवेद ग्रथवेद है यह कहते हैं ॥१८॥

उत्पाद्य नाट्यवेद तु ब्रह्मोवाच सुरेश्वरम् ।
इतिहासो मया सृष्ट स सुरेषु नियोज्यताम् ॥१९॥

नाट्यवेद तु—इस प्रकार नाट्यवेद को। उत्पाद्य—बनाने के बाद ब्रह्मा—ब्रह्मा न सुरेश्वरम्—इन्द्र से। उवाच—कहा कि हे इन्द्र! मया—मैंने। इतिहास —दशरूपक की सृष्ट —बनाकर तयार किया है। स —उस इतिहास को भाण, रूपक, नाटक ग्रादि को। सुरेषु —देवताग्रो के द्वारा। नियुज्यताम्—प्रयोग करके देखिये।

कुशला ये विदग्धाश्च प्रगल्भाश्च जितश्रमा ।
तेष्वय न प्रयतगो हि वेद सक्राम्यतां त्वया ॥२०॥

ये—जो देवता या कुशीलव । कुशला—ज्ञान और उसके धारण मे समथ है । विदग्धा—ऊहापोह करने वाल हैं । प्रगल्भा—सभी मे भयभीत नही होत । जितश्रमा—जल्दी नही थकते हैं । तेषु—ऐसे नटा म । अय नाटयसञ्ज्ञो वेद—यह नाट्यशास्त्र । त्वया—तुम इन्द्र के द्वारा । सक्राम्यताम्—पढाना चाहिये ।

तच्छ्रुत्वा भगवान् शक्रो ब्रह्मणा यदुदाहृतम् ।
प्राञ्जलि प्रणतो भूत्वा प्रत्युवाच पितामहम् ।।२१।।

ब्रह्मणा—ब्रह्मा जी ने । यदुदाहृतम्—जो कहा था । भगवान् शक्र—इन्द्र ने । तच्छ्रुत्वा—उसे सुनकर । प्राञ्जलि—हाथ जोड कर । प्रणत भूत्वा—शिर झुकाकर । पितामह प्रति—ब्रह्मा जी से । उवाच—कहा ।

विशेष—कुछ विद्वान् इस पद्य को प्रक्षिप्त मानते हैं क्योकि अभिनव गुप्त न अपनी अभिनव भारती मे इस पर कोई वति नही लिखी ।

ग्रहणे धारणे ज्ञाने प्रयोगे चास्य सत्तम ।
अशक्ता भगवन् देवा अयोग्या नाटयकर्मणि ।।२२।।

हे सत्तम—हे विद्वानो मे श्रेष्ठ इन्द्र । अस्य—इस नाटयशास्त्र के । ग्रहण—गुरुमुख से समझने मे । धारणे—समझकर याद रखने मे । ज्ञाने—ऊहापोह करने मे । प्रयोगे च—और रगस्थली मे अभिनय करन म चकार से प्रयोगानुकूल स्वय अभ्यास करने म देवा—देवगण । अशक्ता—असमथ हैं अत वे नाटयकर्मणि—नाटयवेद के अभ्यास करन मे भी । अयोग्या—योग्य नही है क्याकि वे अपना जीवन आरामतलबी स विताना चाहत हैं अतएव गुरु सेवादि करना उनकी शक्ति से बाहर है ।

य इमे वेदगुह्यज्ञा ऋषय सशितव्रता ।
एतेऽस्य ग्रहणे शक्ता प्रयोगे धारणे तथा ।।२३।।

य इमे—जो कि ये । वेदगुह्यज्ञा—वेदज्ञ वेद के जानने वाल और गुह्यज्ञ उपनिषदो मे कह गये अध्यात्मतत्व को जानन वाले हैं । सशितव्रता—तपश्चर्या

से शरीर का स्पष्ट दने वाले। ऋषय —ऋषी लाग हैं। एते—य ही। अस्य—इस शास्त्र के ग्रहण धारण और प्रयाग करन म, तथा—समथ हैं।

विशेष—योगाभ्यास के द्वारा नाट्यशास्त्र में क्या क्या काय हो सकते हैं यह निम्नलिखित पद्य मे वर्णित हैं—

> न्यसेत् प्राण भ्रयोमध्ये स्तम्भो याप्पस्च चक्षुष ।
> स्वेदो हृदि गुदे कम्प पुलको मूर्ध्नि यवग्रत ।
> वयण्य स्वरित कण्ठे प्रलयो नासिकान्तरे ॥

अथ—प्राणो का भौहा के बीच म स्थित करे इसके द्वारा स्तम्भ तथा आँखों व आसुआ का अभिनय होता है। हृदय म प्राण व स्थिर करने स स्वेद गुदा म प्राण के स्थिर करने स कम्प, मूर्धा म प्राण स्थिर करने से पुलक, मुख स विवणता कण्ठ म प्राण के स्थिर करने से स्वर भेद और नाक के भीतर प्राण को स्थिर करन स प्रगाढ मूर्छा का कृत्रिम अभिनय किया जा सकता है। 'इसे पद स ऋषियो का प्रयोग प्रत्यक्ष दृष्ट है यह सूचित होता है।

> श्रुत्वा तु शक्रवचन मामाहम्बुजसभव ।
> त्व पुत्र शतसयुक्त प्रयोक्तास्य भवानघ ॥२४॥

शक्रवचनम्—इन्द्र के वचन को। श्रुत्वा—सुनकर। अम्बुजसम्भव—ब्रह्मा जी मामाह—मुझ से कहने लगे, हे अनघ—दोषशू य भरत। त्वम्—तुम, पुत्रशतसयुक्त—सौ बेटो के द्वारा अस्य—इस नाट्यवद का प्रयोक्ता भव—प्रयोग करने वाले बनो।

> आज्ञापितो विदित्वाह नाट्यवेद पितामहात् ।
> पुत्रानध्यापयामास प्रयोग चापि तत्वत ॥२५॥

आज्ञापित अहम्—ब्रह्मा जी की आज्ञा पाकर मैंने, नाट्यवेदम्—नाट्यशास्त्र को पितामहात्—ब्रह्मा जी से, विदित्वा—जानकर, पुत्रानध्यापया मास—अपने सौ पुत्रा को पढया और तत्त्वत—वास्तविक रूप मे

प्रयोग चापि—उसका प्रयोग भी सिखाया।

विशेष—प्रयोग शब्द से 'प्रयुज्यते इति प्रयोग' इस व्युत्पत्ति के द्वारा १० प्रकार के रूपक ग्रहण किये जाते हैं और 'प्रयुज्यते निवर्त्यते अनेन अभिनयादि इस व्युत्पत्ति से प्रयोग शब्द का अर्थ नाट्यशास्त्र है एवं प्रयुक्ति 'प्रयोग' इस व्युत्पत्ति से प्रयोग शब्द का अर्थ अभिनय है अतः भरत ने अपने पुत्रों को १० प्रकार के रूपक बतलाये, नाट्यवेद पढाया और अभिनय करना सिखाया यह अर्थ सिद्ध होता है ॥२५॥

अब किस किस पुत्र को क्या पढाया और उनके क्या नाम थे यह बतलाते हैं—

शाण्डिल्य चैव वात्स्य च कोहल दत्तिल तथा।
जटिलाम्बष्टकौ चैव तण्डुमग्निशिख तथा ॥२६॥

सैन्धव सपुलोमान शाद्वलिं विपुल तथा।
कपिञ्जलिं बादर च यमधूम्रायणौ तथा ॥२७॥

जम्बुध्वज काकजघ स्वर्णक तापस तथा।
कदारिं शालिकर्णं च दीर्घमात्र शालिकम् ॥२८॥

कौत्स ताण्डायनिं चैव पिङ्गल चित्रक तथा।
बन्धुल भल्लक चैव मुष्टिक सैन्धवायनम् ॥२९॥

तैतिल भार्गवं चैव शुचि बहुलमेव च।
अबुध बुधसेन च पाण्डुकर्ण सुकेरलम् ॥३०॥

ऋजुक मण्डक चैव शम्बर वञ्जल तथा।
मागध सरल चैव कर्त्तार चोग्रमेव च ॥३१॥

तुषार पार्षद चैव गौतम बादरायणम्।
विशाल शबल चैव सुनाभ मेषमेव च ॥३२॥

कालिय भ्रमर चैव तथा पीठमुख मुनिम्।
नखकुट्टाश्मकुट्टौ च षट्पद सोत्तम तथा ॥३३॥

पादुकोपानहौ चैव श्रुतिं चापस्वरं तथा ।
अग्निकुण्डाज्यकुण्डौ च वितण्ड्यं ताण्ड्यमेव च ॥३४॥
वातराक्षं हिरण्याक्षं कुशलं दु सहं तथा ।
लाजं भयानकं चैव बीभत्सं सविचक्षणम् ॥३५॥
पुण्ड्राक्षं पुण्ड्रनासं च असितं सितमेव च ।
विद्युज्जिह्वं महाजिह्वं शालङ्कायनमेव च ॥३६॥
श्यामायनं माठरं च लोहिताङ्गं तथैव च ।
संवर्तकं पञ्चशिखं त्रिशिखं शिखमेव च ॥३७॥

शङ्खवर्णमुखं षण्डं शङ्कुकर्णमथापि च ।
शक्रनेमिं गभस्तिं चाप्यंशुमालिं शठं तथा ॥३८॥

विद्युतं शातजङ्घं च रौद्रं वीरमथापि च ।
पितामहाज्ञयास्माभिर्लोकस्य च गुणेप्सया ॥३९॥

प्रयोजितं पुत्रशतं यथाभूमिविभागशः ।
यो यस्मिन् कर्मणि योग्यस्तस्मिन् स नियोजितः ॥४०॥

१ शाण्डिल्य, २ वात्स्य, ३ कोहल, ४ दत्तिल, ५ जटिल, ६ अम्बष्ठ, ७ तण्डु तथा ८ अग्निशिख को ॥२६॥

९ सैन्धव, १० पुलोमा, ११ शाद्वलि १२ विपुल, १३ कपिञ्जलि, १४ बादरि १५ यम और १६ धूम्रायण को ॥२७॥

१७ जम्बुध्वज, १८ काकजङ्घ, १९ स्वर्णक २० तापस, २१ कैदारि, २२ शालिकर्ण, २३ दीर्घ गात्र तथा २४ शालिका को ॥२८॥

२५ कौत्स, २६ ताण्डायनि, २७ पिङ्गल, २८ चित्रक, २९ बन्धुल, ३० भल्लक ३१ मुष्टिक तथा ३२ सैन्धवायन को ॥२९॥

३३ तैत्तिलि, ३४ भार्गव, ३५ शुचि, ३६ बहुल, ३७ अबुध, ३८ बुधसेन, ३९ पाण्डुकर्ण तथा ३० सुकेरल को ॥४०॥

४१ ऋजूक, ४२ मण्डक, ४३ शम्बर, ४४ वञ्जुल ४५ मागध, ४६ सरल, ४७ कर्त्ता और ४८ उग्र को ॥३१॥

४६ तुषार, ५० पापद, ५१ गौतम, ५२ बादरायण, ५३ विशाल ५४ शबल, ५५ सुनाम तथा ५६ मष को ॥३२॥

५७ कालिय, ५८ भ्रमर, ५६ पीठमुख, ६० मुनि, ६१ नखकुट्ट, ६२ अश्मकुट्ट, ६३ षट्पद, ६४ उत्तम को ॥३३॥

६५ पादुक, ६६ उपानह ६७ श्रुति ६८ चापस्वर, ६६ अग्निकुण्ड, ७० आज्यकुण्ड, ७१ वितण्ड्य और ७२ ताण्डय को ॥३४॥

७३ वातराग ७४ हिरण्याग ७५ कुशल, ७६ दुस्सह, ७७ लाज, ७८ भयानक, ७६ वीभत्स तथा ८० विचक्षण को ॥३५॥

८१ पुण्ड्राक्ष, ८२ पुण्ड्रास, ८३ असित ८४ सित ८५ विद्युज्जिह्व, ८६ महाजिह्वा और ८७ शालङ्कायन को ॥३६॥

८८ श्यामायन, ८६ माठर ६० लोहिताङ्ग, ६१ सवतक, ६२ पञ्चशिख, ६३ त्रिशिख और ६४ शिख को ॥३७॥

६५ शङ्खवणमुख ६६ षण्ड, ६७ शङ्कुकण, ६८ शक्रनेमि, ६६ गभस्ति, १०० अशुमाली तथा १०१ शठ को ॥३८॥

१०२ विद्युत, १०३, शतजङ्घ १०४ रौद्र और १०५ वीर को पितामह की आज्ञा से और लोककल्याण के लिए मैंने पढाया। सौ के स्थान पर १०५ नाम दिए है ॥३६॥

सौ पुत्रो को काय विभाग के अनुसार नियुक्त किया और जो जिस काय म जिस ढग से योग्य था उसको उसी काय मे लगा दिया ॥४०॥

विशेष—इन नामो म कुछ तो नाट्यशास्त्र एव नाटयशास्त्र से सम्बद्ध अभिनयकला, नत्यकला एव सगीतशास्त्र पर प्रबन्ध लिखन वाले है। कोहल के नाम का उल्लेख तो स्वय नाटयशास्त्र मे (३६-६५। ३८ १८) हुआ है। कोहल दत्तिल शालिकण, बादरायण, नखकुट्ट अश्मकुट्ट, इत्यादि का उल्लेख पश्चात्कालीन लेखको—दामोदरगुप्त हेमचन्द्र शागदेव, शारदातनय सिंहभूपाल इत्यादि—ने अपने ग्रन्थो मे किया है।

विशेष—यदि मैंदारि पञ्च गौड़, वीर मागध इन शब्दों को विद्य मान लिया जाय तो १०५ की जगह १०० पुत्र ही रह जाते हैं अन्यथा यह पुत्रों की १०० संख्या से विरोध आता है जो कि २४ वें श्लोक में वर्णित है

भारतीं सात्त्वतीं चैव वृत्तिमारभटीं तथा ।
समाश्रित्य प्रयोगस्तु प्रयुक्तो वै मया द्विजाः ॥४१॥

(इस श्लोक से आगे पदार्थ न करके श्लोक का वाक्यार्थ ही दि जाता है) ।

हे ऋषियो ! (यहाँ द्विज शब्द ऋषिवाची है) मैंने इन पुत्रों को शि देने के बाद भारती, सात्त्वती और आरभटी वृत्ति को लेकर नाटक का अभि नय किया ।

विशेष—भारती वृत्ति में वाणी का सौन्दर्य होता है । सात्त्वती में मनो भावों का प्रकाशन किया जाता है क्योंकि सत् पद का अर्थ संवेदन है और सत् पद से मतुप् करने पर सत्वत बनता है जो कि मन का पर्याय है उससे सम्बद्ध वृत्ति को सात्त्वती कहते हैं । आरभटी में शारीरिक व्यापार प्रधान होता है क्योंकि ऋ गतौ धातु से 'अप् प्रत्यय करने पर 'अर्) शब्द बनता है गतिशील है भट जिस वृत्ति में उसे आरभटी कहते हैं । इसी प्रकार कैशिकी वृत्ति भी होती है क्योंकि उसमें केशों की तरह सौन्दर्योपयोगी व्यापार प्रधान रहता है । अतः नाटक में जो लालित्य है वह सब कैशिकी वृत्ति का ही प्रभाव है जिस वृत्ति का वर्णन अगले पद्य में किया है ।

अथाह मां सुरगुरुः कैशिकीमपि योजय ।
यच्च तस्याः क्षमं द्रव्यं तद् ब्रूहि द्विजसत्तम ॥४२॥

इसके बाद मुझे इन्द्र ने कहा कि तुम अभिनयों में कैशिकी वृत्ति को भी प्रयोग में लाया करो और इस वृत्ति के अभिनय के लिये जो सामान चाहिये वह मुझे बताओ ।

विशेष—यहा पर 'परिगृह्य प्रणम्याय ब्रह्मा विनापितो मया' यह पाठ अधिक मिलता है जो कि सन्दर्भ के अधिक उपयुक्त नही है।

एव तेनास्म्यभिहित प्रबुद्धश्च मया प्रभु ।
दीयता भगवन् द्रव्य कैशिक्या सप्रयोजकम् ॥४३॥

जब इस प्रकार इन्द्र ने मुझ से कहा तब मने उनसे कहा कि कैशिकी वृत्ति के योग्य सामान दीजिये। मुझे इन्द्र ने सब समान दे दिया ॥४३॥

कैशिकी का लक्षरा

नृताङ्गहारसम्पन्ना रसभावक्रियात्मिका ।
दृष्टा मया भगवतो नीलकण्ठस्य नृत्यत ॥४४॥
कैशिकी श्लक्ष्णनेपथ्या शृंगाररससम्भवा ।
अशक्या पुरुषै साधु प्रयोक्तु स्त्रीजनादृते ॥४५॥

यह कैशिकी वृत्ति मैंने भगवान महादेव के ताण्डव के समय देखी है इसमे नृत्य काल मे अगो का हार अर्थात विलासपूर्वक विक्षेप होता है और रस का जो भाव अर्थात भावना या उत्पत्ति उसकी जो क्रिया इति कर्तव्यता वही है आत्मा जिसकी इस प्रकार की यह वृत्ति है इसमे वेश कोमल वस्त्रो का होता है और यह शृङगार रस की उत्पत्ति करती है, इस वृत्ति का अभिनय स्त्रियो के अतिरिक्त पुरुषो के द्वारा असम्भव है ।

विशेष—जैसा कि आगे चलकर लिखा भी है कि—

विचित्रैरङ्गहारैस्तु देवो लीलासमन्वित ।
बध्नन् यत् शिखापाश कैशिकी तत्र निर्मिता ।

(ना० शा० २०–१३)

ततोऽसृजन्महातेजा मानसाप्सरसो विभु ।
नाट्यलङ्कारचतुरा प्रादान्मह्य प्रयोगत ॥४६॥

तदनन्तर महातेजस्वी इन्द्र ने नाटक और अलङ्कार के प्रयोग मे चतुर अप्सराओ की मानसिक सृष्टि की और उन अप्सराओ को प्रायोगार्थ मेरे आधीन किया।

मञ्जुकेशीं सुकेशीं च मिश्रकेशीं सुलोचनाम् ।
सौदामिनीं देवदत्तां देवसेनां मनोरमाम् ॥४७॥
सुदतीं सुन्दरीं चैव विदग्धां विपुलां तथा ।
सुमालां सन्ततिं चैव सुनन्दां सुमुखीं तथा ॥४८॥
मागधीमर्जुनीं चैव सरलां केरलां धृतिम् ।
नन्दां सुपुष्कलां चैव कलमां चैव मे ददौ ॥४९॥

जिन अप्सराओं को इस कार्य के लिये नियुक्त किया गया उनके नाम निम्नलिखित हैं—

१ मञ्जुकेशी, २ सुकेशी, ३ मिश्रकेशी ४ सुलोचना, ५ सौदामिनी ६ देवदत्ता ७ देवसेना, ८ मनोरमा, ९ सुदती, १० सुन्दरी ११ विदग्धा, १२ विपुला, १३ सुमाला, १४ सन्तति, १५ सुनन्दा १६ सुमुखी तथा मगध देश की अर्जुनी, सरला, केरला धृति, नन्दा, सुपुष्कला और कलमा को मेरे अधिकार में दिया।

स्वातिर्भाण्डे नियुक्तोऽस्य महाशिष्य स्वयम्भुवा ।
नारदाद्यश्च गन्धर्वा गानयोगे नियोजिता ॥५०॥

स्वाति नाम के ऋषि को वाद्य यन्त्रों के निर्माण में अपने शिष्यो सहित ब्रह्मा जी ने नियुक्त किया और नारदादि गन्धर्वों को गान विधा में लगाया। यहा पर भी नारद को शिष्यो सहित नियुक्त समझना चाहिये और नाट्याचार्य के आधीन गायक और वादक को रहना चाहिये वह इससे द्योतित होता है।

एवं नाट्यमिदं सम्यग् बुद्ध्वा सर्वैः सुतैः सह ।
स्वातिनारदसंयुक्तो वेद वेदाङ्गकारणम् ॥५१॥
उपस्थितोऽहं ब्रह्माणं प्रयोगार्थं कृताञ्जलिः ।
नाट्यस्य ग्रहणं प्राप्तं ब्रूहि किं करवाण्यहम् ॥५२॥

इस प्रकार कैशिकी सहित चारो वृत्तियों और वाद्य संगीत आदि समस्त अपेक्षित उपकरणों से युक्त इस नाट्य की तैयारी का पूर्ण सम्यक् समझकर अभिनय करने वाले सब पुत्रो उनमें अप्सराओं को भी सम्मिलित समझना

चाहिये और स्वाति तथा नारद के साथ में नाट्य के मूलभूत वेद और वेदाङ्गों के बनाने वाले ब्रह्मा जी के पास ॥ ५१ ॥

अभिनय देखने के निमन्त्रण के लिये हाथ जोड़कर मैं भरतमुनि ब्रह्मा जी के समीप उपस्थित हुआ और उनसे निवेदन किया कि नाट्य की शिक्षा पूर्ण हो गई है अब कहिये मैं क्या करूं ॥५२॥

विशेष—ग्रहण प्राप्तम्—इसका अर्थ यह है कि नाट्यवेद का ज्ञान मैं प्राप्त कर चुका हूं अथवा इस नाट्यशास्त्र के अभिनय का ग्रहण अर्थात् अवलोकन आप ब्रह्मा जी के द्वारा प्राप्तकाल है जैसी आज्ञा हो वैसा करूं। यहां पर यह भी समझना चाहिये कि भारती आदि ४ वृत्तियों का लक्षण क्या है और वे किस किस रस में काम में लाई जाती है—

१ भारतीवृत्ति

या वाक्प्रधाना पुरुषप्रयोज्या, स्त्रीवर्जिता संस्कृतवाक्ययुक्ता ।
स्वनामधेयैर्भरतैः प्रयुक्ता सा भारती नाम भवेत्तु वृत्तिः ॥

(ना० शा० २०–२४)

२ सात्वती वृत्ति

या सात्वतेनेह गुणेन युक्ता न्यायेन वृत्तेन समन्विता च ।
हर्षोत्कटा संहृतशोकभावा सा सात्वती नाम भवेत्तु वृत्तिः ॥

(ना० शा० २०–३७)

३ आरभटी वृत्ति

प्रस्तावपातप्लुत लङ्घितानि च्छेद्यानि मायाकृतमिन्द्रजालम् ।
चित्राणि युद्धानि च यत्र नित्यं तां तादृशीमारभटीं वदन्ति ॥

(ना० शा० २०–१६)

४ कैशिकी वृत्ति

या श्लक्ष्णनेपथ्यविशेषचित्रा, स्त्रीसंयुता या बहुनृत्तगीता ।
कामोपभोगप्रभवोपचारा, तां कैशिकीं वृत्तिमुदाहरन्ति ॥

(ना० शा० २०–४६)

वृत्तियों की रसाश्रयता

शृंगारे चैव हास्ये च वृत्ति स्यात् कशिकीति सा ।
सात्वती नाम सा ज्ञेया, वीररौद्राद्भुताश्रया ।।
भयानके च बीभत्से, रौद्रे चारभटी भवेत् ।
भारती चापि विज्ञेया करुणाद्भुतसश्रया ।।

(ना० शा० २०/६२–६३) इति

एतत् वचन श्रुत्वा प्रत्युवाच पितामह ।
महानय प्रयोगस्य समय प्रत्युपस्थित ।।५३।।

इस बात को सुनते ही पितामह बोले कि प्रयोग के लिये यह बडा सुदर समय प्राप्त हुआ है ।।५३।।

श्रय ध्वजमह श्रीमान् महेन्द्रस्य प्रवतते ।
अत्रेदानीमय वेदो नाट्यसज्ञ प्रयुज्यताम् ।।५४।।

यह महेन्द्र के विजय का सूचक ध्वजमहोत्सव होने जा रहा है अब इसमे इस नाट्यवेद का प्रयोग करो ।।५४।।

ततस्तस्मिन् ध्वजमहे निहतासुरदानवे ।
प्रहृष्टामरसङ्कीर्णे महेन्द्रविजयोत्सवे ।।५५।।

तब असुरा तथा दानवों के पराजित हो जाने पर प्रसन्न देवताओ से भरे हुए इन्द्र के उस विजयोत्सव मे ध्वजमहोत्सव के अवसर पर मैंने नाट्य का प्रयोग किया ।

विशेष—इन्द्रयज्ञ या इन्द्रमख इस ध्वजोत्सव को ही कहते हैं जिसका वणन मालविकाग्निमित्र' श्रौर मालतीमाधव आदि नाटकों म पाया जाता है । स्वर्गीय मित्रवर श्री भोलानाथ शर्मा M A ने मह' शब्द से मख' बना यह माना है इसी प्रकार यज्ञ शब्द से अवेस्ता का यस्न और फारसी का जश्न बना अत यन शब्द प्राचीनकाल म उत्सव वाची था यह सिद्ध हुआ नाट्यशास्त्र म वाद्य समूह को या आतोद्यो 'कुतप' कहते हैं ।।५५।।

पूर्व कृता मया नान्दी ह्याशीवचनसयुता ।
अष्टाङ्गपदसयुक्ता विचित्रा वेदनिर्मिता ।।५६।।

सबसे पहले मैंने आशीर्वाद वचनों से युक्त आठ अङ्गभूत पदों वाली वेदनिर्मित एवं अनेक प्रकार की (विचित्रा) नान्दी का प्रयोग किया।

विशेष—आठ पदों से १ नाम, २ आख्यात, ३ निपात ४ उपसर्ग, ५ समास, ६ तद्धित ७ सन्धि, ८ विभक्ति ली जाती हैं या केवल आठ सुबन्त या तिङन्त पद लिये जाते हैं कहीं कहीं श्लोक का एक एक चरण भी एक एक पद माना गया है। नान्दी का लक्षण यह है—

"नन्दन्ति काव्यानि कवीन्द्रवर्गा कुशीलवा पारिषदाश्च सन्त ।
यस्मादलं सज्जन सिंधु हंसी तस्मादियं सा कथितेह नान्दी ॥५६॥

तदन्तेऽनुकृतिबद्धा यथा दैत्या सुरर्जिता ।
सम्फेटविद्रवकृता च्छेद्यभेद्याहवात्मिका ॥५७॥

उस नान्दी के समाप्त हो जाने पर, जिस प्रकार देवताओं ने दैत्यो पर विजय प्राप्त की ऐसे सम्फेट (रोषयुक्तवाक्य) विद्रव (भगदड) च्छेद्य भेद्य मारकाट से युक्त अभिनय (अनुकृति) का आरम्भ किया।

विशेष— च्छेद्य' शब्द का अर्थ 'शस्त्रयुद्ध' 'भेद्य' शब्द का अर्थ 'मल्लयुद्ध' भी है।

सम्फेट का लक्षण

रोषग्रथित वाक्यं तु साम्फेटं परिकीर्तितं ॥१६॥८८॥ ना० शा०

विद्रव का लक्षण

नृपाग्निभयसंयुक्तं सम्भ्रमो विद्रवः स्मृत ॥१६॥८७॥ ना० शा०

अभिद्रव का लक्षण

गुह्यव्यतिक्रमो यस्तु विज्ञेयोऽभिद्रवस्तु स ॥१६॥८६॥ ना० शा०

ततो ब्रह्मादयो देवा प्रयोगपरितोषिता ।
प्रददुर्मत्सुतेभ्यस्तु सर्वोपकरणानि च ॥५८॥

तब मेरे पुत्रों द्वारा गये किये अभिनय से प्रसन्न हुआ ब्रह्मा आदि देवताओं ने मेरे पुत्रों को नाट्य के उपयोगी समस्त उपकरण प्रदान किये ॥५८॥

प्रीतस्तु प्रथम शक्रो दत्तवान् स्व ध्वज शुभम् ।
ब्रह्मा कुटिलक चव भृङ्गार वरुणं शुभम् ॥५९॥

सबसे पहले प्रसन्न हुये इन्द्र ने अपना शुभ ध्वज प्रदान किया । उसके बाद ब्रह्मा ने टढा डण्डा और वरुण न भृङगार (कमण्डलु) प्रदान किया ॥५९॥

विशेष—कुटिलक—विदूषकोपयोगी वक्रदण्ड (इति),

सूर्यश्छत्र शिवस्सिद्धि वायुव्यजनमेव च ।
विष्णु सिंहासन चव कुबेरो मुकुट तथा ॥६०॥

सूय न छत्र ग्रथात वितान, शिव न सिद्धि, वायु ने पखा, विष्णु ने सिंहासन और कुबेर न मुकुट प्रदान किया ।

विशेष—छत्र का अथ उल्लोच भी है यह यह छत के नीचे कपडे का होता है सिंहासन का प्रयोजन राजा के पाट के समय होता है पखा गरमी दूर करने के लिये दिया गया है ॥६०॥

शेषा ये देवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगा ।
तस्मिन् सदस्यभिप्रेतान् नानाजातिगुणाश्रयान् ॥६१॥
अशासमर्पित भावान् रसान् रूप बल क्रियाम् ।
दत्तवन्त प्रहृष्टास्ते मत्सुतेभ्यो दिवौकस ॥६२॥

शेष जो देवता, गन्धव यक्ष, राक्षस तथा नाग जातियो के लोग उपस्थित थे उन्होने नाना प्रकार के और अनेक गुणो से युक्त अभीष्ट भाषण भाव, रस रूप बल तथा क्रिया आदि को थोडा थोडा करके प्रदान किया । इस प्रकार प्रसन्न हुए देवताओ ने मरे पुत्रो (नटो) को यह सब प्रदान किया ॥६१-६२॥

एव प्रयोगे प्रारब्धे दैत्यदानवनाशने ।
अभवन क्षुभिता सर्वे दैत्या ये तत्र सगता ॥६३॥

इस प्रकार दैत्य और दानवो के विनाश सूचक अभिनय के आरम्भ होने पर जो दैत्य वहाँ एकत्रित थे सब क्रुद्ध हो गये ॥६३।

विरूपाक्षपुरोगाश्च विघ्नान् प्रोत्साह्यतेऽब्रुवन् ।
क्षमिष्यामहे नाट्यमेतदागम्यतामिति ॥६४॥

वे दैत्य विरूपाक्ष प्रमुख विघ्नों का उत्साहित करके कहने लगे कि हम इस (अपमानजनक) नाटक का अभिनय सहन करेंगे। अतः सब दैत्यगण एकत्रित हो जायें ॥६४॥

विशेष—यहाँ 'आगम्यताम' का अर्थ 'अवधारण करना' है। अथवा विघ्न डालने के लिये जुट जाते हैं। 'विरूपाक्ष' नामक वह विघ्न है जिसमें पात्रों की आवृत्ति और चक्षुरादि इन्द्रिया बिगड जायें।

ततस्तैरसुरैः सार्धं विघ्नामायामुपाश्रिता ।
वाचश्चेष्टा स्मृतिं चैव स्तम्भयन्ति स्म नृत्यताम् ॥६५॥

तदनन्तर उन विघ्नों ने उन असुरों के साथ माया (अदृश्यता) का अवलम्बन करके अभिनेताओं की वाणी, चेष्टा और स्मरणशक्ति को नष्ट करने लगे ॥६५॥

तथा विध्वंसनं दृष्ट्वा सूत्रधारस्य देवराट् ।
कस्मात् प्रयोगवैषम्यमित्युक्त्वा ध्यानमाविशत् ॥६६॥

इन्द्र ने सूत्रधार आदि अभिनेताओं की क्रियाहीनता देखकर यह अभिनय क्यों बिगड रहा है, इसके कारण की जिज्ञासा के लिये समाधि लगाई ॥६६॥

अथापश्यत् सदो विघ्नैः समन्तात् परिवारितम् ।
सहेतरैः सूत्रधारं नष्टसंज्ञं जडीकृतम् ॥६७॥

इसके बाद उन्होंने सभा भवन को चारों ओर विघ्नों से घिरा हुआ और अन्य साथियों के साथ सूत्रधार को जडों के समान चेतनाहीन सा पड़ा हुआ देखा ॥६७॥

विशेष— सद शब्द रङ्गस्थल का वाचक है 'सीदन्त्यस्मिन्निति'।

उत्थाय त्वरितं शक्रः गृहीत्वा ध्वजमुत्तमम् ।
सर्वरत्नोज्ज्वलतनुः किञ्चिदुद्वृत्तलोचनः ॥६८॥
रङ्गपीठगतान् विघ्नानसुरांश्चैव देवराट् ।
जर्जरीकृतदेहांस्तानकरोज्जर्जरेण सः ॥६९॥

तब समस्त रत्नों से दीप्यमान देह वाले और तनिक टेढ़ी दृष्टि क॰ उठकर और अपने उत्तम ध्वज को हाथ में लेकर ॥६८॥

रङ्गपीठ पर उपस्थित सारे विघ्नों तथा असुरों को देवराज इ॰ 'जजर' नामक ध्वजदण्ड से मार-काट कर उनको जर्जरित किया ॥६६॥

विशेष—'जजर' में जृ धातु से यङलुगन्त में अच् प्रत्यय ।

निहतेषु च सर्वेषु विघ्नेषु सह दानवैः ।
सम्प्रहृष्य ततो वाक्यमाहुः सर्वे दिवौकसः ॥७०॥
अहो प्रहरणं दिव्यमिदमासादितं त्वया ।
जर्जरीकृतसर्वाङ्गा यनेते दानवाः कृताः ॥७१॥
यस्मादनेन ते विघ्नाः सासुरा जर्जरीकृताः ।
तस्माज्जर्जर एवेति नामतोऽयं भविष्यति ॥७२॥
शेषा ये चैव हिंसार्थमुपयास्यन्ति हिंसकाः ।
दृष्ट्वैव जर्जरं तेऽपि गमिष्यन्त्येवमेव तु ॥७३॥
एवमेवास्त्विति ततः शक्रः प्रोवाच तान् सुरान् ।
रक्षाभूतश्च सर्वेषां भविष्यत्येष जर्जरः ॥७४॥

दानवों के साथ समस्त उपस्थित विघ्नों का नाश हो जाने पर सारे देवता लोग प्रसन्न इन्द्र से कहने लगे कि ॥७०॥

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आपको यह दिव्य शस्त्र मिल गया जिसके द्वारा इन सब दानवों को मार मार कर आपने जजर कर दिया ॥७१॥

क्योंकि आपने इसी के द्वारा असुरों के सहित उन विघ्नों को मार मार कर जजर कर दिया इसलिए आगे यह 'जजर' शब्द से प्रसिद्ध होगा ॥७२॥

बचे कुचे जो हिंसक लोग कभी विघ्न डालने के लिये आवेंगे वे भी इस 'जजर' को देखकर इसीप्रकार भय के मारे भाग जावेंगे ॥७३॥

तब इन्द्र उन देवताओं से बोले कि ऐसा ही हो । और यह 'जजर' सब की रक्षा करने वाला भी होगा ॥७४॥

विशेष—ये ७० से ७४ तक के श्लोक प्रक्षिप्त हैं क्योंकि इस कथा से इनका कोई सम्बन्ध सिद्ध नहीं होता ।

विश्वकर्मा ने ब्रह्मा जी के पास जाकर हाथ जोड़कर सभा में कहा कि हे देव सुसज्जित नाट्यभवन तैयार है आप उसको देखने की कृपा करें ॥८०॥

तब इन्द्र को साथ लेकर और अन्य सब देवताओं के साथ ब्रह्मा जी तुरन्त ही नाट्यमण्डप को देखने के लिये पधारे ॥८१॥

तब ब्रह्मा जी ने नाट्यगृह को देखकर सारे देवताओं से कहा कि इस मण्डप का थोड़ा थोड़ा अंश बांटकर आप सब लोग इस नाट्यमण्डप की रक्षा करें ॥८२॥

विशेष—'अंशस्य भजन अधिष्टान अंशभाग' यह विग्रह है।

रक्षणे मण्डपस्याथ विनियुक्तस्तु चन्द्रमा ।
लोकपालास्तथा दिक्षु विदिक्ष्वपि मारुता ॥८३॥

सब सामान्य रूप से सम्पूर्ण मण्डप की रक्षा का भार चन्द्रमा को दिया गया। दिग् रक्षा इन्द्रादि लोकपालों को दी गई और आग्नेय, नामक वायव्य, ईशान, नैऋत्य आदि उपदिशाओं की रक्षा वायुदेवता को दी गई ॥८३॥

विशेष—चन्द्रमा सौम्यप्रकृति तथा सामप्रधान होने से सर्वाध्यक्ष बनाया गया। घम (गर्मी) को हटाने के लिये वायु रक्षक बना। अतः नाट्यमण्डप में कई गवाक्ष होने चाहिए ॥८४॥

नेपथ्यभूमौ मित्रस्तु निक्षिप्तो वरुणोऽम्बरे ।
वेदिकारक्षणेवह्नि भाण्डे सर्वे दिवौकस ॥८४॥

नेपथ्यरक्षाय सूर्य को नियुक्त किया क्योंकि रत्नादि धारण किये जाते हैं। वेदी की रक्षाय तीक्ष्ण अग्नि को लगाया और दिवौकस—मेघों को वाद्य, आतोद्य (त्रिपुष्कर) की रक्षा में लगाया ॥८५॥

वर्णाश्चत्वार एवाथ स्तम्भेषु विनियोजिता ।
आदित्या श्चैव रुद्राश्च स्थिता स्तम्भान्तरेष्वथ ॥८५॥

चारों वर्णों के अधिष्ठाताओं को लगाया अन्य मोटे मोटे खम्भों या खम्भों के मध्यभाग की रक्षा के लिये आदित्यों और रुद्रों की नियुक्ति की।

धारणीष्वथ भूतानि शालास्वप्सरसस्तथा ।
सर्ववेश्मसु यक्षिण्यो महीपृष्ठे महोदधि ॥८६॥

धरनिया (सरदला) खम्भे के ऊपर रक्खी लकड़ी की रक्षा के लिये महाभूता को, शालाग्री (अटारियो) की रक्षा अप्सराओ को दी गई। शेष मकान की रक्षा यक्षिणिया का दी गई, फर्श या कुट्टिम की रक्षा समुद्र के अधिष्ठाता वरुण को दी गई ॥८६॥

द्वारशालानियुक्तौ तु कृतान्त काल एव च ।
स्थापितौ द्वारपात्रेषु नागमुख्यौ महाबलौ ॥८७॥

द्वारशाला (पक्षगृह या ड्योढी) की रक्षा यमराज व काल को दी गई। द्वारपात्रो (किवाडा) की रक्षा महाबली शेषनाग व गुलिक (वासुकि) को दी गई।

देहल्या यमदण्डस्तु शूल तस्योपरिस्थितम् ।
द्वारपालौ स्थितौ चोभौ नियतिमृत्युरेव च ॥८८॥

देहली की रक्षा यमदण्ड को दी गई, द्वार के ऊपर के काष्ठ की रक्षा त्रिशूल को एव भाग्य और मृत्यु को द्वारपाल बनाया गया।

पार्श्वे च रङ्गपीठस्य महेन्द्र स्थितवान स्वयम् ।
स्थापिता मत्तवारण्या विद्युद् दैत्यनिषूदिनी ॥८९॥

रगपीठ की बाजू या बगल मे स्वय इन्द्र बैठे, मत्तवारणी (बरामदे) मे विद्युत (वज्र) को नियुक्त किया ॥८९॥

स्तम्भेषु मत्तवारण्या स्थापिता परिपालने ।
भूतयक्षपिशाचाश्च गुह्यकाश्च महाबला ॥९०॥

मत्तवारणी (बरामदे) के चारो खम्भो पर भूत, यक्ष, पिशाच और गुह्यको का नियुक्त किया ॥९०॥

जर्जरे तु विनिक्षिप्त वज्र दैत्यनिबर्हणम् ।
तत्पर्वसु विनिक्षिप्ता सुरेन्द्रा ह्यमितौजस ॥९१॥
शिर पर्वस्थितो ब्रह्मा द्वितीये शकरस्तथा ।
तृतीये च स्थितो विष्णुश्चतुर्थे स्कन्द एव च ॥९२॥

पञ्चमे च महानागा शेष वासुकि तक्षका ।
एव विघ्नविनाशाय स्थापिता जर्जरे सुरा ॥६३॥
रङ्गपीठस्य मध्ये तु स्वय ब्रह्मा प्रतिष्ठित ।
इष्टयर्थं रङ्गमध्येऽत्र क्रियते पुष्पमोक्षणम् ॥६४॥

जर्जर (इन्द्रपताका) की रक्षा के लिए दैत्यध्वसकारी वज्र को रख उसकी ग्रन्थियो पर श्रमित तेजस्वी सुर श्रेष्ठो को रखा। तथाहि—स ऊपर की गाठ पर ब्रह्मा जी, दूसरी गाठ पर शिवजी, तीसरी पर विष्णु व चतुर्थ पर कुमार कार्तिकेय बठे। पञ्चम गाठ पर शेष, वासुकि और तक्ष नियुक्त हुए। इस प्रकार जर्जर की रक्षा के लिए देवताओ ने भार सम्हाला। रङ्गपीठ के मध्य मे स्वय ब्रह्मा ने आसन जमाया। अतएव इष्टि (पूजा) के लिय रङ्गपीठ के मध्यभाग म फूल चढाते हैं।

पातालवासिनो ये च यक्षगुह्यकपन्नगा ।
अधस्ताद् रङ्गपीठस्य रक्षणे ते नियोजिता ॥६५॥

पाताल निवासी यक्षादि को सुरङ्ग आदि के खोदने मे भय की निवृत्ति के लिये लगाया जा कि रङ्गपीठ के निचले गुप्त तहखानो की रक्षा करते हैं।

नायक रक्षतीन्द्रस्तु नायिका तु सरस्वती ।
विदूषकमयोङ्कार शेषास्तु प्रकृतीहर ॥६६॥

इन्द्र नायक का रक्षा करते हैं, सरस्वती नायिका की रक्षा करती है। विदूषक की ओंकार तथा अन्य पात्रो की महादेव रक्षा करते हैं।

यान्येतानि नियुक्तानि दैवतानीह रक्षणे ।
ह्येतान्येवाधिदवानि भविष्यन्तीत्युवाच स ॥६७॥

ब्रह्मा जी ने यह भी कहा कि जिन देवताओ को यहाँ रक्षाय नियुक्त किया है, वे ही उन उन भागो के अधिष्ठातन्देव भी होंगे।

एतस्मिन्नन्तरे दव सर्वेरुक्त पितामह ।
साम्ना तावदिमे विघ्ना स्थाप्यन्ता वचसा त्वया ॥६८॥

इसी बीच म ब्रह्मा जी से देवताओ ने प्रार्थना की कि प्रथम आप साम प्रयोग से शान्त वाणी के द्वारा इन विघ्नो को रोकिये, न मानने पर देवतागण तनाव कर ही दिये है।

पूर्व साम प्रयोक्तव्य द्वितीय दानमेव च ।
तयोरुपरि भेदस्तु ततो दण्ड प्रयुज्यते ॥९९॥

पहले साम का प्रयोग करना चाहिये फिर दान का (दे लेकर) इन दोनो के पश्चात भेद (परस्पर फूट डालने) का और अन्त म दण्ड (शासन) का प्रयोग किया जाता है ।

देवाना वचन श्रुत्वा ब्रह्मा विघ्नानुवाच ह ।
कस्माद भवन्तो नाट्यस्य विनाशाय समुत्थिता ॥१००॥

देवो की बात सनकर ब्रह्मा जी शान्तिपूवक विघ्नो से बोले कि आप लोग अभिनय के विनाश के लिए क्यो उद्यत है ।

ब्रह्मणो वचन श्रुत्वा विरूपाक्षोऽब्रवीद्वच ।
दत्यविघ्नगण सार्धं सामपूर्वमिद तत ॥१०१॥
योऽय भगवता सृष्टो नाट्यवेद सुरेच्छया ।
प्रत्यादेशोऽयमस्माक सुरार्थ भवता कृत ॥१०२॥

ब्रह्मा जी की बात सुनकर विघ्नगणो के साथ विरूपाक्ष कहने लगा कि जो आपने यह नटयवेद बनाया है वह देवताओ को खुश करने के लिए और हमारी पराजय या अपमान के लिये बनाया गया है ।

तन्नतदेव कर्तव्य त्वया लोकपितामह ।
यथा देवास्तथा दैत्यास्त्वत्त सर्वे विनिर्गता ॥१०३॥

हे ससार के पितामह ! आपको ऐसा नहीं करना चाहिये क्योकि आपके लिये जैसे देवता वैसे ही दैत्य हैं, क्योकि आप ही सबके जन्मदाता हैं ।

विघ्नाना वचन श्रुत्वा ब्रह्मा वचनमब्रवीत ।
अल वो मन्युना दैत्या विषाद त्यजतानघा ॥१०४॥

विघ्नो की बात सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा कि आप लोग क्रोधित न हों तथा अभिनयजन्य अपमान की भावनाओं को भी हृदय से दूर कर दें ।

भवतां देवतानां च शुभाशुभविकल्पक ।
कर्म भावान्वयापेक्षी नाट्यवेदो मया कृत ॥१०५॥

आपने तथा देवो में शुभाशुभ या धर्माधर्म के सुख दुःख फल को बताने के लिये कर्म दान स्नान या हिंसा, स्तेय आदि का जो भाव विचार एव अन्वय वश परम्परागत कर्तव्य, (या अन्वय शब्द का देश या जाति अर्थ है उनकी दृष्टि के अनुसार) क्रिया को (अभिनय) प्रदर्शित करने वाला यह नाट्यवेद मैंने बनाया है अर्थात अमुक देश में अमुक जाति में अमुक कर्म से अमुक फल मिलता है, यही नाट्यवेद का प्रयोजन है, तुम्हारी निन्दा या देवों की प्रशंसा करने का मेरा अभिप्राय नहीं है।

नैकान्ततोऽत्र भवतां देवानां चानुभावनम् ।
त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम् ॥१०६॥

इसमें न केवल तुम्हारा और देवों का ही प्रदर्शन किया है अपितु विश्व के समस्त भावों का प्रदर्शन किया गया है ॥

क्वचिद्धर्मः क्वचित्क्रीडा क्वचिदर्थः क्वचिच्छमः ।
क्वचिद्धास्यं क्वचिद्युद्धं क्वचित्कामः क्वचिद्वधः ॥१०७॥
धर्मो धर्मप्रवृत्तानां कामः कामोपसेविनाम् ।
निग्रहो दुर्विनीतानां विनीतानां दमक्रिया ॥१०८॥
क्लीवानां धार्ष्ट्यजननमुत्साहः शूरमानिनाम् ।
अबुधानां विबोधश्च वैदुष्यं विदुषामपि ॥१०९॥
ईश्वराणां विलासश्च स्थैर्यं दुःखार्दितस्य च ।
अर्थोपजीविनामर्थो धृतिरुद्विग्नचेतसाम् ॥११०॥
नानाभावोपसम्पन्नं नानावस्थान्तरात्मकम् ।
लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम् ॥१११॥
उत्तमाधममध्यानां नराणां कर्मसंश्रयम् ।
हितोपदेशजननं धृतिक्रीडासुखादिकृत् ॥११२॥
दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम् ।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति ॥११३॥
धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम् ।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति ॥११४॥

अभिनय से लाभ—कहीं धर्म, कहीं क्रीडा, कहीं अर्थ और कहीं

जो न दिखाई दे अर्थात हृदयगोचर न हो इस प्रकार का न कोई ज्ञान है, न कोई शिल्प है न विद्या या कोई कला है और न ऐसा कोई योग या ऐसा कोई कर्म है जो इस नाट्य में दिखलाई न देता हो ॥११५॥

तन्नात्र मन्यु कर्तव्यो भवद्भिरमरान प्रति ।
सप्तद्वीपानुकरण नाट्यमेतद् भविष्यति ॥११६॥

इसलिये आप लोगों को अर्थात् असुरों को देवताओं के प्रति द्वेष या क्रोध नहीं करना चाहिये । क्योंकि इस नाट्य में उनका कोई महत्व या उत्कर्ष प्रदर्शित नहीं दिखलाया गया है अपितु सातों द्वीपों अर्थात सारे ससार के भावों का अनुकीर्तन रूप यह नाट्य होगा ॥११६॥

देवतानामसुराणा च राज्ञामथ कुटुम्बिनाम ।
ब्रह्मर्षीणां च विज्ञेय नाट्य वृत्तान्तदर्शकम् ॥११७॥

यह देवताओं के असुरों के, राजाओं और गृहस्थियों के एव ब्रह्मर्षियों के वृत्तान्त का प्रदर्शन है—यह समझना चाहिये ॥११७॥

योऽय स्वभावो लोकस्य सुख दु ख समन्वित ।
सोऽङ्गाद्यभिनयोपेतो नाट्यमित्यभिधीयते ॥११८॥

ससार का सुख दु ख से युक्त जो स्वभाव है। आङ्गिकादि चतुर्विध अभिनयों के साथ मिल जाने पर वही नाट्य कहलाता है ।

विशेष उपेत —नाट्य के द्वारा बुद्धि रूपी दर्पण में सक्रान्त ॥११८॥

एतस्मिन्नन्तरे देवान्सर्वानाह पितामह ।
क्रियतामद्य यजन विधिवन्नाट्यमण्डपे ॥११९॥

इस बीच में पितामह ने सब देवताओं को आदेश दिया कि आप लोग आज नाट्य मण्डप में विधिवत् यज्ञ करें ।

बलिप्रदानहोमैश्च मन्त्रौषधिसमन्वित ।
भोज्यभक्ष्यैश्च पानैश्च बलि समुपकल्प्यताम् ॥१२०॥

नाना प्रकार के रगों तथा चावल आदि से की जाने वाली वेदी की

सजावट, बलि और मन्त्रो तथा औषधियो से युक्त तिल आदि के होम द्वारा एवं भोज्य (कचौडी, मोदक आदि पक्का भोजन) भक्ष्य (खिचडी आदि कच्चा विखरा भोजन) तथा पेय दुग्धादि के द्वारा पूजन (बलि) करना चाहिये ॥१२०॥

मर्त्यलोकगता सर्वे शुभा पूजामवाप्स्यथ ।
अपूजयित्वा रङ्गं तु नैव प्रेक्षा प्रवर्तयेत ॥१२१॥

यदि आप देवता लोग इस समय यह करेंगे तो मर्त्यलोक मे आप सब लोग भी सुन्दर पूजा को प्राप्त करेंगे। आप देवताओ के द्वारा पूजन कराने का मुख्य उद्देश्य आपका लाभ ही है। इसके अतिरिक्त दूसरा कारण यह भी है कि रङ्ग की बिना पूजा किये हुये कभी नाटय का आरम्भ नही करना चाहिये ॥१२१॥

अपूजयित्वा रङ्गं तु य प्रेक्षा कल्पयिष्यति ।
तस्य तन्निष्फल ज्ञान तिर्यग्योनिं च यास्यति ॥१२२॥

रङ्ग की पूजा किये बिना जो अभिनय का प्रारम्भ करेगा, उसका वह सारा ज्ञान व्यर्थ हो जायगा और अगले जन्म मे भी वह तिर्यग्योनि (पशु पक्षी आदि की योनि) मे जन्म लेगा ॥१२२॥

यज्ञेन सम्मित ह्येतद रङ्गदैवतपूजनम् ।
तस्मात सर्वप्रयत्नेन कर्तव्य नाटययोक्तृभि ॥१२३॥
नर्तकोऽर्थपतिर्वापि य पूजा न करिष्यति ।
न कारयित्यन्यैर्वा प्राप्नोत्यपचय तु स ॥१२४॥

यह रङ्ग देवताओ का पूजन यज्ञ के समान पवित्र है। इसलिए नाटय का प्रयोग करने कराने वाले नाटयाचार्य तथा अर्थपति राजा आदि सबको सब प्रकार के प्रयत्नो द्वारा सम्पादन करना चाहिये ॥१२३॥

जो नाट्याचार्य (नर्तक) अथवा राजा आदि (अर्थपति) इस पूजा को करेगा अथवा अन्यो के द्वारा न करावेगा वह हानि को प्राप्त करेगा ॥१२४॥

यथाविधि यथादृष्ट यस्तु पूजा करिष्यति ।

स लप्स्यते शुभानर्थान् स्वर्गलोक च यास्यति ॥१२५॥

जो शास्त्र-दृष्ट शैली से विधिवत पूजा करेगा वह शुभ अर्थों को प्राप्त करेगा और स्वर्गलोक को जावेगा ॥१२५॥

एवमुक्त्वा तु भगवान द्रुहिण सर्वदेवत ।

रङ्गपूजा कुरुष्वेति मामेव समचोदयत् ।

भगवान ब्रह्मा जी ने इस प्रकार कहकर सारे देवताओं के साथ तुम रङ्ग की पूजा करो इस प्रकार की प्रेरणा मुझको दी ॥१२६॥

समाप्त प्रथमाध्याय



अथ द्वितीयोऽध्याय



हिन्दी भाषाऽऽदिमेऽध्याये छात्रेभ्यो विहोता हिता ।
पदार्थवत्तिरधुना द्वितयोऽध्याय उच्यते ॥

भरतस्य वच श्रुत्वा पप्रच्छुमु नयस्तत ।
भगवन् श्रोतुमिच्छामो यजन रङ्गसश्रयम् ॥१॥

भरतमुनि अपने को अपने से भिन्न मानकर कहते हैं—

भरतमुनि की बातो को सुनकर मुनिगण फिर बोले कि हे भगवन् (अब हम) नाटयमण्डप मे किए जाने वाले देव पूजन को सुनना चाहते हैं ॥१॥

अथवा या क्रियास्त्रय लक्षण यच्च पूजनम ।
भविष्यदि मनर कार्य कथ तन्नाट्यवेश्मनि ॥२॥

अथवा उसकी जो क्रियायें रचना-पद्धतियाँ, लक्षण आकार एव परिणाम हैं, पहिले 'बतलाइये' और फिर नाटयशास्त्र मे पूजन कैसे करना चाहिये यह बतलाने की कृपा करें ॥२॥

इहादि नाटचयोगस्य नाटयमण्डप एव हि ।
तस्मात् तस्यव तावत त्व लक्षण वक्तुमर्हसि ॥३॥

इस नाट्य योग का प्रारम्भिक तत्व नाट्य मण्डप हा है। इसलिए आपको सबसे पहले उसका लक्षण, आकारादि ही बतलाना उचित है ॥३॥

तेषां तु वचनं श्रुत्वा मुनीनां भरतोऽब्रवीत् ।
लक्षणं पूजनं चैव श्रूयतां नाट्यवेश्मन ॥४॥

उन मुनियों की बातों को सुनकर भरत मुनि बोले कि अच्छा पहिले आप लोग नाट्य गृह के लक्षण तथा पूजा को सुनें ॥४॥

दिव्यानां मानसी सृष्टि गृहेषूपवनेषु च ।
नराणां यत्नतः कार्या लक्षणाभिहिता क्रिया ॥५॥

देवताओं की गृहों तथा उपवनादि के विषय में मानसी सृष्टि, होती है इसलिए देवताओं के प्रसंग में 'इतिकर्तव्यता' रचना शैली का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। मनुष्यों को शास्त्र में कहे हुये शब्द का-अर्थ 'शास्त्र' है। क्रिया यत्नपूर्वक करनी होती है ॥५॥

श्रूयतां तद्यथाप्यत्र कर्तव्यो नाट्यमण्डप ।
तस्य वास्तु पूजा च यथा योज्या प्रयत्नतः ॥६॥

इसलिए जहाँ और जिस प्रकार से नाट्य मण्डप की रचना करनी चाहिए उसकी तथा उसकी वास्तुकला अर्थात परिमाणादि और यथा-योग पूजादि किस प्रकार करनी चाहिए सबको सावधान होकर सुनो ॥६॥

इह प्रेक्षागृहं दृष्ट्वा धीमता विश्वकर्मणा ।
त्रिविधः सन्निवेशश्च शास्त्रतः परिकल्पितः ॥७॥

इस नाट्यमण्डप के विषय में प्रेक्षागृह की रचना आदि को देखकर अयत विचार करके महा पण्डित विश्वकर्मा ने तीन प्रकार के आकार सन्निवेश और च शब्द से तीन प्रकार के परिणाम की शास्त्र के अनुसार कल्पना की ॥७॥

विकृष्टश्चतुरश्रश्च त्र्यश्रश्चैव तु मण्डप ।
तेषा त्रीणि प्रमाणानि ज्येष्ठ मध्य तथावरम ॥८॥

विकृष्ट अर्थात् आयताकार, चतुरस्र अथात वर्गाकार और त्र्यस्र अथात त्रिभुजाकार तीन प्रकार का मण्डप प्रेक्षागृहो का आकार होता है। उन तीनो प्रकार के मण्डपो अर्थात प्रेक्षागृहो के ज्येष्ठ, मध्यम तथा अवर तीन प्रकार के प्रमाण होते हैं ॥८॥

१९७९ प्रमाणमेषा निर्दिष्ट हस्तदण्डसमाश्रयम ।
शत चाष्टौ चतुःषष्टि हस्ता द्वात्रिंशदेव च ॥९॥

इन तीनो प्रकार के मण्डपो का परिमाण, हाथ तथा दण्ड के आधार पर निश्चित किया गया है। एक सौ आठ अथवा चौसठ अथवा बत्तीस हाथ इनकी एक भुजा का परिमाण होता है ॥९॥

अष्टाधिक शत ज्येष्ठ चतुःषष्टिस्तु मध्यमम् ।
कनीयस्तु तथा वेश्म हस्ता द्वात्रिंशदिष्यते ॥१०॥

एक सौ आठ हाथ का ज्येष्ठ, चौसठ हाथ का मध्यम और बत्तीस हाथ का नाट्य मण्डप कनिष्ठ समझा जाता है ॥१०॥

देवाना तु भवेज्ज्येष्ठ नृपाणा मध्यम भवेत् ।
शेषाणा प्रकृतीनां तु कनीय सविधीयते ॥११॥

देवताओ का अभिनय जिसमे किया जाय वह मण्डप ज्येष्ठ राजाओ का अभिनय जिसमे किया जाय मध्यम तथा शेष लोगो का जिसमे अभिनय हो वह मण्डप कनिष्ठ होना चाहिये ॥११॥

प्रमाणं यच्च निर्दिष्ट लक्षण विश्वकर्मणा ।
प्रेक्षागृहाणा सर्वेषा तच्चैव हि निबोधत ॥१२॥

इसका यह अभिप्राय हे कि अगली कारिका मे जो अणु २ रज, ३ बाल, ४ लिक्षा, ५ यूका, ६ यव, ७ अङ्गुल, ८ हस्त और ९ दड मे नौ प्रकार की माप-साधन और तीन प्रकार के परिमाण आदि दिखलाये गये हैं उनका ग्रहण इससे करना चाहिए ॥१२॥

आकार	प्रकार	परिमाण	उपयोग
श्लोक ८ के अनुसार	श्लोक ८ के अनुसार	श्लोक ९–१० के अनुसार	श्लोक ११ के अनुसार
१ विकृष्ट विकृष्ट विकृष्ट	१ ज्येष्ठ २ मध्यम ३ अवर	१०८×६४ हाथ ६४×३२ हाथ ३२×१६ हाथ	देवताथ नपाथ लोकाथ
२ चतुरस्र चतुरस्र चतुरस्र	४ ज्येष्ठ ५ मध्यम ३ अवर	१०८×१०८ हाथ ६४×६४ हाथ ३२×३२ हाथ	देवताथ नपाथ लोकाथ
३ त्र्यस्र त्र्यस्र त्र्यस्र	७ ज्येष्ठ ८ मध्यम ९ अवर	१०८ हाथ समत्रिबाहु ६४ हाथ समत्रिबाहु ३२ हाथ समत्रिबाहु	देवताथ नपाथ लोकाथ

अणू रजश्च बालश्च लिक्षा यूका यवस्तया ।
अङ्गुल च तयाहस्तो दण्डश्चव प्रकीतित ॥१३॥

१ अणु २ रज, ३ बाल, ४ लिक्षा, ५ यूका, ६ यव ७ अडगुल, ८ हस्त और ९ दण्ड ये नौ प्रकार माप के लिये कहे जाते हैं ॥१३॥

अणवोऽष्टौ रज प्रोक्त तान्यष्टौ बाल उच्यते ॥
बालास्त्वष्टौ भवेल्लिक्षा यूका लिक्षाष्टक भवेत् ॥१४॥

आठ 'अणु' का एक 'रज कहलाता है, और वे आठ रज मिलकर एक बाल कह जाते हैं । आठ बालो की लिक्षा होती है और आठ 'लिक्षा का का यूका' परिमाण होना है ॥१४॥

यूकास्त्वष्टौ यवो ज्ञेयो यवास्त्वष्टौ तयागुलम् ।
अङ्गुलानि तथा हस्तश्चतुर्विशतिरुच्यते ॥१५॥

आठ यूका' का एक यव समझना चाहिये और आठ यव' का एक अडगुल' होना है। इसी प्रकार चौवीस अङ्गुलियो का एक हाथ होता है ॥१५॥

चतुहस्तो भवेत् दण्डो निर्दिष्टस्तु प्रमाणत ।
अनेनव प्रमाणेन वक्ष्याम्येषा विनिणयम् ॥१६॥

चार हाथ' का एक दण्ड परिमाण माना गया है। इसी हस्त दण्ड प्रमाश्रित परिणाम स मैं इनका निर्माण करूगा ॥१६॥

चतुःषष्टिकरान् कुर्याद् दीघत्वेन तु मण्डपम् ।
X द्वात्रिंशत च विस्तारान्, मर्त्याना यो भवेदिह् ॥१७॥

इन मण्डपो मे से जो मनुष्या के अर्थात राजादि के चरित्र का अभिनय करने के लिये हैं उस विकृष्ट मण्डप की लम्बाइ चौसठ हाथ और चौडाई बत्तीस हाथ रखनी चाहिये ॥१७॥

X अत ऊर्ध्वं न कर्तव्य कर्तृभि र्नाटचमण्डप ।
यस्मादव्यक्तभाव हि तत्र नाटच व्रजेदिति ॥१८॥

मण्डप निर्माताओ को इससे अधिक बढा या छोटा मण्डप नही बनाना चाहिये क्योकि वहाँ अर्थात् अधिक बडे अथवा अधिक छोटे मण्डपो मे नाट्य अस्पष्ट बन जायेगा ॥१८॥

मण्डपे विप्रकृष्टे तु पाठ्यमुच्चरितस्वरम् ।
अनिस्सरणधर्मत्वाद् विस्वरत्व भृश व्रजेत् ॥१६॥

विप्रकृष्ट अर्थात अत्यन्त बडे तथा अत्यन्त छोटे दोनो प्रकार के मण्डप से ज्येष्ठ प्रमाण वाले बडे मण्डप मे अत्यन्त उच्च स्वर से उच्चारण किया गया पाठ्य भाग निकटवर्तियो के लिये अत्यन्त उग्र होने से कष्ट दायक तथा दूरवर्तियो के लिये सुनाई न देने वाला होने से कष्टदायक अर्थात दोनो के लिये विस्वर हो जाता है । तथा अत्यन्त छोटे मण्डप मे वही पाठ्य निकलने और फैलने योग्य अवकाश के न होने से विस्वर हो जाता है ॥१६॥

यश्चाप्यास्यगतो भावो नानादृष्टिसमन्वित ।
स वेश्मन प्रकृष्टत्वाद् व्रजेदव्यक्तता पराम ॥२०॥

नाना प्रकार की दृष्टिया अर्थात मुद्राये भावभङ्गिया से युक्त जो अभिनेताओ के मुख पर का भाव है मण्डप के अति विस्तीर्ण अथवा अत्यन्त छोटा होने पर वह अत्यन्त अस्पष्टता को प्राप्त हो जाता है ॥२०॥

प्रेक्षागृहाणा सर्वेषा तस्मान्मध्यममिष्यते ।
यावत् पाठ्य च गेय च तत्र श्रव्यतर भवेत् ॥२१॥

इसलिये सारे प्रेक्षागृहो मे मध्यम प्रेक्षागृह सर्वोत्तम, इष्ट माना जाता है क्योकि उसमे जितना भी पाठ्य तथा गेय होता है वह सब अधिक स्पष्ट रूप से सुनाई दे सकता है ॥२१॥

देवाना मानसी सृष्टि गृहेषूपवनेषु च ।
यत्नभावाभिनिष्पन्ना सर्वे भावा हि मानुषा ॥२२॥

देवताओ के गृहो तथा उपवनो आदि के विषय मे मानसी अर्थात सकल्प मात्र से साध्य सृष्टि है और मनुष्यो के सारे पदार्थ प्रयत्न के द्वारा बनते हैं ॥२२॥

तस्माद् देवकृतैर्भावैर्न विस्पर्धेत मानुष ।
मानुषस्य तु गेहस्य सम्प्रवक्ष्यामि लक्षणम् ॥२३॥

इसलिये देवताओ के बनाये नाट्य मण्डप आदि रूप पदार्थों के साथ मनुष्य को स्पर्धा नही करनी चाहिये । अब मैं मनुष्य के उपयोगी लक्षण विस्तार पूर्वक कहूँगा ॥२३॥

भूमेर्विभाग पूर्वं तु परीक्षेत प्रयोजक ।
ततो वास्तु प्रमाणेन प्रारभेत यदच्छया ॥२४॥

प्रयोजक पहिले भूमि विभाग को भली प्रकार देखे उसके वाद अपनी आ व अनुसार विकृष्ट आदि आकार के वास्तु अर्थात गृह की निर्दिष्ट प्रमाण अनुसार रचना प्रारम्भ करावे ॥२४॥

समा स्थिरा च कठिना कृष्णा गौरी च या भवेत् ।
भूमिस्तत्रव कत्तव्य कर्तृ भि र्नाटयमण्डप ॥२५॥

जो भूमि समतल, मजबूत ठास काली अथवा पोली हो उसी स्थान पर नने वालो को नाटय मण्डप बनवाना चाहिये ॥२५॥

प्रथम शोधन कृत्वा लाङ्गलेन समुत्कृषेत् ।
अस्थि कील कपालानितृणगुल्माश्च शोधयेत् ॥२६॥

पहले भूमि को साफ करके हल मे जोत, और हड्डी कील कपालादि ति खोपडी आदि और घास फूँस एव झाड झकाड आदि को उसम से काल दें ॥२६॥

शोधयित्वा वसुमतीं प्रमाणा निर्दिशेत् तत ।
पुष्यनक्षत्रयोगेन शुक्लसूत्र प्रसारयेत् ॥२७॥

पृथ्वी का वाह्य शोधन करके आकार तथा परिमाण का निश्चय करे । सके लिये पुष्य नक्षत्र का योग होने पर सफेद सूत दाग वेल करने क लिये ले ॥२७॥

कार्पास बाल्वज वापि मौञ्ज बाल्कलमेव च ।
सूत्र बुधश्च कतव्य यस्य च्छेदो न विद्यते ॥२८॥

कपास या वाल्व सन आदि या अन्य घास मू ज या वल्कलवक्ष की छाल का सूत्र अर्थात रस्सी चतुर कारीगरो को बनानी चाहिये जो टट न जय ॥२८॥

अर्द्धच्छिन्ने भवेत् सूत्रे स्वामिनो मरण ध्रुवम ।
त्रिभागच्छिन्नया रज्जवा राष्ट्रकोपो विधीयत ॥२६॥

बीच म आधे पर स सूत्र या रस्सी के टट जान पर स्वामी अथात राजा

आदि प्रेक्षापति का निश्चित रूप मे मरण होता है । और तिहाई भाग पर टूटने से राष्ट्र मे उपद्रव होता है ॥२६॥

छिन्नाया चतुर्भागेप्रयोक्तुर्नाश उच्यते ।

हस्तात् प्रभ्रष्टया वापि कश्चित्त्वपचयो भवेत् ॥३०॥

चौथाई भाग पर टूटने से प्रयोग करने वाले नाटयचार्य का नाश होता है और हाथ से छूट जाने पर कोई हानि अवश्य होती है ॥३०॥

तस्मान्नित्य प्रयत्नेन रज्जुग्रहणमिष्यते ।
कार्यं चैव प्रयत्नेन मान नाटयगृहस्य तु ॥३१॥

इसलिये रस्सी मान-सूत्र या फीता को सदा यत्नपूर्वक पकडना चाहिये और नाटयगृह की नाप-तौल सावधानी से करनी चाहिये ॥३१॥

मुहूर्तेनानुकूलेन तिथ्या सुकरणेन च ।
ब्राह्मणास्तर्पयित्वा तु तत सूत्र प्रसारयेत् ॥३२॥

अनुकूल मुहूर्त, अनुकूल तिथि तथा सुन्दर दोष रहित करण काल का विभाग विशेष मे ब्राह्मणो को भोजनादि के द्वारा तृप्त कराकर सूत छोड अर्थात मण्डप की दाग-बेल करवावे ॥३२॥

चतुष्षष्टिकरान् कृत्वा द्विधा कुर्यात् पुनश्च तान् ।
पृष्ठतो यो भवेद् भागो द्विधाभूतस्य तस्य तु ॥३३॥

विकृष्ट अर्थात आयताकार के मध्य परिमाण वाले नाटय मण्डप की रचना के लिये चौसठ हाथ लम्बी तथा बत्तीस हाथ चौडी भूमि को लेकर उसकी ६४ हाथ वाली लम्बाई को दो भागो मे विभक्त कर इस प्रकार ३२ हाथ लम्बे और बत्तीस हाथ चौडे अर्थात् वर्गाकार के दो बराबर क्षेत्र बन जावेंगे। इनमे से अगले एक भाग को प्रेक्षकों के बैठने की व्यवस्था के लिये छोड दें और जो भाग पीछे की ओर हो उसको फिर १६ × ३२ हाथ के दो भागो मे बांट दें ।

विशेष—यहाँ वार्तिककार ने इन पद्यों को उद्धृत किया है।

"मत्तवारण्यगृह स्तम्भौ द्वौ पीठगाम्य चत्वारः।
परितोऽय चत्वारो दर्शयमुक्ता भवन्त्येते ॥१॥

चत्वारः पार्श्वाभ्यां पश्चादग्र च यावदिह द्वौ द्वौ ॥
ते चाप्यष्टावग्रे ह्युपरि निवेश्या य उद्दिष्टा ॥२॥

षट्सान्तरास्तथान्ये कार्या इति भवति शास्त्रतात्पर्यम्।
दत्तोऽन्यथा क्रमस्तेषां वा कश्चिद् भवेदत्र ॥३॥

भित्ते स्तम्भानां च स्यादन्तरमष्टहस्तमेवान्ते।
तदुत्क्षिप्तं स्यादिह चाधारो ह्युपरि काष्ठानाम्॥४॥

सोपानाकृत्ति पीठकमत्र विधेयं समन्ततो रङ्गे।
यवनाच्छादनया स्यादवलोकस्तु रङ्गस्य ॥५॥

वार्त्तिककार ने स्तम्भों की व्याख्या निम्न प्रकार से की है —

दो स्तम्भ नपथ्यगृह के भीतर, चार स्तम्भ रङ्गपीठ के ऊपर और शेष चार (रङ्गपीठ के) दोनों ओर अगल बगल में आठ आठ हाथ की दूरी पर लगाने चाहियें। इस प्रकार ये प्रथम बार कहे हुये दश स्तम्भ हो जाते हैं ॥१॥

उसके बाद आठ स्तम्भों में से चार स्तम्भ रङ्गपीठ के अगल बगल में, रङ्गपीठ तथा पूर्व स्तम्भों के बीच में चार हाथ के अन्तर पर और रङ्गपीठ के आगे तथा पीछे दो दो, इस प्रकार दूसरी बार में कहे हुए वे आठ स्तम्भ भी लगाने चाहियें ॥२॥

शेष अवसरानुकूल छः स्तम्भ लगावें यह शास्त्र का अभिप्राय है। अथवा अन्य कोई क्रम भी इनको दिया जा सकता है ॥३॥

किन्तु प्रत्येक स्थिति में यह ध्यान रखना चाहिये कि भित्ति से स्तम्भों का, तथा एक स्तम्भ से दूसरे स्तम्भ के बीच का अन्तर अधिक से अधिक आठ हाथ का हो इससे अधिक नहीं। कम से कम चार हाथ तक हो सकता है। इस प्रकार उनके खड़े किये जाने से छत के लिये ठीक आधार मिल जाता है ॥४॥

इस स्तम्भ व्याख्या के बाद इस रङ्गभूमि मे सब ओर प्रेक्षकों के बैठने के लिये सीढियों की तरह उठते हुये आसनों की रचना करे। जिससे पीछे वाले सब लोग निर्बाध होकर रंगपीठ का भली प्रकार से दर्शन कर सकें।

इन पद्यों से नाट्यशाला की निर्मिति पर प्रकाश पड़ता है।

समधविभागेन रङ्ग-शीर्षं प्रकल्पयेत् ।
पश्चिमे च विभागेऽथ नेपथ्यगृहमादिशेत ॥३४॥

प्रेक्षकों के बैठने वाले अगले स्थान के समीप का जो १६ × ३२ हाथ का टुकड़ा है उसको फिर ८ × ३२ हाथ के दो भागों मे आधा आधा बराबर बांटकर प्रेक्षकों के बैठने के स्थान से मिले हुये ८ × ३२ हाथ के भागों मे मुख्य अभिनय-स्थल 'रङ्ग' अर्थात् 'रङ्गपीठ' और उसके पीछे ८ × ३२ हाथ के स्थान मे शीर्ष' अर्थात् 'रङ्गशीर्ष' की रचना करे और रङ्गशीर्ष के पीछे की ओर भी १६ × ३२ हाथ के अन्तिम भाग में नेपथ्य गृह बनवावे।

शुभे नक्षत्रयोगे च मण्डपस्य निवेशनम् ।
शङ्खदुन्दुभिनिर्घोषैः मृदङ्गपणवादिभिः ॥३५ ३६॥

शुभ नक्षत्र का योग उपस्थित होने पर शङ्ख दुन्दुभी आदि के निर्घोष एवं मृदंग पणव आदि बाजों की ध्वनियों के साथ मण्डप की आधार शिला रखे ॥३५–३६॥

सर्वातोद्यैः प्रणुदितैः स्थापनं कार्यमेव तु ।
उत्सार्याणि त्वनिष्टानि पाषण्डाश्रमिणस्तथा ॥३७॥

सब प्रकार के बाजों को बजाते हुये मण्डप की आधार शिला की स्थापना करनी चाहिये और उस समय अनिष्ट वस्तुएं तथा पाखण्डी धूर्त जनों अथवा 'पाषण्डाश्रमिण' अर्थात् संन्यासियों को दूर भगा देना चाहिये ॥३७॥

निशायां च बलिः कार्यो नानाभोजनसंयुतः ।
गन्धपुष्पफलोपेतो दिशो दशसमाश्रितः ॥३८॥

नींव रखने के दिन रात्रि के समय नाना प्रकार के भोजनों तथा सुगन्धित पुष्प फलादि से युक्त बलि अर्थात् सजावट करनी चाहिये ॥३८॥

पूर्वेण शुक्लाश्रयुतो रक्ताश्रो दक्षिणेन च ।
पश्चिमेन वलि पीतो नीलश्चवोत्तरेण तु ॥३६॥

पूव दिशा मे शुक्ल अन्न से युक्त, दक्षिण दिशा मे रक्त अन्न से युक्त, श्चिम दिशा मे पीतवण का और उत्तर दिशा मे नील वण के अन्न से क्त वलि अर्थात् सजावट करनी चाहिय ॥२६॥

यादृश दिशि यस्या तु दवत परिकल्पितम् ।
तादृशस्तत्र दातव्यो वलिम त्रपुरस्कृत ॥४०॥

जिस दिशा मे जिस प्रकार के देवता की कल्पना की गई है उस दिशा । उसी प्रकार की मन्त्रो से युक्त सजावट करानी चाहिये ॥४०॥

स्थापने ब्राह्मणेभ्यश्च दातव्य घृतपायसम् ।
मधुपकस्तथा राज्ञे कर्तृभ्यश्च गुडौदनम् ॥४१॥

नाटय मण्डल की स्थापना अर्थात् आधार शिला रखे जाने के अवसर पर ब्राह्मणो को घत मिश्रित खीर का विशेष भोजन देना चाहिये। राजा को मधुपक तथा कारीगरो को गुड भात देना चाहिये ॥४१॥

मुहूर्तेनानुकूलेन तिथ्या सुकरणेन च ।
एव तु स्थापन कृत्वा भित्तिकम प्रयोजयेत् ॥४२ ४३॥

अनुकूल मूहूत, अनुकूल तिथि और सुन्दर करण काल के विशेष भाग मे इस प्रकार अर्थात् पूव प्रतिपादित शली से नाट्य मण्डल की ,स्थापना अर्थात् नीव रखने का काय करके भित्तिकम अर्थात् दीवारो की चिकनाई का काय प्रारम्भ करे ॥४२–४३॥

भित्तिकर्मणि निवृत्ते स्तम्भाना स्थापन तत ।
तिथिनक्षत्रयोगेन शुभेन करणेन च ॥४४॥

मण्डप की कुर्सी तक भित्तिकम के पूण हो जाने पर उत्तम तिथि तथा नक्षत्र योग होन पर और सुन्दर करण काल विशेष मे मण्डप के खम्भो की स्थापना चाहिये ॥४४॥

विशेष—स्थापना शब्द का अथ उठाना या खडा करना है।

आचार्येण सुयुक्तेन त्रिरात्रोपोषितेन च ।
स्तम्भानां स्थापनं कार्यं प्राप्ते सूर्योदये शुभे ॥४५॥

तीन रात्रि तक उपवास किये हुए और अत्यन्त एकाग्र चित्त आचार्य द्वारा शुभ दिवस में सूर्योदय के समय स्तम्भों की स्थापना का कार्य करना चाहिये ॥४५॥

प्रथमे ब्राह्मणस्तम्भे सर्पिस्सर्षपसंस्कृतः ।
सर्वः शुक्लो विधिः कार्यो दद्यात् पायसमेव च ॥४६॥

उत्तर पूर्व दिशा के बीच में ईशान-कोण में स्थित प्रथम ब्राह्मण स्तम्भ में घृत तथा सर्षप (सरसों) से संस्कृत सम्पूर्ण शुक्ल पदार्थों से सम्पूर्ण विधि करनी चाहिये और ब्राह्मणों को खाने के लिये भी खीर ही देनी चाहिये ॥४६॥

ततश्च क्षत्रियस्तम्भे वस्त्रमाल्यानुलेपनम् ।
सर्वं रक्तं प्रदातव्यं द्विजेभ्यश्च गुडौदनम् ॥४७॥

उसके बाद पूर्व दक्षिण के बीच के आग्नेय कोण वाले क्षत्रिय स्तम्भ में वस्त्र, माल्य, अनुलेपन आदि सब कुछ लाल रंग का ही देना चाहिये और द्विजों को गुड़ भात देना चाहिये ॥४७॥

वैश्यस्तम्भे विधिः कार्यो दक्षिणपश्चिमाश्रये ।
सर्वं पीतं प्रदातव्यं द्विजेभ्यश्च घृतौदनम् ॥४८॥

दक्षिण-पश्चिम के बीच के नैऋत्य-कोण दिग्भाग में स्थित वैश्यस्तम्भ में वस्त्र माल्य आदि सब कुछ पीले रंग का ही देना चाहिये और द्विजों को घी भात देना चाहिये ॥४८॥

शूद्रस्तम्भे विधिः कार्यः पश्चिमोत्तरसंश्रये ।
नीलप्रायं प्रयत्नेन कृसरं च द्विजाशनम् ॥४९॥

पश्चिम तथा उत्तर के बीच वायव्य कोण में स्थित शूद्र स्तम्भ में प्रयत्न पूर्वक वस्त्र माल्य अनुलेपन आदि सब कुछ नील प्रधान होना चाहिये और द्विजों के खाने के लिये खिचड़ी देनी चाहिये ॥४९॥

पूर्वोक्त ब्रह्मणस्तम्भे शुक्लमाल्यानुलेपने ।
निक्षिपेत् कनकं मूले कर्णाभरण सश्रयम् ॥५०॥

पहिले कहे उत्तर पूर्व के बीच ईशान कोण म स्थित ब्राह्मण स्तम्भ मे शुक्ल वर्ण के माल्य तथा अनुलेपन आदि का प्रयोग करे और उसके मूल मे कर्णाभूषण के सोने को रखे ॥५०॥

ताम्र चाध प्रदात य स्तम्भे क्षत्रियसज्ञके ।
वैश्यस्तम्भ मूले तु रजत सम्प्रदापयेत ॥५१॥

आग्नेय कोण मे स्थित क्षत्रिय स्तम्भ के नीचे मूल मे ताबा रखना चाहिये और नैऋत्य कोण स्थित वैश्य स्तम्भ की जड मे चांदी ॥५१॥

शूद्रस्तम्भस्य मूले तु दद्यादायसमेव च ।
सर्वेष्वेव तु निक्षेप्य स्तम्भमूलेषु काञ्चनम ॥५२॥

वायव्य कोण म स्थित शूद्र स्तम्भ के मूल मे लोहा तथा और सभी स्तम्भो के मूल म उनके साथ कहे हुए धातुओ के अतिरिक्त सोना भी डालना चाहिये ॥५२॥

स्वस्तिपुण्याहघोषेण जयशब्देन चव हि ।
स्तम्भानाम स्थापन काय पुष्पमालापुरस्कृतम् ॥५३॥

स्वस्तिवाचन और पुण्याह घोष एव जय शब्द के घोष के साथ पुष्प मालाओ म सजे हुए स्तम्भो को खडा करना चाहिय ॥५३॥

रत्नदानै सगोदानवस्त्रदानैरनल्पकै ।
ब्राह्मणांस्तर्पयित्वा तु स्तम्भानुत्थापयेत् तत ॥५४॥

गोदान सहित प्रचुर मात्रा म प्रिय गुण रत्नो के दान से ब्राह्मणो को प्रसन्न करके सब स्तम्भो को खडा करे ॥५४॥

अचल चाप्यकम्पञ्च तथैवधावलित पुन ।
स्तम्भस्योत्थापने सम्यग् दोषाह्येत प्रकीर्तिता ॥५५॥

उसके बाद स्तम्भो को इस प्रकार खडा कर कि वे स्थिर हो। इधर

उधर सरकें नही, हिल नही, और घूमे नही। क्योंकि स्तम्भो के खड़े करने पर प्राय य दोष आ जाते हैं ॥५५॥

प्रवृष्टिरुक्ता चलने वलने मृत्युतो भयम्।

कम्पने परचक्रात् तु भय भवति दारुणम् ॥५६॥

खड़ा करते समय स्तम्भो म चलन अर्थात् इधर-उधर सरक जाने प्रवृष्टि की सम्भावना और वलन अर्थात् उसी स्थान पर घूम जाने से मृत्यु भय और हिल जाने पर शत्रु पक्ष से दारुण भय होता है ॥५६॥

दोषरेतैर्विहीन तु स्तम्भमुत्थापयेच्छिवम्।

पवित्रे ब्राह्मणस्तम्भे दातव्या दक्षिणा च गौ ॥५७॥

इन तीनो दोषो से रहित कल्याणकारी रूप से स्तम्भो को खड़ा करे पवित्र ब्राह्मण स्तम्भ के खड़ा करने पर ब्राह्मणो को दक्षिणा के रूप मे का दान करना चाहिये ॥५७॥

शेषाणा भोजन काम स्थापते कर्तृ सश्रयम्।

मन्त्रपूत च तद्देय नाट्याचार्येण धीमता ॥५८॥

शेष क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र स्तम्भो के स्थापना के अवसर पर नाट्यमण्डप के निर्माता के द्वारा, उसी के व्यय पर भोजन सब लोगो को कराया जाना चाहिये ॥५८॥

पुरोहित नृप चैव भोजयेन्मधुपायस।

कर्तृ नपि तथा सर्वान् कृसरा लवणोत्तरम् ॥५९॥

उस भोजन म पुरोहित और राजा को मधुमिश्रित खीर खिलावे और कारीगरो को लवण प्रधान खिचड़ी खिलावे ॥५९॥

५८वी कारिका म जो कृत सश्रयम् पद आया है वहा कर्ता शब्द मण्डप के निर्माण कराने वाले का और ५९वी कारिका म कर्तृन् पद मण्डप के निर्माण करने वाले कारीगरो का ग्रहण होता है।

सर्वमेव विधि कृत्वा सर्वातोद्य प्रवादित।

अभिमन्त्र्य यथान्याय स्तम्भानुत्थापयेच्छुचि ॥६०॥

इस प्रकार भोजन तथा दक्षिणा सम्बन्धी सारी विधि को करके और सारे वाद्यो के बजाने के साथ शुद्ध पवित्र होकर तथा विधिवत अभिमन्त्रित करके स्तम्भो को उठावे ॥६०॥

यथाऽचलोगिरिर्मेरु हिमवांश्च महाबल ।
जयावहो नरेन्द्रस्य तथा त्वमचलो भव ॥६१॥

जिस प्रकार मेरु पर्वत और महान् हिमालय अचल है राजा के लिये जय का आवाहन करने वाले हे स्तम्भ ! उसी प्रकार तुम भी अचल हो ॥६१॥

स्तम्भद्वार च भित्ति च नेपथ्यगृहमेव च ।
एवमुत्थापयेत तज्ज्ञो विधिदृष्टेन कर्मणा ॥६२॥

इस प्रकार शिल्प विद्या को जानने वाला कारीगर स्तम्भ द्वार, भित्ति तथा नेपथ्यगृह का विधिविहित प्रकार से बनवावे ॥६२॥

रङ्गपीठस्य पार्श्वेतु कर्तव्या मत्तवारणी ।
चतु स्तम्भसमायुक्ता रङ्गपीठप्रमाणत ॥६३॥

रगपीठ के दोनो ओर, दोनो बगलो म रगपीठ के माप की ओर चार खम्भो से युक्त मत्तवारणियो (दो वरामदो) की रचना करनी चाहिए ॥६३॥

अध्यर्धहस्तोत्सधेन कर्तव्या मत्तवारणी ।
उत्सेधेन तयोस्तुल्य कर्तव्य रङ्गपीठकम ॥६४॥

रगमण्डप अर्थात सामाजिको के बैठन के स्थान स डेढ हाथ की ऊचाई की 'मत्तवारणी' बनानी चाहिए और रगपीठ के दोनो किनारो पर बनाई गयी उन दोनो मत्तवारिणियो की बराबर ऊचाई का ही रगपीठ बनाना चाहिए ॥६४॥

तस्या माल्य च धूप च गन्ध वस्त्र तथैव च ।
नानावर्णानि देयानि तथा भूतप्रियोबलि ॥६५॥

उस मत्तवारणी पर निर्माण काल मे नाना वर्ण की मालाएँ

धूप, ग ध, वस्त्र, आदि ब्राह्मणो तथा कारीगरो को देने चाहियें क्योंकि उस प्रकार की बलि अर्थात सजावट का सु दर द्रव्य भूतो अर्थात प्राणियों को प्रिय होता है ॥६५॥

आयस तत्र दातव्य स्तम्भानां कुशलैरध ।

भोजने कृशराश्चव दातव्य ब्राह्मणाशनम ॥६६॥

उसमे से चतुर अर्थात् निपुण कारीगरों को स्तम्भों के मूल की जड़ मे लोहा डालना चाहिए, और भोजन मे ब्राह्मणों के खाने योग प्रचुर घृतादि से युक्त खिचडी देनी चाहिए ॥६६॥

एव विविधपुरस्कार कर्तव्या मत्तवारणी ।

रङ्गपीठ तत कार्यं विधिदृष्टेन कर्मणा ॥६७॥

इस प्रकार वास्तुशास्त्र मे प्रतिपादित विधि के अनुसार वस्त्र आदि रूप विविध पुरस्कारो के दान के साथ मत्तवारिणी की रचना करनी चाहिए। और उसके बाद विधिविहित प्रकार से रगपीठ का निर्माण करना चाहिए। उसम भी सबसे पहले छ सु दर काष्ठ-खण्डो से युक्त रगशीष की रचना करनी चाहिए और नेपथ्य गृह के दो द्वार बनाने चाहिए ॥६७॥

रङ्गशीषस्तु कर्तव्य षडदारुकसमन्वितम ।

कार्यं द्वारद्वय चात्र नेपथ्यगृहकस्य तु ॥६८॥

शिल्पशास्त्रा मे प्रतिपादित विधि के अनुसार रगपीठ की रचना करनी चाहिए। उसम भी सबस पहले छ सु दर काष्ठ खण्डो से युक्त रगशीष की रचना करनी चाहिए और नेपथ्यगृह के दो द्वार बनाने चाहियें ॥६८॥

पूरणे मृत्तिका चात्र कृष्णा देया प्रयत्नत ।

लाङ्गलेन समुत्कृष्य निर्लोष्टतृणशर्करम ॥६९॥

रगपीठ रगशीष तथा नेपथ्यगृह जिस भाग म बनते हैं उस भाग को शेष भूमि भाग मे डेढ हाथ ऊंचा रखना चाहिए यह बात पहिले कही

चा चुकी है। उसको ऊंचा उठाने के लिए डेढ़ हाथ का मिट्टी का भराव करना होगा उस भराव करने के लिए प्रयत्न करके हल से जोत कर ईंट-पत्थर, घास फूस और धूलि से रहित काली मिट्टी डालनी चाहिये ।।६९।।

लाङ्गले शुद्धवर्णौ तु धुर्यौ योज्यौ प्रयत्नतः ।
कर्त्तारः पुरुषाश्चात्र येऽङ्गदोषविवर्जिताः ।।७०।।

जिस हल से उस भूमि को जोता जाये उस हल में सफेद रंग के बलवान् दो बैल जोड़ने चाहियें और उनको चलाने वाले ऐसे पुरुष होने चाहिये, जिनमें किसी प्रकार का अंग दोष न हो ।।७०।।

अहीनाङ्गैश्च वोढव्या मृत्तिका पीवरैर्नरैः ।
एवंविधः प्रकर्तव्यः रङ्गशीर्षः प्रयत्नतः ।।७१।।

अंगहीनता रहित और पुष्ट मनुष्यों को मिट्टी ढोने का कार्य करना चाहिए। इस प्रकार रंगशीर्ष प्रयत्नपूर्वक बनाना चाहिये ।।७१।।

कूर्मपृष्ठं न कर्तव्यं मत्स्यपृष्ठं तथैव च ।
शुद्धादर्शतलाकारं रंगशीर्षं प्रशस्यते ।।७२।।

रंगशीर्ष का धरातल या फर्श कछुए की पीठ सा या मछली की पीठ सा नहीं बनाना चाहिये, अपितु शुद्ध दर्पण के तल के समान एकसा समतल रंगशीर्ष अच्छा समझा जाता है ।।७२।।

रत्नानि चात्र देयानि पूर्वे वज्रं विचक्षणैः ।
वैदूर्यं दक्षिणे पार्श्वे स्फटिकं पश्चिमे तथा ।।७३।।

और उनके फर्श में रत्न लगाना चाहिये। पूर्व की ओर हीरा दक्षिण की ओर वैदूर्य तथा पश्चिम की ओर स्फटिक, चतुर कारीगरों को लगाना चाहिये ।।७३।।

प्रवालमुत्तरे चैव मध्ये तु कनकं भवेत् ।
एवं रङ्गशिरः कृत्वा दारुकर्म प्रयोजयेत् ।।७४।।

उत्तर की ओर प्रवाल मूंगा तथा बीच में सोने का प्रयोग करना

चाहिये। इस प्रकार रंगशीर्ष को बनाकर उसमें लकड़ी का काम कराना चाहिये ॥७४॥

ऊहप्रत्यूहसंयुक्तं नानाशिल्पप्रयोजितम् ।
नानासञ्जवनोपेतं बहुव्यालोपशोभितम् ॥७५॥

ऊहप्रत्यूह से नाना प्रकार की कारीगरी से समन्वित भित्ति के समान प्रतीत होने वाले अनेक चित्रकारीयुक्त तख्तों अर्थात सञ्जवना से विभूषित अनेक सर्प आदि के चित्रों से अलंकृत दारुकर्म करावे ॥७५॥

सुसालभञ्जिकाभिश्च समन्तात् समलंकृतम् ।
निर्व्यूहकुहरोपेतं नानाग्रथितवेदिकम् ॥७६॥

सब ओर से सुन्दर सुसालभंजिका अर्थात पुतलियों से अलंकृत निर्यूह अर्थात बाहर निकले हुये या उभरे हुये चित्रों तथा कुहर अर्थात काष्ठ फलकों एवं भीतर खुदे हुये चित्रों से युक्त नानाप्रकार की वेदिकाओं को चित्रों से सुशोभित करना चाहिये ॥७६॥

नानाविन्याससंयुक्तं चित्रजालगवाक्षकम् ।
१७७ सुपीठधारणीयुक्तं कपोतालीसमाकुलम् ॥७७॥

नानाप्रकार की शैलियों से बनाये गये विचित्र प्रकार की जालियों तथा झरोखों से सजे हुये सुन्दर पीठ अर्थात खम्भों का ऊपरी भाग और उन पीठों के भी ऊपर की धारणियों से युक्त तथा चित्रमयी कबूतरों की पंक्ति से भरी हुई ॥७७॥

नानाकुट्टिमविन्यस्तैः स्तम्भैश्चाप्युपशोभितम् ।
एवं काष्ठविधिं कृत्वा भित्तिकर्म प्रयोजयेत् ॥७८॥

नाना प्रकार के फर्शों पर खड़े किये खम्भों के चित्रों से सुशोभित रंगशीर्ष पर दारुकर्म अर्थात् लकड़ी के काय करावे। और इस प्रकार दारुकर्म कराने के बाद भित्ति कर्म अर्थात दीवारों की सजावट आदि का कार्य करावे ॥७८॥

स्तम्भं वा नागदन्तं वा वातायनमथापि वा ।

कोणं वा सप्रतिद्वारं द्वारविद्धं न कारयेत ॥७६॥

भित्तिकर्म में यह ध्यान रखे कि स्तम्भ या खूटी अथवा झरोखा या कोना अथवा अवान्तर द्वार किसी का द्वार के सामने अर्थात द्वारविद्ध न बनाना चाहिये ॥७६॥

कार्य शैलगुहाकारोद्विभूमिर्नाट्यमण्डपः ।

मन्दवातायनोपेतो निर्वातो धीरशब्दवान ॥८०॥

पर्वत की गुफा के समान दो प्रकार की अर्थात् पहिले नीची और फिर क्रमशः ऊंची होती हुई भूमि से युक्त अथवा दो मंजिला अथवा बैठने के लिये मुख्य मण्डप के चारों ओर बन्द बरामदे से युक्त हल्की हवा पहुंचाने वाले वातायनों से समन्वित तेज वायु से रहित तथा गम्भीर शब्द करने वाला नाट्यमण्डप बनाना चाहिये ॥८०॥

तस्मान्निवातः कर्तव्यः कर्तृभिर्नाट्यमण्डपः ।

गम्भीरस्वरता येन कुतुपस्य भविष्यति ॥८१॥

इस प्रकार कारीगरों को अथवा बनवाने वालों को नाट्य मण्डप निवात अर्थात् जिसमें अधिक वायु का प्रवेश न हो सके इस प्रकार का बनाना चाहिये, जिससे उसमें कुतुपों अर्थात सम्भाषणकर्ताओं तथा गायक वादकों के स्वर की गम्भीरता बन सके ॥८१॥

भित्तिकर्मविधिं कृत्वा भित्तिलेपं प्रदापयेत ।

सुधाकर्म बहिस्तस्य विधातव्यं प्रयत्नतः ॥८२॥

भित्ति रचना की विधि को समाप्त करके भित्तियों पर भित्तिलेप अर्थात पलास्टर करवावे, और उस मण्डप के बाहर की ओर सफेदी सावधानी से करवाये ॥८२॥

भित्तिष्वथ विलिप्तासु परिमृष्टासु सवत ।
समासु जाताशोभासु चित्रकम प्रयोजयेत ।।८३।।

भित्तियो पर प्लास्टर हो जाने और उनकी घुटाई हो जाने के बाद उनके समासु अर्थात एकदम चिकनी और जातशाभसु अर्थात् चमकदार हो जाने पर उन पर चित्र रचना करवावे ।।८३।।

चित्रकर्माणि चालेख्या पुरुषा स्त्रीजनास्तथा ।
लताबन्धाश्च कर्तव्याश्चरित चात्मभोगजम् ।।८४।।

और चित्र रचना मे पुरुषो एव स्त्रियो के चित्र बनवावे और काम शास्त्र म वर्णित द्रविड अभिनय की रचना विशेष रूप से लताबन्ध तथा अपने भोग विलास की रुचि के अनुसार चित्रो का चित्रण करावे ।।८४।।

एव विकृष्ट कर्त्तव्य नाटयवेश्म प्रयोक्तृभि ।
पुनरेव हि वक्ष्यामि चतुरश्रस्य लक्षणम ।।८५।।

प्रयोग करने वालो को विकृष्ट अर्थात आयताकार नाटचमण्डप की रचना इस प्रकार अर्थात् पूर्वोक्तनिर्दिष्ट रीति से करनी चाहिये । अब आगे चतुरस्र अर्थात् चौकोर वर्गाकार नाटच मण्डप का लक्षण कहगे ।।८५।।

समन्ततश्च कर्तव्यो हस्ता द्वात्रिंशदेव हि ।
शुभभूमिविभागस्थो नाटयज्ञैर्नाटयमण्डप ।।८६।।

नाटय के जानने वालो को पवित्र भूमि खण्ड मे स्थित चारो ओर से ही बत्तीस हाथ का चतुरस्र वर्गाकार नाटचमण्डप बनाना चाहिये ।।८६।।

यो विधि पूर्वमुक्तस्तु लक्षण मङ्गलानी च ।
विकृष्टे तान्यशेषाणि चतुरश्रेऽपि कारयेत ।।८७।।

जो विधान लक्षण और मगल आदि पहिले विकृष्ट नाटचमण्डप के प्रकरण मे कहे जा चुके है, उनको उसी प्रकार से चतुरस्र नाटच मण्डप के बनाते समय म भी करवावे ।।८७।।

चतुरश्रं समं कृत्वा सूत्रेण प्रविभज्य च ।
बाह्यतः सर्वतः कार्या भित्तिः श्लिष्टेष्टका दृढा ॥८८॥

चतुरस्र क्षेत्र को बराबर करके और फीते या सूत्र से चारों ओर ३२×३२ हाथ बराबर प्रविभज्य नापकर उसके बाहर की ओर चारों ओर विकृष्ट के विधान के अनुसार पक्की ईंटों की दीवार बनवा दे ॥८८॥

तत्राभ्यन्तरतः कार्या रङ्गपीठोपरि स्थिता ।
दश प्रयोक्तृभिः स्तम्भाः शक्ता मण्डपधारणे ॥८९॥

उसके भीतर की ओर मत्तवारणी सहित रंगपीठ पर अर्थात् रंगपीठ के समीप मण्डप को धारण करने में समर्थ दस स्तम्भ प्रयोक्ताओं को खड़े करने चाहिए ॥८९॥

स्तम्भानां बाह्यतश्चापि सोपानाकृतिपीठकम् ।
इष्टकादारुभिः कार्यं प्रेक्षकाणां निवेशनम् ॥९०॥

और स्तम्भों के बाहर की ओर प्रेक्षकों के बैठने के लिए ईंटों तथा लकड़ी आदि से सीढ़ियों के समान आकृति में पीठ बनवावे । ९०॥

हस्तप्रमाणैरुत्सेधैर्भूमिभागसमुत्थितैः ।
रंगपीठावलोक्यं तु कुर्यादासनजं विधिम् ॥९१॥

भूमि भाग से एक हाथ ऊपर उठे हुए आसनों का निर्माण करें जहाँ से कि रंगपीठ भली प्रकार दिखलाई दे सके ॥९१॥

षडन्यानन्तरे चैव पुनः स्तम्भान् यथादिशम् ।
विधिना स्थापयेत् तज्ज्ञो दृढान् मण्डपधारणे । ९२॥

और फिर उस स्तम्भविधि को जानने वाला कारीगर उचित दिशाओं में मण्डप को धारण करने में समर्थ छह अन्य मजबूत स्तम्भों को लगावे ॥९२॥

अष्टौ स्तम्भान् पुनश्चैव तेषामुपरि कल्पयेत् ।
विद्वांस्यमष्टहस्तं च पीठं तेषु ततो न्यसेत् ॥९३॥

उनके बाद फिर आठ स्तम्भ और भी लगावे। उनके ऊपर आठ-आठ हाथों के पीठ अर्थात् शहतीर जिनके मुख एक दूसरे के भीतर घुसे हुए हों (विद्वास्य) रखे ॥६३॥

या विधि पूर्वमुक्तस्तु लक्षण मङ्गलानि च।
विकृष्टे तान्यशेषाणि चतुरस्रेऽपि कारयेत ॥६४॥ (क)
तत्राभ्यन्तरत कार्या रङ्गपीठे यथादिशम।
दश प्रयोक्तृभि स्तम्भा शक्ता मण्डपधारणे ॥६४॥ (ख)

ये दोनो पद्य कहीं-कहीं मिलते हैं इनका अर्थ यह है कि जो विधि और *जो मङ्गलकारी लक्षण पहले कह गये हैं वे सब विकृष्ट मे करने चाहिये।* (क)

चौकोर नाट्यगृह मे सूत (फीता) से नाप ले और नाट्यमण्डप के चारो ओर ईंट की दीवार बनवा दे। रङ्गशाला के अन्दर दिशाओं का विचार करके १० खम्भे बनवावे, जो कि मण्डप को धारण करने मे समर्थ हो। (ख)

तत्र स्तम्भा प्रदातव्यास्तज्ज्ञमण्डपधारणे।
धारणीधारणास्ते च शालस्त्रीभिरलङ्कृता ॥६५॥

उस स्तम्भ विधि को समझने वाले कारीगरो को मण्डप की छत को धारण करने के लिए धारणियो, शहतीर कड़ी आदि को धारण करने वाले अत्यन्त दृढ एव शालस्त्री अर्थात् पुतलियो आदि से अलङ्कृत स्तम्भ लगाने चाहियें ॥६५॥

नेपथ्यगृहक चैव तत कार्य प्रयत्नत।
द्वार चैक भवेत तत्र रगपीठप्रवेशनम ॥६६॥

उसके बाद रगशीर्ष के पीछे बच हुए आठ हाथ चौडे तथा बत्तीस हाथ लम्बे स्थान मे नेपथ्यगृह की रचना प्रयत्नपूर्वक करनी चाहिए और उसमे रगपीठ मे प्रवेश कराने वाले एक प्रकार के दो द्वारो को बनाना चाहिए ॥६६॥

नेपथ्याभिमुखं कार्य द्वितीयं द्वारमेव तु ।
जनप्रवेशनं चाप्यथाभिमुख्येन कारयेत ॥६७॥

और नेपथ्य गृह के सामने की ओर अर्थात् पिछले भाग में बीच में नटों का प्रवेश कराने वाला द्वितीय अर्थात् अगला तीसरा द्वार बनवावे और अगला चौथा द्वार रंग मण्डल के सामने बनवाये, यह प्रेक्षागृह का मुख्य द्वार होता है ॥६७॥

अष्टहस्तं तु कर्तव्यं रंगपीठं प्रमाणतः ।
चतुरस्रं समतलं वेदिकासमलंकृतम् ॥६८॥

आठ हाथ के चौकोर समतल और वेदिका से अलंकृत रंगपीठ का निर्माण प्रमाण के अनुसार करना चाहिये ॥६८॥

पूर्वप्रमाणनिर्दिष्टा कर्तव्या मत्तवारणी ।
चतुःस्तम्भसमायुक्ता वेदिकायास्तु पार्श्वतः ॥६६॥

वेदिका अर्थात् रंगपीठ के अगल बगल दोनों ओर पूर्व निर्दिष्ट प्रमाण के अनुसार चार स्तम्भों से युक्त मत्तवारणी का निर्माण करना चाहिये ॥६६॥

समुन्नतं समं चैव रंगशीर्षं तु कारयेत ।
विकृष्टे तून्नतं कार्यं चतुरश्रे समं तथा ॥१००॥

रंगपीठ की अपेक्षा ऊंचा और समतल दो प्रकार का रंग शीर्ष बनाना चाहिये । विकृष्ट अर्थात् आयताकार प्रेक्षागृह में इन दोनों में से समुन्नत अर्थात रंगपीठ की अपेक्षा ऊंचा और चतुरस्र अर्थात् प्रेक्षागृहों में दूसरा, समतल रंगशीर्ष बनाना चाहिए ॥ १००॥

एवमेतेन विधिना चतुरश्रं गृहं भवेत् ।
अतः परं प्रवक्ष्यामि त्र्यश्रगेहस्य लक्षणम् ॥१०१॥

इस प्रकार इस पूर्व निर्दिष्ट विधि से चतुरस्र प्रेक्षागृह का निर्माण होता है । अब इसके बाद त्र्यस्र अर्थात् त्रिकोणात्मक प्रेक्षागृह का लक्षण कहेंगे ॥१०१॥

त्र्यस्रं त्रिकोणं कर्तव्यं नाट्यवेश्म प्रयोक्तृभिः ।
मध्ये त्रिकोणमेवास्य रंगपीठं तु कारयेत ॥१०२॥

ोग करने वालो को तीसरे प्रकार का त्र्यस्र नाट्यगृह त्रिकोण
५६ चाहिये और उसके बीच मे त्रिकोणात्मक ही रगपीठ भी ब
॥१०२॥

प्रय
बनाना द्वार तेनव कोणेन कतव्य तस्य वेश्मन ।
चाहिये। द्वितीय चव कतव्य रगपीठस्य पृष्ठत ॥१०३॥
इस त्र्यस्र प्रेक्षागह का द्वार भी उसी कोण मे अर्थात् उसी
कि विकृष्ट तथा चतुरस्र मण्डपो मे बताया था अर्थात् मुख्य
र बनाना चाहिए और पात्र प्रवेश वाले द्वार के अतिरिक्त
और र्थात् वाद्य वाले पर्वोक्त दोनो द्वार की रचना रगपीठ के पीछे
जिस ओर चाहिये ॥१०३॥
पूव की ओ विधियश्चतुरश्रस्य, भित्तिस्तम्भसमाश्रय ।
प्रकार के स तु सव प्रयोक्तव्य त्र्यश्रस्यापि प्रयोक्तृभि ॥१००॥
और करने तथा स्तम्भो के विषय मे जो विधि चतुरस्र मण्डप
है, प्रयोक्ताओ को उस सबका प्रयोग त्र्यस्र मण्डल मे भी कर
४॥

भित्तिय वमेतेन विधिना कार्या नाट्यगृहा बुध ।
बतलायी गई नरेषा प्रवक्ष्यामि पूजामेव यथाविधि ॥१०५॥
चाहिये ॥१० र इस पूर्वोक्त विधि से विद्वानो को अनेक प्रकार के नाट्
ए करनी चाहिये । इसके बाद मैं शास्त्र के अनुसार इन मण्ड
पु देवताओ के पूजन की विधि का वणन अगले अध्याय
इस प्रका॥
गृहो की रचन
के अधिष्ठ तृ
करूगा ॥१०५

एम० ए० परीक्षानियत,
द्वितीयाध्यायसमित ।
नाट्यशास्त्रस्य भागोऽयम
हरिणा विवृत कृत ॥

(इति शिवम)